

کامل
تعمیر سے

احکام اسلام عقل کی نظر میں

جس میں تمام شرعی احکام کی عقلی علتیں، تعلیلیں اور مقاصد احکامیہ کے ساتھ مفصل اور منطقی تفسیر کی گئی ہے
اور ثابت کیا ہے کہ تمام احکام شریعت میں عقل کے مطابق ہیں۔



پروفیسر ڈاکٹر محمد رفیق تھانوی صاحب مدظلہ العالی

مکتبہ اسلامیہ دارالافتاء
فہرہ پور

احکام اسلام عقل کی نظر میں

کامل ترین حصے

جس میں تمام شرعی احکام کی عقلی حکمتیں اور مصلحتیں
احکام الہیہ کے اسرار و لکھائیں ظاہر کی گئی ہے اور ثابت کیا
ہے کہ تمام احکام شریعت عین عقل کے مطابق ہیں۔

محمد امجد علی رضا صاحب دہلوی شریف محل شاہ ولی اللہ

مکتبہ عرفان افروز

4/491 شالہ پورہ کلاں کراچی

Tel: 021-34594144 Cell: 0334-3432345

جماعت حقوق بحق کاوش و محفوظ ہیں

نام کتاب احکام اسلام
 عقل کا کلین

مؤلف مولانا ابو سعید عثمانی صاحب مدظلہ

شعبہ شعبہ اسلامیات، دارالافتاء، دارالعلوم دیوبند، 2009ء

تعداد 1100

طابع دارالکتاب پبلسنگھ پریس کراچی

کٹیشن محترمہ مولانا سیدہ عائشہ بیگم صاحبہ

011-34594144 Cell: 0134-3432345

منجھ کے پتے

- دراذک صاف، ات، وہی
- اسلامی کتب خانہ، دیوبند
- قدوسی کتب خانہ، تمام پورہ
- آبوالکلام، دیوبند
- مکتبہ تشکیک، سکسٹ
- کتب خانہ تشکیک، سکسٹ
- مکتبہ القساری، سکسٹ
- مکتبہ رحمانیہ، سکسٹ
- مکتبہ سید احمد شہید، سکسٹ
- مکتبہ مولانا، سکسٹ
- قادیانی کتب خانہ، سکسٹ

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ النَّبِيِّ
الْأَمِيِّ وَعَلَى آلِهِ وَسَلِّمْ

فہرست عنوانات احکام اسلام عقل کی نظر میں

صفحہ نمبر	عنوانات	صفحہ نمبر
27	دعوتیں دینے والے شخص کو پتہ دینے کی وجہ اور اس کا ہونا	13
27	ذاکہ بھلائے جانے والے مال سے مخصوص ہونے کا حکم	13
28	دعوتیں انہوں تک پہنچانے کا حکم	16
29	دعوتیں ذاکہ کو صحابہ کرنے کی حکمت	16
29	دعوتیں پڑھنے والوں کو انہوں تک پہنچانے کا حکم	17
30	حاصل ہونے والے مال سے دعوتیں پڑھنے والوں کو پہنچانے کا حکم	17
30	ذاکہ کو پہنچانے کا حکم	17
31	ذاکہ سے متعلق عام فقہی حکم	18
31	ذاکہ سے استیصال	18
31	ذاکہ سے اجتناب	18
32	ذاکہ سے اجتناب (ذاکہ)	18
32	ذاکہ سے اجتناب	18
32	ذاکہ سے اجتناب	18
32	ذاکہ سے اجتناب	19
33	ذاکہ سے اجتناب	20
33	ذاکہ سے اجتناب	21
33	ذاکہ سے اجتناب	22
33	ذاکہ سے اجتناب	22
33	ذاکہ سے اجتناب	22
33	ذاکہ سے اجتناب	22
34	ذاکہ سے اجتناب	23
34	ذاکہ سے اجتناب	26
35	ذاکہ سے اجتناب	26
36	ذاکہ سے اجتناب	27
36	ذاکہ سے اجتناب	27
36	ذاکہ سے اجتناب	27

75	مذبح سے جو سائیں بٹھا کر	62	نوازش یافتہ بننے جانے کا کار
76	نوازش کا کار	62	باتوں کے ساتھ ہم سوا کار
77	حقور میں نوازش سے مواضع کی ہے	63	حقیت کا گورا، گورا
77	غریب و طریق اشتیاق غلب کے وقت مع نوازش کی ہے	63	نوازش کا پھوسے مقرر ہونے کی ہے
77	مقام میں مع نوازش کی ہے	64	سور کا نوازش کی ہر قسمت میں پڑھنے کی حکمت
78	لوہاں کے مقام میں مع نوازش کی ہے	64	بلی کا نوازش کا حصہ ہر چیز کی عبادت میں مل
76	مذبح میں مواضع نوازش کی ہے	64	اسلام کے معنی ہونے کی تکلیفیں
78	مذبح میں مع نوازش کی ہے	65	نوازش قسم مقرر ہونے کی ہے
79	اقبال کیلئے تقویٰ حکمت مقرر ہونے کی حکمت	65	نوازش میں جہل کا کار
80	سپاہی آرام کچھ حصہ کا کار و ناہر لہر نوازش کی ہے	65	حکمت مقرر و حکم کا کار، گورا
81	ماہر ہوا کے ناہر و ماہر ہوا کے نوازش کی ہے	66	گور و مہر کی نوازش میں غیبی اور غریب و غلام اور غریب
82	ماہر اور ماہر کے نوازش میں ہونے کی ہے	66	ہر نوازش کا معنی ہے
83	نوازش اشتیاق میں ہوا کا کار ہونے کی حکمت	67	ہر نوازش میں غیبی اور غریب نوازش کی ہے
84	نوازش میں کچھ حصہ مقرر ہونے کی ہے	68	ہر نوازش میں غیبی اور غریب نوازش کی ہے
84	نوازش میں پڑھنا، غیبی احکام کی ہے	68	نوازش کی ہر قسم کے در پہاں انہماک مقرر ہونے کی ہے
84	نوازش میں غیبی حکم میں ہوا کی حکمت	68	نوازش مقرر تو ہے کی ہے
85	قرآن کریم کے الفاظ میں سے ہونے کی حکمت	69	نوازش میں آخرت کا کار
85	نوازش کے الفاظ میں سے ہونے کی ہے	69	نوازش میں ہم سوا مقرر ہونے کی حکمت
85	نوازش مقررہ حاصل کا کار	69	حکمت کا کار ہے
85	ہر غلب میں نام کی جہل مواضع کرنے کی ہے	69	نوازش میں مع اقبال کا کار
86	ہر غلب میں مقررہ حکم کی ہے	70	حکم کا کار ہے
87	نوازش کا کار ہے	70	مقام کے ساتھ انجام نوازش کی ہے
87	حقیت کا کار ہے	70	فرضوں کے عمل کا کار ہے
88	ماہر کا کار	71	پادگان آگوری اور کھنڈوں میں سورہ قسم کرنے کا کار
88	مہر کا کار ہے	71	نوازش نوازش کی ہر قسم میں مقرر ہونے کی ہے
89	حکمت کا کار ہے	71	حقیت کا کار ہے
89	فرض کا کار ہے	73	جہل نوازش کے کار ہے
89	نوازش کا کار ہے	74	نوازش کا کار ہے
90	نوازش کا کار ہے	75	نوازش کا کار ہے
90	نوازش کا کار ہے	75	نوازش کا کار ہے

108	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108	109	110	111	112	113	114	115	116	117	118	119	120	121	122	123	124	125	126	127	128	129	130	131	132	133	134	135	136	137	138	139	140	141	142	143	144	145	146	147	148	149	150	151	152	153	154	155	156	157	158	159	160	161	162	163	164	165	166	167	168	169	170	171	172	173	174	175	176	177	178	179	180	181	182	183	184	185	186	187	188	189	190	191	192	193	194	195	196	197	198	199	200	201	202	203	204	205	206	207	208	209	210	211	212	213	214	215	216	217	218	219	220	221	222	223	224	225	226	227	228	229	230	231	232	233	234	235	236	237	238	239	240	241	242	243	244	245	246	247	248	249	250	251	252	253	254	255	256	257	258	259	260	261	262	263	264	265	266	267	268	269	270	271	272	273	274	275	276	277	278	279	280	281	282	283	284	285	286	287	288	289	290	291	292	293	294	295	296	297	298	299	300	301	302	303	304	305	306	307	308	309	310	311	312	313	314	315	316	317	318	319	320	321	322	323	324	325	326	327	328	329	330	331	332	333	334	335	336	337	338	339	340	341	342	343	344	345	346	347	348	349	350	351	352	353	354	355	356	357	358	359	360	361	362	363	364	365	366	367	368	369	370	371	372	373	374	375	376	377	378	379	380	381	382	383	384	385	386	387	388	389	390	391	392	393	394	395	396	397	398	399	400	401	402	403	404	405	406	407	408	409	410	411	412	413	414	415	416	417	418	419	420	421	422	423	424	425	426	427	428	429	430	431	432	433	434	435	436	437	438	439	440	441	442	443	444	445	446	447	448	449	450	451	452	453	454	455	456	457	458	459	460	461	462	463	464	465	466	467	468	469	470	471	472	473	474	475	476	477	478	479	480	481	482	483	484	485	486	487	488	489	490	491	492	493	494	495	496	497	498	499	500
-----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----

155	تعمیر کی بنا پر	126	جو اس تصویر پر سال کا نمونہ ہے
156	ان میں تکرار کو کھانوں کی روپ	127	ملا کر وہ کے درمیان آئی کر کے کارا
157	تعمیر حقیقہ پر جو کاسر مٹانے کی روپ	128	آج اپنے تصور سے متاثر کی روپ
157	ساتویں روز تعمیری حقیقہ اور نام رکھنے کا سہ	128	پاکش عقلی سر کی روپ
157	جو بیکر کے ہائی کے درمیان چاندی کی حقوق کرنے کا	128	گھر کی طرف رخ کر کے انراج سے کی روپ
157	ان کے حقیقہ اور اسے اور ان کے حقیقہ کی سے اسے کا	130	ملاقات اور سمجھانے سے اور ایک کئے کا
158	اور اس کے انراج میں اپنا اسے کی سخت	131	ملاقات میں فخر سے کار
159	مراہی میں اصل قرابت اور ان کے فرام سے کی روپ	132	مٹی میں اسے کارا
161	<u>مختصر سے اسے اسے</u>	133	مختصر اور اس میں فخر سے کی روپ
161	تعمیر سے اسے اسے	133	مٹی سے کارا
162	اور اس میں اسے اسے کی ایک اور ایک	134	مٹی میں اسے اسے کارا
162	کارا سے اسے اسے	135	فرام کے ہاتھوں کا کارا کرنے کی مصلحت
163	اور اسے اسے اسے کی روپ	136	مٹی کی سواری کی مٹی میں
163	اور اسے اسے اسے کی روپ	136	مٹا کر اور اسے اسے
164	اور اسے اسے اسے کی روپ	136	مٹی اور اسے اسے اسے
165	اور اسے اسے اسے	136	فرام میں اسے اسے اسے
166	اور اسے اسے اسے کی روپ	137	حالات اور اسے اسے اسے اسے
166	اور اسے اسے اسے کی روپ	137	اسے اسے اسے
168	اور اسے اسے اسے کی روپ	138	مٹی کو اسے اسے اسے اسے
169	اور اسے اسے اسے کی روپ	138	فرام میں اسے اسے اسے اسے
170	اور اسے اسے اسے کی روپ	138	حالات اور اسے اسے اسے اسے
173	اور اسے اسے اسے کی روپ	139	اور اسے اسے اسے اسے
173	اور اسے اسے اسے کی روپ	140	<u>مکتبہ اسے اسے</u>
174	اور اسے اسے اسے کی روپ	142	مکتبہ اسے اسے
175	اور اسے اسے اسے کی روپ	142	مکتبہ اسے اسے اسے
175	اور اسے اسے اسے کی روپ	143	مکتبہ اسے اسے اسے اسے
175	اور اسے اسے اسے کی روپ	143	مکتبہ اسے اسے اسے اسے
175	اور اسے اسے اسے کی روپ	143	مکتبہ اسے اسے اسے اسے
178	اور اسے اسے اسے کی روپ	148	مکتبہ اسے اسے اسے اسے
178	اور اسے اسے اسے کی روپ	148	مکتبہ اسے اسے اسے اسے
181	اور اسے اسے اسے کی روپ	150	مکتبہ اسے اسے اسے اسے
181	اور اسے اسے اسے کی روپ	154	مکتبہ اسے اسے اسے اسے

250	239	مستحقان
260	239	مستحقان
260	240	مستحقان
260	240	مستحقان
261	241	مستحقان
262	242	مستحقان
262	243	مستحقان
262	243	مستحقان
266	243	مستحقان
266	243	مستحقان
268	244	مستحقان
269	244	مستحقان
274	246	مستحقان
274	246	مستحقان
276	248	مستحقان
276	251	مستحقان
278	251	مستحقان
278	251	مستحقان
283	251	مستحقان
287	251	مستحقان
287	252	مستحقان
292	252	مستحقان
295	252	مستحقان
296	253	مستحقان
297	253	مستحقان
297	254	مستحقان
298	254	مستحقان
298	254	مستحقان
303	255	مستحقان
304	255	مستحقان

المصالح العقليه للاحكام العقليه

يعني

احكام اسلام عقل کی نظر میں

مقدمہ

بسم اللہ الرحمن الرحیم۔

بعد الحمد والصلوة یہ احترام دعا گزار ہے کہ اس میں تو کوئی شک نہیں کہ اصل مدار ثبوت احکام شرعیہ کا نصوص شرعیہ ہیں بلکہ بعد اسکے اعتدال اور قبول کرنے میں ان میں کسی مصلحت و حکمت کے معلوم ہونے کا انتکار کرنا ناقصین حضرت سبحانہ و تعالیٰ کے ساتھ بغاوت ہے جس طرح دنیوی سلطنتوں کے قوانین کی وجہ وہ اسباب اگر کسی کو معلوم نہ ہوں اور وہ اس معلوم نہ ہونے کے سبب ان قوانین کو نہ مانے اور یہ عذر کر دے کہ وہ دن وہ معلوم کئے ہوئے ہیں اسکو نہیں مان سکتا تو کیا اس کے باقی ہونے میں کوئی حائل شہ کر سکتا ہے تو کیا احکام شرعیہ کا تکلف ان سلاطین و نجاس سے بھی کم ہو گیا۔ فرض اس میں کوئی شک نہ رہا کہ اصل مدار ثبوت احکام شرعیہ فرعیہ کا نصوص شرعیہ ہیں لیکن اسی طرح اسمیں بھی شبہ نہیں کہ باوجود اس کے پھر بھی ان احکام میں بہت سے مصالح اور اسرار بھی ہیں اور گو مدار ثبوت احکام کا ان پر نہ ہو جیسا کہ اوپر مذکور ہوا لیکن ان میں یہ خاصیت ضرور ہے کہ بعض طرائق کے لئے ان کا معلوم ہو جانا احکام شرعیہ میں مزید اطمینان پیدا ہونے کے لئے ایک درجہ میں صحیح ضرور ہے گو اہل یقین راجح کو اسکی ضرورت نہیں لیکن بعض ضعفاء کیلئے تسلی و قوت عقل بھی ہے (اور اس وقت ایسی طرائق کی کثرت ہے) اسی راز کے سبب بہت سے ائمہ و علماء مثل امام فرائی و خطابی و ابن عبد السلام وغیر ہم رحمہم اللہ تعالیٰ کے کلام میں اس قسم کے لطائف و معانی مذکور بھی پائے جاتے ہیں۔ چہ تک ہمارے زمانہ میں

تعلیم ہدیہ کے اثر سے جو آرزوی طبائع میں آئی ہے اس سے بہت سے لوگوں میں ان مصالح کی تحقیق کا شوق اور مذاق پیدا ہو گیا ہے اور گو اسکا اصل طابع تو یہی تھا کہ انکو اس سے روکا جائے (چنانچہ بعض لوگات یہ مذاق مسخر بھی ہوتا ہے) لیکن تجربہ سے اس میں ہاستثناء طالبین صمد تھیں کے عام لوگوں کو اس سے روکنے کے مشورہ دینے میں کامیابی مواقع نہیں تھی اس لئے تسمیہ لفظ و تیسرا علی العادہ بعض اہل علم بھی جت جت اس میں تحریر و تقریر کرنے لگے ہیں اور اگر ان تقریرات و تحریرات میں حدود شریعہ کی رعایت ملحوظ رکھی جاتی تو ان کو کافی سمجھ کر کسی نئے جمورہ کی ضرورت نہ ہوتی مگر علوم حدیث و اشاعت علوم حدیث کی قلت اور آراء فاسدہ اور اجتناب اہواہ مختلفہ کی کثرت کے سبب بعض اہل علم میں تہذیب من اللہ اور سے کام لیا گیا ہے چنانچہ اس وقت بھی ایک ایسی ہی کتاب جسکو کسی صاحب قلم نے لکھا ہے مگر علم و عمل کی کمی کے سبب جام تر و طب و ہاں نہ صحت و صحت سے ہے ایک دوست کی بھی ہوئی میرے پاس دیکھنے کی مرضی سے آئی ہوئی رکھی ہے اسکو دیکھ کر یہ خیال پیدا ہوا کہ ایسی کتابوں کا دیکھنا تو علم کو مسخر ہے مگر عام مذاق کے بدل جانے کے سبب بدواں آنے کے اسکا اور بول لوگوں کو متایا جائے اس کے مطالعہ سے روکنا خارج من اللہ رہتا ہے۔ اس لئے اسکی ضرورت محسوس ہوئی کہ ایک ایسا مستقل ذخیرہ ان مضامین کا جو ان مطالعہ سے مبرا اور ایسے لوگوں کیلئے مہیا کیا جائے تاکہ اگر کسی کو ایسا شوق ہو تو وہ اسکو دیکھ لیا کریں کہ اگر صورت منافع نہ ہو گا تو واقع مضار تو ہو گا (البتہ جس طبیعت میں مصالح کے علم سے احکام ہدیہ کی عقلیت و صحت کم ہو جائے یا وہ ان کو مدرا احکام سمجھنے لگے کہ ان کے اتقاء سے احکام کو عقلی اعتقاد کرے یا انکو مقصود بالذات سمجھ کر دوسرے طریق سے انکی تفصیل کو جائے اقامت احکام کے قرار دے لے جیسا کہ لوح بھی ان مضامین کی طرف اشارہ اس قول میں اشارہ بھی کیا گیا ہے "چنانچہ بعض لوگات یہ مذاق مسخر بھی ہوتا ہے۔" سو ایسے طبائع و اولوں کو ہرگز اس کے مطالعہ کی اجازت نہیں ہے۔ بہر حال وہ ذخیرہ یہی ہے جو آپ کے ہاتھوں میں موجود ہے۔ احقر نے رعایت سے تفصیلی سے انہیں بہت سے مضامین کتاب مذکور بالا سے بھی جو کہ موصوف بھت تھے لے

لئے ہیں اور اس میں احکام مشہورہ کی کچھ کچھ وہی مصلحتیں مذکور ہوں گی جو اصول شرعیہ سے ہیں۔ نہ ہوں۔ اور اقسام عامہ کے قریب ہوں۔ مگر یہ مصلحتیں نہ سب مفہوم میں ہیں۔ نہ سب مدار احکام ہیں اور نہ ان میں انحصار ہے محض ایک نمونہ ہے۔ اس بحث میں ہمارے زمانہ سے کسی قدر پہلے زمانہ میں حضرت مولانا شاہ ولی اللہ صاحب حجۃ اللہ البالغہ لکھ چکے ہیں جنابہ کہ ترجمہ اس کا بھی ہو چکا ہے مگر عوام کو اس کا مطالعہ مناسب نہیں کہ غامض زیادہ ہے اور اس ادارے زمانہ میں بھی ایک مصری قاضی برائیم آفندی باطنی اللہ درہم بالہدایت اللہ یہ نے ایک کتاب لکھی ہے جس کا نام اسرار الشریعہ ہے اور جو ۱۳۲۸ھ میں مصر کے مطبع الوانکا میں چھپی ہے اور اسکے قبل ایک رسالہ مفید یہ شائع ہو چکا ہے مگر یہ دونوں نئی کتابیں عربی زبان میں ہیں جن میں سے مفید یہ کا ترجمہ اردو تو کئی سال ہوئے شائع ہو چکا ہے اور اس دوسری کتاب اسرار الشریعہ کا ترجمہ کا نہ حملہ میں مولوی حافظ محمد اسماعیل صاحب کر رہے ہیں۔ میرے اس مجموعہ کے ساتھ ان کتابوں کا مطالعہ کرنا معلومات میں ترقی دے گا۔ اور چونکہ طرز ہر ایک کا ہوا ہے اس لئے ایک کو دوسرے سے معنی نہ سمجھا گیا میں نے ان دونوں کتابوں کا ذکر اس مصلحت سے بھی کیا ہے اور اس لئے بھی کہ میرے اس عمل کو تفرد نہ سمجھا جائے اور اس تفرد کے شبہ کو صاحب حجۃ اللہ البالغہ نے بھی خطبہ میں اسکی اصل کو کتاب و سنت کے اشارات و احوال سے نکال کر رافع فرمایا ہے اور بطور مثال کے اسکے بعض ماخذ کو بھی بیان فرمایا ہے اور ہم اسکا المصالح العظیہ للاحكام العظیہ رکتابوں حق تعالیٰ اسکا اسکے موضوع میں رافع اور تردت و شکوک فی الاحکام کا رافع فرما دے۔ والسلام

کتب اشرف علی علیہ

تکمیر جب عوام انہیں سو ۱۳۳۱ھ

باب الوضوء

اسرار وضوء

طہارت کے چار مراتب ہیں۔ مرتبہ اول ظاہر کو ہاتھوں اور پلیدیوں سے پاک کرنا۔ مرتبہ دوم اعضاء کو اللہ تعالیٰ کی نافرمانیوں اور گناہوں سے بچانا۔ مرتبہ سوم دل کو اخلاق مذمومہ اور ذائل سے صاف کرنا۔ مرتبہ چہارم اپنے ضمیر کو ماسوئی اللہ سے صاف کرنا۔ پس جب تک انسان عقائد قاسدہ سے اپنے دل کو پاک و صاف نہ کر لے تب تک وہ اللہ تعالیٰ سے بے غلطی و شکر ایمان و نصف ایمان کا صدق نہیں ہو سکتا۔ کیونکہ ایمان کو دل سے قطع ہے پس جب تک دل خباثتوں سے پاک نہ ہو جائے تب تک طہارت نامکمل ہے۔

یہ ایمان کے مقامات ہیں اور ہر ایک مقام کا ایک طبقہ ہے جو شخص کوئی طبقہ سے نہ گذرے وہ اعلیٰ کو نہیں پہنچ سکتا۔ طہارت کے سر کو کوئی نہیں پہنچ سکتا جب تک دل کو اخلاق مذمومہ سے پاک کر کے اخلاق محمودہ سے معمور نہ کر لے اور اس مرتبہ کو نہیں پہنچ سکتا جب تک اعضاء کو گناہوں اور اللہ تعالیٰ کی نافرمانیوں سے پاک کر کے عبادت و طاعت الہی سے معمور نہ کر لے۔

جو شخص اپنے اوقات عزیزہ کو استیجازت و شوق و شہت و پاؤں سے تھکا ہوا ہوا و صفائی ظاہر و طلب آب جاری میں صرف کرتا اور اپنے باطن کی صفائی کا خیال نہیں رکھتا وہ سوئے شیطان و مرض ملوثی میں جتا ہے جس طہارت ظاہر محض صفائی باطن کی دولت کے لئے مقرر ہوئی ہے۔ شہت و شوق و دوست و پاؤں کی تحریک دل کیلئے ہے۔ ہمارے تمام ظاہری اقوال و افعال حرکات و سکنات کا اثر ہمارے قلب پر باخبر و پزیرا ہے۔ ہاں کہ جو کچھ ہمارے باطن میں مرکوز ہے حرکات ظاہری ہی انکی آئینہ دار ہیں۔ لیکن اسکا یہ مطلب نہیں کہ ظاہر ضروری نہیں ہے۔ مطلب یہ ہے کہ ظاہر کے ساتھ باطن بھی ضروری ہے۔

احکام الہی میں وجوہ و اغراض متعدد وہ ہونے کی حکمتیں ہیں بات چیت سے مسلم ہے

کہ خدا کی پیدا کردہ اور وہ میں مصراعوں و اغراض متعدد ہوتے ہیں ایسا ہی اسکے ادھام میں بھی متعدد نکلتیں و امر اور موز ہیں۔ چنانچہ ایک ایک بڑی بڑی اور وہاں میں اس نے صد ہا و صاف و خواص رکھے ہیں حتیٰ کہ ایک ہی وہ اسے کئی کئی اغراض کا رقیب ہو جاتا ہے لہذا لکھنا ہذا کو روڈ میں جس قدر وضو کی نکلتیں و امر لہ ہم بیان کریں گے وہ سب اس میں پائی جاتی ہیں جبکہ اور بھی بہت سی نکلتیں اس میں اور دوسرے ادھام میں ایسی بھی ہیں۔ جہاں تک اہل علم نہیں پہنچا۔

اول حکمت و وضو ترک غفلت: اب ہم ترتیب اور وضو کی نکلتیں آیات قرآنی و احادیث نبویہ و کتب علم الہدایہ ان سے لیکر اہل علم و خدایہ سے لیتے ہیں لہذا واضح ہو کہ وضو انسان کو ظاہری و باطنی ممانوں اور غفلت ترک کرنے پر آمادہ کرتا ہے اگر نماز غیر وضو کے بذمہ مشروع ہوتی تو انسان اسی طرح پردہ غفلت میں سرشار رہتا ہے اور غافلانہ نماز میں داخل ہو جاتا تو یہی ہوم و شواغل میں پڑ کر نیشے آدمی کی طرح ہو جاتا ہے لہذا اس نشہ غفلت کو اسیر کرنے کیلئے وضو مشروع ہوا ہے تاکہ انسان باخبرہ با حضور ہو کر خدا کے آگے کھڑا ہو۔

دوم حکمت و وضو حفظہ ما تقدّم: مشاہدہ یعنی تہذیب اس امر کے شاہد ہیں کہ انسان کے اندرونی جسم کے زہریلے مواد اطراف بدن سے خارج ہوتے رہتے ہیں اور وہ ہاتھ پاؤں یا اطراف منہ دوسرے پر آکر ٹھہر جاتے ہیں اور مختلف اقسام کے زہریلے پھوڑے و پھینسیوں کی شکل میں ظاہر ہوتے رہتے ہیں اور اطراف بدن کو دھونے سے وہ گندے مواد خارج ہوتے رہتے ہیں۔ یا تو جسم کے اندر ہی ان کا جوش پانی سے ٹھہر جاتا ہے یا خارج ہو جاتا ہے۔

سوم حکمت و وضو حصول حب الہی: یہ نہایت اہمیت الہی ظاہری و باطنی تکالیف کا پابند خدا تعالیٰ کا محبوب بن جاتا ہے۔ چنانچہ خدا تعالیٰ فرماتا ہے اِنَّ اِلٰهَیْیَ بِحَبِّ التَّوٰبِیْنَ وَ بِحَبِّ الْمُسْتَطْہِرِیْنَ تَرْجِمُ۔ یعنی خدا تعالیٰ باطنی و ظاہری طہارت و صفائی کرنے والوں کو دوست رکھتا ہے۔ جس جس صفت سے انسان کو خدا تعالیٰ کا محبوب بننے کا شرف عطا ہو لازم ہے کہ اس سے

تعلق ہے۔

چہارم حکمت و ضو غلبہ علیکیت پر بحکیمیت : جب طہارت کی کیفیت نفس میں راجح ہو جاتی ہے تو ہمیشہ کیلئے نور عقل کا ایک شعبہ اس میں غمر ہوتا ہے اور بحکیمیت کی جارحی کا حصہ مغلوب ہو جاتا ہے۔

پنجم حکمت و ضو از دیاد عقل : طہارت سے طبیعت میں عقل کا وہ حصہ متاثر ہوتا ہے اور جہاں عقل جام ہو گی وہاں حضور الہی بھی جام ہو گا۔

ششم حکمت و ضو عمود نور و سرور : گناہوں اور کسب کے باعث جو روحانی نور و سرور اعضاء سے سلب ہو چکا تھا ضو کرنے سے دوبارہ ان میں عمود کر آتا ہے۔ یعنی روحانی نور قیامت میں اعضاء و ضو میں نمایاں طور پر درخشاں ظاہر ہو گا چنانچہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم فرماتے ہیں ان اعنی یا لولا یوم القیامۃ لغوا صحیحین من اللذ الوضو لمن استطاع منکم ان یتغلیل غراتہ فلیفعل ترجمہ :- یعنی قیامت کے دن میری امت جب توے گی تو وضو کے آثار سے ان کے ہاتھ پاؤں اور ہر سے روشن ہوں گے اسلئے تم میں سے جو کوئی اپنی روشنی بوجھائے وہ بڑھ جائے۔

ایک دوسری حدیث میں آیا ہے یتلغ الحلیۃ من المؤمن حیث یتلغ الوضو ترجمہ :- یعنی جہاں تک وضو کو اپنی پہنچے گا وہاں تک مؤمن کو جنت کا پورہ پناہ دیا جائے گا۔

ہفتم حکمت و ضو قرب ملائکہ : طہارت کی وجہ سے انسان کو فرشتوں کے ساتھ قرب و اتصال ہو جاتا ہے لہذا وہ اس قابل ہو جاتا ہے کہ خدا تعالیٰ کے دربار میں اسکو شرف باریقی عطا ہو۔ کیونکہ طہارت کی وجہ سے انسان کو شیاطین سے بعد ہو جاتا ہے۔

ہشتم حکمت و ضو شعار الہی میں اظہارت و اٹھل ہونا :- چونکہ نماز عظیم الشان

شعار اللہ میں سے ہے۔ لہذا اشعار الہی میں داخل ہونے کیلئے حضور لازم تصور کیا گیا۔ چنانچہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم فرماتے ہیں: *صفاح الصلوة الطہور یعنی نماز کی کئی وہ صوبے۔*

خیم حکمت و وضو عرض حال: رہنمایا کو بغرض عرض مطلب و حال اور ادکام شاہدہ سننے کیلئے دربار شاهی میں جانے کی ضرورت ہوتی ہے اور اس وجہ سے تمام توابع و تلمیحات جو وقت حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے ساتھ تھے ان کی مدد میں شہد کئے جاتے ہیں۔ مگر جیسے عرض مطلب کے لئے زبان اور قلم سننے کیلئے کان چاہئے۔ ایسا ہی حضور دربار کیلئے ہاتھ منہ پاؤں کا دھونا اور دستوں کی لباس کی ضرورت ہے اور یہ سب کچھ مدد سوال و عرض حال ہی میں شہد کئے جاتے ہیں پس جب امراء و مساعین کے حضور میں جاتے یا کسی عمدہ یا کینزہ کام کا قصد کرتے ہیں تو ان اعضاء وضو کو دھونا لینے ہیں کیونکہ ان پر اکثر گروہ فہد میل کیلئے کا اثر ہے۔ ان کی برائی کے ہوتار جتا ہے اور باہم ملاقات کے وقت بھی یہی اعضاء نظر پڑتے ہیں۔

وہم حکمت و وضو حصول تقویٰ و بیداری اعضاء کے ریسے: تجربہ سے شدت ملتی ہے کہ ہاتھ پاؤں کے دھونے سے اور منہ اور سر پر پانی چھڑکنے سے نفس پر بڑا اثر ہوتا ہے اور اعضاء ریسے میں تقویٰ و بیداری پیدا ہو جاتی ہے۔ غفلت اور خواب اور نمانت ہو شئ اس فعل سے دور ہو جاتی ہے۔ اس تجربہ کی تصدیق مذاق اعلیٰ سے ہو سکتی ہے کیونکہ جس کو غشی ہو یا زیادہ اسہال آتے ہوں یا کسی کی فصدلی گئی ہو اسکے اعضاء مذکور پر پانی چھڑکانا تجویز کرتے ہیں۔ چنانچہ علامہ قرظی نے اپنی کتاب موجز میں لکھا ہے: *فانه بعض الحرارة العریزہ و یطوبہا و یقع العشی الحادث عن الکرب الحماسی و غیرہ۔ ترجمہ: یعنی منہ ہاتھ پاؤں پر پانی چھڑکانا حرارت عزیزہ سے اور تازہ اور قوی کر دیتا ہے اور حمام وغیرہ کی تکلیف سے جو ہو شئ پیدا ہو اس میں یہ امر نافع ہے۔ یہی وجہ ہے کہ انسان کو امر ہو اگر اپنے نفس کی کالی اور بڑھ مردگی و سستی، کثافت کو بذر دہر و وضو اور کرے تاکہ خدا تعالیٰ کے حضور میں کھڑے ہونے کے*

لاہتی ہو سکے کیونکہ وہ سدا ہوشیار و بیدار ہے چنانچہ وہ فرماتا ہے لا تاحدہ منہ ولا نوم یعنی خدا تعالیٰ کو غفلت و نیند نہیں بگڑتی۔ بس نفل و کمال اس کے حضور میں کھڑے ہونے کے قابل نہیں ہو سکتے۔ یہی وجہ ہے کہ نشہ و مستی کی حالت میں نماز پڑھنا مشروع نہیں۔ چنانچہ خدا تعالیٰ فرماتا ہے۔ لا تقربوا الصلوٰۃ وانتم سكارى۔ ترجمہ :- نماز کے نزدیک نہ جاؤ جب کہ تم نشہ کی حالت میں ہو۔

کسی نشہ باز کو کسی ظاہری حاکم و بادشاہ کے دربار میں حالت نشہ جانے کی اجازت نہیں دی جاتی ہیں جب کہ نشہ باز و شرابی حالت نشہ و غفلت ایک دنیاوی حاکم کے دربار میں بارہا نہیں ہو سکتا تو جو شخص نشہ باز و نفل جیسی حالت میں ہوتے ہو اسکا حکم الٰہی کے دربار میں کب شرف بارہا ملتا ہو سکتا ہے۔ نشہ کی حالت میں نماز اسی لئے ممنوع ہوئی کہ نشہ باز کو حالت نشہ معلوم نہیں ہو تا کہ منہ سے کیا کہہ رہا ہے اور اسکے دل میں کیا گزر رہا ہے۔ چنانچہ خدا تعالیٰ فرماتا ہے حتی تعلموا ما تقولون۔ یعنی نماز اس حالت میں پڑھو کہ تمہارے دل کو معلوم ہو جو کچھ زبان سے کہہ رہے ہو۔ یعنی ان کلمات سے تمہارے دل کا اوقفہ و رکن ہو گا ضروری ہے جو تمہارے منہ سے نکل رہے ہیں اور جن کو تم اپنی زبان سے پڑھ رہے ہو۔

اختتام و حضور پر دعائے توبہ پڑھنے کا کاراں: وضو میں ساتوں ائمہ اسیوں کو وضو سات ساتم کے گناہوں کو ترک کرنے کی طرف ایمان اور رجوع الی اللہ کی صورت اور مغربی ظاہر و باطن کی امتداد اور زبان حال کی دعا ہے اور اسکے بعد دعائے توبہ کو زبانِ قل سے پڑھنا مست الٰہی کو جذب کرنے کیلئے بہت ہی مناسب و متوکد مدعا ہے کیونکہ جب انسان کا ظاہر پائی سے پاک ہو جاتا ہے تو یہ اس کی فطرت کا کھانا ہے کہ لسانِ دل بھی اسی طرح پاک و صاف ہو جاوے مگر وہاں تو دستِ قدرتِ الٰہی کے سوا کسی بار کی دسترس نہیں ہو سکتی۔

اسی لئے اس مقصد کے حصول کے لئے اسی کے آگے دست پھیلا دیا جاتا ہے۔

التھم احعلی من التواہب واحعلی من المنطھربن ترتبہ۔ یعنی اسے خدا جیسے تائین اور پائین دونوں کے گرد میں کجی۔

جواب اس سوال کا کہ وضو کی ترتیب کیوں مامور بہ ہے: وضو کی ترتیب مخصوص کا خلاف اس لئے ناجائز ہے کہ انسان سے احکام الہی کی مخالفت و گناہ کا عبور اسی ترتیب سے ہوتا ہے جو قرآن کریم میں مذکور ہے۔ لہذا اعضائے وضو کو بترتیب مخصوص دھوانا کو گناہوں اور خدا کی نافرمانیوں سے دھونے اور جنب کرنے کی طرف اشارہ ہے مثلاً جس اندام کے ذریعہ سے انسان سے لوانا گناہ مراد ہو اس کو سب سے پہلے دھونا سب سے پہلے اسکے ترک گناہ اور قویہ کی طرف ایما ہے۔

خدا تعالیٰ نے سب سے پہلے چہرے کے دھونے کا امر فرمایا۔ جس میں منہ، ناک، آنکھیں شامل ہیں۔ پہلے نالی کے ذریعہ زبان کو صاف کیا جاتا ہے جس میں قویہ زبان کی طرف اشارہ ہے کیونکہ انسان کی زبان مخالفت احکام الہی میں سارے انداموں سے سبقت لیتی ہے چنانچہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم فرماتے ہیں۔ اکثر خطایا لن اوم فی لسان یعنی ہنسی آدم سے اکثر گناہ اس کی زبان کے ذریعہ سے صادر ہوتے ہیں اسی سے الفاظ کفر و نجیبتہ نکلتے سب دھم اور صدا قسم کے لاجائز اور بجا کلمات نکلتے ہیں پھر ناک میں پانی ڈال کر اس کو صاف کیا جاتا ہے جو کہ مشروبات منومہ اور دماغی کبیرہ غرور سے قویہ کرنے کی علامت ہے پھر سارے چہرے کو مسح دونوں آنکھوں، پیشانی کے دھویا جاتا ہے جو کہ سواچہ کے سارے گناہوں اور آنکھوں کی بد نظری کے چھوڑنے کی طرف اشارہ ہے پھر دونوں ہاتھوں کو دھویا جاتا ہے جو ہاتھوں کے ترک انویب کی طرف اشارہ ہے کیونکہ جب انسان ہاتھیں کرنا اور آنکھیں دیکھتی ہیں تو ہاتھ پکڑتے یا بھوسے ہیں۔ پھر سر کا مسح کیا جاتا ہے اور اسکو دھویا نہیں جاتا۔ کیونکہ سر سے ہذا نہ کوئی مخالفت صادر نہیں ہوتی بلکہ باطن زبان اور آنکھ اور انکی عبادت کے باعث ہوتی ہے لہذا اسے کھینچنے ایسا علم ماحرودھونے اور نہ

دھونے کے درمیان ہو اور وہ مسخ ہے اور پھر کانوں کا مسخ کیا جاتا ہے کیونکہ آخر لوگوں کو انسان کے کانوں میں جانا اختیار بغیر قصد توڑ آپاتی ہے۔ لہذا ان کیلئے بھی دھونے اور نہ دھونے کے درمیان یعنی مسخ کا حکم ملتا اور یہی مسخ کردن کو کہیں۔

ان ہر سدا اعمائے مسوخ یعنی سرکان شردن کے مسخ میں سرکلی کردن کثی اور عدم سماعت حق کے قبیح اعمال سے توبہ کی طرف ایما ہے۔ دوسری وجہ ان مذکورہ بالا اعمائے مسخ کرنے کی یہ ہے کہ اگر ان کو دھونے کا امر ہو تا تو بجا حرج ہو تا اور لوگ سخت تکلیف میں مبتلا ہوتے کیونکہ جس شخص کو پانچوں نازوں میں پانچ بارہ وضو کی حاجت ہوتی اور اس کو سر پہ پانچ بار پانی ڈالنا پڑتا تو بلاشبہ یہ فعل اس کیلئے سخت حرج میں داخل ہے حالانکہ خدا تعالیٰ فرماتا ہے۔ عا پر بند اللہ لیجعل علیکم من حرج یعنی خدا تعالیٰ نہیں چاہتا کہ تم پر کوئی حرج ڈالے۔

پھر پاؤں کو دھونا جاتا ہے کیونکہ آنکھیں، کبھتی اور زبان بات کرتی اور ہاتھ حرکت کرتے اور کان سنتے ہیں اور سب کے بعد پاؤں چلنے ہیں لہذا پاؤں کو دھونا سب سے آخر ضروری کیونکہ ان سے محالہ الہی سے حرکت سب سے آخر میں سرزد ہوتی ہے۔ پس سب سے آخر ان کی توبہ کی نیت آتی ہے۔ اور تین بار ہر اعمام کو دھونا توبہ کے ارکان تعلق لکھنا مستحب و گناہ ترک اور آئندہ گناہ کو ترک کرنے کیلئے عزم ہالکوم کی طرف ایما ہے۔

حکمت طہارت صفری و کبریٰ اظہار و اختصار: طہارت اس لئے کی جاتی ہے کہ باطن منور ہو جائے اور انس و سرور پیدا ہو اور افکار رویہ دور ہو جائیں۔ اور تشویحات و پرانگہ کی اور پریشانی و افکار رک جائیں۔ پس طہارت کی روح نور باطن و سرور دل و اطمینان خاطر ہے۔

سر اور کانوں کے مسخ کیلئے جدید پانی لینے کی حکمت: وضو میں مسخ سر و کانوں کے لئے جدید پانی لینا اعمائے مسوخ کی تہذیب توبہ کی طرف ایما ہے۔

مٹی اور پانی سے طہارت مشروع ہونے کا لازم: مٹی و پانی سے طہارت کا مشروع ہونا

فطرت مستقر و عقل سلیم کے موافق ہے۔ (۱) خدا تعالیٰ نے پانی اور مٹی کے درمیان قدرۃ و شرف و اخوت ڈالی لہذا ان دونوں کو عبادت کیلئے جمع کیا۔ وجہ یہ ہے کہ آدم اور انکی اولاد کو خدا تعالیٰ نے ان ہی سے پیدا کیا۔ گویا ہمارے والدین اور انکی ذریت کیلئے مٹی اور پانی والدین ہیں۔ (۲) خدا تعالیٰ نے ہر زندہ چیز کی زندگی پانی اور مٹی سے نصرائی لہذا ان ہی سے جسی قوم اور چرندوں پرندوں اور نمودوں کی قوت حاصل کیونکہ مٹی اور پانی کا وجود عام ہے ہر جگہ مل سکتے ہیں۔ (۳) اللہ کا مٹی سے اکوڑ کرنا خدا تعالیٰ کو پسند آتا ہے چونکہ ان دونوں اشیاء کا عقد آپس میں قدرتی طور پر محکم اور قوی ہے لہذا اثر یا بھی انکا آپس میں عقد نصیرانہ خوب و مناسب تر ہے۔

بطور استنباب و وضو کا باقی پانی پینے کا راز : وضو کا چاہا پانی پینے میں یہ راز ہے کہ جس طرح انسان اپنے ظاہری انداموں پر پانی ڈال کر ظاہری انداموں کے گناہوں سے تائب اور طالب مغفرت ہوتا ہے ایسا ہی حوضی کی طرف سے وضو کا تہ پانی سے یہ ایسا ہوتا ہے کہ اسے میرے خدا جس طرح تو نے میرے ظاہر کو پاک کیا ایسا ہی میرے باطن کو پاک و صاف کر۔

وضو کیلئے سات اندام مخصوص ہونے کی وجہ : (۱) انسان کی بناوٹ اور وضع پر غور کرو تو تم پر واضح ہو گا کہ اس کے سات اخلاقی اعضاء جن پر تمام شرائع و قوانین کا دار و مدار ہے وہ عبادت و عین و ذمہ یعنی دورے اور وہ ہری قوتوں والے ہیں۔ اور وہ مندرجہ ذیل ہیں زبان 'آفتخ' کان 'وہلغ' سر جس میں ناک بھی شامل ہے۔ ہاتھ۔ پاؤں۔ شریک۔ یعنی اعضاء ہیں جنکے ساتھ اخلاقی شریعت بہتہ قوانین معاش و معاد کا تعلق ہے۔ اور وہ وہ ہیں جن میں اس طرح ہیں کہ ان ہی سے تو انسان خدا تعالیٰ کی باخبرائی کا مرکب ہو کر اپنے لئے سات اوزن کی کرلوںاتا ہے اور ان ہی کے وسیلے سے خدا تعالیٰ کی فرمانبرداری و اطاعت کر کے سات بہتہ اپنے اعمال حس کے بدلہ میں اور ایک زائد بطور انعام و اکرام ملتا ہے۔ کیونکہ کہ ہم کایہ طریق ہے کہ وہ اپنی خوشی و رضا کے اظہار میں حق و عود سے نجات کا اثر دیا کرتا ہے۔

(۲) دوسروں میں سات انداموں کو دوسرا ساتوں قسم کے اصول جرائم سے تاجب ہونگی طرف ایما ہے۔ چنانچہ آیت انا لله بحب التواہین وبحب المنظہرین میں ہر طہارت کندہ کو باطنی پاکیزگی، صفائی اور ناست اللہ اور ترک گناہ کی طرف توجہ دلائی گئی ہے۔ بس سات انداموں کے لیے وضو کا خصوص ہونا انکو ساتوں قسم کے گناہوں سے دھونے اور بیخات سے دست برداری دینے کی طرف اشارہ ہے تاکہ انسان آہل دوزخ سے نہایت پائے اور قابل و طول بخش ہو۔ اسی امر کی طرف آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم ارشاد فرماتے ہیں *ما منکم من احدینہما فیسبغ الوضوء ثم یطول اللہم ارجلی من التواہین ورجلی من المنظہرین الا فصحت له ابواب الجنۃ النعیمیۃ حل من ابھما شاء*۔ ترجمہ :- یعنی تم میں سے کوئی ایسا شخص نہیں ہے جو پورا پورا وضو کرے اور پھر اللہم ارجلی من التواہین ورجلی من المنظہرین پڑھے مگر اس کیلئے آٹھوں بخشوں کے دروازے کھل جاتے ہیں جس دروازے سے چاہے داخل ہو۔

یہ حدیث اس بات پر دلالت کرتی ہے کہ وضو کا تقرر مخلد اور وجود کے توجہ و صفائی دل کیلئے بھی ہے اور ساتوں انداموں کا دوسرا اسی وجہ سے ہے کہ یہی اعضا درکات جنم اور بھی اعضا درجات بخش کے راستے ہیں۔

رواجت ندرہا میں اعضائے تسہ ہرچہ کاری بد روی در رائے تسہ
یہی سات اعضا ہیں جس کے ذریعے سے نفس نارہ کی پاک و ناہائز حرکات کا صدور ہوتا ہے۔ تسہ نفس تسہ ہی اسے ہر تسہ دوزخ خواں بافت سر

(۳) اندہ اتحالی نے انسان کو ایسی فطرت پر پیدا کیا ہے کہ وہ جو کچھ آنکھ سے دیکھتا ہے کان سے سنتا ہے ناک سے سونگتا ہے زبان سے بگھکتا ہے ہاتھ سے چھوتا ہے اس کا اثر اس کے دل پر پہنچتا ہے اور ایک خیال اس میں پیدا ہوتا ہے جو اسکے افاق پر لڑ کرتا ہے انسان کے دل کے اندر سے نکلنے والی چیزوں کی بہ نسبت وہ چیزیں زیادہ ہیں جو باہر سے اس کے دل کے اندر جاتی ہے۔ پس ٹھیک ٹھیک یوں کہنا چاہیے کہ جو کچھ انسان کے دل سے نکلتا ہے وہ وہی ہے جو باہر سے اسکے دل

میں جاتا ہے پس صفا و دل کیلئے ان اعضاء کا دھوا ہوا سفید ہے جن کا اثر انسان کے اندر دل میں جا کر پیدا ہوتا ہے کیونکہ جیسا کہ ظاہری انداموں کو دھونے سے ان میں نکلا سرور نور پیدا ہوتا ہے ایسا ہی دل میں بھی اثر ہوتا ہے۔

ہر اندام و عضو کو تین بار دھونے کا ارادہ: (۱) ہر اندام و عضو کو تین بار دھونا۔ یعنی ارکان توبہ کی طرف ایسا ہے جو مصدر چہ ذیل ہیں۔
 موجودہ حالت گناہ سے نکلنا۔ غصہ کو کم کرنا۔ آنسو کے لئے ترک گناہ کا عزم یا مجرم۔

(۲) ہر اندام و عضو کو تین بار تک دھونا اس لئے مقرر ہوا کہ تین سے کم دھونے میں نفس پر پورا پورا اثر نہیں پیدا ہوتا اور یہ امر تقریباً میں داخل ہے اور زیادہ دھونے میں افرات و اسراف ہے کیونکہ اگر دھونے کیلئے ایک حد مہین نہ ہوتی تو نفس اور وہی انسان سارا دن ہاتھ پاؤں ہی دھونے میں گزار دیتے اور ان کی نماز کا وقت گزر جاتا۔ یعنی وہ ہے کہ جب ایک صحابی نے آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم سے پوچھا کہ کیا وضو میں بھی اسراف ہوتا ہے۔ فرمایا نعم ولو کنت علی حنظلہ نھو جارا۔ ترجمہ۔ یعنی ریشم و وضو میں بھی اسراف ہوتا ہے خواہ تم نہر چہری کے کنارے پر بیٹھ کر وضو کرو۔

اور کو بعض صورتوں میں انداموں پر بار بار پانی ڈالنے سے پانی تو ضائع نہیں ہوتا مگر متوضی کا وقت ضرور ضائع ہوتا ہے اور وقت کا ضائع کرنا اہلادی اسراف ہے۔

اسلام میں مسواک کرنے کی حکمت: (۱) یوں تو بالعموم دانتوں کو صاف کرنا اور اجلا باکھڑے سے باکھڑے نو آنکھ پر مٹی ہے مگر ساتھ ہی اسکی یہ بات بھی نہایت ہی اہم اور عمدہ ہے کہ جب کسی عالیشان دربار میں جاتا ہو تو گھل از حضور و بہار ظاہری عقل و فہمیت کا ستارہ اور دانتوں کو صاف کرنا بھی بڑا ضروری ہے۔ کیونکہ بات چیت کرتے وقت دانتوں کی زردی اور میل نظر چڑنے سے طہائع سلیمہ کو غرت ہوتی ہے پس اہم الناکین رب العالمین سے بلا کہ کس کا دربار عالیشان

ہو سکتا ہے۔ جس کے لئے یہ اہتمام کیا جائے کیونکہ ان اللہ جمیل بحسب الععمال یعنی خدا تعالیٰ خوب ہے اور وہ ٹوٹی کو پسند کرتا ہے سو جبکہ یہ بات نصیری تو داعیوں کے میل اور وہ نئے دہن کو وہ کب پسند کر سکتا ہے اس وجہ سے اعظم شعائر اللہ یعنی نماز پڑھنے سے پہلے جیسا کہ دیگر تادورات اور میل کیلئے کو صاف کرنے کا اہتمام کیا جاتا ہے ایسا ہی داعیوں کے میل و منہ و مسوزھوں کی حنوت کو رفع کرنا بھی مستحسن ہے کیونکہ ہے کہ نماز سے پہلے مسواک کا استعمال کیا جاتا ہے کیونکہ تعظیم شعائر اللہ کے لئے جو امور چھلانے جاتے ہیں ان سے جسمانی فوائد حاصل ہونے کے علاوہ اثری اجرو ثواب بھی ملتا ہے۔

(۲) اگر یہ حدوں تک مسواک نہ کی جائے تو مسوزھوں اور داعیوں میں جلدی خدا کے رہنے اور میل جم جانے سے منہ میں تقفن اور بدہ ہو جاتی ہے اور جب انسان مسجد کے اندر نمازیوں میں جا کر کھڑا ہوتا ہے تو اسکی ہاتھوں اور رواج طیبہ طاعت اللہ کو اپنا پہنچتی ہے اور یہ امر عند اللہ وعند الناس مقبول و محمود ہے

(وضو خدا کے نام سے شروع کرنے کا ارادہ : جب کہ طہارت نماز حسب فرمودہ مذکورہ کریم مقرر ہوئی تو لازم ہے کہ اسی کے نام و نیت سے شروع بھی ہو تاکہ ثواب ہو العمال بالنیات و

سید الاحمال بالنیات گفت

نیت خیرت سے لکھا جگت

کیونکہ اگر وضو محض حسب عادت حالت غفلت کیا جاوے اور اس میں اطاعت ابراہیمی و قربت الی اللہ کا خیال نہ ہو تو اس پر ثواب حرج نہیں ہوتا اس لئے وضو ہام اللہ مقرر ہوتا تاکہ نماز و نماز قربت الی اللہ کا خیال دل میں پیدا ہو اور انسان غلاب غفلت سے باہر آوے کی وجہ ہے کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم فرماتے ہیں لا وضو لمن لم ینکر اسم اللہ علیہ یعنی جس نے وضو کرنے میں خدا کا نام نہیں لیا اس کا وضو نہیں ہوتا۔ (ابن ماجہ)

جواب اس سوال کا کہ جبکہ منہ ہاتھ پاؤں کو تین تین بار دھویا جاتا ہے تو سر اور کانوں کا مسح تین تین بار کیوں نہ مشروع ہوا: دراصل بیساکہ دیگر انداموں کا دھونا تین تین بار مشروع ہوا ہے لہذا ہی سر اور کانوں کا مسح بھی تین تین بار تھا مگر جب رفع حرج وہاں صاف اور ایک بار باقی رہا۔ شرع منہ لام اعظم، متہ اللہ علیہ مطہرہ پنجابی صلی ۱۹۸۰ء ۱۵۲ صفحہ ۱۰۔

تفصیل اس اجہال کی یہ ہے کہ درحقیقت سر اور کانوں کو نہ دھونا اور نہ مسح کرنا طبع حرج کیلئے مقرر ہوا ہے اور اگر ان کے دھونے میں بھی تکلیف ہوتی تو رفع حرج کی حکمت ضائع ہو جاتی کیونکہ جس اندام پر تین بار ہاتھ پیرے جائیں، وہ قریباً سارا تر ہو جاتا ہے۔

حالت سرد مہلک میں سر اور کانوں کو سردی سے چھانے کیلئے یا "جھام" کیا جاتا ہے پس جھو ایسے مہلک میں پانچ بار روزمرہ سر اور کانوں کو دھونا پڑتا ہے کیلئے چہ امر باعث جاہکست یا مرض تھا۔ یہی وجہ ہوئی کہ بلورا احتیاطاً و حفاظتاً قسم سر اور کانوں کا مسح ایک ایک بار مشروع رہا۔

وضو میں ہر داہنے عضو کو پہلے دھونے کی وجہ اور استنجا اور ناک جھنڈنے کا بائیں ہاتھ سے مخصوص ہونے کا راز: (۱) عضو کو ہر داہنے عضو سے شروع کرنا اس واسطے نصرا ہے کہ ہر داہنے عضو کو بائیں یہ فضیلت ہے اور فضیلت کا کام پہلے فضیلت والے کو ہی دیا جاتا ہے۔ کہ اولاً فضیلت نہیں رہی۔ لہذا جو چیزیں دونوں جانب مستعمل ہیں ان میں تو دائیں عضو کو مقدم رکھا اور جو ایک جانب مستعمل ہیں اگر وہ خاص اور طبیعت کی قسم سے ہوں تو ان کے ساتھ دائیں طرف کو خاص کرنا مناسب ہے یہی قانون خدا تعالیٰ کے ہاں جاری ہے چنانچہ وہ فرماتا ہے: **وَبِذَاتِ كُلِّ ذِي فَضْلٍ فَضْلُهُ** (پارہ ۱۱ سورہ ہود) یعنی خدا تعالیٰ فضیلت والی چیز کو اس کی فضیلت عطا فرماتا ہے۔

(۲) جس کو مرتبہ عدالت و اعتدال کی ورزش منظور ہوتی ہے وہ ہر چیز کو اسکا حق مٹا کر تاپے کھانے پینے اور پاکیزہ چیزوں کیلئے واسطے ہاتھ کو اور تھامستہ دور کرنے کیلئے ہاتھیں ہاتھ کو خاص کر تاپے سے ان ہاتھ میں سے عین عالیشانہ ان رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کماں بحسب التیامین فی الطہور و لرحلہ اذا لرجل وھی انفعالہ اذا لعلل ترجمہ۔ یعنی نبی علیہ الصلوٰۃ والسلام دائیں طرف سے وضو شروع کرنا شاندار کرنا اور بائیں طرف سے ہاتھ پھینکنا فرماتے تھے۔ شارع بعدی نے بھی ان امور کی وجہ یہی فضیلت و شرافت بیان کی ہے۔

(۳) جب کہ یہ بات مسلم ہو چکی ہے کہ انسان کے ہر فعل مناسب و نامناسب کا اثر انسان ہی کے دل پر پڑتا ہے تو اس سے واضح ہوا کہ جس فعل کو اپنے مناسب طریق سے پھیر کر غیر مناسب طور پر کیا جاوے اس کا اثر بھی دل میں غیر مناسب ہی پیدا ہو گا یعنی وجہ ہے کہ دست راست سے احتیاط کرنا کہ چھڑنا اور دست چپ سے غیر عذر کے کھانا پینا سوبہ قوم و موم باعث قیامت گنہگار ہے۔

وضو میں کہنیوں تک ہاتھ دھونے کا راز: (۱) تقویٰ و تصنیف خون دل و جگر کے لئے ہاتھوں کا دھونا مفید ہے چنانچہ مذاق اطباء پر یہ امر تھکی نہیں ہے اور یہ امر جو احسن اسی وقت حاصل ہوتا ہے کہ ہاتھوں کی وہ تمام رگیں جو واسطہ اور بغیر واسطہ دل اور جگر کو پہنچتی ہیں وہ دھونے میں شامل ہو جائیں اور جو رگیں دل و جگر تک پہنچتی ہیں وہ کچھ ہاتھ کی انگلیوں سے اور کچھ کھ دست و ساعد سے اور کچھ کہنیوں سے شروع ہوتی ہیں اسی وجہ سے کہنیوں تک ہاتھ کا دھونا مقرر ہوا تاکہ تمام رگیں دھونے میں داخل ہو جائیں تفصیل اس اجمل کی یہ ہے کہ ہاتھوں کے اندر دھونے سے دل اور جگر کو تقویٰ پہنچتی ہے اور پانی کا اثر رگوں کے ذریعہ سے اندر جاتا ہے۔ کیا وجہ ہے کہ قرآن کریم میں ولیم علی المرافق آیا ہے یعنی وضو میں ہاتھوں کو کہنیوں تک دھوؤ تو جو لوگ لمن سر جری و جراحی میں ماہر ہیں وہ اس بات سے خوب واقف ہیں کہ اکمل رگ

جس کا دوسرا نام بھری انکسار اور تیسرا انفرابدن ہے جب کبھی اولیٰ بیکاری، جلدی بیماریوں کے رخی کرنے اور تھنہ خون کے لئے اس رگ کا خون نکالنا شروع کرتے ہیں تو کبھی کے برابہ سے ہی رگ پر نشتر لگا کر خون نکالا کرتے ہیں۔ کیونکہ اس جگہ میں یہ رگ ظاہر و باہر بھی ہوتی ہے۔ نیز طاہر اول و بیکر کے اس کا اثر سارے بدن پر حاوی بھی ہے جس ہاتھوں کا دھونا کھینچنا تک بھی اس لئے مقرر ہوا کہ سر الیدن کے ذریعہ سے پانی کا اثر پر راجع را خدر چھا جائے۔

(۲) جب کہ وضو میں اصل اطراف بدن کا دھونا مقرر ہے تو ہاتھوں کا کھینچنا تک دھونا اس لئے ضرور کہ اس سے کم کا اثر نفس انسانی پر کچھ محسوس نہیں ہوتا کیونکہ کبھی سے کم وضو ناقص ہے۔

وضو میں ناک کو صاف کرنے کی حکمت: (۱) برذہب و ملت کے لوگ ناک کی بلغمی رطوبتوں کو رخی کرنا پسندیدہ نظر سے دیکھتے ہیں۔ اگر ناک کو اندر سے نہ دھویا جائے تو ناک کی بلغمی بلغم سے دماغ میں برا اثر پہنچتا ہے جو نہ صرف صحت بگاڑتا ہے نیز اہل عرب کے عرف میں ناک کے لفظ کو عزت اور بلائی کے عمل پر استعمال کرتے ہیں چنانچہ جب وہ کسی کے لئے بددعا کرتے ہیں تو کہتے ہیں لا عیہ یعنی خدا تعالیٰ اس کی ناک خاک آلود کرے۔

اس کا مطلب یہ ہے کہ خدا اس کو عزت و بلائی کے مقام سے ذلت میں گرائے پس ناک کو دھونا اپنے کبر و غرور کو چھوڑنے اور تہ امتحالی کی درگاہ میں اپنی کسر نفسی دکھانے کی طرف ایما ہے۔ (توضیحات کیے)

وضو میں پاؤں کو نشتوں تک دھونے کا راز: (۱) پاؤں کو نشتوں تک دھونے میں یہ راز ہے کہ وہ رگیں جو پاؤں سے دماغ کو پہنچتی ہیں وہ کچھ پاؤں کی انگلیوں سے اور کچھ نشتوں سے شروع ہوتی ہیں اور ان سب کو دھونے میں شامل کر لینے سے دماغ کے حالات وہ یہ ٹھہ جاتے ہیں یعنی وہ ہے کہ پاؤں کا دھونا نشتوں تک وضو میں مقرر ہوا اور حلکم الی الکعبین۔ یعنی پاؤں کو

نخنوں تک دھو لو۔

(۲) چونکہ پاؤں اکثر نخنوں تک ننگے رہتے ہیں اور ان پر اجرام مودہ یہ لود گرد و فہار ج ضرر سے غذا پاؤں کو نخنوں تک دھونے کا امر ہوا۔

(۳) پاؤں کو نخنوں تک دھونے میں یہ راز بھی ہے کہ اس سے تمہارا تمام عضو ہے سزا سزا سے محفوظ رہتا ہے اور اس کا اثر بڑا مستجاب ہے۔

حالات عدم موزہ و عضو میں پاؤں کو دھونے کا راز اور موزہ کے حکم نہ ہونیکا راز: پاؤں کا ظاہر حال اس امر کا متعلق ہے کہ جب پاؤں پر موزہ نہ پہنے ہوں تو انکوہ عضو میں دھونا ہی لازم ہے کیونکہ ننگے پاؤں پر گرد و فہار اجرام پڑتے اور جلتے رہتے ہیں اسلئے حالات راجحی ان کا دھونا ہی فرض ہے ہم گھل گھل میں لکھ چکے ہیں کہ اطراف بدن کے انداموں کے دھونے کا امر اس لئے بھی ہوا کہ جسم کے اندرونی حصہ کے زہریلے مولد خارج ہو کر ان میں جمع ہوتے رہتے ہیں اور ان کی سمیت جوش بد کہ خطرناک امراض کی شکل میں ظاہر ہوتی ہے اور دھونے سے جوش سمیت دھیمانہ جاتا ہے یا کہ لود مسلمات خارج ہو جاتا ہے اور جب بہت اطراف بدن کو دھویا نہیں جاتا تو گرد و فہار پڑنے سے مسلمات بد ہو جاتے ہیں اور مسلمات کے بد ہونے سے زہریلے مولد پھر اندر کی طرف جا کر موجب لیزہ اور ہوتے ہیں پس عدم موزہ کی حالت میں دھونا مقرر ہوا تاکہ اس بد انگلی میں جو اجرام ضعیفہ لود گرد و فہار جمع ہوا ہے وہ زائل ہو جاوے جیسا اس سرنی میں اول بیان ہو اور موزہ کی دو حالتا جازت نہ ہونی تاکہ جو ضعیفہ بد سے ہاتھن سے ظاہر کی طرف آکر جمع ہوئے ہیں وہ زائل ہو جاویں جیسا اس سرنی میں وہ سرنی سخت بیان کی گئی ہے اور یہ دونوں فائدے پاؤں پر عدم موزہ رکھنے میں کہ اس حالت میں وہ کبھی نہ دھلا یا پاؤں پر محض تھوڑے پانی سے مسح کرنے میں حاصل نہ ہوتے یہی وجہ ہے کہ مسح موزہ کی امتحانی مدت تین دن راست سے زیادہ مقرر نہیں ہوئی ہمسہ موزہ پر مسح کرنے والے مقیم کو تو ہر ایک دن اور راست کے

عد اور مسافر کو ہر تین دن اور رات کے بعد دھونے کا امر ہوا نیز شخص صبح صرف توہ و نفلت کی طرف تو توجہ دلا جائیگا دھونے میں تقویت دماغ اور صفائی جلد و انکشاف مساوات بھی مقصود ہے۔ غلام یہ کہ اگر پاؤں پر صرف مساج ہی ہوتا تو اور جو باقی اہم مقصود ہیں وہ حاصل نہ ہوتے۔

طہارت معنوی پر عام نظر : اخلاق فاسدہ اور اہم باطلہ سے پاک رہنے کا سبق سکھانا اسلام کا خاصہ ہے کیونکہ اہم باطلہ و اعمال و اخلاق فاسدہ نفس انسانی کو ایسے گندہ کرنے والے ہیں جیسے انسانی جسم غلاتوں اور نہایتوں سے پاک ہو جاتا ہے اس لئے اسلام نے ان سب سے پاک و صاف ہونے کا امر فرمایا اسی طہارت معنوی میں یہ بھی داخل ہے کہ شہوت بجا حرام نفسانی کی آلودگی اور رویت نفس یعنی خود پھینسی سے پاک و صاف ہو جائے کہ اس حکم الہی میں تمام لوگوں کے ساتھ شامل ہونے سے انسان کو اپنے اور دوسرے کے درمیان مساوات اور برتری حقوق کا پتہ لگتا ہے خواہ کوئی چھوٹا اور بڑا ہو اسی طرح کسی کے حق ظلمی نہ کرنا بھی طہارت معنوی میں داخل ہے اور طہارت جسم میں اس طہارت باطن کی طرف بھی اشارت ہے چنانچہ مختصر اچھو اشارت لکھے جاتے ہیں۔ طہارت معنوی کے بھی اور طہارت کبریٰ کے بھی۔

طہارت دست : حسب فرمود نبوی کریم صلی اللہ علیہ وسلم طہارت شرط ایمان ہے پس موسم کو لازم ہے کہ طہارت کے معنی مقصود و مراد مطہرہ کو سمجھ کر اس کی عظمت شان کا حق جھالائے ہاتھوں سے کسی ایسی حرام چیز کو پکڑے اور لینے سے پاک و صاف و ظاہر رکھتے ہیں جس میں حکم الہی کی مخالفت ہو۔ باقی کسی کو نہ دے نہ کسی کا مال چھینے نہ کسی کو ضرر دینے کیلئے دست درازی کرے۔ چنانچہ ایک حدیث شریف میں اسی طرف ایما ہے۔ المسلم من مسلم سلامتہ من لسانہ و یدہ۔ ترجمہ۔ یعنی مسلمان وہ ہے جسکی زبان اور ہاتھ سے مسلمان سلامتہ ہیں۔

طہارت واہن : جب منہ کو صاف کرنے کیلئے منہ میں پانی ڈالے تو اس وقت حرام چیزوں کے

کھانے پینے اور حرام باتیں منہ سے نکالنے کی طہارت کو طحاہ کے معنی ایسے اعمال کو منہ سے نکالنے اور ایسی اشیاء کے کھانے کو اپنے منہ سے نفی کرنے کیلئے مستعمل ہے تاکہ عیب نہ ہو کہ اسکا منہ روحانی نہایت سے آلودہ ہو کر مستحق لعنت ہے اور ایسی چیزوں کے کھانے پینے اور ایسے اقوال منہ سے نکالنے کیلئے حرام ہے جن سے اس کو خدا تعالیٰ کی طرف سے ثواب ملے اور عذابِ اعلیٰ میں مستحقِ عتاب نہ ہو۔

طہارت بیہنی (ناک) : جب ناک کو پاک کرنے کیلئے ناک میں پانی ڈالے تو غیر اور بھلائی کی خوشبو سونگھنے کیلئے آلودہ ہو اور بدی اور شرارت کی بو کو بھیگ دے ناک کی طہارت میں نیک و خود بیہنی سے پاک رہنے کو طور کر کیونکہ نیک و خود بیہنی عدا ایسے امور ہیں جن سے انسان میں اپنے ہی ہستی نوع پر بندگی اور بزدائی چاہنے کا اور باقریبانی الہی کا خیال پیدا ہو جاتا ہے۔

طہارت چہرہ : اپنا چہرہ دھونے کے وقت ہوائے الہی سے اپنی تمام امیدیں اور توجہات ایسے اعمال چھاننے سے منقطع کر دے جن کا رخ اور جو رخ خدا تعالیٰ کی طرف نہ ہو اور اپنے منہ پر تپ شرم ڈالے اور بے شرمی سے پردہ شرم کو خدا تعالیٰ اور لوگوں کے آگے سے نہ اٹھائے اور اپنی آبرو کو غیر اللہ کے لئے صرف نہ کرے۔

طہارت گروں : مساکروں کے وقت حرم ہوائے نفسانی سے اپنی گردن کو پھرانے پر اور خدا تعالیٰ کے احکام کی فرمائیں و اطاعت کا حق ادا کرنے پر اور گردن کھٹی کا خیال چھوڑنے پر آلودہ ہو چاک ایسی اشیاء کے حلقہ اطاعت سے اپنی گردن چھڑا کر آزاد ہو جائے جو حضورِ الہی سے مانگ ہیں۔

طہارت پشت : چہرہ دھونے کے وقت کلیہ ریسوائی اللہ سے اور کسی حق کو دماغ کو غیبت

کرنے سے دست برداری کوہ نظر رکھے۔

طہارت سینہ : بیہ دھونے کے وقت اپنے سینہ سے مخلوق الہی کے ساتھ کینہ کے کرنے کے لئے اور ان کو دھو جانے کے خیالات کو نکال دالے۔

طہارت شکم : اپنے شکم دھونے کے وقت اشیاء حرامہ مشتبہہ کھانے اور پینے سے طہارت شکم کوہ نظر رکھ کر ایسی نجاستوں سے اپنے شکم کو پاک رکھے۔

طہارت شرمگاہ و ران : شرمگاہ و ران دھونے کے وقت تمام امور ممنوعہ کیلئے قلعین اور اعضاء سے اپنے آنکھ جانے۔

طہارت قدم : پاؤں دھونے کے وقت حرم و ہوائے نفسانی کیلئے چلنے اور ایسے امور کی طرف قدم زنی کرنے سے اپنے قدموں کو چھانے جو اس کے دین میں مضربوں اور جن سے کسی مخلوق الہی کو ضرر پہنچے۔ خود لہراں بندھنا کیلئے سے کہ خلق کو جو دوش در آسانے مست

باب التیمم

تیمم کو خلیفہ وضو غسل ٹھمرانے کی وجہ

(۱) خدا تعالیٰ کی عبادت یوں جاری ہے کہ بندوں پر جو چیز دشوار ہوتی ہے وہ ان پر آسان و سہل کر دیتا ہے اور آسانی کی سب سے بڑھ صورت یہ ہے کہ جس کام کے کرنے میں وقت اور اسکو ساقط کر کے اسکا بدل کر دیا جاوے تاکہ اس بدل سے ان کے دل ٹھکانے رہیں اور جس چیز کا وہ نایب و درجہ التزام کر رہے تھے وہ فیض اس کے ترک کر دینے سے جبکہ بدل نہ ہو تا ان کے دل متروک نہ رہیں ان نہ ہوں اور ترک طہارت کے عاری نہ ہو جائیں لہذا خدا تعالیٰ نے موقع ضرورت تیمم کو خلیفہ وضو غسل ٹھمرانے اور ٹھمرانے طہارت کے تیمم بھی وجہ مشابہت کے ایک قسم کی طہارت ٹھمر کیا۔

وضو و غسل کے تیمم میں فرق نہ ہونے کی وجہ : علامہ ابن قیم اس امر کے متعلق تحریر فرماتے ہیں ۔ واما كون تیمم كتيمم المحدث فلما سقط مسح الرأس والرجليں بالتراب عن المحدث سقط مسح البدن كله بالتراب عنه بطريق الأولى اذ هي ذالك من المشقة والحرج والعسر ماينا قض رحصة التيمم ويد خلل اكتمر المحلوقات على الله في شبه اليهانم اذا تمرغ في التراب فالذي حاءت به الشريعة لا مزبد في المحسن والحكمة والعدل عليه والله الحمد . ترجمہ ۔ یعنی جنسی اور بے وضو کا تیمم یکساں ہونے میں یہ حکمت ہے کہ جب کہ بے وضو آدمی کے لئے تیمم میں ہاتھ اور منہ پر مسح کرنے کے بعد سر اور پہاں کا مسح ساقط ہو گیا تو ان ہی اصحاً یعنی ہاتھ اور منہ پر مسح کرنے کے بعد جنسی کیلئے سارے بدن کا مسح درجہ اولی ساقط ہو جاتا ہے۔ کیونکہ سارے بدن کا مسح کرنے میں تکلیف اور حرج ہے جو رخصت تیمم کیلئے معافیہ مناقض ہے اور سارے بدن پر جنسی کو منی ملنے میں خدا تعالیٰ کی افضل مخلوقات یعنی انسان کو خاک میں لوٹنے میں برائے کے ساتھ مشابہت ہوتی ہے پس جو کچھ شریعت حق نے مقرر کیا ہے منسور خوبی اور عدل میں اس سے بجز کوئی چیز نہیں ہو سکتی۔

منی سے تخصیص تیمم کی وجہ : حضرت علامہ ابن قیم رحمۃ اللہ علیہ نے اپنی کتاب احکام الملوقمین عن رب العلمین میں منی سے تخصیص تیمم کے سوال پر کچھ جوابات لکھے ہیں جنکا خلاصہ ترجمہ ہم یہاں اردو میں لکھتے ہیں۔

سوال : تیمم ایک وجہ سے خلاف عقل ہے کیونکہ منی خود آلودہ ہے وہ نہ پلیدی اور میل کو دور کرتی ہے اور نہ بدن اور کپڑے کو پاک کر سکتی ہے۔

جواب : اللہ تعالیٰ نے اس عالم کی ہر چیز کو منی اور پانی سے پیدا کیا۔ ہمدی سرشت کی اصل یہی

دونوں چیزیں ہیں جن میں سے ہمارا نشوونما ہماری تقویت و ترقی ہوتی ہے جس کو ہم کو مشاہدہ اور باہر سے پس جب کہ خدا نے اس مٹی اور پانی کو ہمارے نشوونما و تقویت خدا کے اسباب نصیرانے تو ہمارے پاک اور سحر سے ہونے کے لئے اور مہدات میں مدد لینے کیلئے بھی انہیں کو وضع فرمایا ہے کہ مٹی وہ اصل چیز ہے جس سے ہنسی تو وہ نصیرہ کی پیدائش ہوتی ہے۔ اور مٹی اور پانی ہر چیز کی زندگی کا باعث ہے۔ الغرض اس عالم کی تمام اشیاء کی پیدائش کی اصل یہی دونوں چیزیں ہیں مٹی اور پانی جن سے خدا نے اس عالم کو مرکب کیا ہے پس جب کہ ہماری ابتدائی پیدائش اور تقویت اور نشوونما مٹی اور پانی سے ہوئی ہے تو جسمانی روحانی پاک کیلئے بھی انہیں کو خدا نے نصیرا لیا۔

(۲) عادت پایداری و گندگی کو زائل کرنے کا درجن پانی سے بھرت ہے اور جب حالت مرض و عدم وجود آب حذر لاحق ہو جاوے تو طہارت کیلئے پانی کے دوسرے ساتھی اور ہسر یعنی مٹی کو بہ نسبت کسی دوسری چیز کے مقرر کرنا زیادہ مناسب ہے۔

(۳) تخم کے لئے زمین اس واسطے خاص کی گئی ہے کہ زمین کہیں بھی ناپید اور مفلوہ نہیں ہوتی تو ایسی چیز اس قابل ہو سکتی ہے جس سے لوگوں کی وقت درغ ہو سکے۔

(۴) منہ کو خاک آلود ہونا کمر نفس و انکسار و عاجزی پر دلالت کرتا ہے اور یہ امر خدا تعالیٰ کو بہت پسند ہے سو تخم کیلئے مٹی استعمال کرنے میں یہ خاکساری اور دلالت پائی جاتی ہے اور دلالت کی شاننا طلب غلو کی مناسب ہے یہی وجہ ہے کہ مسجد کرنے میں اپنے منہ کو مٹی سے نہ جھانا پسندیدہ اور مستحب نصیرا لیا گیا ہے۔

تخم میں دو اقساموں کے مخصوص ہونے کی وجہ اور پاؤں اور سر پر مسح تخم مشروع نہ ہونے کا راز: تخم دو اقساموں ہاتھوں اور منہ کیساتھ مخصوص ہونا اور پاؤں اور سر پر تخم مشروع نہ ہونا اس وجہ سے ہے کہ مٹی کا سر پر لگانا پسندیدہ نہ مکررہ امر شکر کیا جاتا ہے۔ کیونکہ مٹی کا سر پر ڈالنا مصائب اور تکالیف کے وقت لوگوں میں سروج ہے اس وجہ سے سر پر مٹی

مانا مشروع نہیں ہوا کیونکہ یہ امر عند اللہ و عند الناس مکروہ و ناپسند ہے اور تیمم میں بیویوں پر ہاتھ پھیرنے کا اس لئے حکم نہیں دیا گیا کہ بیوی تو خود ہی کروغیرا سے نکال دیتے ہیں اور حکم ایسی چیز کا دیا جاتا ہے جو پہلے سے نہ پائی جاتی ہو تاکہ نفس میں اس کے کرنے سے حیرت پائی جاوے۔ حضرت ابن قیم جوزی رحمۃ اللہ علیہ منہم کے دو انداموں کے ساتھ مخصوص ہونے کی وجہ ذیل میں تحریر فرماتے ہیں۔

و اما کونہ فی عضوبین طفی غایۃ الموافقة للقباس والحکمة فان وضع المراب علی الرؤس مکروه فی العادات واما یفعل عند المصائب والنواب والرجلان محل ملائسة المراب فی اغلب الاحوال و فی تریب الوحد من الخسوع والتعظیم لہ والذل لہ والانکسار لہ ما هو من احب العادات الیہ والعبیہ للعبد. (اس عبارت کا کثیر ترجمہ اور لکھا جاتا ہے)

(۲) دوسری وجہ یہ ہے کہ تیمم صرف دو ایسے مقبول انداموں میں مشروع ہے جو وضو کرنے میں عام دھونے جاتے ہیں اور دو مسموح انداموں کو تو ساقا ہی کر دینا مناسب ہے کیونکہ پاؤں پر موزے پہن کر اور سر پر ہر مال میں مسح ہوتا ہے پس جبکہ دو مقبول انداموں کیلئے صرف مسح اکتفا کیا گیا تو دو مسموح انداموں کو تو ساقا ہی کر دینا مناسب ہے کیونکہ اگر ان پر بھی مٹی سے مسح مشروع ہوتا تو اس سے حکمت سوائے آسانی میں فرق آتا جو مصلحت الہی کے برخلاف ہے۔

باب الغسل

حائض و جنبی کے مسجد میں داخل نہ ہونے کی وجہ

جنسی اور حائض کو مسجد کے اندر جانا پسے یا ہانکا ہوا کہ مسجد نماز اور ذکر الہی کرنے کی جگہ ہے اور شعائر الہی میں سے ہے اور کعبہ کا ایک نمونہ ہے اس لئے اس کے اندر جانا ایسی ناپاک حالت میں ناجائز ہوا۔ ومن یعظم شعائر اللہ فالہا من تقوی القلوب.

جس مکان میں کتاب یا جنبی یا تصویر ہو اس میں رحمت کے فرشتوں کے آسے ہیں

آنے کی وجہ: آنحضرت فرماتے ہیں: لا يدخل الملاحة بناه صورة ولا كلب ولا حب یعنی جس مکان میں تصویر ہوئی ہے نہ اس میں فرشتے آتے ہیں اور نہ جس میں کتا ہو اور نہ جس میں جنسی آدمی ہو اس سے مراد یہ ہے کہ ان چیزوں سے فرشتوں کو عزت ہے کیونکہ فرشتوں کے اندر جو صفات پائی جاتی ہیں یعنی نگہیں اور نہایت ظاہری و معنوی شہادت پرستی اور اس کے عقائد سے عزت ہے سب چیزیں ان صفات کی ضد اور کی حامل ہیں اس لئے ضدین ایک ہی نوع نہیں ہو سکتے ہیں۔

کافر کے مسلمان ہونے کی وقت اسکے لیے غسل کرنے کی وجہ: ایک شخص اسلام لایا تو اس کو آنحضرت ﷺ نے نماز کا امر فرمایا اور دوسرے شخص کو ارشاد کیا کہ کفر کی علامت کو اپنے آپ سے دور کر دے یعنی سر منڈا دے اس میں بھی یہ ہے کہ اس شخص کو ظاہر میں بھی ایک نئی چیز سے باہر آنا تھا غسل ہو جانے پر نیز اسکو آگاہ کیا گیا کہ جیسو اپنے ظاہر و باطن کو غسل دینا ہے ایسا ہی اپنے باطن کو بھی تمام سبب عقائد کا باطل سے دھو ڈالے۔

طہارت حیض کے بعد غسل واجب ہونے کی وجہ: حیض کے خون کو نہ اتھانی نے قرآن کریم میں لڑی یعنی گند کی فرمایا ہے پس جس گند کی سے باہر جسم آلودہ ہو اس سے غسل انسانی پاک ہو جاتا ہے۔ دوسرا ہر پان خون سے لطیف پنوں کو ضعف پہنچتا ہے اور جب غسل کیا جاوے تو ظاہری اور باطنی طہارت حاصل ہوتی ہے اور پشمے تڑا تازہ ہو جاتے ہیں اور ان میں وہی قوت خود کو آتی ہے۔

اسی گندگی کے سبب خدا تعالیٰ نے قرآن کریم میں عورت کے حیض حالت کے حقائق ارشاد فرمایا ہے: فاعزلوا النساء فی المحيض ولا تقربوهن حتی یتطهروا ترجمہ:۔۔ یعنی حیض کے دنوں میں عورتوں سے کنارہ کرو اور ان کے نزدیک مت جاؤ۔ یعنی ان سے صحبت نہ کرو چونکہ کہ وہ حیض سے پاک نہ ہو لیں۔

نہی و ممانعت کیلئے قرآن کریم اور نماز چھنا جائز ہونے کی وجہ جنامت اور غسل دونوں ایسی حالتیں ہیں جہو قرب الہی کے ساتھ منافات اور جن میں نہایت سے احتیاط ہے اور نماز قرآن کریم کا چھنا خدا سے ہم نوا ہونے کا موجب ہے اور نہ آئی تکلفی کے شرف سے انسان جب ہی مشرف ہو سکتا ہے کہ ہر قسم کی لباسوں سے پاک و مطہر ہو کیونکہ خدا پاک ہے اسکو پاک کی سے عزت ہے۔

منشی نکلنے سے غسل واجب ہونے کی وجہ اور بول و براز سے عدم وجوب غسل کا راز: (۱) خروج منی سے غسل کا واجبہ لازم ہو اور بول سے واجب نہ ہونا شریعت اسلامیہ کی ذمی خوبیوں سے اور رحمت و حکمت و مصلحت الہی سے ہے کیونکہ منی سارے بدن سے نکلتی ہے اسی لئے خدا تعالیٰ نے منی کا نام سلالہ رکھا ہے چنانچہ خدا تعالیٰ فرماتا ہے

وَاللّٰهُ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ صَلَٰصَتِمْ طٰیْنٍ۔ یعنی ہم نے پیچہ اکیا انسان کو مٹی کے پھینے ہوئے جویر سے صحران میں نکھا ہے سلالہ مصلیٰ انچہ ہر دن نکھد و شوہرا چیز سے و آب پشت مردم بس منی انسان کے سارے بدن کا ست ہوتا ہے جو بدن سے رواں ہو کر ہلا آخر پشت کے راستہ سے پھٹے آتی اور عضو کامل سے خارج ہوتی ہے اس کے نکلنے سے بدن کو بہت ضعف پہنچتا ہے اور بول و براز صرف کھانے پانی کے فضلے ہوتے ہیں جو مثانہ و معدہ میں جمع رہتے ہیں اسلئے منی کے نکلنے سے بہ نسبت خروج بول و براز کے جسم کو بہت کمزوری لاحق ہوتی ہے اور پانی کے استعمال سے وہ کمزوری نہیں رہتی۔

(۲) جنامت سے جسم میں گرانی و کالی و کمزوری و غفلت پیدا ہو جاتی ہے اور غسل سے دل میں قوت و نظادہ سرور اور بدن میں ہکساری پیدا ہوتی ہے چنانچہ حضرت ابوارد رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں کہ غسل جنامت کے بعد میں ایسا معلوم ہوا کہ گویا اپنے لوہر سے ایک پہاڑ اٹھا دیا یہ ایسا امر ہے جس کو ہر ایک سلیم طبع اور صحیح فطرت والا جانتا ہے۔

(۳) جنامت سے انسان کو رواں طیبہ یعنی فرشتوں سے بعد و کمزوری پیدا ہوتی ہے اور جب غسل

کرتا ہے تو وہ بعد اور دوری بہت چلتی ہے اس لئے بہت سے صحابہ کرامؓ سے مروی ہے کہ جب انسان سوتا ہے تو اس کی روح آسمان کی طرف چڑھتی ہے اگر پاک ہو تو اس کو سجدہ کرنے کا امر ہوتا ہے اور اگر جہنم میں ہو تو اس کو سجدہ کا اذن نہیں دیا جاتا کیونکہ وہ ہے کہ نبی علیہ الصلوٰۃ والسلام نے فرمایا ہے کہ جہنمی جب سونے لگے تو وضو کر لے۔

(۴) باب انسان جماعت سے فارغ ہو جاتا ہے تو اس کا دل انتہائے اور عقلی کی حالت میں ہوتا ہے اور اس پر عقلی اور فہم ساطاری ہو جاتا ہے اور اپنے آپ کو نہایت عقلی اور کھٹن میں پاتا ہے اور جب دونوں قسم کی نہایتیں دور ہو جاتی ہیں اور اپنے بدن کو مٹا کر عقل کر جاتا ہے اور اچھے کپڑے بدل کر خوشبو لگاتا ہے جب اسکی عقلی دور ہو جاتی ہے اور جائے اسکے بھگت و طو شی معلوم ہوتی ہے۔ یہی حالت کو حدت اور دوسری کو طہارت کہتے ہیں۔

(۵) اما ذوق طبیوں نے لکھا ہے کہ جماع کے بعد غسل کرنا بدن کی عقلی شدہ قوتوں اور کمزوریوں کو لوٹا دیتا ہے اور بدن روح کیلئے نہایت مایع اور مفید ہے اور جماعت میں رہنا اور غسل نہ کرنا بدن روح کیلئے سخت مضر ہے اس امر کی خوبی پر عقل و فطرت سیرہ کافی گواہ ہیں نیز اگر شارع علیہ السلام غروب کو دل حدت سے غسل کرنا لازم ٹھہرائے لوگوں کو سخت حرج ہو گا اور محنت اور مشقت میں پڑ جاتے جو کہ حکمت اور رحمت و صلوات الہی تکلف ہے۔

(۶) جماع میں غلظت ہوتا ہے اور اس سے ذکر الہی میں غلظت ضرور ہو جاتی ہے اس لئے اسکی صفائی کیلئے غسل کیا جاتا ہے۔

(۷) منی کے نکلنے سے بدن کے تمام مسامات کھل جاتے ہیں اور کبھی من سے پینہ نکلتا ہے اور پینہ کے ساتھ اندرونی حصہ بدن کے گندے مواد بھی خارج ہوتے ہیں جو کہ مسامت پر آکر ٹھہر جاتے ہیں اگر ان کو دھویں جادے تو خطرناک امراض پیدا ہونے کا اندیشہ ہوتا ہے۔

باب نوا قرض الوضوء والتیمم

خروج بول ویر از اور متع سے امر وضوء کی وجہ

خروج ریح بول ویر کی بدولہ سے اندرونی حالت نفس کو ایک قسم کی نہایت دیبوست و ضعف لاحق ہو جاور ملائکہ سے بعد ہو جاتا ہے اور شیاطین و جنات اسکو گھبر لیتے ہیں کی وجہ ہے کہ آنحضرت ﷺ نے خروج ریح بول ویر کو وقت التیمم یعنی احوال یک من الخبث و النہایت اور نفراک پڑھنے کا امر فرمایا یعنی اسے میرے علا میں نہایتوں اور جنوں اور شیاطین سے آپ کی پندامائگانوں اور تیری مقررہ چاہتا ہوں۔ پس اسی کے بعد امر وضوء کا ہوا کیونکہ وضوء سے نہایت دیبوست و ضعف دور ہو جاور ملائکہ سے قرب اور شیاطین و جنات سے دوری حاصل ہوتی ہے۔

بول ویر از اور جماع کرنے کے وقت خانہ کعبہ کی طرف پشت اور منہ کرنا منع ہو سکی حکمت : (۱) خانہ کعبہ خدا تعالیٰ کے شعائر میں سے ہے پس خانہ کعبہ کی تعظیم خدا تعالیٰ کی تعظیم ہے اور اس میں کی خدا تعالیٰ کی تعظیم میں کی ہے۔ اس لئے خانہ کعبہ کا بیج فرض ہو گیا اور اس کی تعظیم کا حکم دیا گیا کہ بھر صفائی اور طہارت کے اسکا طواف نہ کیا کریں لہذا میں اسکے سامنے کھڑے ہوں ضرورت پڑی یعنی بول ویر از جماع کے وقت اسکے سامنے نہ ہوں نہ اس کی طرف پشت کریں کیونکہ یہ امر بے ادبی میں داخل ہے وجہ یہ کہ جس سے عدا بے ادبی سرزد ہوتی ہے اس کا دل سخت ہو جاتا ہے اور انگلی اس سخت دلی کا اثر اسکے متعلقین و اقارب پر بھی سراجت کرتا ہے۔

بے لوب سخاوت خودداشتید :۔۔۔ پیر آتش در ہر آفاق زد

ومن یعظم شعائر اللہ فانما من تقوی القلوب۔ یعنی خدا تعالیٰ کے نیکوں کی تعظیم

لوپ کرنا ان لوگوں کا کام ہے جنکے دلوں میں تقویٰ ہے لہذا آنحضرت ﷺ فرماتے ہیں۔ اذا اهتم العاطف فلا تستقبلوا القبلة ولا تستدبروها یعنی جب تم جانے فرانت میں لوگو تو قبلہ کو نہ منہ کرو اور نہ اسکو پشت کرو۔

(۲) اس میں یہ حکمت بھی ہے کہ دل کے اندر خدا تعالیٰ کی عظمت کا ہونا چاہئے کہ ایک باطنی امر ہے اس واسطے ظاہر میں بھی کوئی قرینہ جو تقسیم قلب کا قائم مقام ہو پلایا جانا ضروری ہے۔ پس جبکہ قبلہ کی طرف منہ کرنا تقسیم قلبی اور یہ الٹی میں بیخ خاطر ہونے کا قائم مقام ہے اور قائم مقام ہونے کی یہ شرط ہے کہ یہ بیخ تقسیم الٹی کے لئے مخصوص رہے پس جو بیخ نہ تہذیب کی بیخ کے داخل منافی اور اس کی ضد ہے یعنی حالت پانچاندہ پیشاب عیاش ایسی حالتوں میں قبلہ کو نہ منہ کیا جائے نہ پشت کیونکہ اس میں بے لوثی ہے۔

نہیند سے وضو ٹوٹنے کی وجہ : نبی علیہ الصلوٰۃ والسلام فرماتے ہیں العیان وکساء المسند فانہ اذا اصطجع اسرحت مفاصلہ یعنی سرین کا بند آنکھیں ہیں کیونکہ جب گرمی لیت جاتا ہے تو اس کے جوڑا میلے ہو جاتے ہیں اور تہذیب فیروہ کے نکلنے کا گمان غالب ہوتا ہے۔

پانچاندہ جانے اور اس سے نکلنے کے وقت اعوذ و غفرانک پڑھنے کی وجہ : پانچاندہ کو جانے کے وقت اعوذ باللہ من العیب والحیث یزعمنا اس لئے مستحب ہے کہ اس جگہ شیاطین جمع رہتے ہیں اس لئے کہ انکو تہذیب بھاتی ہے اور پانچاندہ سے نکلنے کے وقت غفرانک کے کیونکہ پانچاندہ میں ذکر الٹی ترک ہو جاتا ہے اور شیاطین سے مخالفت کا وقت ہوتا ہے اس سے مغفرت مانگی مناسب ہے۔

تین ڈھیلوں سے امر استنجائی وجہ اور گوہر اور ہڈیوں سے منع استنجاکاراز :
عن ابی ہریرۃ قال قال رسول ﷺ اما انما لکم مثل الموالد لولده اعلمکم اذا اہتم العاطف فلا تستقبلوا القبلة ولا تستدبروها وامر لیلانۃ اصحابو بھی عن التروصۃ

والرملة ونهين ان لينطب الرجل بيمينه ترجمہ ہے یعنی حضرت اہل ہر یہ قرظی رضی اللہ عنہم راوی ہیں کہ رسول خدا ﷺ فرماتے ہیں کہ میں تمہارے لئے مسواک لیاپ کے ہوں تم کو تو اب سکھانا ہوں جب تم پانی کو جاؤ تو قبلہ رو اور قبلہ پشت ہو کر نہ قطع اور استنجا کرنے کو منع فرمایا سو قضا حاجت کے وقت قبلہ رو ہو کر نہ قطعے اور اپنے ہاتھ سے استنجانہ کرنے کی وجہ کا ذکر تو نقل کریں لکھا گیا ہے اب ہر چیز اجزاء حدیث کا ذکر کیا جاتا ہے۔

(۱) استنجا کے لئے ہمیں اہلے اس لئے مقرر فرمائے کہ مسائی کے لئے ایک حد کا مقرر کرنا ضروری تھا ورنہ وہی قوی سدا سدا دون استنجا کرنے میں گلا رو دیتے بلکہ جو اس قدر تاکید شدیدہ کے ہم اعضا و عینوں کو دیکھتے ہیں کہ وہ ایک ہی استنجا کے لئے اذھیماں کا اذھیماں لگا دیتے ہیں اور پانی کے کئی کئی ٹنگے خالی کر دیتے ہیں اور ہمیں سے کم اذھیماں میں اتنی مسائی اور پاکیزگی و اصل نہیں ہوتی اور ہمیں میں مسائی ہو جاتی ہے اور ہمیں سے زیادہ میں تصحیح اوقات اور وہم کلا حانا ہے اور گودہ ہڈیوں سے استنجا اس لئے منع ہوا کہ ان میں اکثر سوڑی جانور سناپ بھگو وغیرہ اور اعضا جسم کے کالے والے کینزے پٹھے رہتے ہیں لہذا آنحضرت ﷺ نے بظہر شفقت و رحمت اپنی امت کو ان سے استنجا کرنا منع فرمایا تاکہ استنجا کرنے والے کو کوئی سوڑی جانور نہ کالے اور ایذا نہ پہنچائے اور یہ ہے کہ اکثر ہوام اور سوڑی جانور سناپ بھگو جزا پا وغیرہ کی پیدائش گودہ ہڈیوں میں سے ہوتی ہے اور انھی سے ان کی خوراک پرورش ہوتی ہے اور ان کے سوراخہ لرنگوں میں ایسے جانور کھسے رہتے ہیں اسلئے کہ جہاں کسی چیز کی پیدائش خوراک کا سامان ہو وہاں اسکا اکثر قیام رہتا ہے لہذا وہ ہے کہ ان سے استنجا کرنا منع ہوا تاکہ انکے اندر سے نکل کر کوئی زہریلا جانور استنجا کرنے والے کو ایذا نہ پہنچائے۔

(۲) گودہ ہڈیوں سے استنجا کرنا موجب امراض شدیدہ ہے کیونکہ ان میں زہریلے حشرات کے اور ہوائے متعفن کے کسی اور حامل آثار ہر وقت موجود رہتے ہیں اگرچہ ان میں کسی وقت کینزے نہ بھی موجود ہوں لہذا آنحضرت ﷺ نے اپنی امت کے لوگوں کو غسل بظہر شفقت و رحمت ان

خردوں سے چنے کیلئے گور اور ہڈیوں سے استحقاق کرنا منع فرمایا ہے اور ہڈیوں کے باپ میں ایک اور حکمت بھی وارد ہے اے زائد اسو انکم من الجن وہ انکے علاوہ ہے۔

قہر اور قے اور نکمیر سے امر و وضو کاراز: برتا ہوا خون اور قے کثیر پان کو نکال دہ کرنے والی اور نفس کو چلید کرنے والی چیزیں ہیں اور نماز میں قہر لگانا ایک قسم کا جرم ہے جسکا کفارہ ہونا چاہیے اگر ان چیزوں سے شارع وضو کا حکم دے تو کچھ عیب نہیں ہے اور قہر کا جرم ہونا اسلئے ہے کہ نماز میں قہر کسی نفسانی پلیدی کے باعث ہوتا ہے جسکا لازماً وضو سے کرنا لازم ہوتا۔

حاجت اول و دراز کے وقت مشغول نماز کی وجہ: (۱) غسل کے اندر وضو کا اڑا اسی وقت پیدا ہو سکتا ہے کہ جب نفس کو لور کاموں سے فراغت ہو اور فراغت اس وقت ہو سکتی ہے کہ جب ظلم کے اندر غوغو وغیرہ سے تردد اور اضطراب بھی نہ ہوتا آحضرت علیہ السلام نے فرمایا ہے لا یصلی احدکم وهو بدافعہ الاحسان یعنی تم میں سے کوئی شخص نماز کو کھڑا نہ ہو جب اسکو پاخانہ و پیشاب کی سخت حاجت ہو اس میں آنحضرت علیہ السلام نے نگاہ فرمایا ہے کہ نفس کے کسی اور طرف مشغول ہونے میں بھی حدیث کے معنی پائے جاتے ہیں کیونکہ ایسی حالت میں نماز کی طرف انسان کی توجہ نہیں ہو سکتی بلکہ وہ پاخانہ اور پیشاب کی مدافعت میں مشغول ہو جاتا ہے۔

(۲) جس بول و دراز سے دل میں انقباض اور پرگندگی اور عدم حضور کا لاحق ہونا چھٹی ہے اور جب حضور نہ ہو اور پرگندگی رہے تو نماز ناقص رہے گی لہذا ایسے سبب کو رفع کرنے کا حکم ہوا جو نماز میں پرگندگی اور عدم حضور کا باعث ہو چنانچہ علامہ نکیم محمد تونسلی اپنی کتاب کوبرا مسجد میں لکھتے ہیں۔ ان حصر البول فی المشافہ مدۃ طویلۃ مضر لنشاء عنہ عوارض خطرۃ کسلسل البول والحصۃ وغیر ذلك فیجب علی الانسان ان یبول کلما احس بالنول ولا یحصره مطلقاً یرحمہ اللہ القائل۔

ترجمہ۔۔ ہال کو بیت ویر تک جھٹک میں رہ کرنا ضرور سامان ہے اسلئے خطرناک امراض مسلسل ایول اور سنگ مثانہ وغیرہ پیدا ہو جاتے ہیں جس انسان پر لازم ہے کہ جب ہال کی حاجت ہو تو اسی وقت ہال کرے اور اسکو ہرگز روک نہ سکے۔ پتا لچے کسی نے اس پارہ میں کہا ہے کہ جب فضلات انجم ہو جائیں تو ان کو مت روکو اگرچہ تم چاہتی تلو اردوں کے درمیان ہو۔

باب المسح علی الخفین

مسح موزوں کا راز

پتہ لکھو وضو کا ان اعضاء ظاہرہ کے دھونے پر مدد تھا جو جلد جلد گروہ طہار میں آلودہ ہوتے رہتے ہیں اور پاؤں موزوں کے پینے سے استنباط میں داخل ہو جاتے ہیں اور نیز غرب میں موزوں کے پینے کا بہت دستور تھا اور ہر نماز کے وقت ان کے اہرنے میں ایک قسم کی وقت تھی اس واسلئے فی الجملہ ان کے پینے کی حالت میں پاؤں کا دھونا ساقط کر دیا گیا اور حکم دیا کہ موزے کے لوہ مسح کیا کریں تاکہ پاؤں کا دھونا یاد آہلے کہو کہ مسح بھی بیروں کے دھونے کا ایک نمونہ ہے موزہ کی جانب مسح مشروع نہ ہونے کی وجہ : اگر مسح موزہ لچے کی جانب مشروع ہو تا تو باخرج تھا کیونکہ نیچے کی جانب مسح کرنے میں زمین پر پلٹے وقت گروہ سے موزوں کے آلودہ ہونے کا امکان غالب ہے لہذا عقل کا تحقیقی یہی ہے کہ لوہ کی جانب مسح کیا جاوے۔

موزہ پر مسح مقیم کیلئے ایک دن رات اور مسافر کیلئے تین دن رات مقرر ہونے کی حکمت : جہاں آسانی کر دی گئی ہے وہاں کوئی ایسی چیز بھی مقرر کی گئی ہے کہ جس کی وجہ سے نفس کو عبادت مطلوبہ کے ترک کرنے میں مطلق العنانی نہ ہو جاوے لہذا شارع علیہ الصلوٰۃ السلام نے اس بات کے حاصل کرنے کیلئے ایسی چند باتیں مسح موزہ کیساتھ بھی مقرر کر دیں مثلاً ایک تو مسح کی مدت مقیم کیلئے ایک دن رات اور مسافر کیلئے تین دن رات مقرر فرمائی

اسلئے کہ ایک دن رات کی ایسی مدت ہے کہ اس کا التزام اور اتمام ہو سکتا ہے یہی چیزیں کو جن کا التزام کرنا چاہتے ہیں اسی مدت کے ساتھ اس کا التزام رکھتے ہیں اور تین دن رات کی مدت بھی ایسی ہی ہے یہ دونوں مدتیں مفہم مسافر پر ان کی رفع حرج اور تکیف کے موافق تقسیم کر دی گئی ہیں پھر شارع علیہ الصلوٰۃ والسلام نے اس میں یہ دوسری شرط لگا دی کہ موزوں کو طہارت کی حالت میں پہنا ہو تاکہ پسنے والے کے دل میں اس وقت کی طہارت کا نقش بننا ہے اسلئے کہ موزوں کی حالت میں گروہ غبار کا اثر کم ہوتا ہے جس سے اس طہارت کے ساتھ اس طہارت غسل کو یاد کر لیتا ہے اور اس قسم کے مذاکرے کا نفس کی حیر پر پورا اثر ہوتا ہے۔

باب السیاح (پانی)

جواب اس سوال کا کہ کیا کنوئیں سے رفع ناپاک کیلئے ڈول نکالنا موافق عقل ہے۔ اسلامی فقہ کے اس مسئلہ کے متعلق فلاسٹروں کا اعتراض ہے۔ عن العجب ان لو وقع فی البیر نجاسة نزع منها دلاء معدودة فافا جعل الدلو فی البیر نجس وما اصاب حیطان البیر من ذلك نجسها وكذلك ما بعده من الدلاء الا ان تنهى التوبة التي الدلو الاخیر فانه یسزل ثم یصعد ظاهرا فیقتلش النجاسة کلها من قعر البیر الا نومه قال بعض المتکلمین ملازمات اکرم من هذا الدلو لا عقل۔ ترجمہ :- جب کی بات ہے کہ اگر کنوئیں میں نجاست پڑ جائے تو اس سے چند ڈول نکالے جائیں۔ پس جب کنوئیں میں ڈول پڑتا ہے تو وہ بھی نہیں ہو جاتا ہے اور جو پانی اس ڈول سے کنوئیں کی دیواروں کو لگتا ہے وہ بھی ناپاک ہو جاتی ہیں یہاں تک کہ ڈول کے اترنے کی آخری قسمت تک دیواروں میں پانی سے ناپاک ہو جاتی ہیں۔ پھر جب آخری ڈول لوہا آتا ہے تو سب نجاست کو کنوئیں کی دیواروں سے لٹکرائے سرے تک لوہے آتا ہے۔ بعض متکلمین کہتے ہیں کہ ہم نے اس ڈول سے درگ اور عاقل ترکوئی اور ڈول نہیں دیکھا۔

جواب۔ ڈول نکالنے کی حکمت ظاہر ہے کہ کنوئیں کے پانی کو ڈول کے ذریعہ سے جاری کیا جاتا ہے

تاکہ جریان آب سے نجاست کے اجزاء خارج ہو جائیں۔

باوجود وقوع نجاست جلدی پانی پاک ہونے کی وجہ : جس کے ہونے قلیل پانی میں نجاست نہ چائے وہ نہ نکلتا اکثر تو اس کا رنگ وہ اور ذائقہ مطہر ہو جاتا ہے اور اگر متعین نہ بھی ہو تب بھی وہ نہ نکلتا اس میں نجاست ساڑھ موثر ہو جاتی ہے مگر جلدی پانی کے اجزاء وہ نہ جریان قائم نہیں رہ سکتے کیونکہ نجاست کے اجزاء اس کے جریان کے ساتھ خارج ہو جاتے ہیں۔

قلیل پانی کی نجاست کی حکمت آب قلیل و کثیر کی حد مقرر ہونے کا راز : پانی کی ضرورت تمام اشیاء عالم میں نظر آتی ہے چنانچہ اس کا کثیر الوجود ہونا خود اس بات پر دل ہے کہ تمام حیوانات کو اسکی ضرورت رہتی ہے عالم کے تمام جانداروں کا اسی پر اعتماد کرنا اور انکی زندگی کا اسی پر موقوف ہونا میاں ہے لہذا پانی کی اس قدر کثرت استعمال اس امر کی مقتضی ہوئی کہ جن پانیوں میں درندوں اور نجاستوں کا اثر چکر آدمیوں کو ضرور میں ان کی حد یعنی آدم کو بتائی جائے تاکہ وہ آگاہ ہو کہ ان نقصانات اور ضرروں سے بچے اور حد ضرر سے زائد ہوا انکی اجازت نہی ہاے جس جو حکم پانی قلیل کے لئے ہے اگر وہی کثیر کے لئے ہو تا تو دنیا میں لوگوں کے ہاے لہذا نقصانات ہوتے اور وہ وقتوں میں نہ چائے اور انکی زندگیاں پر دو بھر ہو جائیں۔

اسلئے ضرور ہوا کہ پانی کیلئے حد قلیل و کثیر متمیز ہوتا تاکہ اس میں وقوع نجاست سے ایک دوسرے کے احکام میں امتیاز ہو کر لوگوں پر عجز و عسر واقع نہ ہو۔

وجہ خصوصیت آب وہ در وہ : جیسا کہ نہایت کی قلت و کثرت کی حد کا متعین ہونا ضروری تھا کہ اگر وہ قلیل اور کثیر پانی میں نہ چائے تو اس کا پاک و ناپاک ہونا معلوم ہو سکتا ہو ایسا ہی پانی کی قلت و کثرت کی حد کا متعین و مقرر ہونا ضروری ہے تاکہ رفع شک اور وہم ہو لہذا اس جو جمع کثیر کا لہذا کی حد ہے اس امر کا معیار مقرر ہوا کہ نیک یہ حد پانی کی کثرت پر دلالت کرتا ہے پس جہاں اس قسم کی کثرت چاک میں ہو وہاں قلیل ناپاک ہوا اور ذائقہ یارنگ آب کو متعین کر سکے وہ

موثر نہیں ہو سکتی یہی وجہ ہے کہ جہاں درد و روزہ گزرا پانی ہو وہاں عقلیں ناپاکی کا موثر ہونا قرار نہیں دیا جاتاہے اسکو پاک سمجھا جاتا ہے کیونکہ درد و روزہ کا حاصل ضرب بھوک کی کمزورت کو پہنچتا ہے۔

چوہے اور مٹی کا جھوٹا پاک ہونے کی وجہ: اگر شریعت کا حکم ان جانوروں کی نجاست کا ہونا تو اس میں امت پر حرج عظیم و مشقت کثیر واقع ہوتی کیونکہ یہ جانور شب و روز لوگوں کے فرسوں اور کیزوں اور ماکولات و مشروبات پر چرتے رہتے ہیں۔ جیسا کہ آنحضرت ﷺ کی کہانیاں میں اس امر کی طرف اشارہ فرماتے ہیں۔ *انہا ليست من الطوائن عليكم والطوائف*.

کتے اور مٹی کے جھوٹے میں فرق ہونے کی وجہ: (۱) کتابیک طعون جانور ہے جس سے فرشتے نفرت رکھتے ہیں وجہ یہ ہے کہ کتابی جان سے بہت مشابہت رکھتا ہے کیونکہ اس کی فطرت میں غصہ و لعاب اور گندگی سے آلودہ رہتا اور لوگوں کو ایذا پہنچاتا اور شیطانی الہام کو قبول کرتا پایا جاتا ہے یہی وجہ ہے کہ حدیث میں ہے کہ بغیر عذر رکتے سے نماز تک کرنے سے دو قیر لاکھ گناہ کم ہو جاتا ہے۔

(۲) کتاب جو چیز کھاتا ہے اسکے ساتھ اسکا منہ آلودہ ہو جائے تو منہ کو صاف نہیں کرنا خلاف مٹی کے کہ وہ اپنے منہ کو پوچھ کر چاٹ کر صاف کر لیتی ہے۔

برتن میں کتے کے منہ ڈالنے یا اس سے پانی وغیرہ پینے سے اس برتن کو سات بار دھونے سے اسکے پاک ہونے کی حکمت: *قال رسول الله ﷺ اذا ولغ الكلب في الماء فاعسلوه سبع مرات و عفره العائمة بالتراب یعنی کسی برتن میں کتابی پانی جائے یا کھاجائے تو اس برتن کو پاک کرنے کیلئے سات بار صوف اور لہو اور آنھوں پر اسکو مٹی سے مانجھ دے کتے کے لعاب کی رطوبت کا اثر بہت قوی اور زہریلا ہوتا ہے اور وہ برتن وغیرہ ہر ایک چیز میں یکساں ہوتا ہے جو شخص کتے کا پس خوردہ یا کتے کے مٹھر برتن میں کھائے کھائے یا پانی وغیرہ پئے یا پھر اس میں اسکی رندگی وہ اخلاقی کا اثر سراسر ایتہ کر جاتا ہے لہذا آنحضرت ﷺ نے*

اس دور میں کتنے نے پائی بنا کھلیا ہے اس کو اکثر یہ دھوئے کا حکم فرمایا اور سات بار کی تعداد کھڑت سے دھوئے کی تاکید پر دل ہے اور سات بار تک دھوئے کی قسمیں اس امر پر دل ہے کہ آنحضرت ﷺ کو نور نبوی سے اس حد تک دھوئے سے پیدا ہی کا اثر رفع ہونے کا علم ہو چکا تھا لہذا یہ حد مقرر فرمادی اور آنھوں میں بار مٹی سے سناٹھنا ملنے فرمایا کہ زہر شہادہ کی رطوبت کا اثر جو رتی وغیرہ میں سرایت کر جائے اسکو مٹی کا دھو تک رفع کر دینا ہے۔

عبادات کیلئے اوقات مخصوص ہونے کی حکمتیں: (۱) جیسا کہ انسان پر ظاہر ہے کہ تغیر اوقاتہ تبدیلی حالات سے جسمانی تبدیلیاں مستلزمہ میں آ رہی ہیں ایسی ہی تغیر اوقات کے ساتھ اس پر روحانی تبدیلیاں بھی واقع ہوتی رہتی ہیں اور جیسا کہ ان تغیر اوقات کا اثر انسان کے جسم پر پڑتا ہے ایسا ہی اس کی روحانیت پر بھی اثر ہوتا ہے۔

تبدیلی اوقات و حالات کے بعض دوروں کا وقت تو روزانہ ہوتا ہے اور روزانہ روز پانچ گھنٹوں کے اوقات ہیں اور بعض اوقات کا دورہ وقت کے دور کے ساتھ ہوتا ہے اور روز جمعہ کا وقت ہے اور بعض اوقات کا دورہ سال کے دور کے ساتھ ہوا کرتا ہے اور روز رمضان شریف کی وعیدیں ہیں۔

(۲) لوگوں کے اعمال کا درگاہ ان میں دو شعبہ و بخشہ کو پیش ہونا جو احادیث نبویہ میں مذکور ہے اور رمضان میں قرآن کریم کا نازل ہونا فضیلت وقت اور انسانی حالات کی خصوصیتوں کی طرف اشارہ ہے۔

(۳) جیسا کہ جسم کی حفاظت کیلئے ہنور حفظاً مقدم خدا تعالیٰ کی پیدا کردہ اشیا اور یہ غذا یہ سب مناسب وقت استعمال کی جاتی ہیں ایسا ہی روحانیت کی حفاظت کیلئے خدا تعالیٰ کے فرمودہ احکام کی جانوری مناسب اوقات صحت کی ہوتی ہے۔

(۴) نماز کیلئے وقت کا مقرر کرنا ضروری ہے کیونکہ وقت کے تقسیم سے انسانوں کے

دلوں کو اسکی طرف توجہ داتی ہے اور انکو جمعیت داتی ہے اور یہ جملہ اعضاء رہتا کہ ہر شخص اپنی رائے پر چلے کیونکہ جس امر کی تعیین نہ ہو اس میں ہر شخص اپنی رائے کا عمل دینا چاہتا ہے خواہ اس میں اسکا نقصان ہی کیوں نہ ہو۔

(۵) اگر عبادت کیلئے لوقات معین نہ ہوتے تو اکثر لوگ تھوڑی سی نماز روزہ کو زیادہ خیال کرتے جو بالکل راجح اور غیر مفید ہوتا۔ تعیین لوقات میں یہ بھی ایسا ہے کہ اگر کوئی شخص ان لوقات کی پابندی سے آزاد رہنا چاہیے اور اسکے ترک کرنے کے سببے حوالے کرے تو اسکی کو شبلی ممکن ہو سکے۔

(۶) حکمت الہی کا اظہار ہو کہ انسان کو زمانہ کے ہر ایک محدود حصہ کے بعد نماز کی پابندی کا اور اس کے تعیین وقت کا حکم دیا جائے تاکہ نماز سے قبل اس کا اشتغال کرنا اور اس کیلئے تیار رہنا اور نماز کے بعد اسکے نور کا اثر اور اسکے رنگ کا باقی رہنا معمول نماز ہی کے ہو جائے اور غفلت کے لوقات میں خدا تعالیٰ کا ذکر نہ نظر رہا کرے اور اسکے اطاعت میں دل متعلق رہے اس میں مسلمان کا حال اس گھوڑے کی طرح رہتا ہے جسکی اگلی پچھاڑی بندھی ہوتی ہے اور ایک دو دلوں کو داتا ہے اور پھر بے بس ہو کر رہ جاتا ہے اور نماز کی پابندی سے غفلت اور گناہوں کی سیاہی بھی دلوں کے اندر نہیں بیٹھتی۔

(۷) تقرر لوقات خمسہ میں پابندی لوقات کی طرف اور امور مہمہ میں تاخیر نہ کرنے کی طرف ایسا ہے۔ لا تو عمر عمل الیوم لغد یعنی آج کا کام کل پر نہ چھوڑو۔

وجہ تعیین لوقات پنجگانہ نماز: خدا تعالیٰ نے قرآن کریم میں نماز کے پچھان لوقات کی خصوصیت کی علامتی اور حقیقت سمجھنے کیلئے لوقات خمسہ کے اوصاف مؤثرہ کی طرف توجہ دلائی ہے۔ چنانچہ وہ فرماتے ہیں۔ سبحان اللہ حین نسمون و حین تصحون و لا الحمد فی السموت و الارض و عرشها و حین تطہرون ترجمہ :- خدا تعالیٰ کی یاد کا وقت ہے جب تم

شام کو اور جب صبح کو اور اسکی خوابیں بیان کی جاتی ہیں آسمانوں میں اور زمین میں اور پچھلے وقت کو اور وہ پھر میں۔

عبادت قرآنی سے صاف ظاہر ہو رہا ہے کہ ان لوحات میں زمین اور آسمان کے اندر تعمیرات عظیمہ واقع ہوتے ہیں جن میں خدا تعالیٰ کے جدید تسبیح و تہلیل کا موقع آتا ہے اور ان تعمیرات کا اثر انسانی روح کو اور جسم دونوں پر واقع ہوتا ہے۔ الفرض منجھکتا نمازیں کیا ہیں وہ تمہارے مختلف حالات کا فائدہ ہیں یعنی تسبیح و تہلیل کے لازم حال پانچ تعمیر ہیں جو تم پر وارد ہوتے ہیں اور تمہارے فطرت کیلئے ان کا کاروبار ہو نا ضرور ہے جسکی تفصیل حسب ذیل ہے۔

وجہ تعین نماز ظہر: (۱) پہلے جب کہ تم مطلع کے جانتے ہو کہ تم پر ایک بلا آنے والی ہے۔ مثلاً جیسے تمہارے نام بدالت سے ایک ولادت جاری ہو یہ پہلی حالت ہے جس نے تسبیح و تہلیل اور خوش حالی میں عقل والا۔ سو یہ حالت زوال کے وقت سے مشابہ ہے کیونکہ اس سے اپنی خوش حالی کے زوال کے متصور ہونے پر استدلال کیا جا سکتا ہے۔ اسکی مقابلہ پر نماز ظہر تعین ہوئی جبکہ وقت زوال آفتاب سے شروع ہوتا ہے تاکہ جسکے قبضہ میں وہ زوال ہے اسکی قدرت کو یاد کر کے اسکی طرف توجہ کی جائے۔ آنحضرت ﷺ نے زوال کی سامت کی نسبت فرمایا ہے کہ اس میں آسمان کے دروازے کھلتے ہیں اس لئے میں پہن کر تا ہوں کہ اس وقت میرا کوئی عمل آسمان کی طرف صعود کرے۔ نیز اس وقت کے ظہر کا بھی یہی مقتضا ہے کہ حق تعالیٰ کی طرف توجہ کی جائے چنانچہ اس ظہر کے آثار جو جسم انسانی پر ظاہر ہوتے ہیں۔ طبیوں نے اپنی طبی کتابوں میں بیان فرمائے ہیں۔ چنانچہ مفرح القلوب شرح قانونیہ میں لکھا ہے کہ نوم بعد زوال کہ مسمیٰ است بہ حیلولہ لکونہ حالاً بین النائم والصلوۃ محدث لسان است ترجمہ۔ یعنی دوپہر کے بعد بخیر جس کو حیلولہ کہتے ہیں نسیان کا مرض پیدا کرتی ہے اور حیلولہ اسکو اس لئے کہتے ہیں کہ سونے والے کو نماز کے درمیان جاگ بوجھ جاتی ہے سو اس ظہر سے بچنے کیلئے بھی چائے نوم

کے اعتدال بالاصل مصلحت ہے۔

نظر کو ٹھنڈا کر کے پڑھنے کی حکمت: آنحضرت ﷺ فرماتے ہیں اذ انشد
والحرفاء ودوا بالظہور فان شدة الحر من ليج حبه تربر۔ یعنی جب سخت گرمی ہو تو
نظر کو ٹھنڈا کر کے پڑھا کرے کیونکہ گرمی کی شدت جنم کا جوش ہے۔ اس سے یہ مطلب ہے کہ
جنت و جنم کا خدا تعالیٰ کے ہاں فرائض میں اس عالم میں کیفیات مناسبہ اور مفاہیرہ کا فیضان ہوتا رہتا
ہے۔

وجہ تعیین نماز عصر: (۲) دوسرا تغیر اس وقت تم پر آتا ہے جبکہ تم بلا کے محل سے بہت
نزدیک گئے جاتے ہو مثلاً جب کہ تم پھر یہ وارث گر فلد ہو کہ حاکم کے سامنے پیش کئے جاتے ہو
یہ وقت ہے کہ جب تمہارا خوف سے خون نکلے اور تسلی کا نور تم سے رخصت ہونے کو ہوتا ہے
سو یہ حالت تمہاری اس وقت سے مطاب ہے جبکہ آفتاب سے نور کم ہو جاتا ہے اور نظر اس پر جم
سکتی ہے اور صریح نظر آتا ہے کہ اب غروب نزدیک ہے جس سے اپنے کمالات کے زوال کے
احتمال قریب پر استدلال کرنا چاہیے اس روحانی حالت کے مقابل نماز عصر مقرر ہوئی ہے تاکہ اس
زوال کے مالک کی طرف توجہ کرنا چاہے اس کی رحمت کا ہو۔ نیز یہ ایسا وقت ہے کہ اس وقت کی
غفلت کا کوئی تدارک نہیں۔ اس وقت کی غفلت ہمسائیت پر بھی دلائل اثباتی ہے چنانچہ محمد اراذانی
تعمیم لکھتے ہیں کہ نوم آکر روز کہ کسی است بہ فلولہ باعث آفات کثیرہ است بہ بلاکت می
شد۔ ترجمہ۔ یعنی عصر کے وقت کی نیند جسکو عربی میں فلولہ کہتے ہیں ہر صدمہ ہواں ہے اگر تپتی ہے
اساوقات اس وقت کی نیند سے انسان ہلاک ہو جاتا ہے۔ اس کا یہی معنی ہے کہ جائے نوم
و غفلت کے عبادت میں مشغول ہو۔

وجہ تعیین نماز مغرب: (۳) تیسرا تغیر تم پر اس وقت آتا ہے جب اس با سے ربائی پانے
کی نگی امید منتقل ہو جاتی ہے۔ مثلاً تمہارے ہم فرد قرار دو جرم نکسی جاتی ہے اور مخالفت گواہ

تسماری جاگت کیلئے گزرا جاتے ہیں یہ وہ وقت ہے کہ جب تسمارے لوسانا لٹکا ہو جاتے ہیں اور تم اپنے تئیں ایک قیدی سمجھتے گتے ہو سو یہ حالت اس وقت سے مشابہ ہے جبکہ آفتاب غروب نہ جاتا ہے اور حمام ہو سنا کی امید میں دن کی روشنی کی قسم ہو جاتی ہیں اس روحانی حالت کے مقابلہ پر نماز مغرب مقرر ہے تاکہ اس طول ال کا مقابلہ ہو۔

وجہ تعیین نماز عشاء: (۳) چونکہ تغیر تم پر اس وقت آتا ہے جب جاتم پر اعاط کر لیتی ہے مثلاً جبکہ فرد قرار دلو جرم اور شاد توں کے بعد حکم سزا تم کو عطا جاتا ہے اور قہ کیلئے ایک پولیس میں کے تم حوالے کئے جاتے ہو سو یہ حالت اس حالت سے مشابہ ہے جبکہ رات چڑھتی ہے اور ایک سخت اندھیرا چھا جاتا ہے اس روحانی حالت کے مقابلہ پر نماز عشاء مقرر ہوئی ہے تاکہ ان بلیات قریبہ اور توں باقہد اللہ رتہ سے تم ہر گت حالت کے محفوظ رکھے جاؤ اور رات اور صبح کیوں کو مصائب سے ساتھ اور دن اور روشنیوں کو آرام و نجات کے ساتھ قدرتی مناسبت سے چنانچہ عرب کا ایک شاعر بھی اس قدرتی مناسبت کو بیان کرتا ہے۔

دحاہ بدوا حہ الصباح و عورہ

الم تر ان اللیل لما تر اکت

لیلاً فان المدھر شئی امورہ

فلا تصحس الیاس ان کنت عالمہ

کہا تو نہیں، لیکن اگر جب اندھیری رات چھا جاتی ہے تو اسکا بعد صبح کا نور آیا کرتا ہے پس

اگر تو دان ہے تو ہماریت ہو کہ زمانہ کے مختلف امور ہوتے ہیں۔

وجہ تعیین نماز فجر: (۵) بلکہ جبکہ تم رت تک اس مصیبت کی ساری میں بسر کرنے ہو تو پھر آخر خدا پھر تم تم پر جو شاد کرتا ہے اور تمہیں اس ساری سے نجات داتا ہے اور ساری کے بعد آخر کار پھر صبح نکلتی ہے اور پھر وہی روشنی دن کی اپنی چمک کے ساتھ ظاہر ہوتی ہے سو اس حالت نورانی کے مقابلہ پر نماز فجر مقرر ہے خدا تعالیٰ نے تسمارے فطرتی تغیرات میں پانچ نمازیں تسمارے لے مقرر کیں۔ اس سے تم سمجھ سکتے ہو کہ یہ نمازیں خاص تسمارے نفس کے فائدے کیلئے ہیں۔

ہیں اگر تم چاہتے ہو کہ ان باتوں سے بچے رہو تو تم بیچکانہ نمازوں کو ترک نہ کرو کہ وہ تمہارے اندرونی اور روحانی تغیرات کا عمل ہیں وہ آنے والی باتوں کا علاج ہیں تم نہیں جانتے کہ یہ نیا دن کس قسم کی قضاء قدر تمہارے لئے لایا گیا ہے تم عمل اس کے کہ دن چڑھے اپنے مولیٰ کی جناب میں تفریح کرو تاکہ تمہارے لئے خیر ہو کہ کا دن چڑھے یہ ایسا وقت ہے کہ اگر اس وقت انسان خدا تعالیٰ سے غافل ہو تو اس کی روحانیت پر بھروسہ اور اثر پڑتا ہے اور سوا یہ تو اسکی جسمانییت کو سخت ضرر پہنچتا ہے چنانچہ صاحب مفرح القلوب لکھتے ہیں۔ لاناوم بادلو کہ مسکی است عیلولہ سخت زیاں داور خاصہ اگر معدہ خالی ہو۔ ترجمہ۔ یعنی فجر کی نیند جسکو عربی میں عیلولہ کہتے ہیں سونے والے کو سخت زیاں پہنچاتی ہے خاص کر اگر معدہ خالی ہو تو بہت زیادہ ضرر پہنچتا ہے۔

اوقات نماز کیلئے اول و آخر حد مقرر ہونے کا راز: اگر لوگوں کو یہ حکم دیا جاتا کہ تمام لوگ ایک ہی وقت کے اندر ہمدرد یعنی جس میں نماز پڑھنے سے زیادہ ذرا اٹھا کھل نہ ہوتی نماز پڑھیں اور اس سے آگے پیچھے نہ پڑھ سکیں تو اس میں حرج عظیم تھا اس واسطے اوقات کے اندر کسی قدر توسیع اور گھٹائش بھی کر دی گئی اور اوقات اوائل و آخر کیلئے حدیں جو متضاد اور محسوس ہیں مقرر کی گئیں۔

پابندی اوقات کی حکمتیں: پابندی اوقات میں ایک قدرتی تاثیر ہے کہ وقت مہین کے آنے پر قلب انسانی میں بے اختیار جذب و میلان اس فرض مصلحی کے لواکر نے کیلئے پیدا ہو جاتا ہے اور روحانی قوی اس مفروضہ عمل کی طرف طوعاً و کرہاً متذبذب ہو جاتے ہیں جو بھی اس غیر مصنوعی باتوں (الذات) کی آواز سنائی دیتی ہے ایک وسیعہ مسلمان فی الغور اس عمل سے متاثر ہو جاتا ہے گویا پابند صلوٰۃ ہر وقت نماز ہی میں رہتا ہے کیونکہ ایک نماز کے لواکر نے کے بعد معادہ سری نماز کی تیاری اور فکر ہو جاتی ہے۔

حکومت لڑان نماز: نماز کی جماعت ایک ضروری امر ہے اور ایک وقت اور ایک جگہ میں لوگوں کا اجتماع پر وہ انعام اور آگاہ ہونے کے و شمار ہے نیز حکمت الہی کا اقتضاء یہ بھی ہو کہ لڑان کے اندر صرف انعام اور تنبیہ نہ پائی جائے بلکہ وہ شعائر اسلام میں سے ایک شعار ٹھہرایا جائے اور لوگوں پر اسکے انعقاد پکار سے جائیں اور اس نشان میں مذہب کی عزت کی جائے اور اس کا قبول کر لینا لوگوں کیلئے دین الہی کے تابع ہو جانے کی پہچان ہو اسکے یہ بات ضروری ہوئی کر لینا لوگوں کیلئے دین الہی کے تابع ہو جانے کی پہچان ہو اس لئے یہ بات ضروری ہوئی کہ ذکر الہی اور شہادتیں سے اس کی ترکیب ہو اور نماز کیلئے بلانا بھی اس میں پایا جائے کہ مضمون ہے علی الصلوٰۃ کا تاکہ جو چیز اس سے منظور ہے وہ اس سے مراد نہ سمجھ میں آجائے۔

کان میں انگلی دے کر اذان دینے کی وجہ: ان ماجہ میں حدیث ہے ان رسول اللہ ﷺ امر بادلان ان يجعل اصبعہ فی اذنیہ قال انہ اذیع لصلوٰتک یعنی نبی علیہ الصلوٰۃ والسلام نے بادلان کو امر فرمایا کہ اذان دینے کے وقت اپنی دونوں انگلیوں کو اپنے دونوں کانوں میں داخل کر لائن دیا کریں۔ فرمایا اس طرح کرنے سے تمہاری آواز بلند ہوگی۔

نوزائیدہ بچے کے کان میں لڑان دینے کا لفظ: (۱) جب بچہ پیدا ہوتا ہے تو اس کے کان میں لڑان دینے کی وجہ یہ ہے کہ جو نوزائیدہ بچے کے کان میں پہلے پڑتی ہے اس کا اثر اس کے دماغ میں مستقل اور اس کی فطرت میں مرکوز ہو جاتا ہے اس لئے شارع اسلام علیہ الصلوٰۃ والسلام نے بچے کے کان میں لڑان دینا ٹھہرایا کہ اس کی فطرت میں پہلی آواز جو اس کی دواوت کے بعد جا کر قائم ہو وہ تمہید الہی اور رسالت نبوی کی آواز ہو کیونکہ وقتہ اداوت کی آواز دینے کی طرف طبیعت میں کا نقش فی الحجر ہو جاتی ہے۔

نماز میں استقبال خانہ لعبد کی وجہ (۱) اور اس میں قدیم الایام سے یہ طریق عبادت جاری ہے کہ جب کسی امیر و بادشاہ کی عظمت و شان بیان کرتے ہیں تو اول اس کے روبرو کھڑے ہوتے ہیں اور پھر گناہ اور بدن برائی میں مشغول ہوتے ہیں اور نماز میں کسی امور عبادت قرار دینے کے ہیں اور عبادت ہی روانہ ہو کہ مشغول و غصن ہے وہ پھر سکون اور ترک التکلیف امور مختلفہ کے حاصل نہیں ہو سکتی اور جب تک کہ عبادت میں ایک معین و مقرر طرف کا التزام نہ کرے اس وقت تک یہ سکون نہیں ہو گا جس کے نماز میں ایک خاص سمت مقرر ہوئی۔

(۲) ظاہر کو باطن کے ساتھ ایک ایسا تعلق ہے کہ ظاہر ہی یک جہتی اختیار کرنا باطنی توجہ کو یک طرف کر دینے میں مویہ ہو گا ہے اسلئے نماز میں استقبال قبلہ لازم ہو (۳) لازم ہے کہ جملہ خدائق کیلئے قبلہ ایک معین اور مقرر ہو جا کہ ان کا ظاہر ہی اتفاق کا مویہ ہو اور جب باطن عبادت کے لوازم و کات کے حاصل کرنے میں سب متعلق ہو جائیں تو اس سے عموماً دل میں عظیم استیذان اثر پیدا ہوتا ہے جیسا کہ بہت سے چرخ کسی مکان میں ایک ہی جگہ روشن کئے جائیں تو ان سے بادی روشنی حاصل ہوتی ہے اس لئے بعد اور رہائشیں شروع ہو گئیں۔ چنانچہ پانچوں نمازوں میں ایک محلہ کے لوگوں کا اتفاق و اجتماع اور بعد میں ایک شہر کے لوگوں کا اتفاق اور حج میں تمام جہان کے لوگوں کا اجتماع ہوتا ہے اور اتفاق اور عبادت کے زیادہ کرنے کا خاص طور پر موجب ہوتا ہے اور چونکہ تمام جہان کے لوگوں کا ایک ہی مکان میں بروقت جمع ہونا مشکل ہے تو اس مکان کی جہت کو اس مکان کے قائم مقام کر کے نماز میں اس کے استقبال کا حکم ہوا۔

(۳) بہت صاف امر ہے اور عقل حقیقت جہاں کے نزدیک کچھ بھی عمل امتزاج نہیں کہ اس پادی کو جس نے تمام دنیا کے مختلف عبادت کے طریقوں کے جن میں کہ شرک اور مخلوق ہی حتی کے جزو اعظم شامل تھے اپنے طریق عبادت کو خاص کرنا منظور تھا اور ایک واضح اور ممتاز مسلک قائم کرنا ضرور تھا اسلئے ادب ہوا کہ وہ اپنی سمت کے رخ ظاہر کو بھی ایسی سمت کی طرف پھیرے

جس میں قوائے روحانی کی تحریک ہو۔ ایک مسلمان کو یقین ہے کہ مکہ میں وصت اللہ کو تو میاں کے ایک ذرے کا اظہار ہے۔ تعبیر کیا اور آگرنی زمانہ میں اسی کی اولاد میں سے ایک ذرہ دستہ کامل نبی مکمل شریعت نکھر ظاہر ہوا جس نے اس پہلی تہذیب و تعلیم کو پھر زندہ و پورہ کامل کیا جس نماز میں جب ہر صحر رخ کرتے ہیں تو یہ تمام تصورات آنکھوں میں پھر جاتے ہیں اور اس مصلح عالم کی تمام خدمات اور چاہنٹیاں جو اس نے اعطاء کلت اللہ میں دکھائی ہیں یاد آجاتی ہیں۔

(۵) ظاہر ہے کہ اگر کوئی شخص کسی مکان کی طرف جاتا ہے تو یقین مقصود ہوتا ہے اور اس طرف کو توجہ دینا چاہئے کہ ہر شخص صاحب خانہ کیلئے سمجھتا ہے جیسے اگر کسی تخت نشین کے تخت کی طرف جھک کر سلام کریں تو وہ صاحب تخت کو ہوتا ہے خود تخت کو نہیں پنا نچہ تخت صاحب اللہ اس جانب مشیر بھی ہے کہ خانہ مقصود نہیں بلکہ صاحب خانہ مقصود ہے۔

نماز کیلئے مکان کی صفائی اور لباس کی ستھرائی کا راز: (۱) بادشاہوں کے دربار میں نظافت و طہارت مکان و لباس کا بھی اظہار ہوتا ہے ان کے دربار میں شامل ہونے والوں کیلئے پاک اور ستھری جگہ کا اور صاف لباس میں ہونا ضروری ہونے کا لانا ضروری ہوتا ہے جس جیسا کہ لباس کی صفائی اور مکان کی ستھرائی بادشاہوں کو پسند ہوتی ہے جیسا کہ اس خالق اکل و اعظم الٰہی کے دیکھنا کہ الملک پاک ذات کو پاکیزگی اور ستھرائی لباس اور مکان کی اور نظافت دل کی مد نظر ہے کیونکہ وہ پاک ہے اور پاک کو چاہتا ہے اور ہر قسم کی گندگی اور میل سے اس کو نفرت و کراہت ہے۔ دوسرے بادشاہ بھی چونکہ اس پاک ذات کی نگلی دست قدرت سے قائم ہوتے ہیں اس لئے ان میں بھی پاکی و نظافت کا لانا اسی پاک ذات کے ہر قسم و نشین ہوتا ہے جو کہ عین مناسب فطرت سمجھو و سلیس ہے اور خدا تعالیٰ تو بالذات پاک ہے جس کو پاک اور طہارت کو بوجہ کوئی چاہتا ہے اس لئے نماز میں پاکی مکان کی اور ستھرائی لباس کی ضروری شرکاء قرار دینے لگے ہیں کیونکہ ہے کہ وہ فرماتا ہے

وَمَا لَكُمْ لِفْطَرِ وَالْمَرْحُومِ فَطَعْرِ بَيْنِي لِهَاسِ كُوْطَاكِ كَرْمِ كَمَدِي سِي كَنَارِهِ كَر-

(۴) چاکری اور میل سے شیاہین کو مناجت ہے اسلئے خدا تعالیٰ کی حضور میں کھڑے ہونے کے وقت شیاہین کے ساتھ مناجت رکھنے والی اشیاء سے عقلی قطع تعلق اور کنارہ ہا ہے ورنہ حضور دل میں عقل ہوگا۔

نماز کیلئے تعین ارکان و شروط کاراؤ: اگر لوگوں کیلئے عبادت کے ارکان اور شروط معین نہ ہوں تو وہ بے سیرتی سے ہاتھ پاؤں مارتے رہیں۔ پس احکام آہیہ کی تکلیف جب ہی مکمل ہوتی ہے کہ انکے لئے لوغات و ارکان و شروط سب قرار دیئے جائیں۔ اور چونکہ دل کے اندر خدا تعالیٰ کیلئے حضور کا ہونا اور اسکی طرف توجہ کا طور و تعظیم اور رغبت اور خوف کے ہونا ایک پو شید و صبر ہے اس لئے خارج میں بھی اسکے واسلے کوئی ایسا امر ہونا چاہیے جس سے اسکا تضابطہ ہو سکے اسلئے نبی ﷺ نے اسکو درجوں میں منطبق کیا ایک تو یہ کہ زبان سے اللہ اکبر کہے اس واسلے کہ انسان کی دہلت میں یہ بات داخل ہے کہ جب اس کے دل میں کوئی بات جھتی ہے تو اسکی زبان اور تمام اعضا اسی کے موافق حرکت کرتے ہیں چنانچہ آنحضرت ﷺ فرماتے ہیں ان ہی حسد امین آدم مضطربہ اذا مضطربت صلح الحسد کلمہ۔ یعنی آدمی کے بدن میں ایک گوشت کا ٹکڑا ہے یعنی قلب۔ جب وہ درست ہوتا ہے تو سارا بدن درست ہوتا ہے اس لئے زبان اور دیگر اعضاء کا فعل دل کی حالت پر قرینہ تو یہ اور اسکا مقام قائم ہوتا ہے۔ اور اسی چیز سے عقلی حالت کا تضابطہ ہو سکتا ہے اس لئے ان باطنی حالات مطلوبہ کے مناسب ظاہری ارکان و شروط مشروع فرمائے گئے۔

حقیقت نماز: (۱) جب آدمی اپنے پروردگار سے کسی مصیبت کے رفع ہونے یا کسی نعمت کے ملنے کی درخواست کرتا ہے اس وقت زیادہ مناسب یہی ہوتا ہے کہ تعظیمیں افعال اور اقوال میں مستغرق ہو جائے تاکہ اسکی ہمت کا جو کہ اس درخواست کی روح ہے کچھ اثر نہ سکے چنانچہ نماز استقامہ اسی وجہ سے مستون ہوتی ہے پس نماز میں اصل امور تین ہیں۔ (۱) اللہ تعالیٰ کی یاد رگی اور جمال دیکھ کر دل سے عاجزی کہ (۲) اللہ تعالیٰ کی عظمت اور اپنی خاکساری کو بڑھیر زبان خوش

پائی سے ظاہر لے (۳) اس خاکساری کی حالت کے موافق اصحاب میں ادب کا استعمال کرنا۔ چنانچہ اس امر میں کسی کا شعر ہے۔

اذا فتکم العشاء منى ثلاثا بدی ولسانی و الصبر المحصا

یعنی تساری نعمتوں نے میری تین چیزیں تم کو حوالہ کر دیں۔ میرے ہاتھ اور زبان اور پوشیدہ دل۔ انھیں تقطیس میں سے یہ بھی ہے کہ خدا کے حضور میں کھڑا ہو کر مناجات کرے اور کھڑے ہونے سے بھی زیادہ تعظیم اس میں ہے کہ اپنی خاکساری اور پروردگار کی عزت و ترقی کا خیال کر کے سرنگوں ہو جائے کیونکہ تمام لوگوں اور تمام میں فطری امر ہے کہ گردن کھلی طور پر اور تکبر کی علامت ہے اور سرنگوں ہو کر زیادہ مندی اور فروتنی کی علامت ہے خدا تعالیٰ فرماتا ہے لفظت اعنہم لہا خاصعین۔ یعنی ان کی گردنیں عاجزی سے اس نشانی کے سامنے جھک جائیں۔ اور اس سے بھی زیادہ تعظیم کی بات یہ ہے کہ اسکے حضور میں اپنے سر کو زمین پر رکھ دے جو تمام اصحاب میں سب سے زیادہ درگ اور حواس انسانی کے جمع ہونے کی جگہ ہے اور یہی جہتوں جسم کی تقطیس تمام لوگوں میں رائج ہیں وہ ہمیشہ اپنے سلاطین اور امراء کے حضور میں انہی کو استعمال کرتے ہیں اور ان سب صورتوں میں وہ صورت سب میں عمدہ ہے جس میں یہ تینوں امر جمع ہوں اور اسکے ساتھ ہی اولے تقطیس حالات سے اعلیٰ کی طرف ترقی ہو جاوے گا کہ وہ مہدم نیاز مندی اور خاکساری کی حالت زیادہ ہوتی ہوئی معلوم ہو جو تاکہ اس ترقی کی حالت میں ہو سکتا ہے وہ تھا اعلیٰ درجہ کی تعظیم میں یا اعلیٰ حالت لائق کی طرف منتقل ہونے میں معلوم نہیں ہو سکتا اور غلطی میں یہی عمدہ صورت پائی جاتی ہے اور یہی تقرب کے افعال اسی ترتیب سے اس میں اصل قرار دیئے گئے ہیں۔

نماز میں ناف کے نیچے یا ناف اور سینہ کے اوپر ہاتھ باندھنے کی وجہ : ناف کے نیچے ہاتھ باندھنے میں محبت و سحر عورت کی اچھا اور ناف پر ہاتھ باندھنے میں اکل و شراب حلال بننے کا ایما اور سینہ پر ہاتھ باندھنے میں بچی اور حق پر غصہ دہنے کی اور شرح صدر کی دعا ہے۔

جماعت کے درمیان خالی جگہ چھوڑنے کی ممانعت کی وجہ : حضرت شاہ ولی اللہ رحمۃ اللہ علیہ لکھتے ہیں کہ ہم نے اس بات کا تجربہ کیا ہے کہ اگر کے سنتوں میں غلطی سے دلجمعی خوب ہوتی ہے اور ذکر کی طاقت معلوم ہوتی ہے اور خطرات بند ہوتے ہیں اور اس بات کے ترک کرنے سے یہ باتیں کم ہو جاتی ہیں اور ان باتوں میں سے جس قدر کسی بات میں کمی ہوتی ہے اسی قدر وہاں شیطان کو دخل ہوتا ہے۔

نماز میں مؤدب کھڑا ہونے کی حکمت : نماز میں تمام بچوں کا ہناب باری کے سامنے سکوڑ لینا نفس کو خدا تعالیٰ کے حضور میں مؤدب کھڑا ہونے پر آگاہ کرنے کیلئے ہے جیسا کہ لوئی لوگوں کو بادشاہوں کے حضور میں عرض معروض کرتے وقت، ہشت اور بیست کی حالت طاری ہوتی ہے مثلاً دونوں قدموں کا برابر رکھنا اور دست سے کھڑا ہونا اور نظر کو پست کرنا اور نوحہ نوحہ نہ دیکھنا اسی طرح نماز میں دست سے کھڑا ہونا خدا کے سامنے والے کی فطرت کا تقاضا ہے اور فرمانبرداری کے لئے جھکتا یک قاضع ہے اور سجدہ میں گرا کر کمال عبودیت کا اظہار ہے۔

تکبیر تحریرہ میں دونوں ہاتھوں کو اٹھانے کا ارادہ : ہاتھوں کو کانوں تک اٹھانا اس میں اس امر کی طرف اشارہ ہے کہ میں کسی چیز کا مالک نہیں سب چیزیں تیری ہیں ان کا تو ہی مالک ہے میں خلی با حق و فقیر جبری عطا بخش کا طالب و امیدوار بن کر میرے حضور میں حاضر ہونا ہوں اس میں یہ اشارہ بھی ہے کہ میں تمام طاقتوں اور قوتوں سے خالی ہوں۔ سب قوتوں اور طاقتوں کا تو ہی مالک ہے پس اس کا خیر عبادت میں میری مدد فرما۔ حضرت ابن عربی رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں لیسر طبع بلیدہ الی اللہ معرفا ان الاقدار لک لالی وان ہدی خالیۃ من الاقدار۔ یعنی خدا کی طرف دونوں ہاتھ اس امر کا اعتراف کرتا ہوا اٹھانے کی طاقت اور قوت جبراً حق ہے مجھے کوئی قدرت و طاقت نہیں پس جب آدمی اللہ اکبر کے دونوں ہاتھ لوچ کر اٹھائے تاکہ معلوم ہو کہ خدا تعالیٰ کے سامنے وہ دست بردار ہو کر خدا تعالیٰ کے حضور میں آیا۔

تکبیر تحریرہ میں عورت کا کاٹھنوں تک ہاتھ اٹھانے کی وجہ: بحیثیت تحریرہ میں عورت کا موٹھنوں تک ہاتھ اٹھانے میں اس بات کی طرف اشارہ ہے کہ عورت کا مرتبہ مرد سے نیچے ہے اور عورت کے سزا مال کے مناسب بھی۔ اسی حد تک ہاتھ اٹھانے میں۔

نماز میں دست بستہ کھڑا ہونے کی وجہ: (۱) نماز میں دست بستہ کھڑا ہونا عقیدہ سواہر استیجاب و تقوا و مسکوہ و لغز و نیاز و ذاری و ذلت کی طرف ایسا ہے کیونکہ نماز شعار الہی میں سے ہے اسلئے اس میں مخصوصہ کان شامی سے اس حالت میں مشابہت کا اظہار ہے جبکہ وہ حضور شامی میں دست بستہ کھڑے ہوتے ہیں اور اس حالت میں وہاں عاجزانہ درخواست کی جاتی ہے اس لئے یہاں بھی دعا کرنے سے یعنی اھدا کرنے سے پہلے تشریف کی جاتی ہے اور اسی لئے نماز میں ایسی ہیبتیں اختیار کرنی پڑتی ہیں جو مناجات کے وقت مسلمانین کے سامنے اختیار کی جاتی ہیں چنانچہ تمام ہاتھ پاؤں سمیٹ لئے جاتے ہیں اور کسی قسم کی بے توقہی نہیں کی جاتی اور سچا سوگب ہو کر کھڑا ہونا پڑتا ہے اگر فرض نماز میں دست بستہ کھڑا ہونا قانونِ فطرت کی رو سے بھی بدگی کیلئے مناسب ہے۔

نماز میں او سر او سر دیکھنا لوگوں سے کلام کرنا منع ہونے کی وجہ: آنحضرت ﷺ فرماتے ہیں لا يزال الله تعالى مقبلا على العبد وهو في صلواتها لم يلفظ قاطبا بلفظ العرس عند نوبته۔ یعنی چونکہ اللہ نماز میں رہتا ہے خدا تعالیٰ اور ہر انکی طرف متوجہ رہتا ہے جب تک وہ او سر او سر نہ دیکھے پھر جب وہ او سر او سر دیکھتا ہے تو خدا تعالیٰ انکی طرف متوجہ نہیں رہتا۔ یعنی خدا تعالیٰ کی توجہ رحمت اس سے ہٹ جاتی ہے مطلب یہ ہے کہ جب کوئی اللہ و خدا کی جانب متوجہ ہوتا ہے اسکے لئے خدا کی عفتش کا دروازہ کھل جاتا ہے اور جب اللہ اس سے اراضی کرتا ہے تو اس سے صرف محروم نہیں رہتا بلکہ اپنی اغراض کی وجہ سے خدا ہی کا مستحق رہتا ہے جب ایک دنیاوی بادشاہ و حاکم کے دربار میں جاتا ہے تو اس کے دربارہ او سر او سر دیکھتا ہے

نہ کسی اور سے کلام کرتا ہے نہ کوئی اور نامناسب کام کرتا ہے تو انکم الماکتبن کے دربار میں ایسے امور کب جائز ہو سکتے ہیں لہذا آنحضرت ﷺ فرماتے ہیں اذ قام احدکم الى الصلوة فلا یمسح الحصى فان الرحمة اتواحدة ترجمہ - یعنی تم میں سے جب کوئی نماز کو کھڑا ہو تو ٹھیکریاں کو صاف نہ کرے کیونکہ رحمت الہی اس کے روبرو ہوتی ہے۔ ایسا ہی ایک اور حدیث شریفہ میں وارد ہوا ہے۔ ان هذه الصلوة لا یصح فيها شیء من کلام الناس لئلا یمنع التمسح والتکبیر وفرط اللعوان ترجمہ - یعنی نماز میں لوگوں کی دل چاہی میں سے کچھ درست نہیں ہے نماز تو تسبیح اور تکبیر اور قرآن کریم کا پڑھنا ہے۔

نماز میں ٹٹا ہ پڑھنے کی وجہ: (۱) سبحانک اللہم معلولہ سلام و دربار کے ہے۔

(۲) کہنی آدم میں یہ فطری امر ہے کہ جب کسی مہلی شان امیر کبیر سے سوال کرتا اور اس سے اپنی حاجت بروائی پوچھتا ہے تو پہلے اس کی مدح و ثناء اور اسکی بزرگی و جلال اور اپنی ذلت و انکساری بیان کرتا ہوا اپنی حاجت کا اظہار شروع کرتا ہے وہی طریقہ یہاں بھی سکھایا گیا ہے تاکہ نفس انسانی کو خدا کی بزرگی اور اپنی کھیتی پر انکساری ہو اور دل میں کمال حضور و انکساری پیدا ہو۔

ٹٹاؤ استنشاح کے بعد اٹھوڑ پڑھنے کا راز: نماز میں ٹٹاؤ کے بعد اٹھوڑ پڑھنا اس واسطے مقرر ہے کہ خدا تعالیٰ فرماتا ہے فاذا قرأت القرآن فاستعذ بالله من الشیطان الرجیم۔ ترجمہ - یعنی جب تو قرآن پڑھنے کا راز کرے تو شیطان مردود کے نکر سے اور انکساری و سو اس سے بچنے کیلئے خدا تعالیٰ سے پناہ طلب کر چہ نگہ فاتحہ سورۃ قرآن سے ہیں اسلئے ان سے پہلے اٹھوڑ پڑھنا ضروری ٹٹیر۔

ابتداء فاتحہ میں قرأت تسمیہ کی وجہ: ابتداء فاتحہ میں ہم اللہ پڑھنے کا پڑا ہے کہ خدا تعالیٰ نے اپنے بندوں کے واسطے قرآن پڑھنے کیلئے پہلے اپنے پاک نام سے برکت حاصل کرنے کو مقرر فرمایا۔

نماز میں فاتحہ پڑھے جانے کا راز: نماز میں فاتحہ پڑھنا اس واسطے ضروری ہو کہ وہ جامع مانا ہے۔ خدا تعالیٰ نے عباد کی طرف سے گویا ان کو اس بات کی تعلیم کرنے کیلئے نازل فرمایا ہے کہ ہماری حمد و ثنا کی طرح کئی کرتے ہیں اور اسی طرح خاص ہم سے استعاذت مانگتے ہیں اور خاص ہمارے لئے عبادت کا اقرار کیا کرتے ہیں اور اس طرح وہ راستہ جو ہر قسم کی بھڑکی کا جامع ہے مانگا کرتے ہیں اور ان لوگوں کے طریقے سے جن پر ہمارا غصہ ہوا ہے اور جو گمراہ ہیں ہند مانگا کرتے ہیں اور بھڑکاواری ہوتی ہے جو جامع ہوتی ہے فاتحہ میں اول خدا تعالیٰ کی تعریف اور اسکی تربت عام اور اسکی رحمت عامہ اور خاصہ اور اسکی بصیرت اور احتیاد اور اسکا ذکر کر کے خدا سے ہدایت کی دعا لگی جاتی ہے۔

فاتحہ کے ساتھ فہم سورہ کا راز: جبکہ فاتحہ عرض سوال ہے تو سورۃ قرآن کا اس کے بعد پڑھنا اس سوال و عرض کا جواب ہے جس میں مفصل طور پر تمام انسانی کامیابیوں کا ذکر ہے جب سوال اهدنا الصراط المستقیم کے بعد سورہ پڑھی گئی تو مدلالہ ذالک الکتاب لاریب فیہ ہدی للمتقین کے یہ معلوم ہوا کہ سائل کا سوال پورا ہو گیا اور اس کی امید پوری ہو گئی اس لئے اس انعام کے شکر یہ میں تو اب و نیاز حال انہاں کے اسر ضرور ہوا یہ نکلتے ہیں ہے کہ رکوع و سجود مثل آداب نیاز کے ہیں جو عطائے انعام کے وقت جھانڈے جاتے ہیں گویا وہ کا اپنے خدا تعالیٰ سے طلب ہدایت کا سوال ایسا ہوتا ہے جیسا مریض طبیب سے دوا کی درخواست کرتا ہے کہ امراض اعمال ہر حساب و اعتقادات وہ یہ سے شکامی ہو جس خدا تعالیٰ اسکو فرماتا ہے کہ اپنے مرضوں کے رفع کی دوا میرے کام سے لو اور اس سے کچھ پڑھ لو یہی ایک دوا انعام امراض و شرک و ریاضت کبر حسد و حقد و غیرہ کے لئے کافی و وثافی ہے اسکی تلاوت سے تم کو اپنی صدادوں کی دوائے لگی اس لئے نمازی فاتحہ کے علاوہ کچھ قدر قرآن کریم سے بھی پڑھنا ہے گویا فاتحہ ایسی ہے جیسے مریض طبیب کے آگے اپنا حال زبرد بیان کرتا ہے اور فاتحہ کے ساتھ فہم سورہ کرنا ایسا ہے جیسا کہ طبیب کو صدار

کو وہ دستار چادرا شواہد کا شکر یہ سے قبول کر لیں۔

حقیقت رکوع و سجود: (۱) نور سے، دیکھئے تو رکوع، سجود دن دنوں حالتوں پر دلالت کرتے ہیں جو بعد از اپنا اعانت کو وقت سوال و استماع مژدہ ایمان حادث ہوتی چاہیں۔ جیسا لوہے اہلی مذکور ہوں۔

(۲) جب اعلم الفاضلین کا پروانہ قرآن کریم چمکا گیا تو اس کی احتیال امر کیلئے جھکتا اور سجدہ کرنا جو اعانت و فرما ہر دہری پر دلالت کرتے ہیں لازم ہوا کیونکہ جب حکام کی طرف سے رعیت کو حکمانہ آتا ہے اور ان کو چاند کر سٹایا جاتا ہے تو اس حکمانہ کی اطلاع پائی و اعانت کا ایک نمونہ ظاہر ہوا کرتا ہے سو رکوع و سجود اس حکم الہی کی اعانت پر دل ہیں جو انکو چاند کر سٹایا جاتا ہے۔

(۳) خدا کی عظمت کے خیال کرنے کے بعد جو اپنے نفس کی حقیر کی کیفیت اپنے دل پر طاری ہوتی چاہیے عالم اجسام میں اس کیفیت کے قائم مقام اور اسکے مقابلہ میں اگر ہے تو جبکہ جلا ہے جسکو اصطلاح اسلام میں رکوع کہتے ہیں اور اسکے علوم وہاب غیر متناہیہ کے اعتقاد کے بعد جو اپنی کائناتی کے خیال کی کیفیت دل میں پیدا ہوتی ہے اسکے مقابلہ میں اور اسکے قائم مقام اس بدن کے احوال و افعال میں اگر ہے تو یہ ہے کہ اپنا سر اور منہ جو کہ گل عزت بکھے جاتے ہیں زمین پر رکے اور ناک اسکے خاک آستانہ پر رگڑے اسکو اسلام میں سجدہ کہتے ہیں۔

(۴) لہذا میں انسان کو خدا تعالیٰ کے روبرو کھڑا ہونا چاہتا ہے اور قیام الہی تو لب خدمت گارہن میں سے ہے یہ نواز کا پہلا حصہ ہے پھر رکوع جو دوسرا حصہ ہے یہ عطا تاب کہ وہ عقل حکم الہی کو کس قدر گردن جھکتا ہے اور سجدہ جو تیسرا حصہ ہے کل اب اور کمال مذلل اور نہایتی کو جو کہ عبادت کا مقصود ہے۔ ظاہر کرتا ہے کہ تو لب اور طریق میں جو خدا تعالیٰ نے بطور پیدائش کے مقرر کئے ہیں اور جسم کو باطنی طریق سے حصہ دینے کی خاطر ان کو مقرر کیا ہے۔

نمائز میں دو سجدے مقرر ہونے کی وجہ: سجدہ اول نفس کو اس بات پر متنبہ کرنے کیلئے

ہے کہ میں اس خاک سے پیدا ہوں اور دوسرا مسجد واس بات پر وال ہے کہ میں اسی خاک میں لوٹ جاؤں گا۔

سورہ فاتحہ نماز کی ہر رکعت میں پڑھنے کی حکمت: انسان کا نام ہے کہ اس کے دل پر کسی واقعہ کی نصیحت کا اثر ایک ہی بار میں کچھ نہیں پڑتا اسی طرح انسان کے دل کا رنگ جو کہ اسے محسوسات میں لگائے رکھتے سے پیدا ہو جاتا ہے ایک دفعہ کے تکار سے دور نہیں ہو سکتا قانون قدرت میں بھی محسوسات میں جو رنگ زدہ اشیاء ہیں۔ وہ ایک دفعہ کے مصدقہ پیمبر نے سے روشن اور چمکدار نہیں ہو تیں اسی طرح سورہ فاتحہ بھی بڑی بڑی روحانی برادریوں کے رنگ کا مصدقہ حقیقی اسی واسطے ایک نماز میں یہ کئی بار پڑھی جاتی ہے۔

ہجرت گناہ جماعت و جمعہ و عیدین و حج کی عبادات میں اہل اسلام کے جمع ہونے کی حکمتیں: قرب و جوار کے لوگوں کا ہر روز پانچ مرتبہ ایک جگہ میں جمع ہونا اور پھر شانہ سے شانہ جو ذکر اور پاؤں سے پاؤں ملنا کر ایک ہی سچے محبوب کے حضور میں کھڑا ہونا قوی اتقاق کی گھسی بڑی تمیز ہے پھر ساتویں دن جمعہ کو آس پاس کے پھولنے قریبوں اور بھتیوں کے لوگ صاف اور مطلق ہو کر ایک بڑی جامع مسجد میں اکٹھے ہو کر میں اور ایک عالم ضروریات قوم پر تبلیغ تقریر (یعنی خطبہ) حمد و نعت کے بعد کیا کرے۔ اور عیدین میں سال میں دو بار کسی قدر دور کے شہروں کے لوگ ایک فراخ میدان میں جمع ہوں اور اپنے بھائی کی ایک شوکت جسم اور کثیر جماعت بن کر دنیا کو آفتاب اسلام کی ہلکے دکھایا کریں اور عمر بھر میں ایک بار اس پاک زمین میں یعنی اس فراعین میں جہاں سے نوانور و توحید چمکا کل عالم کے خدا دوست حاضر ہوا کریں اور ساری بھڑکی ہوئی متفرق باتیں اسی وقت میں نکلتی ہو کر میں اور وہاں ان میں اور پھر کے گھر کی باہر اس رب الارباب محبوب و مخلص کی جس نے اس راضی مقدر سے توحید کا عظیم انسان و انعام ظہیر باری نکالا حمد و ستائش کیا کریں اسی طرح جماعت جتنے ہر سال اس یادگار (رحمت اللہ) کو دیکھ کر ایک نیا جوش اور جازہ ایمان دل میں پیدا

کیا کریں جو حسب تقاضائے فطرت ایسی یہ کاروں اور نکلانوں سے پیدا ہونا ممکن ہے سخت جماعت ہے۔ اگر کوئی اہل اسلام بھی مؤید قوم کو مخلوق پرستی کا الزام لگا دے۔ ایسے معترض شخص کو انسانی طبیعت کے عام میلان اور ہذبات کو مد نظر رکھ کر ایک واجب القدر امر پر غور کرنا چاہیے کہ اگر قرآن کے پارے اور خاص معتقدین کی طہائے میں مت پرستی ہوئی تو ان کو اپنے بدی نئی لمحہ مصیبتیں کے روفہ مقدسہ سے بلا کر کونسا منبع عقائد تعالیٰ نے مکہ معظمہ میں آنحضرت ﷺ کا مرتد مہدک نہیں ہونے دیا تاکہ تو یہ الہی کا پاک سرپوش ہر قسم کے شانوں اور ممکن خیالات کے گردو گھرد سے پاک و صاف رہے اور مخلوق کی فوق العادہ تعظیم کا اجمل بھی اٹھ جائے۔

نماز میں قوسہ مقرر ہو چکی وجہ : یہ تکبیر کوئی سجدہ کرنا چاہتا ہے تو سجدہ تک پہنچنے کیلئے اسکو جھکا ضرور ہوتا ہے اور وہ جھکا کر نہ ہو تاہم صرف سجدہ میں پہنچنے کا ذریعہ ہو تا۔ اس لئے ضرورت ہوتی کہ رکوع اور سجدہ کے درمیان میں ایک تیسرا فعل جو ان دونوں سے جدا ہے لایا جائے تاکہ رکوع سجدہ سے اور سجدہ رکوع سے علیحدہ ہو کر دونوں ایک مستقل عبادت نصیریں اور ہر ایک کے لئے نفس کا روضہ جدا ہو تاکہ نفس کو ہر ایک کے اثر معلوم کرنے میں سبب و آگاہی بھی جدا گانہ ہو اور وہ تیسرا فعل قوسہ ہے۔

نماز میں تعین جلسہ کا راز : وہ سجدہ میں اس وقت تیسرا ہو سکتے ہیں کہ جب ایک تیسرا فعل انکے درمیان میں جاگل ہو جائے اس لئے وہ سجدوں کے درمیان جلسہ مقرر کیا گیا اور چونکہ قوسہ اور جلسہ بدین اطمینان کے ایک طرح کا تخیل ہو چکا اور آدمی کی جسکارتی پر ولایت کرتا جو شان عبادت کے بائکل خلاف ہے اس لئے ان دونوں کو بھی اطمینان کے ساتھ لیا کرنے کا حکم دیا گیا۔

حکمت نکرار وقت رکوع و سجود : (۱) ہر سرچہ جھکنے اور سر اٹھانے کے وقت تکبیر کہنے میں پورا ہے کہ نفس کو ہر سرچہ خدا کی عظمت اور انکی جبرائی پر آگاہی اور سبب ہوتی رہے اور اسکو

اپنی ذلت اور مسکنت پر توجہ پڑتی ہے۔

(۲) دوسرے اس امر میں یہ حکمت ہے کہ جماعت کے لوگ تھمیر کو من کر نام کا ایک حالت سے دوسری حالت کی طرف منتقل ہونا معلوم کرتے ہیں۔

ظہر و عصر کی نمازوں میں خفیہ اور مغرب و عشاء و فجر میں جہری قرأت پڑھنے کی وجہ ظہر و عصر کی نمازوں میں خفیہ اور مغرب و عشاء و فجر کی نمازوں میں جہری قرأت پڑھنے کا مقرر نہایت مناسب اور حکمت الہی پر مبنی ہے کیونکہ مغرب و عشاء و فجر میں لوگوں کو اکثر شواغل و اقوال و اصوات و حرکات میں خاموشی اور ان سے سکون و آرام ہوتا ہے اور ان وقتوں میں اسکے افکار و ہجوم بھی کم ہوتے ہیں۔ لہذا ایسے لمحات کی قرأت دلوں میں زیادہ موثر ہوتی ہے کیونکہ دل تو افکار و ہجوم سے خالی اور صاف ہونے سے اور کان اور شواغل و حرکات و اصوات کے نہ ہونے سے سمجھنے اور سنانے پر آمادہ ہوتے ہیں چنانچہ راست کی بات کہی ہوئی کانوں سے گذر کر سیدھی دل پر جا کر لگتی ہے اور یہی اور موثر ہوتی ہے اس امر کی طرف خدا تعالیٰ بھی قرآن کریم میں ارشاد فرماتا ہے ان ما شنۃ اللیل ہی اشد و طأو القوم لیلًا ترجمہ: یعنی راست کے اٹھنے سے نفس خوب پہلے ہو جاوے رکھا جاتا ہے اور بات کہی ہوئی دل پر موثر اور یہی ہوتی ہے اور تھک جاتی ہے غرض یہ امر مسلم ہے اور تجربہ بھی اسی امر کا کواکب ہے کہ خوش الحان قومیں اور پر بندوں اور باجوں وغیرہ کی تو اذات کو بہ نسبت دن کے دلوں کو زیادہ موثر اور خوش معلوم ہوتی ہے لہذا ان لمحات میں جہری قرأت پڑھنی مقرر ہوئی جس میں وہ زیادہ موثر ہو۔

اسی طرح ظہر و عصر کی نمازوں میں قرآن کے آہستہ پڑھنے میں یہ حکمت ہے کہ دن میں ہزاروں اور گھروں کے اندر شور و شغب رہتا ہے اور اس لئے لمحات ظہر و عصر میں کثرت شواغل و حرکات و اصوات و متفرق امور و افکار سے دلوں کو فراغت کم ہوتی ہے اور بات پر خوب توجہ نہیں جیتی اس لئے ان وقتوں میں قرأت میں جہر نہیں مقرر ہوا۔ چنانچہ قرآن کریم میں بھی اسی امر کی

طرف خدا تعالیٰ نے ایسا فرمایا ہے۔ ان لکت ہی البهار سبحاً طویلاً۔ ترجمہ۔ یعنی دن میں چھو
دور دراز فاصلہ رہتا ہے اور اس وقت پوری توجہ نہیں ہوتی اور رات میں دل کو زبان سے اور زبان کو
کان سے پوری مواصلت ہوتی ہے اور یہی وجہ ہے کہ فجر کی نماز میں سب نمازوں سے زیادہ لمبی
قرأت کا پڑھنا سنت ہے نبی علیہ الصلوٰۃ والسلام فجر کی نماز میں ساتھ سے سو آیت تک پڑھتے تھے
اور حضرت ابو بکر صدیق رضی اللہ تعالیٰ عنہ فجر کی نماز میں سورہ بقرہ اور حضرت عمر بن الخطاب رضی
اللہ عنہ سورہ نمل اور سورہ بقرہ اور سورہ بقرہ پڑھتے اور ان کے بعد سورہ بقرہ پڑھتے اور ان کے بعد
کرتے تھے کیونکہ نیت سے جاگنے کے وقت دل کو فراغت ہوتی ہے اور مصلحت ہے کہ پہلے پہلے جو
تو اذکار سے گذر کر دل پر پڑے وہ خدا تعالیٰ کا کلام ہو جس میں انسان کیلئے سر اسرار بھائی اور رکت
اور خیر و طوبی بھری پڑی ہے اور اس وقت وہ کلام دل میں بطور امت موثر ہو تا اور دل میں خوب جم
جاتا ہے۔

جمعہ و عیدین وغیرہ میں جہری قرأت کی وجہ جب دن کے وقت کوئی ایسی نماز پیش
آجائے جو نماز کے علاوہ تبلیغ اسلام، تعلیم و معارف و ترویج عقیدتیں کیلئے مقرر کی گئی ہو تو وہاں قرأت
دن میں جہر اور آواز سے پڑھنی مقرر ہوئی ہے مثلاً جمعہ و عیدین اور استسقاء اور بعض آئمہ کے
نزدیک کسوف کی نمازوں میں قرأت جہری پڑھی جاتی ہے کیونکہ ان وقتوں میں قرأت کا جہر سے
پڑھنا لوگوں کے جمع ہونے کے مقصود کو مفید ہوتا ہے یعنی لوگوں کے لئے تعلیم و تبلیغ احکام
اسلام و عبادت بھی اغراض ہوتے ہیں لہذا ایسے موقعوں پر جہری قرأت کا پڑھنا مفید یا گیا کیونکہ ان
موقعوں پر عام لوگوں کے بڑے بڑے گروہوں کو خدا تعالیٰ کا کلام سنایا جاتا ہے اور انکو تبلیغ احکام کی
جاتی ہے کیونکہ انکو ایسے اجتماع کا موقع دہر کے بعد ملتا ہے اور یہ امر رسالت کے اعظم مقاصد میں
سے ہے چنانچہ اس امر کے حقیق عالم حضرت ابن قیمؒ فرماتے ہیں۔ اذاعراض ہی فلتک
معارض لروح منہ کالمجامع العظام فی العیدین والحجۃ والاستسقاء والکسوف

فان الجهر حينئذ احسن و ابلغ في تحصيل المقصود و اجمع للجمع فيه من فرائد كلام الله عليهم و تليده في المحاميع العظام ما هو من اعظم مقاصد الرسالة

الغرض ایسی نمازوں میں قرآن پاک کا جہ سے پڑھنا مقرر کیا گیا تاکہ لوگوں کو قرآن کے اندر تہذیب کا موقع ملے اور انہیں قرآن کی عظمت بھی پائی جاتی ہے۔

جمعہ و عیدین وغیرہ میں تقریر و خطبہ کی وجہ: نماز جمعہ و عیدین و کسوف و استسقاء میں خطبہ بھی مقرر کیا گیا تاکہ جو لوگ جو واقف ہیں وہ واقف ہو جائیں اور تبلیغ اسلام و تکمیل انکام الہی انکو کا حق ہو۔ جلد سے جلد اور وہ واقف و عالم ہو جائیں اور جو لوگ جاہل و واقف و عالم ہونے کے عاجل ہیں ان کیلئے یاد دہانی ہو۔ جلد سے جلد اور وہ ہو سید ہو جائیں۔

نماز کے ہر دور رکعت کے درمیان التحیات مقرر ہونے کی وجہ: چونکہ اصل میں نماز وہی رکعت مقرر ہوئی تھی اور باقی رکعتیں انکی تکمیل کے واسطے ہیں اس واسطے ہر دور رکعت کے بعد تشہد مقرر ہوا تاکہ اصل اور فرع میں تیسرے جلد سے جلد اور اسی تیسرے کیلئے پہلی دو رکعتوں میں فاتحہ کے ساتھ فہم سورۃ بھی واجب ہو اور آخری دو رکعتوں کے ساتھ فہم سورۃ مقرر نہیں ہوا۔

نماز میں تقریر و تحیہ کی وجہ: جب عہد الہی کے پڑھنے سے فراغت ہوئی تو حضور الہی میں تشہد جانے کی اجازت عطا ہوئی اور اس سے پوچھا جاتا ہے کہ صلاے حضور میں کیا تشہد لائے ہو تو اس وقت دو زانو بندہ کر اس امر کا اظہار کیا جاتا ہے کہ اے خدا تعالیٰ تمہاری عبادت چاہتی اور مال کا مستحق تو ہی ہے اور یہ تمہاری ہی حضور کے لائق ہے لہذا میرا مال و بدن اس امر کیلئے تمہارے حضور میں ہے۔

تھیہ نماز میں آنحضرت ﷺ پر سلام مقرر ہونے کا راز: نماز میں نبی علیہ

اصولہ و السلام کے واسطے بھی سلام مقرر کیا گیا تاکہ نبی ﷺ کی یاد دل سے نہ بھٹائیں اور انکی رسالت کا اقرار کرتے رہیں اور نعمت اسلام اور آپکی تبلیغ رسالت کی قدر دانی کریں اور اسکے شکر یہ میں آپ پر سلام بھیجیں من لم یشکر الناس لم یشکر اللہ یعنی جو لوگوں کا شکر گزار نہ ہو وہ خدا کا کب شکر کر سکتا ہے اس طرح سے آنحضرت ﷺ کا کچھ حق لیا ہو جائے گا لہذا قیامت میں آنحضرت ﷺ پر سلام مقرر ہوا۔

تکبیر نماز میں عام مومنین و صلحاء پر سلام مقرر ہونے کی حکمت : نماز میں السلام علیا وعلیٰ عباد اللہ الصالحین میں سلام کو عام کر دیا گیا یعنی ہم پر سلام اور خدا کے نیک بندوں پر سلام آنحضرت ﷺ نے فرمایا کہ جب اللہ سے کی زبان سے یہ نکلا تو ہر ایک نیک بندے کو جو کہ آسمان زمین میں سے ہے سلام پہنچ جائے گا۔ اس میں تخم سلام حق اور روئی ہنسی نوع کی جانوری کیلئے ہے۔

حکمت اشارہ بالہا ہا : حضرت شاہ ولی اللہ کہتے ہیں کہ اس میں ہمید یہ ہے کہ انگلی کے اٹھانے میں توحید کی طرف اشارہ پایا جاتا ہے جسکی وجہ سے قول فعل میں مطابقت ہو جاتی ہے اور توحید کے معنی آنکھوں کے سامنے متکل ہو جاتے ہیں۔

نماز میں حکمت مشع اشکال مکروہہ : نماز میں ان امور کے عمل میں لانے کا حکم ہے جو دھار اور عداوت حسد پر دہل ہوں اور ان کو عاقل پسند کریں اور ایسے عادات نماز میں ظاہر نہ ہونے چاہیں جن کو غیر ذی اہول کی طرف نسبت کرتے ہیں مثلاً جیسے مرغ کی طرح ٹھوکر مارنا۔ کتے کی طرح تلخا کو مزی کی طرح زمین پر لینا کونٹ کی طرح تلخا اور درختوں کی طرح ہاتھ زمین پر بھرا دیا اور ایسے ہی وہ بھیجی جو حکیم لوگوں پاؤں لوگوں کو ہوتی ہیں جن پر عذاب نازل ہوتا ہے ان سے بھی احتراز کرنا چاہیے مثلاً کمر پر ہاتھ رکھا کر کھڑا ہونا۔

تشمہ کے بعد درود و عاکی وجہ: تشمہ کے بعد دعا کے متعلق آنحضرت ﷺ نے فرمایا کہ جو دعا نمازی کو پند ہو وہ کرے یہ اس واسطے کہ نماز سے فارغ ہونے کا وقت ہے کہ تکہ نماز پڑھنے کی وجہ سے رحمت الہی اس پر پھا جاتی ہے اور ایسی حالت میں دعا مستجاب ہوا کرتی ہے اور دعا کے ثواب میں سے پہلے جناب باری کی حمد و ثناء بیان کرنا اور نبی ﷺ کا توصل کرنا ضروری ثواب ہے یعنی آنحضرت ﷺ پر صلوات و سلام و برکات کے نکلنے لگے جائیں تاکہ دعا مستجاب ہو جائے پھر اسکے بعد اپنے لئے اور اپنے مال و ثواب کے لئے دعائے مغفرت پڑھنا وغیرہ ضروریات دین کر کے نماز کو شتم کرنے کیلئے دعا ہے یا نہیں طرف مذکر کے السلام علیکم ورحمۃ اللہ کے کر نماز سے فارغ ہو جاتے ہیں۔

اسلام کے ساتھ اختتام نماز کی وجہ: دعا ہے یا نہیں سلام پھیرنے میں اشارہ ہے کہ وقت نماز میں گویا میں اس عالم سے باہر چلا گیا تھا اور ماسوی اللہ سے فارغ ہو کر انکی درگاہ میں پہنچ گیا تھا۔ اسکے بعد اب پھر آیا ہوں اور موافق رسم آید گان ہر کسی کو سلام کرنا ہوں۔

جاں سرفراز و بدن اندر قیام :- وقت رخصت ذرا سب گویا سلام

فرضوں کے قیل اور بعد سنتیں مقرر ہو چکی وجہ: اصل بات یہ ہے کہ اللہ تعالیٰ دنیاوی خدا کی پاد سے انسان کو غافل کر دیتے ہیں لہذا ایسی بات کی ضرورت ہوتی کہ اس کدورت کے صاف کرنے کی فرض سے عملیہ فرض اسکا استہلال کیا کریں تاکہ فرائض کے اندر شروع کرنا ایسے وقت میں پایا جائے کہ تمام مشغلوں سے دل خالی اور سب سے خاطر جمع ہو۔ یہ تو عمل کی سنت کی حکمت ہوئی اور ممالوات آدمی با طرح نماز پڑھ لیتا ہے کہ ہر عدم رعایت ثواب نماز کا فائدہ اسکو پوری طرح حاصل نہیں ہوتا لہذا ضروری ہو کہ فرائض کے بعد بھی اس مقصود کے پورا کرنے کیلئے کچھ نماز اور مقرر کی جائے تاکہ جو کئی مقصود فرائض میں ہو سنتوں کے ذریعے سے تکمیل ہو اور حجر کسر ہو جائے۔

چار گانہ آخری دور کعتوں میں سورت نغمہ کرنے کا راز : دراصل اللہ وہ میں نماز دور کعتیں ہی مقرر ہوئی تھی بعد ازاں خدا تعالیٰ نے ان دور کعتوں کی تکمیل و اکمال کیلئے عصر و عصر و عشاء کے فرائض کے ساتھ دو دور کعتیں اور مغرب کی نماز میں حکمت و تر کو ضائع نہ کرنے کی وجہ سے ایک رکعت ملائی اور قاعدہ ہے کہ جب کسی چیز کا جبر کسر مطلوب ہو تا ہے تو اسکے ساتھ اسکے نوع کی ایسی چیز ملائی جاتی ہے جو حیثیت اور جہ میں اس سے لائق ہو پس اگر پہلی دور کعت فرائض کے ساتھ دوسری دور کعت کامل مع ضم سورت ملائی جاتیں جو ہر دور چہ وہ ہر پہلو سے پہلی دور کعتوں کی ورہ ہو جس تو جبر و کسر و اکمال رکعتیں کی حکمت ضائع ہو جاتی اور خود پہلی دور کعتوں کا جبر کسر اسی مصلحت سے ہوا کہ ایسا وقت حضور و توحید یا تمہا قرأت میں یا ارکان میں سے کسی رکن میں نقص و کسر نہ ہوتی ہے اسلئے اس کے عوض میں دوسری رکعتیں ملائی گئیں۔

جماعت نماز کی اور اس میں عقول کو بر لہر کرنے کی وجہ : نماز میں جو جماعت رکھی ہے اور جماعت کا تہذیب و ثواب رکھا ہے اس میں یہ فرض ہے کہ اس سے قوم میں وحدت پیدا ہوتی ہے اور پھر اس وحدت کو عملی رنگ میں لانے کی یہاں تک ہدایت اور تاکید ہے کہ باہم پائاں بھی عمادی ہوں اور صفت سیدھی ہو اور ایک دوسرے سے ملے ہوئے ہوں اس سے مطلب یہ ہے کہ گویا ایک ہی انسان کا حکم رکھیں اور ایک کے اطوار دوسرے میں سرایت کر سکیں اور باہم ہمد و امتیاز جس میں خودی اور خود فریضی پیدا ہوتی ہے نہ رہے۔

حقیقت تھیہ نماز : عبادات تھنا اللہ جل شانہ ہی کا حق ہے کسی قسم کی عبادت میں اسکا کوئی شریک نہیں اللہ تعالیٰ اس بات سے نفی ہے کہ کوئی اسکا شریک اور ساجھی ہو یہ حاصل ہے النجات لہ کا پھر اس سے آگے ہے السلام علیک ایہا النبی ورحمة اللہ وبرکاتہ اسکی حقیقت یہ ہے کہ قاعدہ کی بات ہے کہ ہر عمن اور مرئی کی محبت کا جوش انسان کے دل میں فطرتاً پیدا ہوتا ہے اور ظاہر ہے کہ رسول اللہ ﷺ کے ہم پر کیسے کیسے احسانات ہیں وہی ہیں ہنگامہ ذریعہ

سے ہم نے خدا کو جاننا چاہا وہی ہیں جنکے ذریعہ سے ہم نے خدا کے لوازم و لواہی اور اسکی خوشنودی حاصل کرنے کی راہیں معلوم ہوئیں وہی ہیں جنکے ذریعہ سے خدا کی عبادت کا اعلیٰ سے اعلیٰ طریقہ یعنی نماز اور نماز ہمیں میسر ہیں۔ وہی ہیں جنکے ذریعہ سے ہم اعلیٰ سے اعلیٰ مدارج تک ترقی کر سکتے ہیں وہی ہیں جنکے ذریعہ سے لا الہ الا اللہ کی پوری حقیقت ہم پر منکشف ہوئی وہی ہیں جو خدا انسانی کا اعلیٰ ذریعہ ہیں۔ فرض آنحضرت ﷺ کے ہم پر اسنے احسانات اور انعامات ہیں کہ ممکن تھا کہ جس طرح سے لوہ قومی اپنے مسنوں اور نبیوں کو جان کے انعامات کثیرہ کے لطفی سے جانے اس کے کہ ان کو خدا انسانی اور خدا انسانی کا ایک ٹکڑہ سمجھتے تھے اسی کو خدا ایسا اور توحید سکھانے والے لوگوں کو خود واحد و یگانہ مان لیا اور انکی تعلیمات کو جو نہایت ہی خاکساری اور عبودیت سے مہری ہوئی تھیں بھولی کر شرک کر دیا اور اسی کو معبود یقین کر لیا ہم مسلمان بھی ممکن تھا کہ ایسا کر دیتے مگر اللہ تعالیٰ نے عقل اپنے فضل و کرم سے اسامت مرعوبہ پر رحم کرنے اور اسے خطرناک انتہا سے جانے کیلئے محضاً عہدہ و رسولہ کا جملہ ہمیشہ کیلئے توحید الہی لا الہ الا اللہ کا جزو بنا کر مسلمانوں کو ہمیشہ کیلئے شرک سے چھایا اور اسی باریک حکمت کیلئے آنحضرت ﷺ کی قبر بھی مدینہ منورہ میں ہوئی کہ معظفہ میں نہیں رکھی کیونکہ اگر کہ معظفہ میں آئی قبر ہوتی تو ممکن تھا کہ کسی کے دل میں خیال پرستش آجاتا یا کم از کم دشمن اور مخالف ہی اس بات پر اعتراض کرتے مگر اب مدینہ میں قبر ہونے سے جو لوگ کہ معظفہ میں جانب شمال سے جانب جنوب منہ کر کے نماز ادا کرتے ہیں تو انکی بیچے آنحضرت ﷺ کی قبر مبارک کی طرف ہوتی ہے اس طرح سے اللہ تعالیٰ نے قیامت تک کیلئے یہ ایک راہ آپ کی قبر کے نہ چھوئے جانے اور مسلمانوں کے شرک میں مبتلا ہونے کے واسطے بھاری اور اسی طرح سے جن جن باتوں میں اس بات کا وہ ہم گمان بھی ہو سکتا تھا کہ کوئی انسان آپ کو خدا ماننے کا یعنی آپکے شریک فی الذات یا فی الصفات ہونے کا گمان بھی جن باتوں سے ممکن تھا ان کا خود خدا نے اسلام کی گئی اور پاک تعلیم میں ایسا بندہ دست کر دیا کہ ممکن ہی نہیں کہ کوئی مسلمان اس امر کا مرتکب ہو مگر چونکہ عمن سے محبت کرنا اور گرویدہ احسان اور

انسان کی فطرت کا تقاضا تھا اس واسطے انکی ایک رولہ کھول دی کہ ہم آپ کیلئے دعا کیا کریں اور اس طرح سے آنحضرت ﷺ کے واسطے السلام علیک ایہا النبی ورحمة اللہ وبرکاتہ کا پاک تھیہ پیش کرتا ہے اور درود ال سے شکر گزار ہو کر گویا کہ آپ کے احسانات اور مہربانوں کے خیال سے آپکی ایسی محبت پیدا کر لیتا ہے جیسے آنحضرت ﷺ انکے سامنے موجود ہیں آپکے حسن احسانات کے نقش سے آپکا وجود حاضر کی طرح سامنے آ کر کہ حقیر حاضر جاں کر طالب کے رنگ عرض کرتا ہے جس سے عقیدت حق تعالیٰ سے آپ کیلئے دعا ہے السلام علیک ایہا النبی ورحمة اللہ وبرکاتہ۔ ترجمہ :- یعنی اے نبی تھو پر خدا کی رحمت اور برکات نازل ہوں۔ اور پھر رسول ﷺ کے بعد جو آپکے دین کے سچے خدام یعنی صحابہؓ کو لایا اللہ صمدیاً اکتایا اور لہدال آئے اور قیامت تک آتے رہیں گے انکے واسطے بھی وہ جان کی حسن خدمات کے کہ انہوں نے بعد رسول کریم ﷺ ہم پر بسنے والے ہماری احسانات اور انعامات کے دعا تعلیم کی گئی۔ یعنی السلام علینا وعلیٰ عباد اللہ الصالحین

جلسہ تھیہ کے بعد درود نبوی پڑھنے کی حکمت : اللہم صل علیٰ محمد وعلیٰ آل محمد۔ کما صلیت علیٰ ابراہیم وعلیٰ آل ابراہیم انک حمید مجید۔ اللهم بارک علیٰ محمد وعلیٰ آل محمد کما بارکت علیٰ ابراہیم وعلیٰ آل ابراہیم انک حمید مجید۔ ترجمہ :- یعنی اے اللہ رحمت بھج گھ اور آل محمد پر جیسا کہ تو نے رحمت بھجی ہر انبیا اور آل ہر انبیا پر بھجک تو ستورہ صفات اور برک ہے۔ اے اللہ برکت بھج گھ اور آل محمد پر جیسا کہ تو نے برکت بھجی ہر انبیا اور آل ہر انبیا پر بھجک تو ستورہ صفات اور برک ہے۔ یہ الفاظ جو ہم نماز میں پڑھتے ہیں انکا نام ہے درود۔ واقع میں اگر ہم اللہ کے پاس سے دعا سے اور طلب اور تقسیم کرنے والے اور مخلوق پر شفقت اور رحم کرنے والے اور علوم اور عقائد سے خوشحال ہو جاویں تو یہ سب فیضان اور احسان ہم پر حقیقت میں نبی کریم ﷺ ہی کا ہے اگر آپ کے دل میں ہمارا درود اور جوش

نہ ہوتا تو قرآن کریم بخسی پاک کتاب کا نزول ہمارے لئے کیسے ہوتا اگر قلب کی مریاں ہوں اور
توجہات اور تکلیفیں اور تکالیف شاقہ نہ ہوتیں تو یہ پاک دین ہم تک کیسے پہنچ سکتا۔ پھر خود کا مقام
ہے کہ جب کوئی کوئی محسنوں سے ہمیں محبت پیدا ہو جانا ہماری فطرت سلیم کا تقاضا ہے تو پھر
آنحضرت ﷺ کی محبت کا جوش کیوں مسلمان کے دل میں موجزن نہ ہو گا جس اسی جوش کا اثر ہے
یہ درود جو کہ دعا ہے۔

امامت نماز و جماعت کی حکمت : جب کسی امر کا اظہار درود منظور ہوتا ہے تو اسکو عملی
صورت میں لا کر دکھاتے ہیں چونکہ خدا تعالیٰ کو اس عالم کی ہر چیز میں اعتدال منظور ہے اور اشیاء
میں اعتدال جب ہی قائم رہتا ہے کہ ان میں اعتدال اور وحدت کا رابطہ قائم ہو۔ پس خدا نے وحدت
و اتقان کو عالم تشریحی کے اندر جماعت و امامت نماز کی صورت میں دکھایا نظام مشہی کو دیکھو کہ
خدا تعالیٰ نے سارے اجرام صغیرہ پیدا کر کے ان سب کا امام اکبر و اعظم آفتاب کو بنایا اور سارے
خورد و درگ اجرام و اجرام کو اس کے ماتحت ٹھہرایا۔ الفرض عالم اجسام کے تمام سلسلے خورد و
درگ آفتاب تک بند رہتا چلتے ہیں پس جو عقل خدا نے عالم کو نوازا قانون قدرت میں پیدا کی ہے
وہی صورت جماعت امامت نماز عالم تشریحی میں ظاہر کر کے بنی قوم کو ظاہری و باطنی اتقان
کلیف ایسا فرمایا اور دکھایا کہ اتقان وحدت ہی کی بدست ہے جس کے ساتھ دنیا کا قیام ہے۔ پس
جبکہ عالم اجسام میں ہر وقت ایک امام کی ضرورت رہتی ہے تو پھر کیونکر ممکن ہو سکتا ہے کہ خدا نے
روحانی عالم کے قیام کے لئے کوئی روحانی امام مقرر نہ کیا ہو جس تک بند رہتا یہ سلسلہ ختمی ہوتا
ہو۔ سو وہ امتیاء و درسل اور ان کے خلفاء ہیں پس امامت کی امامت میں اسی روحانی رابطہ و اتقان کی طرف
ایسا ہے جبکہ سلسلہ حضرت محمد رسول اللہ ﷺ پر ختمی ہو تا ہے۔ اور آپ کی نیابت میں اسکا حضور اندر
صلوٰۃ کی صورت میں ہوتا رہتا ہے پس جو شخص اس کے برخلاف عمل کرتا ہے اور جماعت کا قائل
نہیں وہ مرتد اعتدال کو چھوڑتا اور خدا تعالیٰ کے قانون قدرت اور عالم تشریحی سے خارج ہو کر باقی

ہوتا ہے۔

جواب اس اعتراض کا کہ نماز کیوں ایک وقت مقرر نہ ہوئی: سوال۔ نماز کیوں ایک ہی وقت مقرر نہ ہوئی پانچ وقت کیوں ہوئی؟

جواب۔ جیسا کہ جسم کی تقویت کیلئے بہارِ خدا کی ضرورت پڑتی ہے ایسا ہی روح کی صحت و صفائی و تقویت کیلئے روحانی غذا کی ضرورت انسان کو ہلاوتی ہے۔ جب ہے کہ سائل کتا ہے نماز ایک ہی وقت کیوں مقرر نہ ہوئی ہم کہتے ہیں کہ جب تم جسم کی تقویت کیلئے گلی بدوہ میں غذا کھاتے ہو روح جو لطیف ترین و نازک ترین چیز ہے اسکی صحت و صفائی اور قوت قائم رکھنے کیلئے دن میں گلی بدوہ غذا کھاتے ہیں تو روحانی غذا کیلئے رات دن میں پانچ وقت مقرر ہوئی تو کیا حرج ہے۔

حقیقت جماعت مسجدکمانہ و جمعہ و عیدین و حج: جناب امی نے احکامات اور طہارت کے ساتھ پانچ وقت جمع ہو کر اور ملکر اس کی حکمت و جبروت کو بیان کرنا مسلمانوں پر لازم کر دیا کوئی شہر اور قصبہ نہ دیکھو گے جسکے ہر محلہ میں مسجد جماعت نماز نہ ہوتی ہو لیکن اس روزانہ پانچ وقت کے اجتماع میں اگر تمام باشندگان شہر و قصبہ کو اکٹھا ہونے کا حکم دیا جاتا تو یہ ایک تھکاف و اذیاق ہوتی اسلئے تمام شہر و قصبہ کے رہنے والے مسلمانوں کے اجتماع کیلئے ہفتہ میں ایک دن جمعہ کا مقرر ہوا اور پھر اسی طرح دیہات کے لوگوں کے اجتماع کیلئے عید کی نماز جمع ہوئی اور چونکہ یہ ایک بڑا اجتماع تھا اسلئے عید کا جلسہ شہر کے باہر میدان میں تجویز ہوا لیکن اسکے بعد پھر بھی کل دنیا کے مسلمان میل ملاپ سے محروم رہتے تھے۔ اس لئے کل اہل اسلام کے اجتماع کیلئے ایک بڑے صدر مقام کی ضرورت تھی تاکہ مختلف مقامات کے بھائی اسلامی رشتہ کے سلسلہ میں یکجا ہوں۔ لیکن اس کیلئے چونکہ ہر مسلمان امیر و فقیر کا شامل ہونا محال تھا اس لئے صرف صاحب استطاعت منتخب ہوئے۔

نماز ختم کرنے کے بعد دعائیں پڑھنے کا آواز: احادیث نبویہ میں کچھ کلمات و نغمہ

مسنون اور وہ ہیں جن کو آنحضرت ﷺ نماز ختم کرنے کے بعد پڑھا کرتے تھے۔ یہ ایسا ہے جیسا کہ کسی جائیداد کے وراثت سے رخصت ہونے کے وقت آؤب و سلام جلاتے ہیں اور یونہی چپ چپ رخصت نہیں ہوتے بلکہ وراثت سے رخصت ہونے کے وقت بھی آؤب و نیاز و عرض حال کرتے ہوئے رخصت ہوتے ہیں۔ چنانچہ آنحضرت ﷺ کو اپنے فرض کے بعد یہ کلمات پڑھا کرتے تھے۔ اللھم انت السلام و منک السلام و الیک یرجع السلام لہارکت و بنا و نعالت یا ذا الجلال و الاکرام۔

ترجمہ :- اے اللہ تو سلام ہے اور سلامتی تیری طرف سے مل سکتی ہے اور سلامتی کا سرچ تو ہی ہے نہ ہی رکت والا ہے اے جلال اور عزت والا۔

علیٰ بذالقیاس اور بھی رست کی لومیر میں جہم آنحضرت ﷺ نماز ختم کرنے کے بعد پڑھا کرتے تھے۔

نماز میں سترہ کاراز: اس میں بھی یہ ہے کہ نماز شعائرِ ظہنی میں سے ہے اور اسکی تکمیل واجب ہے اور چونکہ نماز اس حالت کے ساتھ عقیدہ مراد ہے جو حکام کو اپنے مولا کے سامنے سکون اور خاموشی کے ساتھ خدمت کیلئے کھڑے ہوتے وقت ہو کرتی ہے اس واسطے نماز کی ایک تکمیل یہ بھی مقرر کی گئی ہے کہ کوئی گزرنے والا نمازی کے سامنے ہو کر نہ گزرے کیونکہ آقا اور اسکے نکاحوں کے درمیان سے جو اسکے سامنے کھڑے ہوئے ہیں گذرنا سخت ہے اولیٰ ہے چنانچہ حضرت ﷺ فرماتے ہیں۔ ان احدکم اذا قام فی الصلوٰۃ فاما بنا جہی رہہ بینہ و بین القبلة ترجمہ :- یعنی تم میں سے جب کوئی نماز کیلئے کھڑا ہوتا ہے تو وہ اپنے رب سے عرض معروض کرتا ہے جو کہ اسکے قلب کے درمیان ہوتا ہے۔

نیز نماز کی سامنے گزرنے سے اسکا دل اکثر مت جاتا ہے اسی واسطے نماز کی کو اتھاق ہے کہ آگے سے گزرنے والے کو ہٹا دے۔ پس ان دونوں حکمتوں سے سترہ مقرر کیا گیا تاکہ اسکے

باہر سے گذرنے میں ان دونوں خرابیوں سے ممانعت رہے اسی کو آنحضرت ﷺ فرماتے ہیں اذنا
 وضع احدکم میں ہدیہ مثل مزر حرة الروح طہیصل ولا یصل بطن مروءاء ذلک
 ترجمہ۔ یعنی تم میں سے ہب کوئی اپنے سامنے کپڑے کے پٹے کے درمیان کوئی چیز رکھ لے تو پھر وہ
 نماز پڑھتا ہے اور اس سے پرے کو جو کوئی گذرے اسکی کچھ پر ولون کرے۔

اس میں بھید یہ ہے کہ چونکہ مطلق گذرنے سے ممانعت کرنے میں حرج عظیم تھا اس
 واسطے آپ نے ستر کے کوزا کرنے کا حکم دیا تاکہ ظاہر میں نماز کی زمین دوسری زمین سے علیحدہ
 ہو جاوے اور اس علیحدگی کے سبب پاس سے گذرنا بھی لمبا عیبی ہی سمجھا جاوے جیسے دور سے گذرنا
 مقبرہ میں نماز پڑھنے سے ممانعت کی وجہ: مقبرہ کے اندر نماز سے ممانعت کی یہ وجہ
 ہے کہ لوگ وہاں نماز پڑھتے پڑھتے ہوں کی طرح گولیاں اور عظام کی قبروں کی پرستش نہ شروع کر
 دیں اور یہ شرک جلی کی صورت ہے یا ان مواضع میں نماز پڑھنے کو زیادہ قرمت الہی کا سبب سمجھتے
 لگیں اور یہ شرک غفلتی ہے اور حضور ﷺ کی مراد اس فرمانے سے یہ ہی ہے کہ لعن اهل
 اليهود والنصارى التحذیر الیہم مساجد۔ ترجمہ:- یعنی یہ وہ نصاریٰ پر خدا کی
 لعنت ہو انہوں نے اپنے انبیاء کی قبروں کو سجدہ گاہ بنا لیا۔

غروب و طلوع و استواء آفتاب کے وقت منع نماز کی وجہ: اسکی وجہ یہ ہے کہ
 مشرکین ان اوقات میں آفتاب کی پرستش کرتے اور اس کو سجدہ کرتے ہیں اسلئے خدا نے ان کے
 ساتھ تشبیہ اختیار کرنے سے منع فرمایا اور ضروری ہو اگر اس عبادت کے اندر جو کہ سب
 عبادتوں میں ہادی ہے وقت کے اعتبار سے بھی ملت اسلام اور کفر میں تمیز اور فرق کیا جاوے۔

حمام میں منع نماز کی وجہ: حمام میں نماز سے ممانعت کی وجہ یہ ہے کہ وہاں لوگوں کے ستر
 کھلتے ہیں اور لوگ آتے جاتے ہیں ان باتوں سے نماز کی کمال مٹ جاتا ہے اور حضور ول سے انسان
 وہاں اپنے پروردگار کے آگے الجھائیں کر سکتا۔

لوٹنوں کے مقام میں منع نماز کی وجہ : جہاں لوٹ باتھ سے ہوں ان مواضع میں نماز سے ممانعت کی وجہ یہ ہے کہ لوٹ ایک عظیم الجثہ جانور سے نور جس کو پکڑ لیتا ہے پھر بھروسہ نہیں اور انکی عادت بھی ہوتی ہے کہ خولہ ٹھکانوں کو ستاتا ہے اور سرگشی اس جانور کا خاصہ ہے اور یہ باتیں ایسی ہیں کہ اٹکے ہوتے ہوئے وہاں کھڑے ہو کر نمازی کا دل نہیں لگے کچھ انذا آنحضرت ﷺ فرماتے ہیں صلوا علی مراح العجم ولا تصلوا علی معاطل الابل فلها خلقت من الشیطن۔ ترجمہ۔ یعنی بحریوں کے آرام گاہ میں نماز پڑھو اور اونٹوں کے مقام میں نماز مت پڑھو کیونکہ لوٹ کی سرشت میں شیطان بنا دیا ہے۔

ذبح میں ممانعت نماز کی وجہ : ذبح میں ممانعت نماز کی وجہ یہ ہے کہ وہ نجاست کا مقام ہے ایسی جگہ میں جانوروں کے ذبح کرنے کا خون اور گوشت وغیرہ پڑنے سے قلعن ہوتا ہے اور نماز کیلئے نچافت اور طہارت مناسب ہے۔

راستہ میں منع نماز کی وجہ : سڑک کے پچ میں نماز سے اس واسطے ممانعت کی گئی ہے کہ اول رات چلنے والوں سے نماز کا دل سے گا اور راستہ بھی لوگوں پر ٹھک ہو گا یا وہ آگے سے گزریں گے دوسرے دوسرے وغیرہ اور اس سے ہو کر ٹپکتے ہیں جیسا کہ وہاں اترنے سے بھی ایسی نجی صریح ہے ان وجوہ سے وہاں نماز پڑھنے کی ممانعت ہے بلکہ راستہ سے ایک طرف ہو کر نماز پڑھنا لازم ہے عن عمرو بن الخطاب ان رسول اللہ ﷺ قال سبع مواضع لا تحوز فیہا الصلوۃ ظہر بیت اللہ و المقبرۃ و المسلمۃ و المحزورۃ و الحمام و عطن الابل و محجۃ الطریق۔ ترجمہ۔ یعنی حضرت عمرؓ فرمادی ہیں کہ رسول اللہ ﷺ فرماتے ہیں سات مقاموں میں نماز جائز نہیں ہے۔ کعبہ کی چوٹی پر (مخاطب عسکرت کے ہاں قبرستان میں (مخاطبہ ہم شرک کے ہاں گھوڑے میں (وجہ نجاست کے ہاں جانوروں کے ذبح ہونے کے مقام میں (مخاطبہ اسی نجاست و قلعن کے ہاں تمام میں (مخاطبہ پر آگہ ہونے دل کے ہاں لوٹنوں کے مقام میں اور راستہ کے پچ

میں (مثلاً) خلل ہوئے حضور دل کے۔

اعمال کیلئے قضا اور خصمت مقرر ہونے کی حکمت : انسان کو اس وقت تک نذر وغیرہ بھی پیش آتے ہیں۔ پس اگر انکی ہائل رعایت نہ کی جائے تو حرج عظیم ہے اسلئے رخصت کا مشروع ہونا بھی مناسب ہے کہ اس میں مکلف کی سواست ہے اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے۔ **ویرید اللہ منکم البسر ولا یرید منکم العسر** ترجمہ : یعنی خدا تعالیٰ تمہارے لئے آسانی کا قصد کرتا ہے اور تمہارے ساتھ دقت اور دشواری نہیں چاہتا۔

اور اگر انکی رعایت سے عمل کو ساقط کر دیا جائے یعنی نذر کے وقت ادھام کی تعمیل باطل ترک کر دی جائے تو اس وقت نفس انکی ترک کا عادی ہو چکا ہے۔ پس نفس کی مطلق ایسی ہی کرائی جاتی ہے جیسے کسی تھک چکا ہو یا یہ کو مشق کراتے ہیں جو لوگ اپنے نفس کی رعایت کرتے ہیں بالکل ان کو عظیم دہتے ہیں یا پھر انکی کو مشق کراتے ہیں وہ طوب جانتے ہیں کہ کتنی میں اللہ و مناسبت کیسی پیدا ہوتی ہے اور کام کرنے میں اس سے کیسی اہمیت جاتی رہتی ہے اور اسکا کام کرنا نفس کو کیسا گراں معلوم ہوتا ہے کہ دوبارہ ان میں کام کرنے کی تھریک پیدا ہو تو اس نفع میں اللہ اور میدان پیدا کرنا پڑتا ہے اس واسلئے ان وجوہ سے دوا ضروری ٹھہرتے۔ ایک یہ کہ جب کسی کام کے کرنے کا وقت ہاتھ سے نکل جائے تو اس کیلئے قضا مشروع ہو۔ دوسرے یہ کہ اعمال کیلئے رخصتیں بھی مقرر کی جائیں چنانچہ اسی قاعدہ کے موافق تاریکی وغیرہ مکالمات میں استیصال قبلہ کی جگہ صرف تھریک پر کفایت کی جاسکتی ہے اور جس کو پورا میسر نہ ہو سزا عورت کو ترک کر سکتا ہے اور جس کو پانی نہ ملے وہ وضو کو ترک کر کے ٹھم کر سکتا ہے اور جس کو نماز میں قرات پر قدرت نہ ہو کسی ذکر پر اتکا کر سکتا ہے اور جسکو قیام پر قدرت نہ ہو وہ ٹھٹھٹھ یا لیٹنے لیٹنے نماز پڑھ سکتا ہے اور جو رکوع یا سجدہ نہ کر سکتا ہو اس کی قنہ صرف سر جھکانے سے ہو سکتی ہے اور اسکے ساتھ ہی یہ بھی قاعدہ ہے کہ بدل میں کوئی ایسی شے باقی رکھنی چاہیے جس سے اصل یاد آجائے اور معلوم

ہو جائے کہ یہ انکشاف اور بدل ہے۔

مسافر یا رام کیلئے رخصت افطار روزہ اور قصر نماز کی وجہ: مسافر یا رام کو رخصت افطار روزہ قصر نماز کی اجازت دینا اور متمم یا مشقت کو اجازت قصر نماز افطار روزہ کی نہ دینا حکمتِ کلیہ پر مبنی ہے اس میں کچھ شک نہیں کہ افطار روزہ قصر نماز مسافر کیلئے مخصوص ہے اور متمم افطار روزہ کرے اور قصر نماز کرے البتہ حذر مرض کیلئے متمم ہی صرف روزہ افطار کر سکتا ہے۔ شارع طیب الصلوٰۃ والسلام کی کمال حکمت پر مبنی ہے کیونکہ سفر بذات خود عذاب کا ایک ٹکڑا اور شواہد و مصائب اور محنت و مشقت و تکلیف پر مشتمل ہے مسافر اگرچہ زیادہ آسودہ حال لوگوں میں سے ہو مگر پھر بھی وہ حسب حیثیت خود ضرور ایک قسم کی محنت و مشقت میں ہوتا ہے پس خدا تعالیٰ کی محض رحمت و مصلحت ہے کہ اس نے اس پر سے ایک حصہ نماز کا کم کر دیا اور ایک حصہ پر اتکا فرمایا اور فرض روزہ میں سفر میں افطار سے مخفی فرمایا اور پھر نعم سفر کے بعد بھی اقامت میں اسکی اجازت کا حکم فرمایا جیسا کہ صدر و مآئین کے متعلق ایسا ہی حکم ہے تاکہ ان سے اس عبادتِ الہی کی مصلحت سفر میں ساتھ کرنے سے بالکل فوت نہ ہو جائے اور اقامت میں مشقت اور تکلیف اور مشکل پیش آتے ہیں وہ ایسے ہیں جنکا کوئی انحصار اور شمار نہیں ہے پس اس طرح اگر تعلق و مزدور و مشقت والے آدمی کے لئے رخصت و اجازت افطار روزہ قصر کی نماز کی ہوتی تو بہت ہی ضروری و لازمی عبادتِ ضائع ہو جاتی اور اگر بعض کے لئے اجازت ہوتی اور بعض کے لئے نہ ہوتی تو بھی انحصار نہ ہو تا اور کوئی خاص ایسا صنف بھی انحصار نہ ہو تا اور کوئی خاص صنف و صنف بھی نہیں ہے جنکا انحصار ہو سکے جس کی بنا پر رخصت و عدم رخصت ہوتی اختلاف سفر کے کیونکہ مشقت و محنت سفر کے ساتھ مصلحت کی گئی ہے اور انہیں مخفی عبادت کیساتھ مناسب ہے البتہ اگر متمم کو حذر مرض کیلئے ضرور ہو تو اسکے لئے افطار روزہ کی اجازت ہوتی اور نماز ٹھہ کر یا پہلو لیٹ کر اور کھانا بھی جائز رکھا گیا اور یہ قصر عدد کی تکمیل ہے۔ اور محض مکان کی مشقت و تکلیف

اقتدار نہیں کیا گیا کیونکہ یوں تو یہ آئین کی تمام ہی خصوصیتیں نکال کر محض پر موقوف ہوتی ہیں اور جو شخص محنت اور تکلیف نہیں اٹھاتا اسکو کوئی راحت و آرام نہیں ملتا محنت و تکلیف کی قدر ہی آرام و راحت سے ملتی ہے چنانچہ ظاہر ہے کہ مشقت کے تمام پیشوں میں مثلاً کاشتکاری اور آہل کاری وغیرہ محنت اور مشقت، حرج بالشرع ہو جائے اسی طرح دنیا کا کوئی کسب و کام محنت و مشقت سے خالی نہیں ہو سکتا اسلئے ان میں قصر نماز و نماز روزہ کی اجازت نہیں دی گئی کیونکہ پیشہ ور اور محنتی لوگ عام ان میں مصروف و مشغول رہتے ہیں انکے مسائل انہی پیشوں پر موقوف ہو کرتی ہے اگر انکو اجازت عام ہوتی تو اطاعت الہی کے انتظامات میں سخت لہری بکھل جاتی اس لئے مصلحت و حکمت الہی نے عام محنتوں و مشقتوں میں رخصت تجویز نہیں فرمائی بلکہ خاص محنتوں و مشقتوں کیلئے رخصت ہوئی بخلاف یہ ہے کہ ہر ایک حرج کی صورت میں رخصت تجویز نہ کرنا چاہیے اسلئے کہ حرج کے طریقے بگڑتے ہیں اور اگر سب میں رخصت تجویز کی جائے تو اطاعت الہی بالکل متروک ہو جائے۔

حائضہ پر اوائے روزہ اور عدم اوائے نماز کی وجہ : حضرت ابن قیم رحمۃ اللہ علیہ لکھتے ہیں :- **واما بحباب الصوم علی الحائض دون الصلوة فمن تمام محاسن الشریعة وحکمتها ورعايتها المصالح المتکافیة فان الحيض لما كان منافيا للعبادة لم يشرح فيه فعلها وكان في صلاحها ايام التطهير ما يبيحها عن صلاح ايام الحيض فيحصل بها مصلحة الصلوة في زمن التطهير بتكررها كل يوم بخلاف الصوم فانه لا يتكرر و هو شهر واحد في العام فلوسقط عنها فعله ايام الحيض لم يكن لها سبيل الى تدارك نظيره وفانت عليه مصلحة فوجب عليها ان تصوم في طهر لتحصل مصلحة الصوم التي هي من تمام رحمة الله بعبده واحسانه اليه بشرعه وبالله التوفيق ترجمہ :- یعنی حائض پر روزہ بہ روزہ عدم اوائے نماز کا سبب شریعت حد کی طوابع اور اس کی حکمت اور رعایت**

مصالحِ مکتفین سے ہے۔ کیونکہ جب نیض سنائی عبادت ہے تو اس میں عبادت کا فعل مشروع نہیں ہو اور ایام طہر میں اس کی نماز پر صحابہم نیض میں نماز پڑھنے سے کافی ہو جاتی ہے کیونکہ وہ بار بار روزمرہ آتی ہے مگر روزہ روزمرہ نہیں آتا ہر سال میں صرف ایک مہینہ روزوں کا ہے اگر ایام نیض کے روزے بھی اس سے ساقط کر دیئے جائیں تو پھر ان کی نظیر کا مدارک نہیں ہو سکتا اور روزہ کی مصلحت اس سے فوت ہو جاتی اس لئے اس پر واجب ہو کہ ایام طہر میں روزے رکھ لے تاکہ اس کو روزہ کی مصلحت حاصل ہو جائے جو کہ خدا تعالیٰ نے اپنے بندوں پر محض رحمت اور احسان سے ان کے فائدہ کے لئے مشروع فرمائے ہیں۔

چاند اور سورج گرہن کے وقت نماز مشروع ہونے کی وجہ نہ چاند اور سورج کا گرہن نمودار نہ کرنا سے آفت و مصیبت و اسباب شرک کا پس خدا تعالیٰ کی رحمت اور اس کی پر لطف حکمت کا ظاہر کرتی ہے کہ سورج کے وقت لوگوں کو وہ طریقے سکھائے جو سورج کے نظیر باؤں کو دور کریں بدیوں کو ہٹاویں پس اللہ تعالیٰ نے نبی کریم ﷺ کی زبان پر یہ تمام طریقے سکھادے تاکہ یہ خدا تعالیٰ کی سنت ہے کہ وہ دعا کے ساتھ بلا کر دعا پڑھے اور دعا اور بلا دونوں جب بھی جمع ہوئیں تو دعائی بلا ان اللہ پر غالب آتی جبکہ دعائیے لوگوں سے نکلتی ہے جو خدا تعالیٰ کی طرف رجوع کر رہی ہیں صحیح مسلم و بخاری سے جہت ہے کہ نبی کریم ﷺ نے فرمایا ہے کہ جس وقت قرآن خدا تعالیٰ کی نشانیوں میں سے دو نشان ہیں اور کسی کے مرنے یا جینے کے لئے ان کو گرہن نہیں گنا ہر وہ خدا تعالیٰ کے دو نشان ہیں خدا تعالیٰ ان دونوں کے ساتھ اپنے بندوں کو ڈارتا ہے پس جب تم ان کو دیکھو تو جلدی سے نماز میں مشغول ہو جاؤ اس حدیث میں اس بات کی طرف اشارہ فرمایا ہے کہ یہ دونوں نشان گنجلوں کے ڈارنے کے لئے ہیں تاکہ اپنے گناہ کاروں اور پلیدیوں کے وہل سے ڈریں اور اسی غرض سے رسول کریم ﷺ نے کرہن کے وقت حکم فرمایا ہے کہ ہمت نیکیاں کرو اور تکبہ کاموں کی طرف جلدی کرو اور خاص نیت کے ساتھ نماز کرو اور دعا کرو اور خدا تعالیٰ کی

تقریب کرنا اور ذکر و تضرع و قیام و رکوع و کھڑو قہب اہمیت و استغفار و خشوع و اجہال اور جناب الہی میں تدلل کرنا اور تصدیق و اذعان مقرر فرمایا تاکہ اس آنکھ کے عذاب سے ان اعمال صالحہ کا حالانہ حاصل کے لئے سہ ہو یہ ایسا وقت ہے کہ عورت کے پیرا ہونے کاغذ کر اور اس پر چہ ہے اور سیکھا ہے کہ اہل معرفت کے دلوں میں خود خود ایسے لوگات میں گھبراہٹ پیدا ہو جاتی ہے نیز ایسے لوگات میں زمین پر قلبیات کا نزول ہوتا ہے اس لئے صاحب معرفت کو ان لوگات میں خدا تعالیٰ کیساتھ قرب حاصل کرنا بہت مناسب ہے چنانچہ نعمان بن علیؓ کی حدیث میں کسوف کی بات آنحضرت ﷺ سے آیا ہے **فإذا جعلني الله منسفي من خلقه خضع له ترجمہ :-** یعنی جب خدا تعالیٰ اپنی مخلوق میں سے کسی چیز پر نگلی فرماتا ہے تو وہ چیز اس کے سامنے جھک جاتی ہے

یہ کھار لوگ چاند اور سورج کو سجدہ کیا کرتے ہیں لہذا مسومن مسلمان کو لازم ہے کہ جب کوئی ایسی دلیل ظاہر ہو کہ جس سے ان چیزوں کا غیر مستحق مہارت ہونا چاہیے تو خدا تعالیٰ کے سامنے ہاتھ مندی سے اٹھا کرے اور خدا تعالیٰ کو سجدہ کرے چنانچہ اللہ تعالیٰ فرماتا ہے **لا تسجدوا للشمس ولا للقمر واسجدوا لله الذي خلقهن**

ترجمہ :- آفتاب کو سجدہ نہ کرو اور نہ چاند کو سجدہ اس خدا کو سجدہ کرو جس نے ان کو پیدا کیا ہے یہ سجدہ کرنا دین کے لئے شعار اور منکرین کے لئے سزا ہے کرنا واجب ہے

سوال :- اگر کوئی کہے کہ کسوف و خسوف نجوم کی مقررہ منازل پر پہنچنے سے واقع ہوتا ہے اور اس کو انسانوں کے عذاب و ثواب سے کوئی تعلق نہیں ہے تو :-

جواب :- یہ ہے کہ جو سزا کے لئے عذاب ہے اور جو ہم نے کہا ہے وہ حکمت ہے پس دونوں میں کوئی تضاد نہیں۔

نماز استسقاء میں چادر کو الٹا کرنے کی حکمت :- نماز استسقاء میں چادر کا الٹا کرنا اس حال کے پست جانے کی طرف ایما ہے جس میں لوگوں کو طوفان سالی سے فرار حاصل ہو سکتا ہے

فرائض عیش کی تحویل مطلوب ہوتی ہے نیز نماز استسقاء میں لوگ کبیر و خضر اور بوائی اور گھنٹہ اور نا شکری سے حالت توبہ و استغفار و بجز و انصار و خاقر سکت کی طرف پھر جانے کا اہتمام کرتے ہیں پس پادار کا انکار کرنا یہ تصویر ہی زبان سے اظہار ہے اور زبان العباد کا اظہار زبان اقوال کے اظہار سے زیادہ تر کامل ہے نیز انہیں یہ امر بھی مر سوز ہے کہ تصویر ہی زبان میں افعال و اخلاق سید سے نہایت اور افعال و اخلاق حسہ کی توفیق کے لئے دعا کی جاتی ہے حضرت ابن عربی فرماتے ہیں

امن مكان يستضي بحول و داء و تحول عن الافعال علك ترظي

ترجمہ :- یعنی اسے وہ شخص جو قہر سالی میں نماز استسقاء پڑھتا اور پادار الٹاتا ہے تو اپنے افعال بد کو الٹ دے اور نیک افعال اختیار کرنا کہ تو پسندیدہ و حق ہو جائے۔

نماز عیدین کیلئے قرائن و اقامت مشروع نہ ہونے کی وجہ۔۔۔ چونکہ روز عید میں لوگوں کو نماز عید پڑھنے کیلئے اعلام و اعلان کے داعی بکثرت موجود ہوتے ہیں اور تکبیر و تہمید و طیلیل جو کہ یوم عید میں مشروع ہیں وہ بھی فرض کے لئے ہیں کہ غافل آگاہ ہو جائیں لہذا اہم قرائن و اقامت سزاقتا ہوا کہ کیونکہ قرائن و اقامت اعلان و اطلاع کیلئے ہوتی ہیں تاکہ غافل ہو شیار ہو جائیں اور یہ بات روز عید میں پہلے ہی سے موجود ہے (فتوحات مکہ)

نماز عید میں زیادہ تکبیرات کہنے کی وجہ۔۔۔ چونکہ یوم عید میں لوگوں کو مخلوط نفس یعنی کمانے پینے پینے اور لوداع میں مشغول ہو کر خدا تعالیٰ کی بزرگی و جلال و عظمت کو بھول جانے کا قوی مظنہ تھا لہذا ان کی سبب کے لئے نماز عیدین میں زیادہ تکبیرات شامل کی گئی ہیں جن سے یہ امر مختصر رہے کہ اے خدا تمام کبیر و عظمت تیرا ہی حق ہم سب بچا ہیں (فتوحات مکہ)

نماز عیدین کی تکبیروں میں کائناتوں تک ہاتھ اٹھانے کی حکمت :-۔۔۔ تکبیرات عیدین کی نماز میں ہاتھوں کا اٹھانا اس بات کی طرف ایما ہے کہ اے خدا ہم نے تیری کبریائی و عظمت و جلال کے سامنے اپنی ذلتی اور عظمت کو چھوڑ دیا سب بزرگوں و پاداروں کا قوی مالک ہے

قرآن کریم کے شعائر الہی میں سے ہونے کی حکمت :- قرآن کا شعائر الہی ہونا اسی طرح ہے کہ لوگوں میں سلاطین کی طرف سے رہا کی طرف فرامین کا بھیجا رائج ہے سو سلاطین کی صیغہ میں ان فرامین شہی کی تعظیم ہوتی ہے اور چونکہ عمل نزول قرآن انبیاء کے صحیفے اور لوگوں کی تصانیف بھی شائع اور رائج ہو گئی تھیں اور لوگوں کا مذہب کی پیروی کرنے کے ساتھ ہی ان کتابوں کی تعظیم کرنا ان کا پڑھنا پڑھانا بھی رائج تھا اور ان میں خلط ہو گیا تھا اور حاجت تھی علوم صحیحہ کی اور ایسے علوم کو پیش کیلئے قبول اور حاصل کرنا پھر ایسی کتاب کے پڑی پڑاے میں محال تھا جس کو وہ پڑھیں اور اس کی تعظیم کریں فرض وہ شعائر میں قرار دیا جائے ان اسباب کا یہ ملاحظہ ہوا کہ ایک ایسی کتاب کی صورت میں رحمت الہی کا تصور ہو جو رب العالمین کی طرف سے نازل ہو اور اسکی تعظیم کی یہ صورت ہو کہ جب وہ کتاب پڑھی جائے تو سب لوگ خاموش ہو کر اس کو غور سے سنیں اسکے فرامین کی فورا تعمیل کریں مضامین سجدہ پے سجدہ خلوت کریں جہاں تصبیح کرنے کا علم ہو وہاں تصبیح پڑھیں۔

تعمیر خدا کے شعائر الہی میں سے ہونے کی وجہ :- تعمیر خدا کے شعائر الہی میں سے ہونا اس واسطے ہے کہ وہ مرسل ہیں ان کو بادشاہوں کے لٹیٹیوں سے مشابہت ہے جو رہا پانچ طرف بچھ جاتے ہیں اور سلاطین کے امر و نہی کی ان کو اطاعت کرتے ہیں اور لٹیٹیوں کی تعظیم ہے لیکن والے کی تعظیم کا اظہار ہوتا ہے پس تعمیر کی تعظیم بھی اس طرح مشروع ہوئی کہ ان کے احکام کی جاتوری کی جائے ان پر درود بھیجا جائے منگلو کرتے وقت ان کے سامنے آواز بلند نہ کی جائے نماز سے مغفرت معاصی کا راز ۔ نماز میں دونوں باتیں جمع ہیں تزکیہ نفس اور انبات نفس اس کی وجہ سے نفس کو پاک ہو کر عالم ملکوت تک رسائی ہو جاتی ہے اور نفس کی خاصیت میں یہ بات داخل ہو جاتی ہے کہ جب وہ ایک صفت کے ساتھ مشغول ہوتا ہے تو دوسری صفت جو اس صفت کی ضد ہوتی ہے اس سے اس طرح جدا ہو جاتی ہے کہ گویا کبھی اس کا نام بھی اس میں نہ تھا

اب جس شخص نے نماز کو پورے پورے طور پر ادا کیا اور عمدہ طور پر وضو کیا اور وقت پر اس کو پڑھا اور کوغہ گھوڑ اور خشوع اور اس کے انکار اور انکال کو طور پر ادا کیا اور اس نے ان امور توں سے ان کے معافی کا اور ان سے لڑائی کا قصد کیا تو جگہ وہ شخص رحمت الہی کے عظیم نشان دریا میں پہنچ جاتا ہے اور خدا تعالیٰ اس کے گناہ کو فرما دیتا ہے چنانچہ اس امر کے متعلق آنحضرت ﷺ فرماتے ہیں لو ان انہر اسباب احدکم بغسل قبہ کتل بوجہ حسنہ اهل یعنی من ذوقہ طیبی فالو

الاقبال فذلک مثل الصلوة الحسنی بسمو اللہ مہا الخطایا

ترجمہ :- یعنی اگر تم میں سے کسی شخص کے دروازہ پر شہ جباری ہو اور اس میں روزانہ وہاں پہنچا ہوا نہایا کرے تو کیا اس کے بدن پر میل باقی رہ سکتا ہے لوگوں نے کہا نہیں آنحضرت ﷺ نے فرمایا کہ یہ جگہ نمازوں کی مثال ہے ایسے ہی خدا تعالیٰ جگہ نمازوں سے گناہوں کو بالکل مٹو دے کر دیتا ہے ہر خطبہ میں امام کا جلسہ استراحت کرنے کی وجہ : نبی علیہ السلام نے جوہر کے اندر دو خطبے اور پھر ان کے درمیان میں جلسہ کرنے کو اس لئے مستنون فرمایا ہے کہ امر مطلوب بھی پورا پورا حاصل ہو جاوے اور خطیب کو بھی آرام ملوے اور نیز سامعین کا تشنگی لاسر تو تازہ ہو جاوے۔

ہر خطبہ میں تقریر و تشہید کی وجہ : خطبہ کا پڑھنا اس طرح پر مستنون ہے کہ پہلے خدا تعالیٰ کی حمد و شکر بیان کی جائے اور آنحضرت ﷺ پر درود پڑھا جاوے اور تو حید و رسالت کی شہادت ادا کی جائے اور بیچ میں کلمہ فصل الامانہ لاکر لوگوں کو بند و نصیحت و تقویٰ کا حکم کیا جاوے اور ان کو دنیا و مرث کے مذاہب الہی سے ڈرایا جاوے اور کچھ قرآن کریم پڑھا جاوے اور کچھ مسلمانوں کے حق میں دعاء خیر کی جائے اسکا سبب یہ ہے کہ اس طریق نصیحت میں خدا تعالیٰ در سول کریم ﷺ و قرآن کریم کی حکمت پائی جاتی ہے کیونکہ خلیفہ دین کا شعاع ہے لہذا ان کی طرح یہ چیزیں اس میں بھی ضروری ہوتی چاہئیں اور حدیث میں آیا ہے مکمل حطیۃ لیس فیہا شہد قوی کمالید

الحدیثاء ترہیں۔ یعنی بس خطبہ میں تشہد نہ ہو وہ عقل دست بردار کے ہے۔

نماز میں خوفزدہ ہو کر کھڑا ہونے کا راز: نماز میں خدا تعالیٰ کے حضور میں ایسی توجہ رکھ کر اور ایسی مہذبانہ کرکٹ اور نازم ہے کہ وقت جاری ہو جاوے جیسے کہ کوئی شخص کسی خوفناک مقدمہ میں گرفتار ہوتا ہے اور اسکے واسطے قید یا پھانسی کا فتوے نکلے دیا جاتا ہے اسکی حالت حاکم کے سامنے کیا ہوتی ہے ایسے ہی خوفزدہ دل کے ساتھ اللہ سبحانہ و تعالیٰ کے سامنے کھڑا ہونا ہے۔

حقیقت دنیا و قضا: اگرچہ دنیا کی کوئی خیر و شر مقدمہ سے خالی نہیں تاہم قدرتِ کبیرہ نے اسکے حصول کیلئے اسباب مقرر کر رکھے ہیں جنکے صحیح طور پر اثر میں کسی عقلمند کو کام نہیں ملتا اگرچہ مقدمہ پر لگا کر کے وہ اسکا کرنا نہ کرنا اور حقیقت ایسا ہی ہے جیسا کہ دعا یا ترک دعا۔ مگر کیا کوئی یہ رائے ظاہر کر سکتا ہے کہ مثلاً علم طب سراسر باطل ہے اور حکیم حقیقی نے وہ ادویں میں کچھ بھی اثر نہیں رکھا پھر جب خدا تعالیٰ اس بات پر قادر ہے اور اس قدرت کا تصور بھی اس نے کر دیا کہ تہجد اور ستمو نہاد و ملاح و حب الملوک میں ایسا قوی اثر رکھے کہ انکی پوری خوراک کھانے کے ساتھ ہی دست چھوٹ جاتے ہیں یا مثلاً سم اللہ اور بلیش اور دوسرے ہلالی زہروں میں وہ غضب کی تاثیر دالے کہ ان کا قابلِ قدر شربت چند منٹوں میں ہی اس جہان سے رخصت کر دے تو پھر کیونکر یہ احتمال کیا جاوے کہ خدا تعالیٰ اپنے برگزیدہ بندوں کی توجہ و عقیدت اور تفریح کی بھری ہوئی دعاؤں کو فقط مردہ کی طرح رہنے دے جن میں ایک ذرہ بھی اثر نہ ہو۔ جو شخص وہ ادویں کی اصلی تاثیروں پر ذاتی تجربہ نہ رکھتا ہو اور استیجاب دعا کا کامل نہ ہو تو انکی مثال ایسی ہے جیسے کوئی ایک مدت تک ایک چرائی اور ساتھ ساتھ وہ اور مطلوب القوی وہا کو استعمال کرے اور پھر اسکے اثر پا کر اس وہا پر عام حکم کارے کہ اس میں کچھ بھی تاثیر نہیں۔

سوال دیکھا جاتا ہے کہ بعض دعائیں خطا جاتی ہیں اور انکا کچھ اثر معلوم نہیں ہوتا۔

جواب ہم کہتے ہیں یہی حال دونوں کا بھی ہے کیونکہ اس نے موت کا دروازہ نہ کر دیا ہے جان کا لٹکا جانا غیر ممکن ہے مگر کیا یہ جو اس بات کے کوئی ایسی تاثیر سے انکار کر سکتا ہے یہ سچ ہے کہ ہر ایک عمر پر تقدیر مہیا ہو رہی ہے مگر تقدیر نے علوم کو متاثر نہیں کرتا ہے۔ حرمیت نہیں کیا اور نہ اسباب کو بے اعتبار کر کے دکھایا۔ پھر اگر غور کرے دیکھو تو یہ جسمانی اور روحانی اسباب بھی تقدیر سے جدا نہیں ہیں مثلاً اگر صدار کی تقدیر موافق ہو تو اسباب طابع پورے طور پر میسر آجاتے ہیں اور جسم کی حالت بھی ایسے درجہ پر ہوتی ہے کہ وہ ان سے نفع اٹھانے کیلئے مستعد ہوتا ہے تب وہ انکار کی طرح جا کر اثر کرتی ہے یہی قاعدہ عام کا بھی ہے یعنی وہ مائیکل بھی تمام اسباب و شرائط قبولیت اس تک پہنچ جاتے ہیں جہاں بارگاہ بھی اسکے قبول کرنے کا ہے۔

باب الہمائز

میت پر نماز جنازہ پڑھنے کی وجہ : عقل کا تقاضا ہے کہ جب کسی انسان کو میت سے تو میوں کا گروہ کسی نابالغ حاکم کے آگے بجا کر اس کیلئے سجدہ کریں اور اسکی معافی کی درخواست کریں اور اس کیلئے گڑگڑا کر اٹھا کر میں تو بلا اثر اسکا قصور معاف ہو جاتا ہے یہی نماز جنازہ کا اثر ہے یعنی نماز جنازہ اس لئے مقرر کی گئی ہے کہ مومن کے ایک گروہ کا میت کی سجدہ میں شریک ہو اس پر رحمت الہی کے نازل ہونے میں تا کاہل اثر رکھتا ہے آنحضرت ﷺ فرماتے ہیں

عاصر مسلم بموت فلیقوم علی جنازہ از معون و حلالاً لا بشر کون ما لہ شیئاً الا شفعہم اللہ فیہ ترجمہ :- یعنی کوئی مسلمان ایسا نہیں مر تا کہ اسکے جنازہ پر شریک ہوں مگر اس میت کے حق میں ایسی سجدہ قبول فرماتا ہے۔

شرح اسکی یہ ہے کہ جب آدمی کی روح بدن کو چھوڑتی ہے اسکی حس مشترکہ وغیرہ کو حس اور اور ایک باقی رہتا ہے اور جو حیالات اور علوم زندگی میں اسکے ساتھ تھے مرنے کے بعد اسکے ہمراہ رہتے ہیں اور پھر عالم بالا سے اور علوم کا اس پر ترشح ہوتا ہے جسکی وجہ سے بہت کو عذاب یا

ثواب ہو تا ہے پس خدا تعالیٰ کے نیک بندوں کی بہتیں جب عام قہر میں تک پہنچتی ہیں اور اس میت کیلئے وہ گڑگڑا کر دیا کرتے ہیں یا میت کے لئے بہت کچھ صدقے دیتے ہیں تو عظم الہی سے میت کے حق میں وہ مانع نہ ہوتا ہے۔

حکمت ماقم پر سی : چونکہ میت کے گمراہوں کو اسکی موت سے حلت رنج ہو تا ہے۔ لہذا دنیا کے اعتبار سے تو انکے حق میں یہ بھلائی ہے کہ لوگ اسکی تعزیت کیلئے آئیں تاکہ ان کا رنج کچھ کم ہو اور میت کے دفن کرانے میں شریک ہو کر انکی مدد کریں اور انکو ایک دن رات کھانا دیں اور آگرت کے لحاظ سے انکے لیے یہ بہتر ہے کہ انکو اور عظیم کی ترغیب دلائی جائے تاکہ ہمہ تن وہ پریشانی میں مصروف نہ ہوں اور نہ انکی طرف انکی توجہ ہو اور چھاننے اور کپڑے پھانسنے اور تمام ان چیزوں سے جو کہ فہم اور پریشانی بخالتے ہیں منع کریں کیونکہ اس وقت وہ لوگ معمولہ مرعض کے ہو جاتے ہیں انکے مرض کا علاج کرنا ہا ہے نہ یہ کہ انکے مرض کو اور بخالتے جائے۔

فرض کفایہ کاراز : بعض فراموش اس قسم کے مقرر کئے گئے ہیں کہ ایک مقام کے بعض اطراف اسکو لو اکریں تو وہ سب کی طرف سے لو اہو جائیں۔ وہ اسکی یہ ہے کہ سب لوگ انکو مختلف طور پر کرنے لگیں تو انتظام معاش برہم ہو جائے انکی تدبیر نافذ معطل ہو جائیں۔ پس ایسے امور کیلئے ایک ایک شخص کافی ہے چنانچہ ہزاروں کی عبادت جنازہ کی نماز اسی طور پر شروع ہوتی ہیں کہ ہزاروں اور مردوں کی تشییع بھی نہ ہو اور بعض لوگ اگر اسکو پورا کریں تو مقصود بھی حاصل ہو جاوے۔

نماز جنازہ و صدقہ خیرات سے میت کو فائدہ پہنچنے کا راز : دنیا میں سفارش کرنے اور جان دینے کے سبب بھرموں سے نجات مل جانے اور رفع ہونے کے مشاہدہ و تجربہ سے کوئی منکر نہیں ہے ایسا ہی گنہگار میت کو دیا جاوے جنازہ اور صدقات مالہ ملید ہوتے ہیں قرآن کریم میں ایسے امور کا کلامت ذکر آیا ہے اور آنحضرت ﷺ فرماتے ہیں : ان الله امرکم

بالصدقة فان مثل ذلك كمثل رجل اسره العدو وقاتلوا به الي عهقه وقد مره
ليصروا لقال انا الهدي مسكم بكل قليل فلهدي نفسه منهم ترجمہ۔۔ خدا تعالیٰ نے تم کو
صدقہ دینے کا حکم فرمایا ہے کیونکہ صدقہ دینا ایسا ہے جیسا کہ ایک شخص کو اس کے دشمنوں نے
ایر کر کے اسکے دونوں ہاتھوں کو اسکی گردن سے باندھ دیا ہو کہ اس کی گردن لڑنی کریں پس وہ کسے
کہ میں تم کو تھوڑا اور بہت دیکر چمکارا پاتا ہوں پس وہ فقہ یہ دیکھ کر ان سے غلامی ہو جائے میت کی
لواؤ صالح اور صدقات و خیرات ہا یہ میت سے نذاب ہٹانے اور رفع درجات کیلئے مفید امور
ہیں کیونکہ ان امور میں قرب الی اللہ کی مناسبتیں ہیں۔

عورت کو والدین وغیرہ کا سوگ تین دن اور خاتمہ کا سوگ چار ماہ و دس دن
رکھنے کی وجہ : عورت کو اپنے والدین وغیرہ کی موت پر تین دن سے زیادہ سوگ رکھنا منع کیا
گیا ہے اور اپنے خاتمہ کی وفات پر اسکو چار ماہ و دس دن کا سوگ رکھنا واجب کیا گیا ہے یہ امر اس
شریعت کی نوبتوں اور سختوں اور مصالح عامہ کی رعایت سے ہے کیونکہ میت پر سوگ رکھنا
مصیبت موت کی تعظیم میں سے ہے جس میں زمانہ جاہلیت کے لوگ بہت مبالغہ کیا کرتے تھے اور
اسکے ساتھ گریبان کا پھلنا اور ریشم داروں کو بیٹن اور بانوں کو کھسونا اور ولولیا کرنا ان میں رائج تھا اور
عورت بہت ٹھکے تار یک و سندان گھر میں مدت تک بولہ پڑی رہتی تھی نہ کسی خوشبو کو چھوتی نہ
صاف پینے پینتی نہ تیل لگاتی نہ غسل کرتی تھی مٹی پڑا تھیں اسی قسم کی اور نامناسب رسوم بھی
جو کہ خدا تعالیٰ اور اسکی قضا قدر پر فخر کرنے پر دلالت کرتی ہیں ان میں مروج تھیں پس
خدا تعالیٰ نے زمانہ جاہلیت کی یہ رسم اپنی رحمت اور اذیت عامہ سے باطل کر دی اور اسکے بدلے میں
بہیں صبر و محم استر جائ یعنی انا لله وانا الیہ راجعون۔ کہنے کی ہدایت فرمائی۔ جو مصیبت زدہ کیلئے
دارین میں بہت مفید و نافع ہے اور چونکہ مصیبت زدہ کو مصیبت موت پر بالظہور غم و رنج
بگھاننا ع طبیعت انسانی پر ایسا ہے لہذا خدا تعالیٰ نے جو کہ بدلے کے حال کا ادا ہوا ہے کسی قدر

سوگ رکھنا جائز رکھا اور وہ ایام سوگ میت کے بعد تین دن ہیں جن میں مصیبت زدہ سوگ رکھ کر اپنے غم و سوچ کا اظہار کرے جیسا کہ صحابہ کو اچھڑتی گئی ہے کہ فریضہ حج اور اکر نے کے بعد مکہ میں تین دن قیام کرے اور جو تین دن سے زائد سوگ ہو اس کا بہت فساد ہے لہذا اس سے زیادہ سوگ رکھنا منع کیا گیا اطلاق تین دن کے فسادہ کے کہ وہ مگر مصلحت عورت کے کم ہے کیونکہ نفس کو باوفات سے ہائل جدا کرنے سے بہت تکلیف پہنچتی ہے اس لئے انکو بعض حصہ باوفات کا دیا گیا تاکہ باقی کا ترک کرنا اس پر آسان ہو جاوے۔ وجہ یہ ہے کہ اگر نفس کو اپنی اصل مراویں مل جاتی ہیں تو ان پر قانع ہو جاتا ہے اور باقی کا چھوڑنا اسکو مسل ہو جاتا ہے۔ باقی خاندان کا سوگ چار ماہ اس دن رکھنے کی حکمت کتاب انکام میں ذکر کریں گے۔

اہل اسلام کا مردہ کو خاک میں دفن کرنے اور آگ میں نہ جلانے کی حکمت: (۱) دفن کر دینے میں مردہ کے حق میں پردہ پوشی ہے اور زندوں کے حق میں کچھ دشواری نہیں۔ پانی اور ہوا میں مردہ کو رکھیں تو ناک اور آنکھ کو الگ الگ تکلیف پہنچے یعنی بدبو سے ناک سزا جائے صورت کو دیکھنے تو کفن بدبو سے آگ میں جلائیں تو کوس میں عرصہ دراز تک توبہ اور کفن نہیں رہتی لیکن جانے کے وقت کی کیفیت تو جلانے والوں اور گرد و پیش کے رہنے والوں سے پوچھو۔ پھر ہوا کی حرکت سے پانی بھرنے کا اور سردیوں کے پیدا ہونے کا اندیشہ ہوا اور فساد عناصر سے جو کچھ نقصان پہنچتا ہے وہ ہوا اور دفن کرنے میں نہ یہ خرابی نہ وہ فساد جھوٹیرا اور ترکیب بدن کے کھل جانے سے بدن مردہ کے عناصر خارج اپنے اپنے موقع اور مقام پر پہنچ جاتے ہیں۔ اور اس لئے خاک اور پانی اور ہوا اور آتش کی مقدار جتنی تھی اتنی ہی بیکار رہتی ہے

(۲) تپش آتش سے زمین کی قوت نامیہ کو جو نقصان پہنچتا ہے وہ اگلی ظاہر ہے اور دفن مردگان سے جو کچھ قوت نامیہ کو تقویت ہوتی ہے وہ کفن چنداں پنہاں نہیں تپش کی وجہ سے فساد قوت نامیہ تو خور مہاں ہے۔ ہادی دفن کی وجہ سے قوت نامیہ کی تقویت کی وجہ یہ ہے کہ بدن انسان جو چیز ہے کہ

قوت نامیہ کے بہت سے زورواں کی وجہ پر وہ عدم سے صفحہ ہستی پر نمایاں ہو جاتا ہے۔ قلب اور میوہ ہات سے اگر ہر انسانی بتا ہے تو قلع نظر اس سے کہ اس نکتے میں نشوونما ہو جا رہا ہے اور یہ نور قوت نامیہ کا کام ہے۔ یہ نفاذ میں بھی تو قوت نامیہ ہی کی کارگزاری کی بدولت اس رنگ و نور ذات کو پہنچے ہیں۔ القصد قوائے نامیہ نے ذی وقوف سے زمین میں سے جہان کر یہ اجزاء نکالے تھے بعد ذہن وہ اجزاء یکجا جمع کئے کرانے قوت نامیہ ہی کو چاہئے ہیں اس لئے اگر وہ فن اور قرب و جوارہ فن میں نشوونما اور ہو کرے تو دور نہیں اور کیوں نہ ہو فضل انسانی ہاں وہ چ کہ نفاذ میں سے نکلا ہے۔ اور نفاذ نتیجہ کارگزاری قوت نامیہ ہے زمین کی قوت کو اجلا حاصل ہے کہ کیا کچھ جسم انسانی پر اس سے کہیں زیادہ ہے یہ زور کیوں نہ رکھتا ہو گا کہ جس کا فضل ایسا کچھ ہو وہ اصل جو خاص لربہ حاضر ہو گیا کچھ ہو گا فرض تاش آفتل کا وقت سوز ہو گا اور جسم انسانی کا قوت انگیز ہونا زمین کے حق میں یقینی ہے۔ اور یہی وہ معلوم ہوتی ہے کہ بنو کے مرگٹ پر سبز کا نام اٹھان نہیں ہو گا اور وہ فن اہل اسلام پر ہر جگہ سبز و زار نظر آتے ہیں۔

(۳) مادہ اور میں والدہ خیر اندیش اگر ستر کو جانتا ہے تو فرزند ولیدہ کو انکی بار مہربان کے حوالہ کرتا ہے انکی والدہ کی سوکن کو نہیں دیا کمر یہ ہے تو بھر مناسب یوں ہے کہ تن خاکی کو حوالہ خاک کیا جائے آفتل کو نہ دیا جاوے۔ بالمثل روح جسم خاکی کے حق میں مرنی ہے چنانچہ انکی تربت اور نگرانی ظاہر ہے اور یہ کہ خاکی اسکے حق میں سموزادہ مہربان ہے چنانچہ اسکا اس سے پیدا ہونا خود اس امر پر شاہد ہے اس صورت میں در صورت سفر روح جو وقت انتقال جانب عالم طوری پیش آتا ہے اگر اس جسم خاکی کو حوالہ آفتل کریں اور زمین میں دفن نہ کریں تو یہاں ہے جیسا کہ اپنے فرزند کو انکی مانند یعنی انکی والدہ کی سوکن کے حوالہ کیا جاوے اور ماں کو نہ دیں۔

(۴) اگر کسی کے کبوتروں میں کسی کا کبوتر ہے چائے آٹے یا کسی کے روپڑ میں کسی کی بھری اسی طرح آٹے تو اس کو یوں مناسب ہے کہ لوگوں کا حق چہ اگر کے انکو ایسے پھر فیروں کو یہ نہیں پہنچا کہ اسکے کبوتروں اور روپڑ کو چھو کر کے پھانے اور انکی ٹھہت میں ان سب کو ہلاک کر دے مگر

یہ ہے تو پھر یوں مناسب ہے کہ اس جسم خانی کو زمین میں دفن کر دیں تاکہ آتش و آفتل ہو سکے اور اس سے جدا کر کے پھونک دیا جائے تاکہ وہ سب اپنے اپنے مقام کو پہنچ جائیں یا کہ نہ ہو تو آتش اپنے اپنے ہم جنس نواپنی اپنی طرف کھینچ لیں۔ یعنی حرکت خاک و آتش اپنے اپنے مقامات کی طرف جو طبعی ہے دو سال سے خالی نہیں پائے تو حرکت کرتی ہوں جیسے اکثر ملامتے یہاں کہتے ہیں یا دوسرے کشش اتصال جو جیسے خاک و فرنگ کا خیال ہے۔ بہر حال مناسب یوں ہے کہ جسم کو حوالہ زمین کے کر دیں حوالہ آفتل نہ کریں کیونکہ یہ تن خانی سر سے پاؤں تک ہے۔ اہل رطوبت اور بادی اور گرمی سے یوں معلوم ہوتا ہے کہ کچھ اجزاء آفتل اور بوائی اور آفتل بھی اس میں آتے ہیں اس نے کسی کو چرہ لیا نہیں اور اگر زمین میں دفن کر دیں گے۔ تو وہ شیرازہ ترکیب کھول کر سب کو جدا کر دے گی اور پھر وہ اجزاء خود اپنے مقام کو چلے جائیں گے یا انکے اصول ان کو جذب کر لیں گے اور اگر آگ کے پیر دیا تو وہ سب کا ستیاں کر کے بٹنے لگی۔

(۵) محبت باہمی اقرباء تو ظاہر ہے مگر غور کرو تو مہلبہ اور المون و اجناس کے تمام ہنسی آدم باہمی قربت ہی میں اور کیوں نہ ہوں آخر ایک ماں باپ کی لڑائی میں اور اس محبت باہمی کا یہ نتیجہ ہے کہ ایک دوسرے کا ماننا ماننا رہے بیچنے بیچنے کی حفاظت میں تو کچھ کام ہی نہیں مرنے کے بعد بھی یوں ہی نہیں چاہتا کہ تن مردہ کو اقبابت علیحدہ کر دیں یعنی وہ ہے کہ جدائی کے وقت کسی قدر روتے ہیں اور جنازہ اٹھاتے ہیں تو کیا نقل چتا ہے اس صورت میں اگر وہ مجبور ہی پاس نہ رہے ہوں تو کیا اٹھانے محبت یہی ہے کہ یوں جلا کر خاک بنا دیں نہیں اہل محبت سے یہ نہیں ہو سکتا یاں مہلبہ و لافٹ ظاہری سے پاک صاف کر کے اچھا لباس پہنا کر حفاظت سے ایک طرف رکھ دیں تو کچھ مضائقہ نہیں مگر یہ بات بجز خود کردگان محبت اور کون جانے وہ جہان ہے اس کو اس کی کیا خبر ہو گی جو اسے تصدیق ہو اور آخر یہ کاروان عشق کو یہ بات کہا معلوم ہو گی جو توقع تانیے ہو۔

مردہ کو مٹانے کی حکمت: مردہ کو مٹانے میں یہ وجہ ہے کہ لحد کے غسل پر قیاس کیا

جانے کیونکہ وہ خود اپنی زندگی میں بھی ایسے ہی غسل کرتا تھا اور نسا نے والے بھی خود ایسا ہی نساتے ہیں اسی لئے میت کی تعظیم کیلئے اس سے سہر کوئی اور صورت نسانے کی نہیں ہے کہ سہر کے چھپائی میں ذال کہ مردہ کو نسا یا جانے کیونکہ مرض کے اندر اکثر لوگ صدمہ یا مینا ہو جاتا ہے اور یہ پیدا ہو جاتی ہے اور داہنے اعضاء سے شروع کرنے کا اس لئے حکم دیا کہ مردوں کا غسل مسزول زندگیوں کے ہو اور ان اعضاء کی عزت معلوم ہو۔

مردہ کو کافور لگانے کی حکمت: (۱) مردوں کو کافور لگانے کا سبب اس لئے ہوا کہ جس چیز کو کافور لگایا جائے وہ جلد نہیں جھوٹی۔ (۲) کافور لگانے میں یہ فائدہ ہے کہ کوئی موزی یا نور اس کے قریب نہیں آتا۔ (۳) یہ بھی فائدہ ہے کہ کافور کی آواز سے قبر کے کبڑے جو طبعی طور پر زمین میں پیدا ہو جاتے ہیں وہ بھاگ جاتے ہیں البتہ جو افعال بد کے باعث کبڑے سے سانپ، بھد، غیر مردہ کو قبر میں کاٹنے کیلئے پیدا ہو جائیں وہ نہ کسی چیز سے ڈرتے ہیں اور نہ بھاگتے ہیں بلکہ دنیا کی کوئی طاقت ان کا مقابلہ نہیں کر سکتی الا الصدقہ و الدعاء یعنی صدقہ دعا سے وہ فریج ہو جاتے ہیں۔ اور کافور مردہ کے ساتھ اماموں پر جن پر سجدہ کیا جاتا ہے لگایا جاتا ہے اور وہ یہ ہیں جو ثنائی۔ دونوں کیلئے دونوں قدم دونوں ہاتھ یہ ساتھ امام کافور کیلئے اس وجہ سے مخصوص ہیں کہ وہ انہیں پر سجدہ کیا کرتا تھا لہذا مزید کرامت کیلئے مخصوص ہوئے۔

(۴) مردے جسم کی ہڈیاں انہی اماموں سے ہوتی ہے ان پر کافور لگانے سے گویا سارا جسم ان میں شامل ہو جاتا ہے۔

شہید کو غسل نہ دینے اور خون آلودہ کپڑوں میں مد فون کرنے کی وجہ: (۱) شہید کو جو غسل نہ دینے اور اپنے خون آلودہ کپڑوں کے ساتھ دفن کرنے کی سنت جاری ہے اسکا سبب یہ ہے کہ لوگوں کو اس کا شہید ہونا معلوم ہو اور تاکہ دیکھا جاسکے تاکہ غسل کی صورت غسل ہو جائے اور دوسرے یہ کہ نفوسِ مطہرہ یہ سب اپنے اہل ان کو چھوڑتے ہیں تو انکو جس اور اپنی جانوں

کا علم ہوتی رہتا ہے۔ بعد ازاں بعض کو ان باتوں کا عمل اور اک ہو جاتا ہے جو ان کے ساتھ کی جاتی ہیں جس سے ایسے عمل کا اثر ہر ستور چھوڑ دیا جائے تو ضرور ان کو ان کے سب سے اچھا عمل یاد رہتا ہے اور ان کے سامنے وہ عمل معقول ہو جاتا ہے آنحضرت ﷺ فرماتے ہیں: *احمر و حیمہ ندعی اللون لون دم والریح وریح المسک ترجمہ: یعنی شہیدوں کے زخموں سے خون جاری ہو گئے رنگ تو خون کا سا ہو گا اور خوشبو مسک کی سی۔*

(۲) میت کو اس لئے غسل دیا جاتا ہے اور پاک کیا جاتا ہے کہ وہ خدا تعالیٰ کے پاس پاک ہو کر حاضر ہو اور عالم برزخ میں مرنے کے بعد طہارت مشروع کے ساتھ خدا تعالیٰ سے اور شہید جو راہ خدا میں مارا جاتا ہے وہ مجرد مرنے کے خدا تعالیٰ کے پاس حاضر ہو جاتا ہے جس کو غسل نہیں دیا جاتا کیونکہ وہ اپنے پروردگار کے پاس مرتے ہی حاضر ہو جاتا ہے۔

نماز جنازہ میں امام کے پیچھے مقتدیوں کو دعائیں پڑھنے کی وجہ: *مسئلۃ جنازہ اپنے لئے دعا نہیں بلکہ اور کہتے ہیں کہ یعنی تو قسم شفاعت ہے اور ظاہر ہے کہ شفاعت میں حضور اور تعداد زیادہ کارگر ہے اسلئے جنازہ کی دعائیں پڑھنے میں سب شریک ہوتے ہیں۔*

نماز جنازہ میں امام کیلئے میت کے سینہ کے برابر کھڑا ہونی کی وجہ: *انسان کے سارے اعضاء سر تا پا مکلف ہیں اور اپنے میں دل ان سب کا حاکم اور بادشاہ ہے وہیں سے نکلنے والی ہر ایک بات کے احکام صادر ہوتے ہیں جس پر عمل اس لائق ہے کہ امام شافع اسکے پاس برابر کھڑا ہو کر اسکو خدا تعالیٰ کے سامنے کر کے اسکا شفاعت کرے جو جس وقت دل کو چھٹا چاہے تو باقی سب اعضاء اسکے معیت میں چلنے جاتے ہیں کیونکہ دنیا و آخرت میں سب اعضاء دل کے تابع ہوتے ہیں چنانچہ آنحضرت ﷺ فرماتے ہیں: *ان فی الجسد العضلۃ اذا صلحت صلح سائر الجسد واذا فسدت فسدت سائر الجسد الا وہی القلب۔* ترجمہ: یعنی جسم میں ایک نالی ہے جس سے ہر*

شہداء اور ہول ہے۔ جس جب دل کے حق میں سفارش قبول ہو جاوے تو سارے اعضاء کے حق میں قبول ہو جاتی ہے۔

الاعتصام نماز جنازہ میں دابنے پائیں سلام پھیرنے کی حکمت : کلام گویا کہ اس عالم سے نکل کر عالم لاہوت میں بہ رکھو الہی شفاعت میت کیلئے حاضر ہو اٹھائیں جب اس درگاہ سے فارغ ہو کر آدمیوں و ملائکہ کی طرف رجوع کرتا ہے تو در غم آنکھ گان سب کو سلام کرتا ہے جیسا کہ بالعموم نماز میں کیا کرتا ہے اور نماز میں بطور فال حسن انکی جانب سے انکو اور میت کے حق میں پیغام سلامتی قبول شفاعت بھی سنا تا ہے۔

جہاں سفر رفت وہاں اندر قیام وقت رہعت زوں سب گویہ سلام

نماز جنازہ میں رکوع و سجود و تحیہ نہ ہونے کی وجہ : ہم قبل ازیں بیان کر چکے ہیں کہ نماز جنازہ ایک مجلس - خدش ہے جو میت کیلئے کی جاتی ہے اور رکوع اور سجود کے آثار اور محافل اٹکے و نکس ہیں کیونکہ رکوع سجود میں اپنے نمازت بجز وہاں کسار اور خدا تعالیٰ کی بحد بزرگی و عظمت و جلال کا اظہار کیا جاتا ہے اور نماز جنازہ میں خدا تعالیٰ کی تحیہ و تسبیح اور دوسرے کیلئے مجلس کا سوال ہو تا ہے چنانچہ ہم حقیقت رکوع و سجود میں ظاہر کر چکے ہیں۔

کتاب الزکوٰۃ

وجہ تسمیہ زکوٰۃ و صدقہ : لفظ زکوٰۃ ترکیب سے لگا ہے جسکے معنی پاک کرنے کے ہیں اور زکوٰۃ کے معنی پاک نمود ترقی کے ہیں چونکہ زکوٰۃ نماز کیلئے حلہ گناہ مذاب سے پاک اور بائیں طہارت کی موجب اور ترقی مال و طہارت دل کے باعث ہے لہذا اس فعل کا نام زکوٰۃ ہوا اسی طرف خدا تعالیٰ قرآن کریم میں ارشاد فرماتا ہے حلہ من اموالہم صدقۃ نظہرہم و عز محکم بہا۔ اور اس فعل

کا نام صدقہ اسلئے ہوا کہ یہ فعل صدقہ دینے والے کے ایمان کی تصدیق کرتا ہے اور اس کی قطعی حالت یعنی صدقہ اسلئے نیت کی یہ علامت ہے۔

اسرار زکوٰۃ: (۱) جب انسان خدا تعالیٰ کیلئے اپنے اس مال عزیز کو ترک کرتا ہے جس پر اسکی زندگی کا مدار معیشت کا انحصار ہے اور جو محنت اور تکلیف اور عرق ریزی سے کمایا گیا ہے تب عقل کی پلیدی اسکے اندر سے نکل جاتی ہے اور اسکے ساتھ ہی ایمان میں بھی ایک شدت اور صلوات پیدا ہو جاتی ہے کیونکہ محنت سے کمایا ہوا اپنا مال محض خدا کی خوشنودی کیلئے دینا یہ کسب خیر ہے جس سے نفس کی وہ ہڈیاں جو سب ہڈیاں سے بدتر ہے یعنی عقل دور ہوتا ہے کیونکہ یہ حالت یعنی عقل سے پاک ہونے کیلئے اپنا مال خدا کی راہ میں خرچ کرنا اور محنت سے حاصل کردہ سرمایہ کو محض خدا دوسرے کو دینا ایک ترقی یافتہ حالت ہے اور اس میں صریح طور بدینی طور پر عقل کی پلیدی سے پاکیزگی حاصل ہوتی ہے اور خدا نے رحیم و کریم سے تعلق دیتا ہے کیونکہ اپنے مال عزیز کو خدا کیلئے چھوڑنا نفس پر ہمداری ہے اس لئے اس تکلیف کے اٹھانے سے خدا سے تعلق بھی زیادہ ہو جاتا ہے اور ایمانی شدت اور صلوات بھی زیادہ ہو جاتی ہے۔

(۲) اس میں اعلیٰ درجہ کی ہمدردی سکھائی گئی ہے اس طرح سے باہم گرم سرد ہونے سے مسلمان سنبھل جاتے ہیں۔ امر باجور یہ فرض ہے کہ وہ لوگوں میں اگر نہ بھی فرض ہوتی تو بھی انسانی ہمدردی کا کھٹا خاقا کہ غرباء کی امداد کی جائے انسان میں ہمدردی اعلیٰ درجہ کا جو ہر ہے جس کی زکوٰۃ دینے کا فعل اور اسکے آئندہ موثر ظاہر کر رہے ہیں اور ہر مہربان سلیم میں یہ بات سرگود ہے کہ یہ فعل کرنے سے یعنی نوع انسان کے ساتھ ہمدردی ہوتی ہے یہ ایسی خصلت ہے جس پر بہت سے اخلاق موقوف ہوتے ہیں دنیا کا انہام لوگوں کے ساتھ خوش معاہدگی ہے اور جس شخص میں ہمدردی یعنی نوع نہیں اسکے اندر نہایت نقصان ہوتا ہے جسکی اصلاح اس پر واجب ہے اور وہ اصلاح غرباء یعنی نوع انسان کو مل دینے سے ہوتی ہے۔

(۳) زکوٰۃ و صدقات گناہوں کو دور کرنے اور برکات کو زیادہ کرنے کے بارگ ترمیم ذرائع و اسباب ہیں۔

(۴) شر کے اندر بالخصوص ہر قسم کے لوگ ناقص اور جاہلند و غیرہ ہوتے ہیں اور یہ لوگ آج ایک پر اور کلی دوسرے پر ہوتے رہتے ہیں پس اگر رفع فقر اور حاجت کا طریقہ ان میں نہ پلایا جائے تو ضرور وہ ہلاک ہو جائیں اور لوگوں کے مر جائیں۔

چاندی کے نصاب پانچ لوقہ یعنی دو سو درہم مقرر ہونے کی وجہ: چاندی کی مقدار پانچ لوقہ یعنی دو سو درہم اس واسطے مقرر فرمائے کہ یہ مقدار چھوٹے سے چھوٹے کتبہ کو ہر ایک لاکھ ٹکوں میں نلہ کا نرخ قریب قریب اور معتدل ہو پورے ایک سال کیلئے کافی ہو سکتی ہے پس ایک سو نوے درہم چاندی ہو تو اس پر کچھ زکوٰۃ جی نہیں پڑتی۔

پانچ اونٹوں کی نصاب زکوٰۃ مقرر ہو سکتی وجہ: اونٹ کے نصاب کی تعداد پانچ مقرر کی گئی کیونکہ زکوٰۃ کی نصاب ایک مقدار کثیر مقرر کرنا چاہیے اور اونٹ سب مویشیوں میں عظیم الجثہ اور بڑا نفع پہنچانے والا جانور ہے اور اس کو بیخ کر کے کھانا خوراک پر سولاری کرنا اور دودھ دینا خواہ اس سے بچے لوانا کھال اور کمال سب کام میں آتے ہیں۔ اس لئے پانچ کا عدد اس کے مناسب ہے کہ ایک معتد بہ مقدار ہے اور اسکی زکوٰۃ میں ایک بخری واجب ہوئی کیونکہ زیادہ سالن میں کوئی اونٹ دس اور کوئی آٹھ اور کوئی بارہ بخریوں کے برابر سمجھا جاتا تھا جیسے کہ حدیثی روایات میں وارد ہوا ہے اس واسطے پانچ اونٹ بخریوں کے لوقی نصاب کی برابر سمجھے گئے اور ایک بخری یاگی زکوٰۃ لگنی۔

بخریوں کی نصاب زکوٰۃ چالیس سے شروع ہونے کی وجہ: بخریوں کی زکوٰۃ چالیس سے سو تک میں ایک بخری ہے اور اس سے آگے دو سو تک دو بخریوں ہیں بعد ازاں ہر ساٹھ گروہ پر ایک بخری ہے اس میں ہر وجہ ہے کہ بخریوں کا کھلہ تھوڑا بھی ہوتا ہے اور بخریوں کا پالنا آسان بھی

ہوتا ہے اور ہر شخص اپنی منہاجل کے موافق مال سکتا ہے اس لئے آنحضرت ﷺ نے ہموئے گئے کا انہ زہ چالیس تاریخوں کے ساتھ کیا اور پھر ہر سیکڑہ پر حساب کی آسانی کیلئے ایک بڑی مقررہ کی۔

دیلوں اور گایوں کی زکوٰۃ کا نصاب تمیں سے شروع ہونے کی حکمت : گائے دہلی کی زکوٰۃ پر تمیں گایوں میں ایک سال کا محضوایا چھیا ہے اور ہر چالیس میں دورس کا محضوایا چھیا ہے اس لئے کہ گائے دہلی کی جنس اونٹ اور بخری کے درمیان میں ہے اس لئے اس میں دونوں کی مشابہت کا لحاظ کیا گیا۔

زکوٰۃ کی ہر چیز میں ایک خاص نصاب زکوٰۃ مقرر ہونے کی وجہ : زکوٰۃ کیلئے نصاب مقرر ہونے کی یہ وجہ ہوتی کہ اگر ہر طرح کے مال کی مقدار مقرر نہ ہوتی تو احکام و انضباط نہ ہو جاتے تو نصاب مقرر ہونا پھر اس واجب کی مقدار بھی اسی لئے مقرر ہوتی اور اس مقدار میں یہ بات ضروری تھی کہ یہ مقدار بہت زیادہ نہ مقرر کی جائے کہ اسکے دینے سے لوگوں کو بوجہ معلوم ہو اور عقل سلیم و فطرت محمد کا اہمالا انا تو سمجھتا ہے کہ کثرت مال پر کثیر زکوٰۃ دینا لازم ہے لیکن اگر اسے پر ہموایا جاتا اور مقدار مقرر نہ ہوتی تو جن اہمالس کو زیادہ زکوٰۃ دینی پاتی وہ حرمس مال کی باعث بہت تموزی زکوٰۃ دیتے اور اس سے غریب و مساکین کی رفع حاجت نہ ہوتی۔

حقیقت نصاب زکوٰۃ ذرا اعتد : جن سمیتوں نے بدشہ و چشموں کے پانی سے پرورش پائی ہے ان پر دوسواں حصہ واجب ہے اور جن سمیتوں کو ضرور چاہا غیرہ سے پالی دیا جاتا ہے ان پر دوسواں حصہ ہے کیونکہ جن میں محنت کم ہوتی ہے اور پیداوار زیادہ ہوتی ہے ان پر لگان زیادہ ہونا چاہیے اور جس میں محنت زیادہ ہے اور پیداوار کم ہے اسکے لگان میں تخفیف مناسب ہے۔

سال میں ایک بار اوائے زکوٰۃ کی وجہ : زکوٰۃ ادا کرنے کی ایک ایسی مدت کا مقرر کرنا ضروری ہوا جس میں سب لوگوں سے زکوٰۃ وصولی کر سکیں۔ اور نیز یہ بات بھی ضروری تھی کہ وہ

مدت بہت کم نہ ہو کہ جلد ان کو ذکوۃ دینی پڑے اور ان کا لوگ ان کو شہاد ہو اور نہ وہ مدت اس قدر دراز ہو کہ اس کے لوگ ان سے ان کا عقل کچھ کم نہ ہو اور صحیح لوگ ان کا شہاد کے بعد فائدہ ماننا سکیں پس مصلحت کے مناسب اس سے زیادہ کوئی صورت نہیں ہے کہ ذکوۃ کے لینے میں وہ قانون مقرر کیا جائے کہ ہر شاہ عادل اپنی رعایا سے اسکو ہتے رہتے ہیں اور لوگ ان کے عداوی ہو رہے ہیں کیونکہ جس چیز کے عربہ غم عداوی ہیں وہ مسلول ضروری چیز کے ہو گئی ہے جس کے سبب وہ حقدار نہیں ہوتے اور لوگوں نے اسکو ایسا مان لیا ہے کہ ان پر اس کا ہر قسمی ہے اور ان کے ساتھ لوگوں کو مختلف کریم کی شان کے مناسب اور ان کے قبول کرنے کے قریب ہے اور سب مسالطین اور رعایا کی عداوت میں پہلے سے حصول دلی چیزوں کے لئے ایک سال کی مدت مقرر ہے کیونکہ ایک سال میں ہر قسم کی فصلیں شامل ہوتی ہیں جن کے طلب مختلف ہوتے ہیں اور نیز ایک سال میں مال کے بڑھنے کا بھی احتمال ہوتا ہے اس لئے بھی ایک سال کی مدت اس قسم کے اعداؤں کیلئے مناسب ہے اس سبب سے یہ ہی سال ذکوۃ کے لئے بھی مقرر ہوا۔

ساتھ میں وجوب ذکوۃ کی اور عوامل سے اس کے استقاط کی وجہ : دارقطنی میں آنحضرت ﷺ سے روایت ہے ایس ہی الاصل العوامل ولا فی الفقر العوامل صدقة ترجمہ : یعنی کام میں لگائے ہوئے لوگوں اور کام کرنے والے میلوں میں صدقہ نہیں ہے اس میں یہ راجح ہے کہ جو مال صاحب مال کی خدمت کیلئے مخصوص ہے مٹا ہونے کے کپڑے اور کام کرنے والے خدمتگار غلام اور رہنے کے مکانات اور سواری کے جانور اور پڑھنے کی کتابیں اور کھیتی میں کاٹھکری کے محل اور ہرٹ میں پلٹنے والے لوٹ و غیرہ یہ اشیاء مالک کے دست و پا آلات ضروریہ کی طرح ہیں پس ان میں ذکوۃ نہیں ہوتی اور عوامل یعنی کام کرنے والے جانوروں میں اور ساتھ یعنی دام چرنوالے جانوروں میں فرق ظاہر ہے کیونکہ یہاں مال غنم اور بونہ سے لگ کر کے کام میں لگائے ہوتے ہیں اور دام چرنوالے کام سے آزاد جانور ہوتے ہیں اور پھلتے رہتے ہیں لہذا

ان میں زکوٰۃ مقرر نہیں ہوئی اور جانور ان غیر آملہ انسان کے مالِ تہیات کی طرح ہوتے ہیں لہذا ان میں زکوٰۃ مقرر ہوئی۔ کیونکہ زکوٰۃ کی ۱۰ وجہیں ہوتی ہیں لیکن جانور حاجت سے زائد ہونا مگر جانور ان مالہ میں یہ دونوں امر نہیں ہوتے ہیں وہ ان میں زکوٰۃ مقرر نہیں ہوئی۔

موالید غنیمت میں زکوٰۃ واجب ہونے کی حکمت : واضح ہو کہ اللہ تعالیٰ نے زکوٰۃ موالید غنیمت میں واجب فرمائی ہے اور وہ تین ہیں۔ معدن۔ نباتات۔ حیوان۔ پس معدن کی قسم تو سونہر چاندی ہے اور نباتات کی قسم گندم جو غنیمتیں اور حیوان کی قسم اونٹ گائے بکری ہے۔ پس جملہ موالدات اس میں شامل ہو گئے۔

خاندان نبویؐ کیلئے حرمت صدقات کی وجہ : آنحضرت ﷺ فرماتے ہیں ان هذه الصدقات انما هي من اوطاخ الناس وانها لا تلحق لمحمد ولا لآل محمد ﷺ ترجمہ :- یعنی صدقات لوگوں کا میل ہوتے ہیں اس لئے یہ نہ تمہارے لئے نہ اہل بیت کے لئے حلال ہیں اور نہ لواء محمد ﷺ کیلئے حلال ہیں۔

اور ایک دوسری حدیث میں آیا ہے۔ نحن اهل البيت لا نحل لنا الصدقة ترجمہ :- ہم اہل بیت ہیں ہمارے لئے صدقہ حلال نہیں ہے۔

اہل بیت سے مراد جو ہاشم آل علیؑ، عباسؑ، جعفرؑ، عقیلؑ، عمارؑ، بن عبدالمطلب ہیں۔ صدقات کے میل ہونے کی وجہ یہ ہے کہ صدقات کے دینے سے گناہ دور ہوتے ہیں اور بارگاہِ نبویؐ ہے اور ان باتوں میں صدقات انسان کا نفع دیتے ہیں۔ اس لئے خلافتی کے لوازمات میں یہ صدقات ان صورتوں میں ظاہر ہوتے ہیں۔ اس تخم میں دوسرا یہ راز ہے کہ آنحضرت ﷺ اگر خود بعض نہیں صدقہ لیتے اور اپنے عزیزوں اور ان لوگوں کے لئے جن کا نفع اپنا ہی نفع ہے تجویز فرماتے ہیں تو اس بات کا احتمال ہوتا کہ لوگ آپ سے بدگمان ہوتے اور آپ کے حق میں وہ باتیں کہتے جو بالکل لغو ہوتیں اس لئے آنحضرت ﷺ نے اس دروازہ کو بالکل بند کر دیا اور اس بات کو ظاہر فرمایا کہ

صدقات کے منافع انہیں کی یعنی دینے والوں کی طرف مائل ہوتے ہیں اور انہیں کے اقیانام سے لیکر انہیں کے فقراء کو واپس کر دینے ہاتے ہیں۔ یہ ان کے حق میں ہی درست اور مہربانی اور اعلیٰ کا پیمانہ اور ان سے چھٹا ہے۔

نیز جو لوگ مالک مالک کر گذر کرنے کے عادی ہو جاتے ہیں ان میں سے تقویٰ و سنت و شہادت اور دیگر اخلاق فاضلہ ضائع ہو جاتے ہیں انکی ہمتیں بے حد پست ہو جاتی ہیں۔ محنت و کسب و تحصیل کمالات سے وہ جی چراتے ہیں عیاشی انکا پیشہ ہو جاتا ہے ترفہ و آسائش و آرام طلبی ان کے رنگ اور پیشہ میں سرایت کر جاتی ہے۔

پس ان امور کو مد نظر رکھ کر بھی آنحضرت ﷺ کو طرف دہمیر ہو آکر مہلہ امیری آل لوگوں کے غیر اسلہ صدقات پر تکیہ لگا کر تحصیل کمالات میں سے نہ ہو جاوے اور واقعی یہ ایسے اسباب ہیں جو نفوس فلیسہ کی حالت کے خلاف ہیں۔ اسلئے آنحضرت ﷺ نے ان پر صدقات کو منع فرمایا تاکہ وہ ایسے امور و تہ کے عادی ہونے سے سخت دل نہ ہوں اور ایسے رزق لذت کے طالب نہ کر ذلیل و خوار نہ ہو جاویں۔

تمت

جلد اول تمام ہوئی دوسری جلد کتاب الصوم سے اور

تیسری جلد کتاب البیوع سے آتی ہے انشاء اللہ تعالیٰ

فکار بیع الٹانی ص ۳۳۳

المصالح المحکمہ کی جلد دوم

کتاب الصوم

انسان کیلئے روزہ مقرر ہونے کے وجوہ

فطرت کا یہ تقاضا ہے کہ اس کی عقل کو اس کے نفس پر تلبہ اور تسلط دائمی حاصل رہے مگر باعث افریت مساوات اسکا نفس اسکی عقل پر غالب آتا ہے۔ لہذا تہذیب و تزکیہ نفس کیلئے اسلام نے روزہ کو اصول میں سے ٹھیر لایا ہے۔

(۱) روزہ سے انسان کی عقل کو نفس پر پورا تسلط و تلبہ حاصل ہو جاتا ہے

(۲) روزہ سے شہیت اور تقویٰ کی صفت انسان میں پیدا ہو جاتی ہے چنانچہ خدا تعالیٰ قرآن شریف میں فرماتا ہے لعلمکم صلوات۔ ترجمہ: یعنی روزہ تم پر اس لئے مقرر ہوا کہ تم عقلی بن جاؤ۔

(۳) روزہ رکھنے سے انسان کو اپنی عاجزی و مسکنت اور خدا تعالیٰ کے جلال اور اس کی قدرت پر نظر پڑتی ہے

(۴) روزہ سے چشم بھرت کھلتی ہے۔

(۵) روزہ اندکشی کا خیال ترقی کرتا ہے۔

(۶) کشف حقائق کا شہادہ ہوتا ہے۔

(۷) کار کمالی و بھید سے دوری ہوتی ہے۔

(۸) ملائکہ الہی سے قرب حاصل ہوتا ہے۔

(۹) خدا تعالیٰ کی شکر گزاری کا موقع ملتا ہے۔

(۱۰) انسانی ہمدردی کا دل میں بھار پیدا ہوتا ہے۔

تفصیل اس انداز کی یہ ہے کہ جس نے بھوک اور پیاس محسوس کرنے کی ہودہ بھوکوں اور پیاسوں کے حالت سے کیوں عموماً وقف ہو سکتا ہے اور روزہ رزق مطلق کی نعمتوں کا شکر یہ علی وجہ الحقیقت کب

لو اگر کھتا ہے اگرچہ زبان سے شکر یہ لو اگر سے مگر جب تک اس کے معدے میں کچھ نہ ہو چنانچہ کھانے کا اثر لو اس کی رگوں اور پٹوں میں شکر ہوا تو ان کا احساس نہ ہو وہ سمجھائے الہی کا تواتر شکر گزار نہیں بن سکتا یہ کہ جب کسی کی کوئی عیب ہو مگر خوب باوقار چیز کچھ نہ کھائے تو اس کے فریق سے اس کے دل کو اس چیز کی قدر معلوم ہوتی ہے۔

(۱۱) روزہ موجب صحت جسم و روح ہے چنانچہ قلت اکل و شرب کو اعلیٰ صحت جسم کے لئے اور صوفی اگر ہم نے صفائی دل کے لئے مشیہ لکھا ہے

(۱۲) روزہ انسان کے لئے ایک روحانی غذا ہے جو آئندہ جہان میں انسان کو ایک غذا کا کام دیکھا جنوں نے اس غذا کو ساتھ نہیں لیا اور یہ بات ماننے کے لائق ہے جبکہ کھانے پینے کی تمام اشیاء مذکورہ تعالیٰ ہی کے خزانہ رحمت سے انسان کو ملتی ہیں تو جن اشیاء کو وہ یہاں چھوڑتا ہے ان کا عوض وہاں ضرور دیا جاتا ہے اور یہاں سے بہرہ و فاضل ہو گا

(۱۳) روزہ بہت الہی کا ایک دارالافتخار ہے جیسے کہ کوئی شخص کسی کی محبت میں سرشار ہو کر کھاتا پیتا چھوڑ دیتا ہے اور وہی کے تعلقات بھی اس کو بھول جاتے ہیں ایسے ہی روزہ دار خدا کی محبت میں سرشار ہو کر اسی حالت کا اعتماد کرتا ہے یہی وجہ ہے کہ روزہ غیر اللہ کے لئے چاہتا نہیں ہے

ماہ رمضان میں روزہ رکھنے کی خصوصیت کی وجہ سے ماہ رمضان میں روزہ رکھنے کی وجہ سے اللہ تعالیٰ نے قرآن کریم میں یہ فرمائی ہے ۔۔۔ شہور و مصان اللہی انزل فیہ القرآن تریسہ ۔۔ یعنی ماہ رمضان وہی کت مینہ ہے جس میں قرآن کریم نازل ہوا جس پر کلمہ رمضان میں قرآن کریم نازل ہوا لہذا یہ مینہ رکات گویہ کے نزول کا موجب ہے اس لئے اس میں روزہ رکھنے سے اصل فرض جو لعلکم تتقون میں مذکور ہے حاصل ہو جاتی ہے

ماہ رمضان میں ختم قرآن مستون ہونے کی وجہ سے اس مینہ میں قرآن کریم کا ختم کرنا اس وجہ سے مستون ہے کہ قرآن کریم کا نزول اسی مینہ میں ہوا ہے جس جو شخص اس مینہ

میں قرآن کریم کو ختم کرتا ہے وہ ساری اصلی اور نقلی رکعات کا وارث ہو جاتا ہے وچہ یہ کہ ماہ رمضان ساری اسلامی رکعات و خیرات کا جامع ہے ہر ایک دینی رکعت اور خیر جو تمام سال میں کسی کو ملتی ہے وہ اس عظیم الشان ماہ کی رکعات و خیرات کے راستے سے آتی ہے اس مہینہ کی صیت سارے سال کی صیت کا باعث ہوتی ہے اور اس مہینہ کا تفرقہ سارے سال کے تفرقہ کا سبب ہوتا ہے کیونکہ منبع خیرات و رکعات اصطلاح عالم ہنصر و اکبر یعنی قرآن کریم کا قدم صیبت لزوم و نزول اسی مہینہ میں ہوا ہے شہر و مصلحان الاولیاء یہ القرائن ترجمہ ہے یعنی رمضان کا وہ مہینہ ہے جس میں قرآن کریم اتارا گیا

تعمیل افطار روزہ و تاخیر سحر کی وجہ ہر عمل کو اپنے اپنے مناسب موقع پر چاہنا عقل ہے اگر آنحضرت ﷺ روزہ کی ابتدا اور انتہا کی حد عملی بیان نہ فرماتے تو بعض لوگ عقلاء تک روزہ افطار کرتے یا ابتدا و عمل کی حد کو مقدم کر دیتے اور پھر ان کی تکلیف سے عام لوگوں کو تکلیف پہنچتی رات کو روزہ مقرر نہ ہونے کی وجہ یہ کہ رات کا وقت بالظن ترک شوائب و لذات کا ہے لہذا اگر رات کا وقت روزہ کے لئے قرار دیا جاتا تو مہلت کو عبادت سے اور عزم شرع کو مہلتائے طبع سے انتہا نہ ہوتی اور اسے نماز تہجد اور وقت تلاوت اور مناجات شب کو قرار دیا گیا۔

ہر سال میں ایک مہینہ روزوں کے لئے مخصوص ہونے کی وجہ (۱) چونکہ روزہ کی روزت پابندی ہمیشہ کے لئے تمام لوگوں سے باوجود تیسر ضروریہ اشتغال باہلہ و اسواہل ممکن نہ تھی لہذا یہ ضروری ہوا کہ کچھ نسانے کے بعد ہر سرجہ ایک مقدار صیمن کا اہتمام و التزام کیا جائے جس سے قوت عقلی کا تصور ہو جائے اور اس سے مہضر جو اس میں کمی ہوئی ہے اس سے اس کا تدارک ہو جائے اور اس کا مال اس گھوڑے کا سا ہو جائے جسکی بچھاڑی گاڑی بیخ سے ہی ہوتی ہے اور وہ چاہے ہر لمحہ لڑھکھک کر پھرا رہی اصلی تھکان پر تھن کھڑا ہوتا ہے۔

(۲) یہ بات ضروری ہے کہ روزہ کی ایک مقدار مقرر کی جائے تاکہ کوئی شخص اس میں انفراد

و تقریبات کر سیکے لہذا امور مذکورہ کے لحاظ سے یہ بات ضروری ہوتی کہ ایک مہینہ تک ہر دن اور ہر کھانے اور پینے اور علاج کرنے سے نفس کو ہزار کھینے کے ساتھ روزہ کا انضباط کیا جاوے کہ تاکہ ایک دن سے کم مقدار کا مقرر کرنا تو ایسا ہے جیسا کہ دوپہر کے کھانے کو کچھ دیر کر کے کھانا اور اگر رات کو ان امور کے ترک کرنے کا حکم دیا جاتا تو لوگ اس کے عادی نہیں ہوتے اس کی وجہ سے ان کو کچھ پرہیز ہوتی اور ہفتہ اور دو ہفتہ ایسی قبیل مقدار ہے جس کا نفس پر چنداں اثر نہیں ہو تا اور دو مہینے کی ایسی مقدار ہے کہ اس میں آنکھیں گز جاتیں اور نفس تک کر رہ جاتا ان امور سے روزہ کے لئے یہ بات ضروری ہوتی کہ طلوع فجر سے غروب آفتاب تک دن کا انضباط کیا جاوے کہ تاکہ عرب اسی کو دن شمار کرتے ہیں۔

(۳) چونکہ روزہ تمام قسم کے نفسانی زہروں کے دفع کرنے کے واسطے ایک طرح کا تہیہ ہے اور اس میں طبیعت کو تکلیف بھی ہوتی ہے لہذا اگر ضرورت اس کی ایک مہینہ مقدار ہوتی چاہیے چونکہ نہ اتنی کم ہو جس سے کچھ فائدہ ہی نہ ہو اور نہ اس قدر افزائش کر دی جائے کہ اس سے اعطاش میں ضعف آجائے اور وہی فرسٹ جاتی رہے اور نفس کمزور ہو جائے اور انسان بالآخر اس محنت سے قبر ہی میں جلدی نہ چلا جائے اور یہ معتدل مقدار وہی ہے جو شروع ہوتی پھر کھانے پینے میں کمی کرنے کے دو طریقے ہیں ایک تو یہ کہ مقدار میں تھوڑا سا استعمال کرے یہ طریقہ تو عام قانون کے تحت میں مشکل آسکتا ہے اس لئے کہ لوگوں کے خلف اور چہ ہیں کوئی تھوڑا کھاتا ہے اور پختہ طعام سے ایک شخص سیر ہو جاتا ہے دوسرا اھم کارہنہ ہے سوا سبب انضباط نہ ہو تا اور ہر شخص بہت کھا کر کہ دینا کہ میں نے اپنی بھوک سے کم کھایا ہے دوسرا طریقہ یہ ہے کہ کھانے کے درمیان جو فاصلہ ہوتا ہے وہ معمول سے زیادہ ہو یہی طریقہ شریعت میں مستحب ہے کیونکہ تمام کج مزاج آدمیوں کا اس پر اتفاق ہے چنانچہ لوگ عام طور سے صبح و شام دوسرے کھاتے ہیں یہ دن رات میں ایک ہی بار کھاتے ہیں ہاتھی یہ نہیں ہو سکتا کہ روزانہ لوگوں کو کم کھانے کے تکلیف دہانے مثلاً کھا جاوے کہ تم لوگ اس قدر کھایا کرو کہ حیوانیت مطلوب رہے ایسا حکم دینا موضوع شریعت کے

خلاف ہے مثل مشہور ہے کہ جو بھیڑے کو چرواہا بنا لے وہ خود خاتم سے ہاں خیر واجبات میں ایسا کرنا مناسب نہیں۔ مگر یہ بھی لازم ہے کہ وہ کا صلہ اتنی دیر کا نہ ہو کہ اس سے نقصان پہنچے اور قوت کا استحصال ہو جائے مثلاً تین رات دن دراز ہو کار بنے کا حکم ہو تا اس لئے کہ یہ موضوع شریعت کے خلاف ہے اور ہر ایک کو انکی تکلیف نہیں دی جا سکتی اور یہ بھی ہونا چاہیے کہ بھوکے پیاسے رہنے کیلئے پارہا کی بھی قید ہو تاکہ ریاضت اور اطاعت کا مادہ پیدا ہو ورنہ ایک پارہ بھوکے رہنے سے خواہ وہ کبھی ہی قوی اور سخت لگے کہ ہو کیا لائق ہو گا۔

ان مقدمات کے تسلیم کرنے پر ماننا چاہئے گا کہ روزہ پورے دن بھر کا کامل ایک میوہ تک ہونا چاہیے کیونکہ دن بھر سے کم تو ایسا ہے کہ دن کا کھانا اور اتنا خیر کر کے کھایا جاوے۔ اور اگر کھانوں کی عادت ہوتی ہے کہ رات کے کھانے کی پر وہ بھی نہیں کرتے اور ایک دو ہفتہ بہت تھوڑی مدت ہے جس کا اثر نہیں ہو سکتا اور دو میوہ تک روزہ رکھنے سے طبیعت بہت کمزور ہو جاتی ہے جیسا کہ پر مذکور ہوا۔

(۴) چچ تک روزہ کے قانون کو عام ہونا چاہیے اس لئے کہ اس میں سب کی اصلاح و تہذیب مقصود ہے لہذا ہر شخص اس بات کا مجاہد ہو کہ جس مہینے میں آسانی کچھ روزہ رکھ لے اس لئے کہ اس میں باب مہذرت کے وسیع ہو جانے کا اور امر بالمعروف و نہی عن المنکر کے اندر کا اور اسلام کی ایک عظیم الشان مہارت میں سستی ہو جائے گا۔

(۵) مسلمانوں کے ایک دے گروہ کا ایک وقت میں کسی ایک چیز کی پابندی کرنے سے ایک دوسرے کو اس کام میں مدد ملے گی آسانی ہو گی اور کام کرنے کی ہمت پیدا ہو گی۔

(۶) ایک کام کو ایک ہی وقت میں ساری دنیا کے مسلمانوں کا اتفاق مل کر کرنا ان کے لئے باعث نزول رحمت الہی اور ان میں صورت اتفاق و اتحاد کے لئے مفید ہے لہذا وہ ہے کہ ساری دنیا کے مسلمانوں کے لئے خدا تعالیٰ نے روزوں کا ایک ہی میوہ مہینہ و شخص کیا ہے پس جو شخص اس حکم الہی کو بغیر عذر کے توڑتا ہے اس پر جانے رحمت کے رحمت کا نزول ہوتا ہے۔

کلم شوالی کو روزہ رکھنا حرام ہونے کی وجہ سے سوال۔ کلم شوالی کا روزہ رکھنا حرام اور رمضان کا اخیر روزہ فرض ہونے کا کیا راز ہے یا جو دیکھ دو نون یوم یکساں ہیں۔

جواب۔ یہ دونوں یوم مرتبہ اور رجب میں برابر نہیں اگرچہ طلوع وغروب آفتاب میں یکساں ہیں مگر حکم الہی میں یکساں نہیں ہیں کیونکہ ماہ رمضان وہ مہینہ ہے جس کے روزے خدا تعالیٰ نے اپنے بندوں پر فرض کئے ہیں اور کلم شوالی لوگوں کی عیہ و سرور کا دن ہے جس میں خدا تعالیٰ نے لوگوں پر کھانا پینا جلوس شکر گذاری اور کلم شوالی کو کلم شوالی کہا گیا ہے اس لئے اس دن سب لوگ خدا تعالیٰ کے مہمان ہوتے ہیں لہذا خدا تعالیٰ کے مہمان کو واجب ہے کہ اس کی دعوت و ضیافت کو قبول کرے یہ امر خدا تعالیٰ کو سخت ناپسند ہے کہ اس دن کوئی شخص روزہ رکھ کر خدا تعالیٰ کی دعوت و ضیافت کو رو کرے مہمان کے لوازم و آداب میں سے یہ امر بھی ہے کہ روزہ رکھے تو صاحب خانہ یعنی میزبان کے اذن سے رکھے پس جبکہ کلم شوالی کو کلم شوالی کہا گیا ہے اس لئے مہمان ہوتے ہیں تو پھر اس دن کسی کو روزہ رکھنا جائز ہو سکتا ہے؟ یہ امر شریعت اسلامیہ کی خوبیوں میں سے ہے کہ خدا نے رمضان کا آخری روزہ رکھنا فرض کیا کیونکہ یہ روزہ خدا تعالیٰ کے اتمام نعمت و خاتمہ عمل کے لئے ہے اور شوال کی کلم کو روزہ رکھنا حرام ہو کیونکہ وہ ایسا دن ہے کہ اس میں تمام مسلمان اپنے پروردگار کے مہمان ہوتے ہیں یوں تو تمام مخلوق خدا تعالیٰ کی دائمی مہمان ہے مگر یہ دن ان کی ایک مخصوص مہمانی و ضیافت کا ہے جس کو رکھنا گناہ عظیم ہے۔

ماہ رمضان کی راتوں میں تقرر نماز تراویح کی وجہ سے (۱) رمضان کی راتوں میں نماز تراویح اس لئے مقرر ہوئی کہ طبی خواہشوں کی کمال مخالفت نہ ہو کیونکہ طبیعت روزہ کی سستی و صحت و مشقت کو دفع کرنے کے لئے استراحت و آرام چاہتی ہے لہذا انہیں ایسی مہلات کا تقرر ہوا کہ جس سے عادت و مہلات میں اطمینان ہو۔

(۲) ماہ رمضان نزول عریضہ رکات و انوار کے لئے مخصوص ہے لہذا اس مہینہ کی راتوں میں بھی

ایک خاص عبادت کا تقرر ہوا کیونکہ اکثر رکعت، خورانی پختہ رکعت ہی کو ہوتا ہے۔

یاد رہے رمضان کے عشرہ اخیر میں مسجد کے اندر مشکف ہونے کی وجہ سے نظر احکاف صحت سے نکلا ہے جس کے معنی روکنے اور منع کرنے کے ہیں نہ کہ مشکف جب کہ روزہ اور بھی ہو تمام حوائج و اغویہ و اغراض نفسانیہ سے اپنے کو بھلا عبادت الہی مسجد میں روک کر کے اس کے در پر اپنے کو گرہ دیتا ہے اس لئے اس فعل کا نام احکاف ہو اور وہ مستون بھی ہے چنانچہ روایت الہی بن کعب ابن ماجرہ میں ہے کہ آنحضرت ﷺ رمضان کے عشرہ اخیر میں احکاف میں ٹھہرا کرتے تھے جس روزہ عاشقانہ رنگ میں ایک تصویر ہی زبان کی اصلاح الحاج ہے اور احکاف عاشق کا دروازہ معشوق پر اپنے آپ کو عبادت تضرع و ذماری پیش کرنا ہے گویا مشکف اپنے آپ کو درگاہ الہی میں عیباً متھید کرتا ہے جیسا کہ ایک الحاج کھنڈہ مسائل کسی کے دروازہ پر مشکف ہو جاتا ہے اور اپنی حاجت و مراد حاصل ہونے بلکہ نہیں جتایا یہ کہ عاشق دراز کی طرح اپنے معشوق کے دروازے پر بھوکا پیاساں کر اور دنیا کی تمام حوائج و اغراض سے فارغ و لابلہ ہو کر محض جلوہ محبوب و معشوق کے لئے اس کے دروازے پر مشکف ہو جاتا ہے اور جب تک اس کا معشوق اس کو اپنا نہ نہ کھائے اس کے در سے نہیں جتا اور اسکے شوق میں ساری لذات کو چھوڑ کر اس کے در پر آکر سر رکھ دیتا ہے یہی وجہ ہے کہ احکاف خانہ خدا یعنی مسجد کے بغیر کہیں جائز نہیں کیونکہ عاشق طالب دیدار کو اپنے معشوق کے دروازے ہی پر گرنا چاہیے اور یہی وجہ ہے کہ حالت احکاف مشکف کو رات میں بھی اپنی عورت سے مباحرت کرنی جائز نہیں کیونکہ صادق عاشق کو کون باتوں کا کہاں خیال رہتا ہے اور یہ یاد رمضان کے عشرہ آخری میں بیعت اللہ کا ظہور روایات میں مذکور ہے وہ ایسی ہی نقلی ہے جس کا اصلی ظہور ایسی ہی عاشق پر ہوتا ہے

بھول کر کھانے پینے اور جماع کرنے والے کار و زہ نہ ٹوٹنے کی وجہ سے سال ۔
جب کہ صوم کے معنی ترک کرنے اور روکنے کے ہیں تو جو شخص بھول کر کوئی چیز کھانی لے اس

نئے صوم اور صفت ترک کو توڑ دیا نہیں اس کا روزہ کی حکم بقی رہ سکتا ہے۔

جواب۔ اگر روزہ دار بھول کر کسی چیز ناقص صوم کا اشتغال کر لے تو بھی اس کا ترک شرعی اس کے حق میں موجود ہے کیونکہ شارع نے اس کے فعل کو اپنی طرف منسوب کیا ہے چنانچہ فرمایا۔ ان الله اطعمه وسقاه۔ ترجمہ۔ یعنی خدا تعالیٰ نے اس کو کھلایا اور پلایا۔ پس اس میں بندہ کا فعل صوماً صوم ہوتا ہے اگرچہ مسواہ کھانے والا ہوتا ہے اور اس کا جس کے معنی صوم یعنی روزہ کے ہیں وہ ٹھکی طور پر اسی طرح موجود ہے

سال میں چھتیس روزے رکھنے سے صائم الدہر ٹھنے کی حکمت۔ نبی صلی اللہ علیہ وسلم فرماتے ہیں من صام صیام رمضان فالبعد سناً من شوال كما ان كصيام الدعوى۔ ترجمہ یعنی جو شخص رمضان کے روزے رکھ کر اس کے بعد شوال کے چھ روزے اور رکھ لیا کرے تو بیش روزہ رکھنے کے برابہ ہے۔ اور ان روزوں کی مشروعت میں یہ بھی ہے کہ یہ روزے ایسے ہیں جیسے نماز چنگ کے ساتھ سنتیں مقرر کی گئی ہیں جن کی وجہ سے ان لوگوں کے فائدہ کی تکمیل ہو جاتی ہے جو اصل نماز سے پورا فائدہ حاصل نہیں کرتے اور ان روزوں کی فضیلت میں یہ بات ہے کہ ان کی وجہ سے آدمی کو بیش روزہ رکھنے کے برابہ ثواب ملتا ہے اس لئے کہ یہ فائدہ مقرر ہے کہ ایک نیکی کا ثواب دس نیکی کے برابہ ملتا ہے اور ان چھ روزوں سے یہ حساب پورا ہو سکتا ہے یعنی ۶+۳۰=۳۶ کو ۱۰ کے ساتھ ضرب دینے سے تین سو ساٹھ حاصل ضرب ہوتے ہیں۔

ماہ رمضان میں دو روزہ کے دروازے بند ہونے اور بھشت کے دروازے کھلنے کی وجہ۔ حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نبی ﷺ سے روایت ہیں اذا جاء شهر رمضان فتحت ابواب الجنة وغلقت ابواب النار وصعدت الشياطين۔ ترجمہ یعنی جب رمضان کا مہینہ آتا ہے تو بھشت کے دروازے کھلتے اور دو روزہ کے دروازے بند ہو جاتے ہیں اور

شیطان بکڑے جاتے ہیں یہ بات ظاہر ہے کہ دنیا میں عام شرور اور پدیاں جو انسانوں سے سرزد ہوتی ہیں وہ ان کی سیری و قوت جسمی کی وجہ سے ہوتی ہیں سو جب روزہ کے سبب قوت جسمی میں فتور آجاتا ہے تو گناہوں میں کمی ہو جاتی ہے پس جب انسان محض خدا تعالیٰ کے لئے بھوکے اور پیاسے ہوتے اور گناہوں کو ترک کرتے ہیں تو ان کے لئے رحمت الہی جو ان میں آتی ہے اور بھوکے کے دروازے ان کے لئے کھل جاتے ہیں اور دوزخ کے دروازوں کا درہاگہ ہونا بھی ظاہر ہے کہ جب گناہوں کا دروازہ ہی بند ہو گیا جس کے باعث سے قصب الہی کی آگ بھڑکتی ہے تو چٹک دوزخ کے دروازے بھی بند ہو جائیں گے اور شیاطین کا بکڑا جانا بھی ظاہر ہے کہ جب نئی قوم کے رگ و ریشہ و جسم میں توانائی اور حکم میں سیری ہوتی ہے تو گناہوں کی طرف بھی رغبت ہوتی ہے اور اندر سے بظنوں اور رینٹوں سے شیطانی تحریکات شروع ہو جاتی ہیں مگر جب سادے جسم میں بھوک اور پیاس کا اثر ہو اور حکم الہی شوقی قوی کو روزہ کی خاطر دبا دیا جائے تو اس میں کچھ شک نہیں کہ اس طرح سے شیطان بکڑے جاتے ہیں نبی علیہ الصلوٰۃ والسلام فرماتے ہیں ان الشیطان یحوی من بی ادم کما حوی الدم۔ ترجمہ۔ یعنی شیطان یعنی قوم کے رگ و ریشہ میں خون کی طرح جاری اور رواں رہتا ہے۔ اس حدیث سے صاف ظاہر ہے کہ شیطان کا مقام یعنی قوم کے رگ و ریشہ میں ہوتا ہے پس جب رگ و ریشہ کی قوتوں میں فتور آجائے اور شیطانی تحریکات کا صوم کے سبب ظہور نہ ہو تو محض کے قول پر یہی شیطان کا بکڑا جانا ہے اور ظاہر حدیث سے ظاہر ہی بکڑا جانا معلوم ہوتا ہے دنیا میں جب کسی معزز کی آمد ہوتی ہے۔ مسافروں کو خاص طور پر نظر بند کر دیا جاتا ہے پس رمضان میں خاص رکعتہ تجلیات کی آمد سے بھی ایسا ہی کیا جاتا ہے اور پھر بھی جو گناہ ہوتے ہیں وہ انہیں کے سبب ہوتے ہیں نہ کہ شیاطین کے سبب۔

قطب جنوبی و شمالی میں روزہ ماہ رمضان مقرر نہ ہونے کی وجہ سوال :- قطبین پر چھ مہینے کے دن رات ہوتے ہیں اور اس کی وجہ بیان ذیل سے اسی سوال میں واضح ہو گی ؟

جب آفتاب خط استوا پر ہوتا ہے تو اس کی روشنی دونوں قطبوں پر پہنچتی ہے لیکن جس قدر سورج خط استوا سے شمال کی طرف آتا ہے اسی قدر اس کی روشنی قطب شمال کے آگے برکتی اور قطب جنوبی سے دور ہوتی آتی ہے اور اسی واسطے قطب شمال پر دن اور قطب جنوبی پر رات ہوتی جاتی ہے مگر سورج خط استوا سے تین میٹروں میں تو شمالی کی طرف آ کر خط سرطان پر پہنچتا ہے اور پھر تین ہی میٹر میں خط سرطان سے خط استوا پر آتا ہے پس ان چھ میٹروں میں قطب شمال آفتاب کی روشنی سے منور اور قطب جنوبی اس سے غائب ہوتا ہے اور ایسا ہی باقی چھ میٹروں میں قطب شمال آفتاب نصف کرۃ جنوبی اس سے غائب ہوتا ہے اور ایسا ہی باقی چھ میٹروں میں قطب شمال نصف کرۃ جنوبی سے منور اور قطب جنوبی تو آفتاب کی روشنی سے منور اور قطب شمال حد کی میں ہوتا ہے اور اسی واسطے ان دونوں قطب جنوبی پر دن اور قطب شمالی پر رات ہوتی ہے یعنی ۲۱ مارچ سے ۲۲ ستمبر تک آفتاب کے نصف کرۃ شمال میں رہنے کے سبب قطب شمالی پر دن اور قطب جنوبی پر رات ہوتی ہے پس جہاں رات چھ ماہ کی اور دن بھی چھ ماہ کا ہو وہاں روزہ رکھنے کا کیا انتظام ہو گا کسی انسان کی اتنی طاقت و وسعت نہیں کہ اتنے دن یعنی چھ ماہ کا روزہ رکھ سکے اور چھ ماہ تک غروب آفتاب کا انتظار کرے اور بھوکا پیاسا رہے مثلاً گرین لینڈ میں جو جگہ وہاں اس کے روزہ کا انتظام ہو۔

جواب۔ قطعاً اور گرین لینڈ وغیرہ روزہ رکھنے کے مسئلہ کو قرآن کریم نے بھلا نہیں دیا اور واضح کر کے بتایا ہے چنانچہ فرماتے ہیں۔ *فمن شهد منکم الشهر فليصمه* ترجمہ۔ یعنی جو شخص ماہ رمضان کو پاسے وہاں میں روزہ رکھے۔ پس جہاں رمضان کی نوبت ہی نہیں آتی اور جہاں رمضان موجود ہی نہیں ہے وہاں روزہ بھی نہیں ایسے مقالات پر یہی حال نماز کا ہے کہ کبہ خدا تعالیٰ فرماتے ہیں۔ *ان الصلوة کلفت علی المؤمنین کتایا موفوقہ*۔ تو جہاں یہ اوقات نہیں وہاں عبادت موقتہ بھی نہیں جس طرح چور کا ہاتھ کاٹنا قرآنی حکم اور اسلام کا عمل در آمد تھا اور ہاتھ کٹے چور مسلمان بھی ہو جاتے اور ہوتے تھے اور نماز میں بھی پڑھتے تھے اور قرآن کریم میں وضو اور حکم کے وقت دونوں ہاتھوں کا صومہ صبح کرنا بھی ضروری تھا مگر جہاں ہاتھ ہی نہیں ان کا صومہ صبح کرنا

اسی طرح جہاں رمضان ہی نہیں، ہاں رمضان کے روزے چھ مہینے اور یہ قول بعض علماء کا ہے، اور بعض علماء نے فرمایا ہے کہ مقصود بالذات خود لہذا اور روزہ ہے اور اوقات کی تعیین وہاں ہے جہاں اوقات ہوں اور جہاں اوقات نہ ہوں وہاں وہ عبادت مقصودہ ساقط نہیں ہوں گی وقت کا اندازہ کر کے نماز بھی پڑھی جاوے گی اور روزے بھی رکھا جاوے گا اور احتیاطاً اسی قول میں ہے اور اگر کسی کے نزدیک آیت موصوفہ اس حکم پر دلالت کرنے کے لئے کافی نہ ہو اور اس وجہ سے اس حکم کو غیر مذکور فی القرآن کہا جاوے تو اس صورت میں اس سوال کا جواب یہ ہے کہ بالعموم قطعاً نہیں، یعنی آدم کے علاوہ دوسرے حیوانات کی آپذی تھی، تاہم فلاں عرف و آب اور دست قرباناً ممکن نظر آتی ہے اس لئے جہاں خدا نے بنی آدم کی آپذی ہی نہیں رکھی، ہاں روزہ کا تعین بھی نہیں ہوا، خوب سوچو کہ بادشاہی احکام کا نفاذ اگر وہاں ہی ہوتا ہے جہاں انکی رعیت ہو اور جہاں انکی رعیت ہی نہ ہو وہاں احکام کا اثر اسی نہیں ہوتا۔

اور پہلے جواب کی شرح یہ ہے کہ ہمارے رمضان جو کہ روزوں کا مہینہ ہے قمری ہے چنانچہ خدا تعالیٰ بعد ایکایک مہینہ اس کا وقت بتلانے کے لئے فرماتے ہیں۔ شہور و عصان الذی انزل فیہ القرآن۔ یعنی رمضان کا مہینہ وہ ہے جس میں قرآن کریم نازل ہوا اور ظاہر ہے کہ رمضان قمری مہینہ ہے اور ہر قمری مہینہ ۲۹ دن یا ۳۰ دن ہوتے ہیں اور ۲۳ صحت کا ہوتا ہے۔

اذافات الشرط فلات المشروط و طاهر علماء کائنات لو پند کور ہو چکا ہے۔

وجہ تقرر صدقہ فطر (۱) عید الفطر میں صدقہ اس واسطے مقرر کیا گیا ہے کہ لوگ تو اس کے سبب عید الفطر کے شعرا الہی میں سے ہونے کی تکمیل ہوتی ہے دوسرے یہ کہ اس میں روزہ داروں کے لئے طہارت اور ان کے روزہ کی تکمیل ہے جس طرح کہ لڑکیوں میں فراغت کی تکمیل کے لئے سنتیں مقرر کی گئی ہیں ایسی ہی یہ صدقہ مقرر ہوا۔

(۲) عید باہ اور دو ہفتوں اور روزی و سعت لوگوں کے گروہوں میں تو اس روز عید ہوتی ہے مگر مسکین

و عقلوں میں وجہ ہزاری کے اسی طرح سے شکل صوم موجود ہوتی ہے لہذا اللہ تعالیٰ نے ذی وسعت لوگوں پر وجہ شفقت علی خلق اللہ اذم نصیر لیا کہ مساکین کو عید سے پہلے صدقہ دے دیں تاکہ وہ بھی عید کریں یہاں تک کہ نماز عید پڑھنے سے پہلے ہی ان کو صدقہ دینا اذم نصیر لیا اور اگر مساکین کھڑے سے ہوں تو یہ صدقہ خاص جگہ جمع کرنے کا ایسا ہوا تاکہ مساکین کو یقین ہو جاوے کہ اللہ سے حقوق کی حفاظت کی جاوے گی۔

ہر ذی وسعت مسلمان پر صدقہ فطر ایک صاع جو یا چھوڑے یا نصف صاع گندم مقرر ہو سکتی وجہ :- فی علیہ الصلوٰۃ والسلام نے صدقہ فطر ہر غلام اور آزاد مرد اور عورت چھوٹے اور بڑے پر ایک صاع چھوڑے یا جو یعنی انگریزی نمبری سیر سے ساڑھے تین سیر پختہ گندم جس طرف میں آچھدی کہ وہ طرف ایک صاع کا ہوتا ہے اس طرف کو بھر کر چھوڑے یا جو اس لئے مقرر فرمائے ہیں کہ غالباً یہ مقدار ایک چھوٹے کنبے کو ایک روڈ کے لئے کافی ہوتی ہے اس سے فقیر و مسکین کی حاجت پورے طور سے رفع ہو جاتی ہے اور غالباً کوئی شخص ایک صاع دینے سے ضرر بھی نہیں پاتا اور جو کے ایک صاع کی جگہ گندم کا نصف صاع مقرر کیا گیا ہے کیونکہ اس وقت میں یہ نسبت جو کے گیسوں کی گرائی تھی اس لئے ضرور اس کو کھا سکتے تھے اور مساکین گیسوں نہ کھاتے تھے۔

باب العیدین

تقرر عید الفطر کار از ہر قوم میں کوئی نہ کوئی دن ایسا ضرور ہوتا ہے جس میں عام طور سے خوشی منائی جاتی ہے بہت عموماً لباس پہنا جاتا ہے اور عمدہ کھانے کھائے جاتے ہیں چنانچہ حدیث شریف میں ہے لکنل قوم عید و هذا عید فائینی ہر قوم کی ایک عید ہے اور یہ ہزاری عید ہے۔

(۲) یہ وہ دن ہے کہ جب لوگ اپنے روزوں سے فارغ ہو چکے ہیں اور ایک طرح کی زکوٰۃ لوگ

چکتے ہیں تو اس دن ان کے لئے دو قسم کی خوشیاں منج ہو جاتی ہیں طبعی اور عقلی۔ طبعی خوشی تو ان کو اس کے لئے حاصل ہوتی ہے کہ روزہ کی عبادت شاکہ سے فارغ ہو جاتے ہیں اور کتابوں کو صدقہ مل جاتا ہے اور عقلی خوشی یہ ہے کہ خدا تعالیٰ نے عبادت مفروضہ کے لواکر نے ان کو توفیق عطا فرمائی اور ان کے لئے عیال کو اس سال تک باقی رکھنے کا حکم کیا اس لئے ان خوشیوں کے اظہار کا حکم ہوا۔

تقریر عیدین کی وجہ: ہر قوم میں یکھ دستور اور رسمیں اور عادات ہوتی ہیں مگر ان کے میلے بھی ہیں جن کا تمام تمدن اور غیر تمدن قوموں میں رواج ہے میلے کے دن خوراک لباس و ملاقات میں خاص اور نمایاں تبدیلی ہوتی ہے اور یہ فطرتی چیز تھی مگر اس میں بدعتیں بدعتیں ہوا دیوس کو بہت دخل ہو گیا بہت میلے تجارت کی پہلو پر قائم ہوتے ہیں چنانچہ ہندوستان میں تجارت کے ایسے بہت سے میلے ہوتے ہیں یہاں تک کہ ہر رنگہ کسی نہ کسی گاؤں میں میلہ ہوتا ہے بعض میلوں میں جانوروں کو جمع کرتے ہیں جسے منڈی کہتے ہیں فرض کہ ان میلوں کی قدر میں عجیب عجیب مقاصد کام کر رہے ہیں بعض تو اپنے گنہگارے کے لئے میلا لگاتے ہیں اور بعض خاص چندے اور نذر دینا دے کے لئے اور بعض محض اپنی عظمت اور شان کے اظہار کیلئے۔

ہمارے نبی کریم ﷺ کے جہاں بڑے بڑے احیاءات ہیں ایک یہ بھی ہے کہ آپ نے ان میلوں کی اصلاح کر دی ہے چونکہ یہ ایک فطرتی بات تھی اس لئے ان کو اصل سے منقطع نہیں کیا صرف اصلاح کر دی اور وہی ہے کہ آپ نے جہاں اور قسم کے رسم و رواج کو اللہ تعالیٰ کی تعظیم و مشقت علی خلق اللہ کے تحت میں لے لیا وہاں ان میلوں میں بھی یہی بات پیدا کر دی چنانچہ عید میں آپ نے نول تعبیر کو لازم ٹھہرایا اور خدا تعالیٰ کی تعظیم کے اظہار کے لئے وہ لفظ مقرر کیا جس سے بلا کہ کوئی لفظ نہیں ہے معذات میں اکبر سے بلا کہ کوئی لفظ نہیں ہے اور جامع جمع صفات کامل ہونے کے لفظ سے اللہ سے بلا کہ اس معلوم کی چہریت کو کوئی لفظ ظاہر نہیں کر سکتا تو تعظیم الامر

اللہ ہے اور مخلوق پر شفقت کرنے کے لئے رمضان کی عید میں صدقہ فطر کو لازم ٹھہرایا یہاں تک کہ نماز میں اس وقت جانے کہ اول اس کو لو کرے اصل سنت یہی ہے اور پھر بعض مواقع میں یہ صدقہ خاص جگہ جمع کرے تاکہ مساکین کو یقین ہو جاوے کہ ہمارے حقوق کی حفاظت کی جاوے گی اور عید قربان میں مساکین وغیر ہم کے لئے صدقہ الطعام لحم یعنی گوشت کی معمولی مقرر فرمائی۔ یہ چیزیں آنحضرت ﷺ نے اس بات کے لئے کی تھیں کہ اللہ تعالیٰ کے جو فرائض انسان پر ہیں اور جو فرائض مخلوق کے ہیں ان کو پورا کریں دنیا کے کسی میلہ کو دیکھ لو کہ ان میں ان حقوق کی حفاظت اور یہ عکس کی باتیں نہیں پائی جاتی ہیں جو عیدین میں ہیں۔

تقرر عید قربان کی وجہ عبادت کے اوقات مقرر ہوتے ہیں یہ بھی عکس ہے کہ اس وقت میں انبیاء علیہم السلام نے جو عبادت و عبادت الہی کی ہو اور خدا تعالیٰ نے اس کو قبول کر لیا ہو اس وقت کے آنے سے ان کی جان ناری پدا کر اس عبادت کی طرف رغبت ہو جس سے عید الفطر کا دن وہ دن ہے کہ حضرت ابراہیم علیہ السلام نے اپنے بیٹے حضرت اسمعیل علیہ السلام کو ختم پروردگار خدا تعالیٰ کے حضور میں ذبح کر کے پیش کرنے کا ارادہ فرمایا تھا اور خدا تعالیٰ نے حضرت اسمعیل علیہ السلام کی جان کے بدلہ میں ایک بھد عظیمہ عبادت کیا اس لئے اس عید میں قربانی اس مصلحت سے مقرر کی گئی کہ اس میں طے لہذا ہی کے اثر کے حالات اور ان کے جان و مال کو خدا تعالیٰ کی فرمانبرداری میں خرچ کرنے اور ان کی عبادت و جہ صبر کرنے کی پاد دہائی کر کے لوگوں کو عبرت دلائی گئی ہے اور نیز حاجیوں کے ساتھ تشبیہ اور ان کی عظمت ہے اور جس کام میں وہ حجاج مسرف ہیں اس کی طرف دوسرے لوگوں کو ترقیب ہے۔

عیدین میں نماز اور خطبہ مقرر ہونے کی وجہ عیدین میں خطبہ اور نماز اس لئے مقرر ہے کہ مسلمانوں کا کوئی اجتماع ذکر الہی اور شعائر و حج کی تعلیم اور جمال الہی کے اتحدا سے خالی نہ ہو تفصیل اس اہل کی یوں ہے کہ ہر قوم کے لئے ایک دن مخصوص ہوتا ہے کہ اس میں

اپنے عقل کا اظہار کرتے ہیں اور خوب ذہن و زہانت کے ساتھ اپنے شعروں سے باہر نکلتے ہیں یہ انکی رسم ہے کہ اس سے کوئی قوم عرب و قوم میں غالی نہیں ہے جب آنحضرت ﷺ مدینہ منورہ میں تشریف لائے تو ان کے بھی وہاں ایسے مقرر تھے کہ وہاں میں سوداغب یعنی خلیل کو داکر تھے تب آپ نے فرمایا کہ خدا تعالیٰ نے مجھے ان دونوں کے لئے اور داکر تھوڑے ہیٹے ہیں اور وہ عام اخلاقی اور عام فطری ہیں اور ان کے تبدیل کرنے کی یہ ضرورت ہوتی کہ لوگوں میں جو دن خوشی کا ہوتا ہے مقصود اس سے کسی نہ کسی دین کے شعائر کا اظہار یا کسی مذہب کے عقائد کی سوانحیت یا اس قسم کی بات ہوتی ہے۔ اس سے آنحضرت ﷺ کو خلیل ہوا کہ ان کو آپ نے اسی حالت پر پھوڑ دیا تو ایسا نہ ہو کہ اس میں جاہلیت کی رسم کی تقسیم و جاہلیت کے اسلاف کے کسی طریقہ کی تردید ان کو مقصود نہ ہو اس لئے آپ نے مجھے ان دونوں کے امام عیدین کو مقرر فرمایا کہ ان میں ملت اور ایم حلیف کے شعائر کی حکمت ہے اور آپ نے اس دن کے عقل کے ساتھ ذکر خدا اور دیگر عبادات کو بھی ملادیا کہ مسلمانوں کا کوئی اجتماع صرف سوداغب نہ ہو بلکہ ان کے اگلھے ہونے سے اعلاء کلمہ اسلام ہو لہذا تکبیر کہنا بھی مسنون کیا گیا چنانچہ حق تعالیٰ فرماتے ہیں و تکبیر و اعظی علی ما حکم یعنی خدا تعالیٰ نے جو تم کو ہدایت فرمائی ہے اس پر اٹھو دلی کو بیان کرو۔

عیدین کے دنوں میں عمدہ غذا کھانے اور قمیص لباس پہننے کی وجہ : جب کہ عید کا دن خدا تعالیٰ کی یہ خاص ضیافت و مسائی کا دن ہے تو اس میں ضرور ہو کہ خدا تعالیٰ کی یہ خاص ضیافت جو کہ اس نے اپنے بندوں کے لئے مقرر کی ہے وہ عمدہ اور قمیص طعام سے ہو اور اس کی قدر کی جائے لہذا اللہ اور نعمائے الہی سے خدا تعالیٰ کی طرف سے عمدہ کھانے پکانے جائیں اور اکل و شرب و لباس میں حد جائز تک و سعت کی جائے کیونکہ اسی میں خدا تعالیٰ کی ضیافت و رحمت کی تقسیم و نگر بھائی ہوتی ہے اور چونکہ یہ ضیافت الہی کا دن ہے اس لئے سو من کو چاہیے کہ کھانے میں توسیع کرے اور فریاد کی خبر گیری کرے۔

عیدین کی نمازوں میں زیادہ تکبیرات کہنے کی وجہ تکبیر الہی میں خدا تعالیٰ کی عظمت اور جلال اور اپنے اکلدارہ ترکہ سواہ نظر ہوتا ہے اور اس میں کچھ تکبیریں نہیں کہ لوگ عیدین کے دنوں میں بھرتے اپنے شان و شوکت اور تجل کا اظہار کرتے ہیں اس لئے اس کے مقابلہ میں مشروع ہوا کہ خدا تعالیٰ کی کبریائی بیان کر دے اور اس کو نہ نظر نہ کہو کیونکہ اسی نے تم کو اس دن شان و شوکت کی اجازت دی ہے پس یہ ذاتی و کبریائی اسی کا اختصاق ہے اور ہر تکبیر میں کالوں پر ہاتھ بٹکانا ترک کبر ہے و ترک سواہ کی طرف ایما ہے اور اپنی ذاتی اور عظمت سے جانب ہونے کی تعلیم ہے نیز جہاں کہیں جائزہ فعل کی کھڑت کا اظہار ہو اس کو حد اعتدال لانے کے لئے اس کے اضداد مقرر ہیں پس عیدین میں کہ جس میں سہمہ تجل کی کھڑت ہے کھڑت تکبیرات کا اور کھڑت توجہ الی اللہ و ترک التفات ماسواہ ہے۔

باب الاضغی

تقرر قربانی کی وجہ - قربانی اصل قربان سے ہے چنانچہ صراح میں لکھا ہے قربان بالانطم وهو ما يطرب به الی اللہ تعالیٰ بقول قرین اللہ یعنی قربان اس چیز کو کہتے ہیں جس کے ساتھ انسان خدا تعالیٰ کا قرب حاصل کرتا ہے چنانچہ کہتے ہیں قرین اللہ قرباناً۔

چونکہ انسان قربانی سے قرب الہی کا طالب ہوتا ہے اس لئے اس فعل کا نام بھی قربانی ہوا (۱) اور اصل قربانی کیا ہے ایک تصویر یا زبان میں تعلیم ہے جسے جاہل اور عالم سب پڑھ سکتے ہیں وہ تعلیم یہ ہے کہ خدا کسی کے خون اور گوشت کا ہمہ کا نہیں وہ تو وہو یطعم ولا یطعم ہے ایسا پاک اور عظیم الشان نہ تو کھانوں کا متعلق ہے نہ گوشت کے چرمائے کا یا سہوہ تمسکس کھانا چاہتا ہے کہ تم بھی خدا کے حضور میں اسی طرح قربان ہو جاؤ اور یہ بھی تمہارا ہی قربان ہونا ہے کہ اپنے بولے اپنا قیمتی پیارا جانور قربان کر دو۔

(۲) جو لوگ قربانی کو خلاف عقل سمجھتے ہیں وہ سن لیں کہ کل دنیا میں قربانی کا رواج ہے اور قوموں

کی جان بچانے پر نگر کرنے سے ظاہر ہوتا ہے کہ کوئی چیز اعلیٰ کے ہار میں قربان کی جاتی ہے یہ سلسلہ پھوٹی سے پھوٹی اور ہادی سے ہادی چیزوں میں پڑا جاتا ہے ہم نے اسے تو یہ بات سنی تھی کہ کسی کو سانپ زہر یا کانٹے تو دوا اعلیٰ کا ہی جانے تاکہ اسے جسم زہر پلے اثر سے محفوظ رہے گویا اعلیٰ تمام جسم کے لئے قربان کی گئی ہے۔

(۳) اسی طرح ہم دیکھتے ہیں کہ اہل ان کوئی دوست آہانے جو کچھ ہمارے پاس ہو اسی کی خوشی کے لئے قربان کرنا پڑتا ہے۔ آنا گوشت وغیرہ جتنی اشیاء اس پادے کے سامنے کوئی ہستی نہیں رکھتیں۔

(۴) اس سے زیادہ عزیز ہو تو مرے مر غیاں تھی کہ بھیڑیں اور آخر سے قربان کئے جاتے ہیں بلکہ اس سے بھی بڑھ کر گائے اور اونٹ بھی عزیز ممان کے لئے قربان کر دیئے جاتے ہیں۔

(۵) اہل میں دیکھا گیا ہے کہ وہ قومیں جو اس کے ہاتھ نہیں سمجھتیں کہ کوئی جانور قتل ہو وہ بھی اپنے زخموں کے سینکڑوں کیزوں کو یاد کر اپنی جان پر قربان کر دیتے ہیں اس سے لوہے کا تو ہم دیکھتے ہیں کہ کوئی لوگوں کو اعلیٰ کیلئے قربان کیا جاتا ہے مثلاً بھٹی ہیں کہ تمام قوموں کی عید ہی کا دن ہو مگر ان بھادوں کے پیر وہی کام ہو تا ہے بلکہ ایسے ایام میں ان کو زیادہ تاکید ہوتی ہے کہ لوگوں کی آسائش و آرام کی خاطر کوئی گندگی کسی گندہ گاہ میں نہ رہنے دیں گویا کوئی کی خوشی اعلیٰ کی خوشی پر قربان ہوئی

(۶) اہل ہندو گنڈہ گنڈہ سے زور سے کرتے ہیں لہذا ان کے ملک میں تو دودھ تک نہیں پینے کیونکہ یہ بھڑوں کا حق ہے مگر یہاں کے ہندو صومکادے کہ اس کا دودھ پیتے ہیں اور پھر اس سے اور اس کی اولاد سے سخت کام لیتے یہاں تک کہ اپنے کاموں کے لئے انھیں ہندہ کر درست کرتے ہیں یہ بھی ایک قسم کی قربانی ہے۔

(۷) کوئی سپاہی اپنے افسر کیلئے اور وہ افسر اپنے اعلیٰ افسر کیلئے اور وہ اعلیٰ افسر اپنے بادشاہ کے ہارے میں قربان ہوتا ہے۔ بس خدا نے اس فطرتی مسئلہ کو قرار دیا اور اس قربانی میں تعلیم دی کہ اعلیٰ

کوئی کیلئے قربان کیا جائے۔

قربانی کے جانوروں کا ذبح کرنا خلاف رحم نہ ہونے کی وجہ : خدا تعالیٰ کو ماننے والی قومیں ختم ہو کر کوئی ہوں اس بات کی ہرگز تاکل نہیں ہیں کہ خدا تعالیٰ خالم ہے۔ بسہ خدا تعالیٰ کو رحمن 'رحیم' ماننے ہیں۔

اب خدا تعالیٰ کا فعل دیکھو کہ ہوا میں۔ باد۔ شکرے۔ گدگد چرخ و غیرہ دکھائی جانور موجود ہیں اور وہ طریق پر خداں کا گوشت ہی کھاتے ہیں گھاس اور عمدہ سے عمدہ میوے اور اس قسم کی کوئی چیز نہیں کھاتے پھر دیکھو آگ میں پروانہ کے ساتھ کیا سلوک ہوتا ہے پھر پانی کی طرف خیال کرو کہ اس میں کس قدر خوب خور موجود ہیں گزیال اور بوائی دانی پھلیاں اور بلاؤ وغیرہ۔ یہ چھوٹے چھوٹے آبی جانوروں کو کھا جاتے ہیں۔ بسہ بعض پھلیاں قطب شمالی سے قطب جنوبی تک دکھائی جاتی ہیں۔ پھر ایک اور قدرتی دکھارہ سطح زمین پر دیکھو کہ چیز نئی خور جانور کیسے زبان نکالے پڑا رہتا ہے جب بہت سی چیزیں انکی زبان کی شیرینی کی وجہ سے انکی زبان پر چڑھ جاتی ہیں تو بہت زبان کھینچ کر سب کو نگل جاتا ہے۔ کڑی تمبیوں کا دکھار کرتی ہے۔ گھس خور جانور اپنی خداں جانوروں کو مار کر بھج بھجاتے ہیں۔ بے روں کو چیتا مار کر کھاتا ہے جنگل میں شیر بھیڑے جملہ بے کی خداہ مقرر ہے وہ سکو معظوم ہے مٹی کس طرح چڑھوں کو پکڑ کر ہلاک کرتی ہے۔

اب بتاؤ کہ اس دکھارہ عالم کو دیکھ کر کوئی کہہ سکتا ہے کہ یہ قانون ذبح جو عام طور پر جاری ہے یہ کسی ظلم کی بنا پر ہے ہرگز نہیں پھر انسان پر حیوان کے ذبح کرنے کے ظلم کا الزام کیا مطلب رکھتا ہے انسان کے جو کچھ پڑ جاتی ہیں یا کینزے پڑ جاتے ہیں انکیسے باکی سے انکی ہلاکت کی کوشش کی جاتی ہے۔ کیا اس کا نام ظلم رکھا جاتا ہے جب اسے ظلم نہیں کہتے کہ اشرف کیلئے اخص کا قتل جائز ہے تو ذبح پر اعتراض کیونکر ہو سکتا ہے۔

پھر خور کر، تو حضرت ملک الموت کو دیکھو کیسے کیسے انبیاء و رسل بادشاہ سے فریب امیر سوادگر

سب کو یاد کرنا چاہئے کہ لورڈ نیپسٹ کا بیان ہے۔

پھر فوراً کر دیا ہم جانوروں کو عید الاضحیٰ پر اس لئے ذبح نہ کریں کہ ہر ذبح کرنا تم تکالیف ہے تو کیا اللہ تعالیٰ انکو ہمیشہ زندہ رکھے گا اور ان پر یہ رحم ہو گا تو اللہ تعالیٰ شانہ کی اور گوشت خواہ جانوروں کو پھینک کر تانیرا اگر انکو ذبح نہ کیا جائے تو لورڈ نیپسٹ کا بیان ہے کہ جانوروں کے ذبح کرنے میں کسی تکلیف انکو لاحق ہوگی۔ قانون الہی میں ہم دیکھتے ہیں کہ ہر چیز اللہ تعالیٰ نے پیدا کی ہے اگر ہر ایک دگر گد کے بیچ حفاظت سے رکھے جائے تو دنیا میں دگر گدی ہوں لورڈ نیپسٹ کوئی چیز نہ ہو مگر دیکھو ہزار جانوروں کا چل کھاتے ہیں۔ اس سے پتہ لگتا ہے کہ اس ذبح کرنے کو نہ کہنا مرضی الہی ہے اسی طرح اگر ساری جانوروں کی پرورش کریں تو ایک وقت میں دنیا کی ساری زمین بھی انکے چارے کیلئے کافی نہ ہوگی۔ آخر یہ کہ چارے سے خود انکو مرنا پڑے گا جبکہ یہ نگاہ و قدرت موجود ہے تو ذبح کرنا خلاف مرضی الہی کیوں ہے۔

ذبح انسان نا جائز ہونے کی وجہ: پھر کوئی کہے کہ ذبح انسان بھی جائز ہو سکتا ہے اس میں شک نہیں کہ فی نفسہ ذبح انسان کیلئے بھی مسموم ہے اور یہی وجہ ہے کہ شہادت کو متعلق اللغۃ ہو کر اعلیٰ کمال مانا مگر انسان کے ذبح نہ کرنے پر اور بہت سے قوی دلائل ہیں۔ غلامہ اسکا یہ ہے کہ انسان کے ساتھ لوگوں کے بھی حقوق ہیں کسی کی پرورش ہے کسی کا کچھ لور کسی کا کچھ۔ اگر ہمیں انہم میں تو حفاظت کا ایک بڑا مسئلہ پیدا ہو جاتا ہے اسلئے قتل انسان مستحکم سزا عمرانی اور شرعی قانون میں سخت گناہ کہا گیا ہے۔ الغرض انسان کا قتل اسلئے ممنوع نہیں ہوا کہ انسان کے ساتھ بہت سے حقوق ہوتے ہیں انکا ضائع ہونا زیادہ دکھوں کا موجب ہے۔

کتاب الحج

تج و طوائف کعبہ کی وجہ: (۱) عبادت حج کا ہی تو مقصد کیلئے موضوع ہونے پر یہ نکتہ ہے کہ لہذا عقلانی کی عبادت ہے کہ روحانی امور کے مقابلہ پر جسمانی امور بھی نمونہ کے طور پر پیدا کر دیتا ہے تاکہ وہ روحانی امور پر دلالت کریں اسی عبادت کے موافق خانہ کعبہ کی عبادت عقلانی تھی۔

اصل بات یہ ہے کہ انسان عبادت کیلئے پیدا کیا گیا ہے اور عبادت دو قسم کی ہے ایک اکلند اور دوسری دوسرے محبت و ایثار، لہذا اکلند کیلئے نماز کا حکم ہے جو جسمانی رنگ میں انسان کے ہر عضو کو خشوع اور خضوع کی حالت میں لاتا ہے یہاں تک کہ وہی سجدہ کے مقابلہ پر اس خداداد جسم کا بھی سجدہ کر لیا گیا ہے تاکہ روح اور جسم دونوں اس عبادت میں ہوں۔

(۲) جسمی سجدہ و ایثار اور عقل نہیں۔ اول تو یہ امر مسلم ہے کہ خدا ایسیا کہ روح کو پیدا کرنے والا ہے ایسا ہی وہ جسم کا خالق ہے اور دونوں پر اس کا حق خالقیت ہے۔ خدا اس کے جسم اور روح ایک دوسرے کا اثر قبول کرتے ہیں اصل وقت جسم کا سجدہ اور روح کے سجدہ کا محرک ہو جاتا ہے اور بعض وقت روح بھی جسم کے اندر سجدہ کی حالت پیدا کر دیتی ہے کیونکہ جسم اور روح دونوں باہم مر لیا متقابلہ کی طرح ہیں۔ مثلاً ایک شخص جب شخص کھلف سے اپنے جسم میں ہنسنے کی صورت دیتا ہے تو ایسے لوگ اسکو چھی نہیں بھی آجاتی ہے جو کہ روح کے انہماک سے متعلق ہے ایسا ہی جب ایک شخص کھلف سے اپنے جسم میں یقین آنکھوں میں رونے کی صورت دیتا ہے تو ایسے لوگ اس حقیقت میں بھی رونا آجاتا ہے جو کہ روح کے رونا اور وقت سے متعلق ہے جس جب یہ ثابت ہو چکا کہ عبادت کی دوسری قسم میں یعنی محبت و ایثار میں بھی انہیں تاثیرات کا جسم اور روح میں باہم تاثیر اور تاثیر ہے۔ (۳) محبت کے عالم میں انسانی روح ہر وقت اپنے محبوب کے گرد گھومتی ہے اور اس کے آستانہ کو سوسہ دیتی ہے جس اسی کے مقابلہ خانہ کعبہ جسمانی طور پر جہان مساوی کیلئے ایک نمونہ دیا گیا ہے اور اسکی نسبت فرمایا گیا ہے کہ دیکھو یہ میرا گھر ہے اور یہ گھر اسو میرے آستانہ کا بچتر ہے اور ایسا حکم اس لئے دیا تاکہ انسان جسمانی طور پر بھی اپنے دلوالہ عشق اور محبت کو ظاہر کرے

سوچ کرنے والے رُج کے مقام پر جسمانی طور پر بھی صورت بنا کر اس گھر کے گرد گھومتے ہیں کہ گویا خدا کی محبت میں روئے اند اور مست ہیں زانہت دور کر دیتے ہیں سر مٹاوا دیتے ہیں اور ہنزدوں کی شکل بنا کر اس کے گھر کے گرد ماسٹانہ طواف کر دیتے ہیں اور یہ جسمانی اولولہ روحانی تہش اور محبت کو پیدا کر دیتا ہے اور اسی سخت کے لئے جسم اس گھر کے گرد طواف کرتا ہے اور سنگ آستانہ کو بچھتا ہے۔

(۴) اکثر آدمی اپنے پروردگار کے شوق میں پڑتے ہیں اس وقت ان کو ضرورت ہوتی ہے کہ کسی طرح اپنا شوق پورا کریں تو سوائے رُج کے اس کو اور کوئی ایسی چیز نہیں ملتی۔

(۵) ہر ملت اور سلطنت کو بیش ایک درباد کی ضرورت ہوتی ہے جس سے سب لوگوں میں ہامہ پان پچان بھی ہو اور ایک دوسرے سے مستفید بھی ہوں اور اس ملت یا سلطنت کے شعائر کی تعظیم بھی کریں جیسا ہی مذہب کو رُج کی ضرورت ہے تاکہ ایک دوسرے سے ملیں جلیں اور ہر ایک دوسرے سے ان فائدہ کو حاصل کر سکیں جو ان کو پہلے سے حاصل نہیں ہیں اس لئے کہ مقاصد باہمی مصاحبت اور ایک دوسرے کے ملنے سے ہی حاصل ہوا کرتے ہیں اور جس سے شعائر دین کی عظمت بھی ظاہر ہو۔

(۶) آئندہ دین کی حالت کو یاد کرنے اور ان کے اختیار کرنے کی قدامت کے لئے کوئی چیز رُج سے زیادہ مفید نہیں ہے۔

(۷) چونکہ رُج میں دور دور از سفر کرنا پڑتا ہے وہ نہایت دشوار عمل ہے لہذا یہ مشقت سے پورا ہوتا ہے اس لئے اس کی تکالیف کار و داشت کرنا خدا تعالیٰ کی خالص عبادت ہے جس سے غلطائیں صاف ہو جاتی ہیں۔

(۸) آدمی طواف کی وجہ سے ان مقرب ملائکہ الہی کے مشابہ ہو جاتے ہیں جو عرش الہی کے گرد گھومتے ہیں اور طواف کرتے ہیں۔

(۹) یہ خیال نہ کرو کہ طواف کعبہ سے مقصود صرف جسم کا طواف ہے بلکہ اس طواف سے مراد

رب العزت کا طواف ہے جو مال سے ہوتا ہے، پس سمرہ طوافِ مال کا حضرت ابوبکرؓ کا طواف ہے اور نیک کعب عالم ظاہری میں اس دربدارِ اُمّی کا نمونہ ہے کیونکہ وہ دربدارِ عالمِ باطن میں ہے اور آنحضرتؐ سے محسوس نہیں ہوتا جیسا کہ عالم ظاہری میں بولن روٹ کا نمونہ ہے۔

(۱۰) اور سلو نیازِ مندی و رقص کی ہوتی ہے ایک نیازِ مندی خادمانہ خدام کی نیازِ مندی اپنے آقا اور بادشاہ کے سامنے دوسری نیازِ مندی عاشقانہ عاشق کی محبوب کے ساتھ پہلی قسم کی نیازِ مندی کو مناسب ہے کہ درباری لہان پہن کر بلائے لب اور وقار سے مالک کے دربار میں حاضر ہو اور تمام حکام اور مریدوں کی اطاعت سے کان پر ہاتھ رکھ کر اطاعت کا اقرار کرے ہاتھ ہاتھ کر حکم کا منتظر رہے جبکہ اگر تعظیم اسے زمین پر ہاتھ رکھے یہ رنگ نیک کا ہے اور عاشقانہ نیاز میں ضرور ہے کہ عاشق اپنے محبوب کے سامنے عشق میں بھوک اور پیاس بھی دیکھے نہایت درجے اس عجز کو بھی کہ انسان ماں باپ کو چھوڑ کر اس سے تھکے اور ایک جسم ہو جاتا ہے، بگو دیر کے لئے ترک کر دے اور جہاں جتنی طور پر سن لیا ہو کر میرے محبوب کی عظمت اور توہمات کا مقام ہے وہاں دوڑتا کر داسر کے شمار اور ٹوٹی سے بے خبر پہنچے پر وہ نہ دار وہاں خدا کہیں دشمنوں کی روک ٹوک کی جگہ سن پائے تو وہاں پتھر چٹائے یہ رنگ جج کا ہے۔

(۱۱) تمام قوموں میں میلوں کا رواج ہے مگر ان میلوں کا ہونا محض مصالحِ دنیوی پر مبنی ہے چنانچہ کل مذاہب اور تمام اقوام کے میلے خاص تو حید سے بائبل ہے، سمرہ میں محض کھیل اور غیر اللہ کی پرستش ہے ان کو عظمت الہی سے بگڑ کر نہیں پس اجتماعِ حج پر ایک اسلامی میلہ مقرر کیا گیا اور سراسر روحانیت سے بہرہ ہوا ہے۔

دو لشکر دوں پر حج واجب ہونے کی وجہ (۱) امر اللہ کے حق میں پیش اور کبریٰ مسلک امراض اور ترقی کے دشمن ہیں اور دور و راز کا سفر کرنا عیب اور عقاب کا چھوڑنا سردی اور گرمی کی برداشت کرنا مختلف بلاد کے علوم اور فنون اور اقسامِ مذاہب اور عداوت پر واقف ہونا سستی اور نفس

پروری کا فوب استیصال کرتا ہے۔

(۲) حج کے اعمال کبر اور بڑائی کے منتہا دشمن ہیں ذہب و زینت کو ترک کرنا غرباء کے ساتھ نکلے سر کو سوں چلاوا نیا لڑوں مستوں عیاشوں کو کہیں کہیں جھٹلا جانے کا موجب ہے۔ فرض حج کیا ہے اسلاموں کا تجربہ کار اور ذہینانا ہے۔

(۳) غریب ایک ملک کے فائدہ کو دوسرے ملک تک پہنچانے میں جیسی طاقت دولت مند لوگ رکھ سکتے ہیں ایسی علی العوم غریب لوگ نہیں رکھ سکتے۔

احرام میں صرف بے سلی دو چادروں پر کفایت کاراؤ : امراء کے ساتھ جن پر کہ حج فرض ہے ممکن ہے باہر ضرور تھا کہ ان کے نوکر چاکر بھی حج کرنے کو جہاں اور کچھ لوگ غرباء میں سے عشق الہی کے مجبور کئے ہوئے بھی پہنچیں۔ اس لئے اسلام نے فرض کمال اتحد الہی اسلام تجویز فرمایا کہ سب ساوا دو چادروں پر اکتفا کر کے امیر و غریب یکساں سر سے نکلے کرتے سے انگبائل ساوا وضع پر ظاہر ہوں تاکہ انگی یکسانی اور اتحد کمال درجہ پر پہنچے۔

حجر اسود کو ہاتھ لگانے اور چومنے پر اعتراض کا جواب : وہ ان کہتے ہیں کہ مسلمان چمکی پر سٹیل کرتے ہیں مگر آریہ اور عیسائی تائیں کہ عبادت کسے کہتے ہیں۔ عبادت میں استحقاق (محمد) اور پر ارحمہا (یعنی دعا اور آپاشلا یعنی دعویان) ضرور ہے۔ تائیں مسلمان کب اس پتھر سے دعا اور اس کجا دعویان اور انگی باعث کرتے ہیں۔ کسی اسلامی عبادت میں۔ میں اس پتھر کا ارادہ کس جس عبادت اسلام میں تو کہ نا بھی دار میں اس کی کیا۔ ہوگی۔ اگر اسکو ہاتھ

لگانا پوجنا عبادت ہے تو سب لوگ عیاشی ہوتی عورتوں کے علیہ اور زمین کے پوج جادی ہوں گے۔ بات یہ ہے کہ مقدس مقام میں تصویر کی زبان کے اندر یہ کھٹکے کہ نبوت کے عمل سر اکونے کا پتھر عیاشی کہ سے نکلا ہے باہر کج کلن مریم علیہ الصلوٰۃ والسلام نے منیٰ باب ۳۳ میں خود کہا ہے کہ یہ تشیل ہے۔

تجربہ اسود تصویر کی زبان کا نمونہ ہے: اصل بات یہ ہے کہ، یا میں بہت دھت سے تصویر کی زبان کا رواج تھا، اب بھی ہے۔ چنانچہ راجندرانی اور شیواجی کی تصویریں قصص ہندوں کے پاس مخصوصا ہند کے قدیم مصوروں کے پاس موجود ہیں۔ سکندر رومی جسکو حضرت دانیال رومی نے دو اقران یعنی ایک سنگ کا انرا خواب میں دیکھا، یہ تصویر کی زبان کی شہادت ہے۔ دیکھو دانیال باب ۸۔ اسی طرح دارالبرائی بادشاہ کی تصویر کی زبان میں کھنگو عام قصوں میں موجود ہے۔ تصویر کی زبان کی کتابیں اور انبساط ہند میں بکثرت موجود ہیں۔ سکندر یہ ملک مصر کے ایک جریدہ لکھنے ایک رسالہ قدیمی تصویر کی زبان کے متعلق لکھ کر شائع کیا ہے جس میں صرف بیواؤں و نکاح و الطہار و غیرہ کی اشکال ہیں جس سے معلوم ہوتا ہے کہ دیا میں پہلے اس زبان کا نام رواج تھا، اب بھی یہ تصویر کی زبان فن بناؤ میں جہاں تعلیم کا رواج کم ہوتا ہے پیا نکل نہیں ہو تا زیادہ تر استعمال کیاتی ہے۔ کئی تصویر کی زبان بہ نسبت تحریری کے زیادہ قوی ہو کر گئی ہے۔ اس واسطے یادگاروں کو عقلا اور صحرا کئی تصویر کی تحریروں میں ہوا کرتے ہیں۔

یو شیعہ نون نے یہاں سے گذرتے وقت ہارہ پتھر اٹھائے جو شہاب ۶۔ وہ قول بیسانوں کے ہارہ جو لڑیوں کی چشمیں کوئی تھی۔ ہود اور بیسانی غیر قوموں کو اور اصل خواص کو پتھر کہتے تھے یہ انکا ہارہ تھا جس کو پتھر اس واسطے کہا کہ کھس یا کیلے وہ فون ڈایش سٹون یعنی جیوا پتھر ہوا۔ ان باتوں پر خوب غور کرو۔

اب تمیہ کے بعد کتب مقدسہ میں ایک چشمین کوئی بہ نسبت خاتم الانبیاء محمد رسول اللہ ﷺ بہت زور سے درج تھی۔ دیکھو گواہ ۲۰ باب ۶ اور ۷۔ وہ پتھر جسے راہگیروں نے رد کیا ہی کو نے کاسر ہوا اور دیکھو زور ۱۸۔ ۱۲۲ پتھر جسے مولاوں نے رد کیا کو نے کاسر ہوا گیا۔ متی باب ۱۱۔ قورینت ۲۲۔ ۲۴۔ فرض یہ ایک امداد ہے جو کئی کتب مقدسہ میں مندرج ہے اس امداد اور چشمین کوئی کے امداد و تصدیق کیلئے کہ معطر کی بڑی عبادت گاہ میں ہارہ تصویر کی زبان کے پتھر اس

کونے پر رکھا گیا تھا۔ محمد یوں سے صد ہا سال پہلے سے یہ پتھر اور انہی عبادت گاہ کے کونے پر منصوب تھا اور عرب کے لوگ اسے چونتے اور اس سے ہاتھ ملاتے گویا قدیم زمانہ میں یعنی عرب سے پہلے یہ فقرہ تصویری طور پر مکہ معظمہ کی مقدس مسجد پر رکھا تھا کہ اس شہر میں وہ کونے کا پتھر ظاہر ہوگا۔ جسے یوں کہا جائے گا کہ نبوت اور رسالت کی عظیم الشان نور مستحکم عبادت جو کہ انبیاء اور رسولوں کی وجود و ذی وجود سے چار ہوئی ہے۔ اسی پتھر سے چری ہوئی اور اسی کونے کے پتھر کی یہ نشان ہوگی کہ ان کی وحدت و حمان کی وحدت اور انکی اطاعت و حمان کی اطاعت ہے حضرت رسالت باب ﷺ نے بھی اسی طرف ارشاد فرمایا ہے (و یکو مشکوٰۃ) آنحضرت ﷺ فرماتے ہیں: معنی ومعنى الانبياء كمثل قصور احسن بيانه وتوكل منه موضع اللبنة التي ان قال فكنت اما سدوت موضع اللبنة وهي رواية فانما تلك اللبنة ترجمہ یعنی میری اور دوسرے نبیوں کی مثال اس محل کی ہے کہ وہ بہت خوبصورت بنایا گیا اور ایک اینٹ کی جگہ اس میں خالی رکھی گئی۔ سو وہ اینٹ میں ہوں۔

صفا و مروہ کے درمیان سعی کرنے کا راز: (۱) مناد مروہ کے درمیان جو کہ خانہ کعبہ کا چوک ہے۔ سعی کرنی لگتا ہے کہ جیسے غلام اپنے بادشاہ کے محل کے چوک میں باہر آتا ہے اور اس خیال سے کہ خدمت میں اپنا خلوص ظاہر کرے تاکہ نظر رحمت سے سرفراز ہو۔ (۲) اس میں یہ راز ہے کہ جیسے کوئی بادشاہ کے پاس داخل ہو اور پھر باہر نکلے اور نہ ہاتھ سو کہ بادشاہ میرے بارے میں کیا حکم کرے گا۔ منظور فرمائیے یا منظور تو دربار کے چوک میں باہر آتا ہے اس امید سے کہ اول دفعہ رخصت کرے گا تو دوسری بار میں رخصت کرے گا اسی طرح سعی والا کرتا ہے۔

گنت پیغمبر کی چوں کوئی اور سے ناقبت ذال در وہاں آید مرے

میں د سروہ دور ناقبت تو بندویا نہ دور

چوں لشکر د سروہ کئے کے ناقبت پیش تو ہم روئے کے

پہلے ڈھاپے میں کھنسی ہر روز خاکِ ماقبت اندر رہی اور آپ پاک

(۳) سفارہ وہ کے درمیان سنی کرنے میں یہ راز بھی ہے کہ حضرت اسماعیل علیہ الصلوٰۃ والسلام کی والدہ ماجدہ حضرت ہاجرہ کو جب سخت پریشانی ہوئی تو سفارہ وہ میں انہوں نے ہزار فقاری سے طلبا شروع کیا جس طرح کوئی بتکر قومی جلدی جلدی قدم اٹھاتا ہے اور خدا تعالیٰ نے انکے ظہر کو وہ طریقوں سے رفع کیا ایک تو قب زحرم ہر آہ ہو گیا وہ سر الوکوں کے دلوں میں اس جنگل میں آبد ہونے کا امام والا گیا اس لئے حضرت اسماعیل علیہ الصلوٰۃ والسلام کی اولاد اور انکے فرمان برداروں پر ضروری ہو کہ اس نعمت کا شکر اور انکی کرامت کو یاد کریں تاکہ انکی قوت تکمیلی معظوب ہو کر خدا تعالیٰ کی طرف ان کو رہنمائی کر لے اور اس کیلئے کوئی بات اس سے زیادہ بھروسہ میں ہے کہ اس دلی افتقاد کو کسی خاص ظاہر فعل سے جو کہ انکی خلاف عادت ہے ظاہر کیا جاوے اور وہ فعل حضرت ہاجرہ کی اس تکلیف اور مشقت کا نقل کرنا ہے اور ایسے موقع پر ایک حالت کا نقل کرنا ہر جہاں باقی باتوں سے زیادہ مفید ہوتا ہے۔

حج کیلئے خصوصیت مکہ کی وجہ: حج کیلئے ایسے مقام میں حج ہونا لازم ہو اجماع خدا تعالیٰ کے نکتات و آیات و نيات موجود ہوں کہ وہ مکہ میں خدا تعالیٰ ہے جو سب جگہوں سے زیادہ حج کے قابل ہے۔ اس پر ملا نکتات الہی موجود ہیں۔ چنانچہ: (۱) حضرت ابراہیم علیہ الصلوٰۃ والسلام نے کہ جن کی نیکی اور خوبی کی شدت اکثر امتوں کی زبان سے ظاہر ہے خدا کے علم اور وحی سے انکی جید قائم کی۔ (۲) وہ مقام مبداء اسلام تھا جہاں میں ایسے لوگوں کی پیدائش تھی جنکی محبت اور کوشش سے سخت سے سخت ہر سنی کا دایا سے استیصال ہو اور خالص توحید الہی قائم ہوئی۔

(۳) اس میں کیا شک ہو سکتا ہے کہ مکہ معظمہ سے دعا توحید شروع ہوا اس معظم مکان نے مسند توحید کی تائید کی اور شرک کا استیصال کیا قومی لائق اور طوائف مسلمہ کی اور فتنہ جنگلیاں عرب کی دور کی و ختر کشی شراب خواری اور خطرناک قمار کا اس ملک میں نامہ نکلان نہ ہوا اور خلیفہ و کسل

و کھلی کے پلے تزلومی صبر و ہمت و انوکے اندر رانی و شجاعت و استقلال و عزم کو پیدا کیا۔

حج میں حلقِ سر کی وجہ : حلقِ سر کی وجہ یہ ہے کہ بے سے انہوں سے نکلا رہا کہ وہ غبارِ چاندی
لوگوں کو سامان نہ آسکے گا اس سے بچا اور کیا ہو سکتا ہے کہ ۔ منڈولہ میں یہ نوب کو کٹوا میں حلق
کا حکم جیسا کہ ہماری کتب قرآن و حدیث میں مذکور ہے ایسا ہی اسکا روان اور اسکا ثبوت مقدس
کتب میں موجود ہے (دیکھو ابواب ۱۰ ابواب ۳۰) لہذا یہ یعنی نذر دینے والا جماعت کے خیمہ کے دروازہ
پر سر کی منڈولہ (حلق) ابواب ۱۸)۔

کعبہ کی طرف رخ کر کے نماز پڑھنے کی وجہ (۱) قرآن خود اس بعید سے آگاہ
فرماتا ہے ۔ وما جعلنا القبلة التي كنت عليها الا لنعلم من يبع الرسول مع ينقلب
علي غضب ترجمہ :- اور نہیں کیا تھا ہم نے وہ قبلہ جس پر تو تھا تمہاراں لئے کہ ظاہر ہو جاوے کہ
کون رسول کے تابع ہے اس سے جو کہ پھر جاتا ہے اپنی اپنی راہ پر۔

(۲) یہ بہت سادہ امر ہے اور حقیقت میں اس کا نقل کے نزدیک نہ ہو بھی محل امتزاج نہیں اس
بادی کو تمام دنیا کے تمام لوگوں عبادت کو خالص کرنا منظور تھا وہ ایک واضح اور ممتاز مسلک قائم کرنا
ضرور اس لئے واجب ہوا کہ وہ اپنی امت کے رخ ظاہر کو بھی ایسی سمت کی طرف پھیرے جس
میں قرآن و وحی کی تحریک ہو۔

(۳) اس میں اتفاق و اتحاد قوی کا فائدہ ہے اس لئے سب کو حکم ہوا کہ ایک دل ہو کہ معبود حقیقی کی
عبادت کریں ہر ایک مسلمان کو یقین ہے کہ مکہ میں روح اللہ کو توحید کے ذمے دامن نے قیام کیا
اور آخری زمانہ میں اسی کی اولاد میں سے ایک فرد دستِ کامل نبی مکمل شریعت نیکر ظاہر ہوا جس
نے اسی پہلی تحقیق و تعلیم کو پھر زندہ اور کامل کیا جس نماز میں جب لوہر کو رخ کرتے ہیں یہ تمام
تصویرات آنکھوں میں پھر جاتے ہیں اور مصطلح عالم کی تمام عبادت اور چائنٹائیاں جو اس نے
اداء و کلمت اللہ میں دکھائیں یاد آجاتی ہیں۔

(۳) تات کہہ کر اسلام والے دست اندر کتے ہیں اور بائبل ظاہر ہے کہ کوئی شخص کسی کے مکان کو جاتا ہے تو اس کا مطلب مکان والا ہوا کرتا ہے کسی تختہ نشین پادشاہ اور درگ کے آداب نیاز اس کے تختہ کے آداب نہیں ہوا کرتے۔

(۵) اس میں اٹھارہ کی حکمت بھی مذکور ہے کہ یہ کمال مذہب یہ توحید کا آفتاب اسی پاک زمین سے نمودار ہوا اس استقبال سے وہ خداوندی حکمت خیال رکھی گئی اور نہ دل اسلام کا عقیدہ تو یہ ہے کہ خدا تعالیٰ کی ذات مکان اور جہت کی قید سے حزرہ ہے اور عنصری و کوئی صفات سے اٹلی اور مبرا ہے کوئی جہت نہیں جس میں وہ عقیدہ ہو کوئی خاص مکان نہیں جس میں وہ رہتا ہو اسی مطلب کی طرف قرآن شریف اشارہ کرتا ہے اور معترض کے اعتراض کو پہلے ہی اپنے حیلہ سے رد کر دیا ہے۔ وہ

المشرق والمغرب لیئنا ما نولوا علیکم وحده اللہ ترجمہ :- خدا ہی کا مشرق و مغرب ہے سو جس طرف مذکورہ گوہری توجہ ہے اللہ کی۔ (۶) ایک اور لطیف بات قابل ذکر ہے کہ آٹھ ہزار میں جب کہ مسلمان روایت گزارا ہوا ہے تو یہ آیت پڑھتا ہے۔ اسی وحییت و جہی للہی لفظ السموات والارض حیثا و ما انما من المشوکن ترجمہ :- میں نے اپنا رخ کیا اس خدا کے توحی کے طرف جس نے بنائے آسمان اور زمین ایک طرف کا ہو کر اور میں نہیں ہوں شریک کر خدا۔ سوہ جود اس تصریح کے مسلمانوں پر کعبہ پر سنی کا شہ کیجیے ہو سکتا ہے۔

(۷) اس میں یہ بھی دراز ہے کہ جماعت کے انتظام میں غفلت نہ ہو اور تمام دنیا کے اہل اسلام ایک جہتہ ہیں۔

میقات پر احرام باندھنے اور لہیک کہنے کا بھیجید : موافقت کی اصل یہ ہے کہ مکہ میں ایسی حالت میں آنا چاہیے کہ سر پر خاک بھری ہو اور بدن میں میل کیل اور لہس زلت کی حالت میں شریع علیہ الصلوٰۃ والسلام کو بھی مطلوب ہے جس ضرور ہو کہ مکہ سے پہلے احرام باندھیں پھر اگر اس بات کا حکم دیا جاتا کہ اپنے اپنے شہروں سے احرام باندھ کر آیا کریں تو ظاہر ہے کہ اس میں

کس قدر وقت تھی کیونکہ بعض شہر مکہ سے ایک مہینہ کی مسافت پر واقع ہیں اور بعض اس سے بھی زیادہ دور ہیں لہذا ضروری ہو گا کہ احرام باندھنے کیلئے مکہ کے گرد چند مقامات تجویز کر دیئے جائیں کہ ان مقامات کے بعد تاخیر نہ کر سکیں اور ضرور ہے کہ مقامات ظاہر اور مشہور ہوں اور کوئی شخص ان مقامات سے بواقف نہ ہو۔

ربالیک کا مہمبہ سو مقامات پر احرام اور بیک کہنے سے یہ جاننے کے بیک کے یہ معنی ہیں کہ خدا تعالیٰ کی پکار پر جواب عرض کر رہا ہوں کہ میں حاضر ہوں اس وقت یہ امید بھی کرے کہ یہ جواب مقبول ہو اور خوف اور جا کے درمیان ضرور رہے اور اپنے تاب و طاقت سے مطمئن ہو جاوے اور اللہ تعالیٰ کے فضل و کرم پر بحکیر رکھے اس لئے کہ بیک کہنے کا وقت ہی حج کا شروع ہے اور وہ خطرہ کہ جبکہ اور وہ پکار جنکا یہ جواب دیتا ہے۔ وہی جو اس نے فرمایا *اللذان فی الناس صالح* ترجمہ :- یعنی پکار لوگوں کو حج کیے اسلئے۔

عرفات میں ٹھہرنے کا راز : (۱) عرفات کے وقوف میں یہ راز کہ ایک زبان اور ایک مکان میں مسلمانوں کا جمع ہونا اور اللہ تعالیٰ کی طرف راضی ہونا اور انکا خشوع و خضوع کے ساتھ اس سے دعا کرنا یہ روکات الہی کے نازل ہونے اور روحانیت کے انتشار میں اثر عظیم رکھتا ہے یعنی وہ ہے کہ شیطان اس روز تمام دونوں سے زیادہ ذلت اور خواری کی حالت میں ہوتا ہے اور نیز اجتماع میں مسلمانوں کی شان و شوکت مطوم ہوتی ہے اور اس عزم کی اور اس مقام کی خصوصیت تمام انبیاء علیہم السلام سے بدستور منقول پہلی آئی ہے چنانچہ حضرت آدمؑ اور نوحؑ کے ساتھ انبیاء سے انکی نسبت روایات منقول ہیں۔ (۲) عرفات پر ٹھہرنے میں جب لوگوں کا ازدحام اور آوازوں کا جہجہ ہونا اور زبانوں کا مختلف ہونا اور شعائر پر آمدورخت کرنے میں ہر فرقہ کا اپنے اپنے ناموں کے توہم پھیلنا نظر سے تو یہ یاد کر کے اسی طرح میدان قیامت میں بھی تمام انہیں اپنے انبیاء کے ساتھ اکٹھی ہوں گی اور ہر امت اپنے نبی کی پیروی کرے گی اور ان کی شفاعت کی طمع کرے گی اور

اس میدان میں اس نئی قبولیت اور عدم قبولیت کے باب میں حیران رہے گی اور جب نوئی اس کا خیال کرے تو چاہیے کہ اپنے دل کے لئے انکار اور اللہ تعالیٰ کی طرف رجوع ہونے کو لازم کر دے تاکہ اہل فلاح اور مرحوم فرقہ کے ساتھ اس کا مشر ہو اور اس جگہ پر امید کے قبول ہونے کی قوی توقع رکھے کیونکہ یہ میدان شریف ہے اور اس میں رحمت الہی غنائق پر نازل ہوتی ہے اور یہ میدان بدلہ و بدلہ کے گروہ سے بھی خالی نہیں رہتا اور صالحین کے گروہ بھی اس میدان میں ضرور حاضر ہوتے ہیں۔ یہاں لوگوں کی بہتیں جمع ہو کر خدا کے آگے انکار و زاری کرتے ہیں اور اللہ تعالیٰ کی طرف ہاتھ پھیلاتے ہیں اور ان کی گردنیں اس کی طرف ہٹک جاتی ہیں اور مجمع امت کے ساتھ طلب رحمت کے لئے آسمان کی طرف نگاہ کرتے ہیں تو پھر یہ گمان نہ کرو کہ وہ اپنی امید میں محروم رہیں اور ان کی کوشش بیکار بنے۔ پھر ان پر رحمت نازل ہوتی ہے کہ سب کو ناپائے ہی واسطے ہمیں ہر گ کہتے ہیں کہ بہت بڑا انکار ہے کہ آدمی عرفات میں موجود ہو کر یہ گمان کرے کہ اللہ تعالیٰ نے میری مغفرت نہیں کی اور حج کا راز اور قیامت مقصود بھی یہی ہے کہ بہتوں کا اجتماع ہوتا ہے اور بدلہ و بدلہ ضرور کے اطراف سے اٹھتے ہوتے ہیں ان کے قرب سے جمع ہوتے ہیں سدا انکا ہے۔ فرزند رحمت الہی کے جذب کا طریق اس کے برعکس اور کوئی نہیں ہے کہ بہتیں اکٹھی ہوں اور ایک وقت میں ایک زمین پر سب قلوب ایک دوسرے کی مدد کریں۔

(۳) عرفات کے میدان میں جانا ایک ضروری فعل حج کا ہے جہاں نہ کوئی حجر ہے نہ کوئی درخت صرف اللہ تعالیٰ کی یاد ہی ہے اور اس سے دعا۔

منیٰ میں اترنے کا راز: (۱) منیٰ کے اترنے کے بعد یہ راز ہے کہ منیٰ ایام جاہلیت کے بازاروں میں سے نکلا۔ بعد اور ذی الجوار و غیرہ کی طرح ایک عظیم الشان بازار تھا اور یہ بازار انہوں نے اس واسطے مقرر کیا تھا کہ حج میں کثرت سے دور دور از گناہوں کی خلعت اکٹھی ہوتی تھی اور اس تجارت کے حق میں اس سے زیادہ کوئی مناسب اور بہتر صورت نہیں تھی کہ ایسے اجتماع پر اس کا

وقت مقرر کیا جائے اور دوسری بات یہ تھی کہ مکہ کے اندر اس انہو کلا کے رہنے کی گنجائش بھی نہیں تھی لہذا ہر قسم کے لوگ منیٰ جیسے پر فضاہ کشتاہ ہو اس اترنے میں متعلق نہ ہوتے تو دوسری وقت ہوتی تھی وہاں بیچ ہو کر انساب وغیرہ پر خاطر بھی کرتے تھے۔ غرض یہ مصالح لوگوں کے اسلام کو بھی ایسے اجتماع عظیم کی عادت، مصلحت، اعلیٰ شوکت مسلمین و شہرت و عظمت اسلام کے تھی اس لئے حضور ﷺ نے اس اجتماع کو توباتی رکھا اور چائے ان کے اغراض و اہدے کے مصالح شریعہ کو قائم کر کے اس کی اصلاح فرمادی اور ایک یہ بھی دانہ ہے کہ ایک ہی مقامہ سطح میں لوگ اکٹھے ہو کر جہول خیالات کر سکیں اور آپس میں تعارف پیدا کریں۔

مشعر الحرام میں ٹھہرنے کی وجہ مشعر الحرام میں ٹھہرنے کا اس لئے حکم دیا گیا کہ یہاں اہل جاہلیت باہم تخاصم اور نمود کے لئے قیام کرتے تھے اس کے بدلے میں کثرت سے ذکر الہی کرنے کا حکم دیا گیا تھا کہ ان کی اس عادت کا انسداد ہو اور ایسی جگہ کی توجیہ دیا گیا کہ ان کو یہاں کو اسپر برا سمجھ کر رہے کہ دیکھیں تم خدا تعالیٰ کی یاد زیادہ کرتے ہو یا اہل جاہلیت کی طرح اپنے مفاخر کا زیادہ کر کے ہو۔

رمی جمار کا راز (ادبی جہاد کرنے میں وہی دانہ ہے جو خاص حدیث میں وارد ہوا ہے کہ رمی جہاد خدا تعالیٰ کا ذکر کرنے کے لئے مقرر کیا گیا ہے اور ذکر کی دو قسمیں ہیں ایک قسم تو یہ ہے کہ جس سے خدا تعالیٰ کے دین کی بھلائی کا اعلان منظور ہو اور اس قسم کے ذکر میں لوگوں کی کثرت زیادہ ضروری ہے نفس ذکر کی کثرت ضروری نہیں رمی جہاد یعنی ٹھکریاں پھینکانا اسی قبیل سے ہے اسی لئے اس میں کثرت سے ذکر کرنے کا حکم نہیں دیا گیا بلکہ حکم دیا گیا باقی ٹھکریوں کا ہونا سو یہ امر تعجب میں ذکر کے لئے ہے بلکہ وہ ہے کہ ہر ٹھکری پھینکنے کے ساتھ اللہ اکبر کہنا مشروط ہے۔ اور لا وہ ترمذی روایت حضرت عائشہ کے روایت کرتے ہیں کہ آنحضرت ﷺ نے فرمایا

الما جعل الطواف بالبيت والسعي بين الصفا والمروة ورمي الجمار لاقادة ذكركم الله

لا تعبروا ترجمہ: یعنی طواف کعبہ اور سعی اور میان صفا اور مروہ کے اور حجر کا پھینکانا فتاویٰ کر اللہ
تائیم رکھنے کے واسطے مقرر کیا گیا ہے اور دوسری قسم ذکر کی وہ ہے جس سے خود انصہا باغ نفس کا
مقصود ہو وہاں خود کھڑت ذکر کی مشروعات ہے جیسے بہت سے فنکار ہیں۔

(۲) دمی بند یعنی کنکریاں پھینکنے میں یہ قصد کرے کہ غلامی اور بندگی ظاہر کرنے کے لئے امر کی
اطاعت کرنا ہوں اور صرف تعمیل ارشاد کے لئے اظہار ہوں بدو ان اس کے کہ اس فعل میں کچھ
عقل و نفس کا حظ ہو۔

(۳) حضرت ابراہیم علیہ السلام کی مشابہت کا قصد کرے کہ اس مقام پر آپ کو شیطان مردود
ظاہر ہوا تھا تاکہ آپ کی بیخ میں کچھ شبہ ڈال دے یا کسی مصیبت میں مبتلا کرے تو آپ کو اللہ تعالیٰ
نے حکم فرمایا تھا کہ اس کے دفع کرنے کو اور اس کی امید منقطع کرنے کے لئے اس کو کنکریاں مارو
اس پر اگر کوئی کہے کہ حضرت ابراہیم علیہ السلام پر تو شیطان ظاہر ہوا تھا اور آپ نے اس کو دیکھا
تھا اس لئے اس کو مارا تھا ہم کو تو شیطان دکھائی نہیں دیتا تھا پھر کنکریاں مارتے سے کیا غرض ہے؟ تو
اس کا جواب یہ ہے کہ یہ شبہ شیطان کی طرف سے ہے اس نے یہ شبہ تمہارے دل میں ڈالا ہے
تاکہ تمہارا دل وہی حال کا سست پڑ جاوے اور تمہارے خیال میں آوے کہ یہ فعل ایسا ہے جس میں
کچھ فائدہ نہیں ہے ایک کھیل کی ہی صورت ہے اس میں کیوں مشغول ہوتے ہو ہاں خوب
کوشش اور مضبوطی کے ساتھ شیطان کو ذلیل کرنے کی نیت سے کنکریاں مار کر اپنے دل سے اس
کو دفع کرو اور جان لو کہ ہر پتہ کنکریاں پھرنے پر مارتے ہیں لیکن واقع میں شیطان کے من پر مارتے ہیں
اور اس کی بیخ پر کیونکہ اس کی ذلت اسی میں ہے کہ اللہ تعالیٰ کے ایسے حکم کی چٹا آوری کریں جس
کی تعمیل میں نفس اور عقل کو کچھ حظ نہیں صرف اس کی تعظیم طوطا ہے۔

اہلن محسر میں تیز چلنے کا راز اہل عمر میں سواری کے تیز کرنے کا یہ سبب ہے کہ وہ
اصحاب قبل کے بناک ہونے کا سبب ہے لہذا جس شخص کو خدا تعالیٰ اور اس کی عظمت کا خوف

معلوم ہوتا ہے وہ غضب الہی سے ڈر کر بھاگتا ہے اور چونکہ اس خوف کا معلوم کرنا ایک باطنی امر تھا اس لئے آنحضرت ﷺ نے ایک ظاہری فعل سے جو نفس کو بھی خوف یاد دلاتا ہے اور اس کو آگاہ کرنا بہ مناسبہ فرمایا۔

حرم کے جانوروں کا شکار نہ کرنے کے مصلحت (۱) حرم کے جانوروں کا نہ کھانا ایسا ہے جیسا کوئی شخص اپنے محبوب کے کوچہ کے جانور کو بلا جواز دیکر گوشت کھایا کرتا ہو۔

(۲) حرم کے لئے مقررہ کرنے میں یہ راز ہے کہ ہر چیز کے لئے ایک خاص طرز کی تعظیم ہوتی ہے چنانچہ کسی دین کی یہ تعظیم ہے کہ اس میں کسی چیز سے تعرض نہ کیا جائے اور دراصل یہ تعظیم بادشاہوں کی حد اور ان کے ہمسایوں سے ماخوذ ہے جب کوئی قوم ان کی فرمانبرداری ہوتی ہے اور ان کی اطاعت اور تعظیم کرتی ہے تو ان کے مطیع ہونے میں یہ بات ضروری ہوتی ہے کہ وہ اپنے لوہے اس بات کو مقررہ کر لیتی ہے کہ ان کی حدود کے اندر جوارش و چارپائے وغیرہ ہیں ان سے ہم کچھ تعرض نہ کریں گے اور حدیث شریف میں آیا ہے ان لکل ملک حمی و حمی اللہ معارمہ ترجمہ: یعنی ہر بادشاہ کے لئے ہذا ہوتی ہے اور خدا تعالیٰ کی ہذا اس کے محرم ہیں۔

حاجی کی سواری کی عبرتیں۔ سواری جس وقت سامنے توڑے اس وقت اپنے دل میں خدا تعالیٰ کی نعمت کا شکر کرے کہ اس نے ہماری سواری کے لئے چوپایوں کو اور منہ صبر یعنی آہ ہوا اور آتش وغیرہ جن سے دل اور گھوٹ پھٹتے ہیں مسخر کیا کہ ہم کو تکلیف نہ ہو اور ہماری خشیت بھلی ہو جاوے اور یہ یاد کرے کہ دار آخرت کی سواری تھی ایک دن اسی طرح سامنے آہوے گی یعنی جہاز کی تیار ہو گی اس پر سوار ہو کر دار آخرت کا کوچ کرنا پڑے گا۔ عرض گنج کا سفر آخرت کے سفر کی طرح ہے لہذا اس پر ضرور نظر کر لینا چاہیے کہ حج کی سواری پر سفر کرنا اس قابل ہو کہ سفر آخرت کی سواری کا قوس ہو سکے کیونکہ سفر آخرت آدمی سے بہت ہی قریب ہے کیا مظلوم کو موت

قریب ہو اور لوٹنے کی سواری سے خوشتر ہی جہالت اکثریت پر سوار ہو جائے اور جہالت کی سواری یقیناً ہو گی اور سامانِ سفر کا مہیا ہو جانا مشترک امر ہے تو مخلوک سفر میں احتیاطاً کرنادر تو قہہ اور سواری سے مدد لینا اور یقینی سفر سے داخل رہنا کب زیادہ ہے

معارف چاہو رہائے احرام احرام کی وہ چادر ونگے خریدنے کے وقت اپنے کفن کو اور اس میں اپنے لپٹنے کو یاد کرو کیونکہ احرام کی چادر اور جمہد کو اس وقت باندھو گے جبکہ خدا کعبہ کے نزدیک ہاتھو کے اور کیا جب کہ یہ سفر چورانہ ہو اور خدا تعالیٰ سے کفن لینے ہوئے ملاقات ہو نا یقینی ہے کیونکہ خدا تعالیٰ جل شانہ کی زیادت بھی مرنے کے بعد جو اس صورت کے نہ ہو گی کہ اہتیا کے لباس کے مخالف لباس ہو کیونکہ احرام کا کپڑا کفن کے کپڑے کے مشابہ ہے۔

اسرارِ میقات و تکالیف صحیح - جنگل میں داخل ہو کر میقات تک گھاٹیوں کے دیکھنے میں وہ ہول و اموال یاد کرو جو موت کے باعث دنیا سے نکل کر میقات تک ہوں گے اس کے ہر ایک حال کو اس کی ہر کیفیت سے مناسبت ہے مظاہر ہزنیوں کی دوہشت سے منکر و تکبیر کے سوال کے دوہشت یاد کرنا چاہیے اور جنگل کے درختوں سے قبر کے سانپ ٹھنڈ اور کینڑوں کا درمیان کرو اور اپنے گمراہ اور اقارب کے خیمہ ہونے سے قبر کی دوہشت اور سختی اور تھمائی کو سوچو۔

محرم پر جنایات کے بدلے میں کفارہ لازم ہونے کی وجہ صحیح کے تمام افعال عاشقانہ رنگ کے آداب ہیں جو عاشقانِ الہی کے لئے اپنے عشوقِ حقیقی کے گمراہ کے پاس بھانپنے کے لئے موضوع ہیں پس جو شخص ان آداب پسندیدہ عشوق کے برخلاف کوئی حرکت کرے اس پر عاشقانہ آداب کو چھوڑنے اور اپنے عشوقِ حقیقی کے خلاف ورزی کرنے کی وجہ سے کفارہ دینا لازم ہو لہذا محرم اگر اپنے کسی اذام کو ٹوٹو شہوانگہ سے تو اس کو صدقہ دینا چاہیے اور اگر ایک دن کامل سیاہ ہو آکپڑا پہنے یا اپنے سر کو اساجنے تو اس پر قربانی واجب ہوتی ہے اور اگر اس سے کم مدت میں یہ فعل کیا ہو تو صدقہ دینا چاہیے اور اگر اپنے سر کا چوٹھائی یا زیادہ منڈواوے تو اس پر قربانی

ہازم آتی ہے اور اس سے کم کے لئے صدقہ دینا چاہیے اور ایسا ہی ماخون کونانے کے باب میں ہے *
 تحصیل اس اہمال کی یوں ہے۔ کہ ان حرکات کو عاشقانہ نیاز و عشقی ظہنی کے برخلاف شمار کیا جاتا
 ہے کیونکہ خواہو مانا اور سلی ہوئے پکڑے پہنا اور سر منڈوانا اور ناخن کھانا زیب و زینت کے
 اسباب اور ظہور نفسانیہ خود آرائی کی صورتیں ہیں اور یہ تمام حرکات عاشقانہ نیاز کے برخلاف اور
 عشقی حقیقی کی نظر میں حالت احرام پابندیہ ہیں۔ لہذا ان عاشقانہ حرکات کے تراک کے لئے
 کفارات مقرر ہوئے۔

عشق و مہاں ہو عشق و گر	تراک خوبی کی گناہ خوب تر
بوست ذل از نفس خود کشن خدا	ہر کہ تراک خود کند پایہ خدا
مردن لا خود شدن یکساں ہو	یک تراک نفس کے آساں ہو
ببر و صلح شود پایہ کعبہ	ہست آں عالی نمبرے اس پایہ

زیب و زینتہ آرائشی اور نگہ ناموس کے سامان و اسباب حالت عشق و فریادگی و مسکر کے فیض
 و غلہ اور ایک قسم کی تصنع و تکلف پر دل ہیں ان سب کو حالت احرام حج یعنی کوچہ محبوب میں پشت
 کرنے کے وقت تراک کرنا مناسب ہو اور محبت صادقہ و عاشق خالص کو وہ آداب و طریقے اختیار
 کرنے ضروری نہیں رہے جو کہ کوچہ محبوب میں پہنچنے کے وقت عشقی حقیقی کی نظر اشکاتہ کوچہ
 رحمت کے جلاب ہوں۔ چنانچہ ایک عاشق صادق کا ترانہ اسی حالت و رنگ کو ظاہر کرتا ہے۔

نگہ نام عزتہ نیاز و دلہاں رستم یاد آسوز و مگر بیاہلاک آنستم
 دل بدلو بہلا کیل وصال رہن اعدا غم وز پند و صل نگہ حسیلا غم

حالات احرام اپنی عورت سے جماع کرنے سے حج فاسد ہونے کی وجہ : دنیا
 کے تمام لذائذ و مرغبات میں جماع سے بلا کہ کوئی چیز نہیں ہے مگر حج میں ساری لذات کو
 چھوڑنا پڑتا ہے کیونکہ حج کی تمام صورتیں اسکے برخلاف ہوتی ہیں۔ حج میں عاشقانہ طراز و وضع

اختیار کی جاتی ہے جس میں یہ ظاہر ہوتا ہے کہ معشوق حقیقی و محبوب لہری کے سوائے تمام لذات و سرگرمیوں کو جس نے ترک کر دیا ہے جو شخص باوجود اس دعوے کے منع جیسے لذتِ تریں فعل کا اور کتابِ حالتِ احرام حج کرنے وہ اپنے دعوے میں جھوٹا ٹھہرتا ہے لہذا اگر حج فاسد ہو جاتا ہے کیونکہ وہ عاشقانِ صادق کے ذمہ میں شمار نہیں ہو تا بلکہ خائن۔

ہر کہ بیانی کند در راز دوست راہزن مردان شد و نامر و دوست

در اصل بات یہ ہے کہ بعض عبادات میں طہل اشیاء بھی حرام ہو جاتی ہیں کیونکہ وہ ان عبادات کیلئے حائل و مفسد ہوتی ہیں جیسے کلام کرنا یا کھانا پینا منع نہیں ہے مگر لذت میں حرام ہے ایسا ہی اپنی عورت سے مباشرت کرنا یا کھانا پینا منع نہیں ہے مگر حالتِ روزہ یہ افعال حرام ہیں۔ کیونکہ یہ افعال ان عبادات کیلئے ماحول ہیں پس ایسا ہی حج کیلئے حائل و مفسد ہے جس سے حج فاسد ہو جاتا ہے اور حج ان سے اس لئے فاسد ہوتا ہے کہ ان امور کی مواضع افعال حج کے ضد ہیں اگر حج میں ایسے امور جائز ہوتے تو افعال حج ایک کیل سا ہوتا۔

جنگل کوئے سانپ چو ہے بھیرے پتھو سنگ دیوانہ کو حرم میں مار ڈالنا جائز ہونے کی وجہ: یہ جانور موزی و ضرر رساں اور عاشقانِ الہی کو گزند پہنچانے والے اور کوچہ محبوب سے مانع ہوتے ہیں لہذا محبوب حقیقی خداوند تعالیٰ کی نظر میں اسی وجہ سے مہلوس و مہملوس فیہرے کہ اس کے مہلوسوں کو انکے کوچہ سے مانع ہوتے ہیں اور یہ امر اسکو ناپسند ہے پس جو امر محبوب حقیقی نظر میں مہلوس ہو بالضرور اسکے مہلوسوں اور محبوبوں کی نظر میں بھی مہلوس ہو گا۔ یہی وجہ ہے کہ اگر ان جانوروں کو حرم میں مار ڈالے تو اس پر کوئی عاقبت نکلے گا لے میں دنیا لازم نہیں ہو تا بلکہ کاف و ثواب و موافق رضا محبوب ہے۔

حالاتِ احرام حج سب و شتم و جنگ و جدال منع ہونے کی وجہ: حجاجِ معزز عاشقانہ کوچہ گردان محبوب ہوتے ہیں۔ پس جو شخص عاشقانِ الہی کو سب و شتم کرے اور ان سے

لڑے بھڑے دواغذہ کا موقوف مملکت ٹھہرتا ہے اور ایسا ہی جو مانتی دوسرے حاجتوں سے لڑے اور
 انکو سب دھم کرے اور زمرہ عاشقان الہی سے خارج ہو جاتا ہے کیونکہ لڑنا بھڑکانا کڑنگ و ناموس
 و مزاحہ جنگوںے آرام و تن پروری کیلئے ہوتا ہے۔ سو ایسا شخص دوجہ سے ذمہ و عشاق سے خارج
 ہو جاتا ہے ایک تو یہ کہ وہ عاشقان الہی کو ایذا دے اور دوسرا یہ کہ وہ اپنی عزت و تکبر و ناموس و آرام
 کا طالب اور محبوب حقیقی سے غافل ہو اٹکی اوجہ ہے کہ جس حالتی وہاں جا کر جس ایسے امور کے
 مرتکب ہونے سے سخت دل ہو کر واپس آتے ہیں کیونکہ وہ کوچہ محبوب حقیقی میں جا کر شرفک
 عاشقانہ کو توڑ کر انکی نظر سے گر جاتے ہیں اس لئے اس لئے ایسے مظلومات کو جو اس محبوب ذاتی کی
 نظر میں موقوف مملکت تھے پہلے ہی مٹا دینے کہ مبادا کوئی شخص حالت عدم علم ان امور کا مرتکب
 ہو کر موقوف دوسرے ٹھہر جائے۔ چنانچہ وہ فرماتے ہیں۔ الحج اشہر معلومات فضل فرض
 لیہن الحج فلا رقت ولا فسوف ولا حدال طی الحج ترجمہ نہ یعنی حج کے مینے معلوم
 و مشہور ہیں پس جو شخص ان مینوں میں اپنے لو پر حج کرنا ٹھہرا لے اسکو چاہیے کہ حج میں جملع
 و عمرکات جملع کامر تکب نہ ہو اور کسی کو گالی نہ دے اور جھگڑانہ کرے۔

برکات حج : حج کے برکات میں سے ایک یہ تعلیم ہے جو انکے ارکان سے حاصل ہوتی ہے کہ
 اسمیں انسان کو عملی صورت میں اختیار سادگی و ترک تکلفات اور کبر کو چھوڑنے کا سبق دیا جاتا ہے۔
 تفصیل اس اجمال کی یہ ہے کہ حج کے سادے ارکان کبر اور ذاتی کے ذراے دشمن ہیں۔ اور درجہ کا
 سفر اختیار کرنا پڑتا ہے۔ احباب و اقارب پہنوت جاتے ہیں۔ نفس پروری اور سستی و کسل کا
 استعمال ہو جاتا ہے۔ سب سے بڑی بیاریات ہے کہ ہزار ہا سال سے انسان کیلئے خدا تعالیٰ کا ایک پاک
 معاہدہ چلا آتا ہے جس کا ایلاہ پر رعبہ لو اسے حج ہو جاتا ہے پس اس طرح سے اس میں اجزاء عمدہ کی
 بھی تعلیم ہے۔

کتاب النکاح

بسم اللہ الرحمن الرحیم

مقاصد نکاح : خدا تعالیٰ قرآن کریم کے پارہ ۲۱ میں فرماتے ہیں ۔ خلق لکم من انفسکم ازواجا لتسکونوا وجعل بیکم مودہ ورحمة ترجمہ ۔ یعنی خدا تعالیٰ نے تمہارے لئے تم میں سے جوڑے بنائے تاکہ تم ان سے آرام پکڑو اور تم میں دو سخی و نرمی رکھ دی اور فرمایا نساؤکم حوث لکم یعنی تمہاری عورتیں (تمہاری اولاد پیدا کرنے کے لئے) تمہارے حقیقت کے ہیں اور فرمایا حفاظات للعب یعنی تمہاری بیویاں تمہاری عدم موجودگی میں (تمہارے مال و عزت و دین کی) حفاظت کر لوائی ہیں۔ (۱) بی آرام اور سکون کیلئے بنائی گئی ہے اور خشکسار اور پتھروں انگار میں آرام کا سہج ہے انسان میں طبعی طور پر دو سخی اور محبت کرنا فطری امر ہے اور دو سخی اور محبت کیلئے فی لی ریب و غریب چیز ہے۔ عورت نازک بدن اور ضعیف العقلت ہے اور بچوں کو بہنے اور گمراہی کا انتظام رکھنے میں ذمہ دار اور ایک عظیم الشان بار ہے پس اس کے متعلق رحم سے کام لو خدا تعالیٰ نے اس کو رحم کیلئے بنایا ہے اسکی فضیلتوں اور فطرتی کمزوریوں پر تاثر ہو گئی کرو۔

(۲) آدمیوں میں قدرتی طور پر شہوت کا باہ ہے قدرت نے اسکا عمل لی لی کو بنایا ہے۔ خدا تعالیٰ فرماتا ہے کہ عورت بھی ہے اور بچہ ہونے کے قابل ہے جس طرح کبیت کا علاج معالجہ ضرور ہوا کرتا ہے اور اس میں خاص غرض ہوا کرتی ہے۔ اسی طرح عورت میں بھی خاص خاص اغراض ہیں جس سے متعلق ہونا چاہیے۔

(۳) عورت ننگہ دماغوں اور بالوں اور لہو کی محافظ اور مقہم ہے۔

(۴) نیز قرآن شریف سے ثابت ہوتا ہے کہ شادی عفت پر بیزگاری و حفظ صحت و حفظ نسل کیلئے ہوتی ہے۔ چنانچہ خدا تعالیٰ فرماتا ہے ویستغف الذین لا یجدون نکاحا حتی یغنیہم اللہ من فضلہ ترجمہ :- یعنی جو لوگ نکاح کی طاقت نہ رکھیں (جو کہ پر بیزگار رہنے کا اصل ذریعہ

ہے) تو ان کو چاہیے کہ اور تدبیروں سے طلبِ صفت کریں۔ چنانچہ بخاری اور مسلم کی حدیث میں آنحضرت ﷺ فرماتے ہیں کہ جو نکاح کرنے پر کاروبار ہو اس کے لئے پرہیزگار رہنے کی یہ تدبیر ہے کہ وہ روزہ رکھا کرے اور فرمایا ہے جو جوانوں کے گروہ جو کوئی تم میں سے نکاح کی قوت رکھتا ہو تو چاہیے کہ نکاح کرے کیونکہ نکاح آنکھوں کو خوب بچا کر دیتا ہے اور شرم کے اعضا کو زہرِ فیرہ سے بچاتا ہے۔ اور نہ روزہ رکھو کہ وہ نفسی کر دیتا ہے۔

شرح النکحی یہ ہے کہ جو خواہش مرد کے دل میں عورت کی طرف یا عورت کے دل میں مرد کی طرف ہے وہ تھاخانےِ فطرتِ انسانی ہے اور اس خواہش کو نکاح کے ذریعہ سے پورا کرنا انسان کے دل میں سچی محبت اور پاکیزگی کے خیالات کو پیدا کرتا ہے۔ اور اسکا ناجائز تعلقات سے پورا کرنا انسان کو بناپائی کی طرف بجاتا ہے اور اسکے دل میں بد خیالات پیدا کر دیتا ہے۔ پس نکاح کو پاکیزگی کی طرف بجانے اور اسے بناپائی سے دور رکھنے کا ایک ذریعہ ہے۔ اور یہ عمل یاد رکھنا چاہیے کہ یہ فطری خواہش جو مرد اور عورت کے دل میں ایک دوسرے کیلئے موجود ہے اسکو گندی یا ناپاک خواہش کے نام سے منسوب کرنا سخت غلطی ہے کیونکہ اس خواہش کو فطرتِ انسان میں پیدا کرنے والا طوہر و عذیبی ہے اور اسی نے اپنی مصلحت اور حکمت سے اصل اغراض کیلئے اس خواہش کو انسان کے نفس میں سرگور فرمایا ہے پس اسبہر استیصال یعنی ناجائز طریقوں سے اسکا پورا کرنا چونکہ انسان کو بناپائی اور بدی بخلاف بجانے والا ہے۔ اغراضِ نکاح کا بوجہ استیصال ہی ہے جسکو اللہ تعالیٰ نے قرآن کریم میں ذکر فرمایا ہے کہ پرہیزگاری ہی کی غرض سے نکاح کرو اور لوگ اسکا طلب کرنے کے لئے دغا کرنا جیسا کہ ارشاد ہے محصنین عبر مسا فحسین یعنی چاہیے کہ تمسدا نکاح اس نیت سے ہو کہ تم تنہائی اور پرہیزگاری کے قصد میں داخل ہو جاؤ۔ ایسا نہ ہو کہ حیوانات کی طرح محض تلف لگانا ہی تمسدا مطلب ہو اور فرمایا۔ استعوا ما کتب اللہ لکم یعنی نبی کی قربت سے لوگو کا قصد کرو جس کو اللہ تعالیٰ نے تمسدا کے لئے مقدر فرمایا ہے نیز نکاح کرنے سے انسان پابند ہو جاتا ہے مستعدی کے ساتھ کمانے کی فکر کرتا ہے اور بجا کام کرنے سے ڈرتا رہتا ہے۔ محبتِ حیا

قرمانہر داری اس میں پائی جاتی ہے وہ نہایت کفایت کے ساتھ زندگی بسر کرتا ہے اور بے شمار امراض سے چھڑتا ہے۔

یہ امر مفید صحت اطمینان عقل ازاحتہ سماں سرور افزا کفایت آمیز ترقی زندگی دین کا سبب ہے۔ اخلاق نہ ہی نکالتے اس امر پر غور کرو گے تو اسکو سر امر فوائدوں سے معمور پانڈے کے۔ تمدن کیلئے اس سے بجز کوئی صورت نہیں سب الوطن کی بھی جڑ ہے اور ملک و قوم کیلئے اعلیٰ ترین خدمات میں سے ہے۔ صدیوں سے چھانے اور صدہا امراض سے محفوظ رکھنے کیلئے یہ ایک سخی نسخہ ہے۔ اگر یہ قانون الہی یعنی آدم میں نافذ نہ ہو تو آج دنیا سسٹان ہوتی۔ نہ کوئی مکان نہ کوئی باغ نہ کسی قوم کا نشان باقی رہتا۔

وجوہ تعدد از دولج: (۱) تمدن جو تعدد ازواج سب سے مقدم حفظ تقویٰ یعنی بیزگار رہتا ہے۔ یہ ہے۔ تقویٰ ایک ایسی بنیادی چیز ہے کہ اسکا کمال ہر انسان کو اور سب باتوں سے مقدم رکھنا چاہیے۔ قدرت نے بعض آدمیوں کو معمولی آدمیوں کی نسبت زیادہ قوی المشہوت بنایا ہے اور ایسے آدمیوں کیلئے ایک عورت کافی نہیں ہو سکتی اور اگر انکو دوسرا تیسرا چوتھا نکاح کرنے سے روکا جائے گا تو اسکا نتیجہ یہ ہو گا کہ وہ تقویٰ کو چھوڑ کر بہ کاری میں مبتلا ہو جائیں گے۔

نہ ایک ایسی بہ کاری ہے جو انسان کے دل سے ہر ایک پاکیزگی طہارت کا خیال دور کر دیتی ہے اور اس میں ایک خطرناک زہر پیدا کر دیتی ہے اس لئے ان لوگوں کیلئے جو قوی المشہوت ہیں ضرور کوئی ایسا علاج ہونا چاہیے جس سے وہ زنا بھی پیدا کاری میں پڑنے سے بچیں۔ باقی رہا یہ امر کے قوی المشہوت آدمیوں کو ایک سے زیادہ عورت کی حاجت پڑے گی یہ منظر من الخس ہے۔

(۲) عورت ہر وقت اس قابل نہیں ہوتی کہ خود اس سے محسوس ہو سکے کہ تکہ لول تو لازمی طور پر ہر ایک عورت پر ہر ایک مہینے میں یکو دن ایسے آتے ہیں یعنی ایام حیض جن میں مرد کو اس سے بچنا پڑتا ہے اور اسے ایام حمل عورت کیلئے ایسے ہوتے ہیں خصوصاً اسکے پچھلے مہینے جن میں

عورت کو اپنے اور اپنے جنین کی صحت کیلئے ضروری ہے کہ وہ مرد کی صحبت سے پرہیز کرے اور یہ صورت کنی ماد تک رہتی ہے پھر جب وضع حمل ہو جاتا ہے تو پھر بھی بہت مدت تک عورت کو مرد کی صحبت سے پرہیز کرنا لازمی ہے لہذا تمام اوقات میں عورت کیلئے تو یہ قدرتی موانع واقع ہو جاتے ہیں مگر خدا نے کیلئے کوئی موانع نہیں ہوتا تو اب اگر کسی مرد کو طلبِ شہوت کا ان اوقات ہو تو بجز تعددِ اولاد و جناس کا کیا علاج ہے ہم اس امر کو تسلیم کرتے ہیں کہ کثرت سے ایسے مرد ہیں جو ان وقتوں میں دوسری عورت کرنے کے بغیر بھی تعوی کو قائم رکھ سکتے ہیں لیکن ساتھ ہی ہم یہ کہنے کو چاہیں اور کوئی عقل مند اس سے انکار نہیں کر سکتا کہ دنیا میں قوی اہمیت تو ہی بھی موجود ہیں اور اس وقت کا زیادہ ہونا کسی صورت میں ان کے لئے باعثِ اضرار نہیں ہے پس اگر ان ایام اس قسم کے اور اوقات میں دوسری عورت سے نکاح کی اجازت نہ دی جائے تو پھر اس خواہش کے قضا کرنے کیلئے وہ ضرور ناجائز ذرائع استعمال کریں گے۔

(۳) گرم ملکوں میں عورتیں آٹھ تو بیس سال کی عمر میں شادی کے قابل ہو جاتی ہیں اس لئے ان ممالک میں شادی کا زمانہ عمر کے لحاظ سے بچپن کا زمانہ ہوتا ہے۔ جس سال کی عمر میں وہ بوجھتی ہو جاتی ہیں۔ اس لئے عقل اور خوبصورتی دونوں ایک وقت آگے اندر جمع ہو جاتی ہیں۔ جب خوبصورتی کا یہ قضا ہوتا ہے کہ عورت حکومت کرے اس وقت عقل اور تجربہ کا زمانہ ہوتا ہے۔ جب قضا ہوتا ہے اور جب عقل اور تجربہ حاصل ہوتا ہے تو خوبصورتی نہیں رہتی۔ اسی لئے عورتوں کو لازمی طور پر ایک عکس کی حالت میں رہنا پڑتا ہے کیونکہ عقل اور تجربہ کا حساب سے وقت وہ حکومت پیدا نہیں کر سکتی جو جوانی اور خوبصورتی میں کر سکتی تھی پس ہر حال میں عورت وہاں حال اپنے ناکافی ہونے کا اقرار کرتی ہے کیونکہ مرد کو ان دونوں صفوں کے جمع کرنے کی ضرورت قدرتی طور پر ہے اور کوئی ایک عورت ان دونوں صفوں کی جامع نہیں۔ اس لئے مرد اس ضرورت کو وہ عورتوں کے جمع کرنے سے ہاری کرتا ہے جن میں سے ایک میں سے ایک میں صحت ہو اور ایک میں تجربہ تاکہ دونوں کے مجموعہ سے اس طرح صلح ہو ایک اس کے نفس کو خوش کرے دوسری اس کی خدمت کرے

اس لئے یہ ایک بالکل قدرتی امر ہے کہ ان ممالک میں تعدد ازدواج کاروبار ہو۔

(۳) ہر ملک میں مردوں کی نسبت عورتوں کے قوی باحاطے سے جلدی متاثر ہوتے ہیں۔ جس جہاں مرد کے قوی ہائیکل محفوظ ہوں جیسا کہ وہ اکثر حالات میں ہوتے ہیں اور عورت بوزگی ہو چکی ہو اور ساری عورت سے نکاح کرنا محض حالات میں مرد کیلئے ہیسا ہی ضروری ہو گا جیسا کہ پہلے کسی وقت پہلی عورت سے نکاح کرنا ضروری تھا۔ پس جو قانون تعدد ازدواج سے روکتا ہے وہ مردوں کو جن کے قوی خوش قسمتی سے باحاطے کی عمر تک محفوظ رہیں یہ روکتا ہے کہ وہ ان قوی کے نقصان کو ذرا کے ذریعہ سے پورا کریں۔ ایسا قانون عام انسانوں کی حالتوں کے مطابق یہ مگر ہو سکتا ہے۔

(۵) مذکورہ بالا ضروریات تو مردوں کی ہیں مگر خود عورتوں کو بعض وقت ایسی مجبوریاں آتی ہیں کہ اگر ان کے لئے یہ دلو کھلی نہ رکھی جائے کہ وہ ایسے مردوں سے نکاح کر لیں جن کے گھروں میں پہلی عورتیں موجود ہیں تو اس کا نتیجہ بد کاری ہو گا۔ ایک ہی امر پر غور کرو کہ کس طرح ہر سال دنیا کے کسی نہ کسی حصہ میں لاکھوں مردوں کی جانیں لڑائیوں میں تلف ہو جاتی ہیں حالانکہ عورتیں بالکل محفوظ رہتی ہیں۔ اور ایسے واقعات یعنی جنگوں میں مردوں کی جانوں کا تلف ہونا ہمیشہ ہوتے رہتے ہیں اور جب تک دنیا میں تلف تو میں آباد ہیں ایسے واقعات ہمیشہ پیدا ہوتے رہیں گے اور ہمیشہ اس سے مردوں کی تعداد میں کمی ہو کر عورتوں کی تعداد بڑھ جاتی تو ایک ہی امر سے اگر یہ بھی فرض کر لیں کہ عورتوں کی تعداد کی یہ زیادتی کسی قوم میں ہمیشہ کی نہیں رہی تاہم اس سے تو انکار نہیں ہو سکتا کہ ایک مدت تک مردوں کی اس کمی کا اثر ضرور دیکھا گیا ہے اور تیس جو مردوں کی تعداد سے زیادہ ہوں گی ان کے لئے کیا سوچا گیا ہے تعدد ازدواج کی ممانعت کی صورت میں ان کا کیا حال ہو گا کیا انکو یہی جواب نہیں ملے گا کہ جس کے دل میں مرد کی طرف وہ خواہش ہیں انکو جو قدرت نے فطرتاً ہی نہیں رکھی ہے وہ ہر جائز طریقوں سے اسے پورا کرے سوچ کر دیکھ لو کہ تعدد ازدواج کی روک تھام کر کے ان لاکھوں عورتوں کو جو اس طرح لڑائیوں کے سبب سے لڑے ہو

گئیں یا جن کے لئے نکاح کے ذرائع نہیں رہے کیا یہی جواب نہ دینا پڑے گا۔ مابین تعدد پر افسوس ہے کہ ایک ملحد اصول کی حمایت میں انسانی ضروریات پر ایک لڑکیلے بھی غور نہیں کرتے وہ نہیں سوچتے کہ تعدد ازدواج کے سوائے اور کوئی ایسی رو نہیں جو ان ضروریات کو پورا کر سکے۔

(۶) گذشتہ مردم شماری میں بعض ممالک نے صرف نکاحی ملاحظہ کے مردوں و عورتوں کی تعداد پر نظر کی تھی تو معلوم ہوا تھا کہ عورتوں کی تعداد مردوں سے زیادہ ہے جو کہ قدرتی طور پر تعدد ازدواج پر ایک بین دلیل ہے جسکو شک اور دو طبعہ و طبعہ مردوں و عورتوں کی تعداد کو سرکاری کاغذات مردم شماری ہند میں ملاحظہ کرے تو عورتوں کی تعداد مردوں سے زیادہ ثابت ہوگی۔ اسکے ساتھ ہی ہم اس امر کی طرف بھی توجہ دلاتے ہیں کہ یورپ میں جسکو سب ممالک سے زیادہ کہ تعدد ازدواج کی ضرورت سے معزول و معزوم سمجھا جاتا ہے عورتوں کی تعداد مردوں سے کس قدر زیادہ ہے۔ چنانچہ برطانیہ کلاں میں وہ نروں کی جنگ سے پہلے بارہ لاکھ انفر ہزار تھیں سو پچاس عورتیں ایسی تھیں جن کیلئے ایک بی بی والے قاعدہ کی رو سے کوئی مرد میا نہیں ہو سکتا۔ فرانس میں ۱۹۰۰ء کی مردم شماری میں عورتوں کی تعداد مردوں سے چار لاکھ تھیں ہزار سات سو نو۔ زیادہ تھی۔ جرمنی میں ۱۹۰۰ء کی مردم شماری میں ہر ہزار مرد کیلئے ایک ہزار تھیں عورتیں موجود تھیں۔ گویا کل آبادی میں آٹھ لاکھ ستالیس ہزار چھ سو اڑتالیس عورتیں ایسی تھیں جن سے شادی کرنے والا کوئی مرد نہ تھا۔ سویڈن میں ۱۹۰۰ء کی مردم شماری میں ایک لاکھ بائیس ہزار آٹھ سو ستر عورتیں اور مردوں میں ۱۸۹۹ء میں چھ لاکھ چالیس ہزار سات سو پچیسانوے عورتیں مردوں سے زیادہ ہیں۔

اب ہم سوال کرتے ہیں کہ اس بات پر فخر کر لینا تو آسان ہے کہ ہم تعدد ازدواج کو برا سمجھتے ہیں مگر یہ بتا دیا جاوے کہ ان کم از کم چالیس لاکھ عورتوں کیلئے کون سا قانون تجویز کیا گیا ہے کیونکہ ایک بی بی کے قاعدہ کی رو سے انکو یورپ میں تو خلو نہ نہیں مل سکتے۔ ہمارا سوال یہ ہے کہ جو تو انہیں انسان کی ضروریات کیلئے تجویز کئے جاتے ہیں وہ انسانوں کی ضروریات کے مطابق بھی

ہونے چاہیں یا نہیں وہ قانون جو تعدد ازدواج کی مخالفت کرتا ہے ان چالیس لاکھ عورتوں کو یہ کتا ہے کہ وہ اپنی فطرت کے خلاف چلیں اور انکے دلوں میں مردوں کیلئے کسی خواہش پیدا نہ ہو لیکن یہ تو ناممکن امر ہے جیسا کہ خود تجربہ حکایت کر رہا ہے پس نتیجہ یہ ہو گا کہ جائز طریق سے روکے جانے کے باعث وہ ناجائز طریق استعمال کریں گی۔ اس طرح پران میں زندگی کھڑے ہوگی اور یہ تعدد ازدواج کی مخالفت کا نتیجہ ہے اور یہ امر کہ دنیا پھیلے گا خیال ہی خیال نہیں بجز امر واقع ہے جیسا کہ ہزار ہا لاکھ امر ایسوں کی تعدد سے ثابت ہو رہا ہے جو ہر سال پیدا ہوتے ہیں۔

(۷) نکاح کے اغراض میں ایک یہ بھی ہے کہ مرد عورت ایک دوسرے کیلئے بطور رفیق کے ہوں پس اگر کوئی وجہ ایسی پیدا ہو جائے کہ جس کے سبب سے عورت مرد کیلئے بطور رفیق کے نہ رہے یا اس سے اسکو خوشی حاصل نہ ہو سکے جو ایسے رفیق سے نہ پاتا ہے۔ تو ان صورتوں میں بھی مرد کو دوسرا نکاح کرنے کی اجازت نہ پاتا ہے۔ مثلاً اگر عورت کو کوئی ایسی بیماری لاحق ہو جائے جو اسکو بیٹھ کیلئے یا لائے لائے وقتوں کیلئے ناقابل کردے یعنی اس امر کے قابل نہ رہنے دے کہ خلافت اس سے تعلقات زبان و ثنوی رکھ سکے تو کوئی وجہ نہیں کہ کیوں نکاح کی اصل غرض کو مرد دوسرے نکاح کے ذریعہ سے پورا نہ کرے جیسا کہ انسانی زندگی کے حالات کا دائرہ نکاح ہے ویسا ہی ان ضروریات کا دائرہ بھی نکاح ہے جو اہل وقت مرد کو دوسرا نکاح کرنے کیلئے مجبور کر دیتی ہے ہم مانتے ہیں کہ ایسی ضروریات اکثر پیدا نہیں ہو تیں مگر جب واقعی وہ ضرور تیں پیدا ہو جائیں اور یہ ضروری ہے کہ ہر انسان کے جذبہ میں وہ کچھ تھلی پیدا ہوتی رہیں تو سوائے تعدد ازدواج کے اور کوئی ذریعہ انکے پورا ہونے کا نہیں۔ پس اس علاج کو رد کرنے والوں کو بڑا حنا ہے اسی طرح تعدد ازدواج اکثر حالات میں حلا قول کی کھڑائی ہو سکتا ہے۔

(۸) قدرت نے عورت کو دو سالانہ دینے ہیں جو مرد کیلئے باعث کشش ہیں اور مرد عورت کے تعلق میں ان فریبگی اور کشش کے موجدات کی موجودگی ایک نہایت ضروری امر ہے اور صرف اسی صورت میں نکاح ہد کت ہو سکتا ہے کہ ایسے سالانہ کشش عورت میں موجود ہوں اور اگر

عورت میں ایسے سامان موجود نہ ہوں یا کسی طرح سے چائے رہیں تو مرد کا عورت سے وہ تعلق نہیں ہو سکتا پس ایسی صورت میں اگر خدانہ کو دوسری شادی کی اجازت نہ دی جائے تو یا تو وہ کو شش کرے گا کہ کسی طرح اس عورت سے نجات حاصل کر لے اور یہ اگر ممکن نہ ہو تو یہ کاری میں دھکا ہو گا اور ناہائز تعلق پیدا کرے گا کیونکہ عورت کی رفاقت سے اسے وہ خوشی حاصل نہ ہو سکے جنکا حصول فطرت انسانی چاہتی ہے تو ناچار اس خوشی کے حصول کیلئے وہ اور ذریعے تلاش کر چکاں صورتوں کیلئے تعدد ازواج ہی ایک علاج ہے اور اسی ذریعہ سے ایک گھرانہ خوشحال ہو سکتا ہے (۹) تعدد ازواج کے روکنے سے عقل لوگات نکاح کی قیصری فرض یعنی چھ نسل انسانی حاصل نہیں ہو سکتی۔ مثلاً اگر عورت بانٹھ ہو اور اسکا حکم ناقابل علاج ہو تو تعدد ازواج کی ممانعت کی صورت میں قطع نسل لازم آئے گا۔ یہ صدی عورتوں میں پائی جاتی ہے اور سوائے تعدد ازواج اور کوئی راہ نہیں جس سے یہ کنی پوری ہو سکے۔ ایسی صورت میں عورت کو طلاق دینے کی کوئی وجہ موجود نہیں اور ممکن ہے کہ عورت و مرد میں ایسی محبت بھی ہو کہ وہ ایک دوسرے سے جدا نہ ہو سکتے ہوں۔ اس چھ نسل کا ذریعہ صرف یہی ہے کہ ایسی صورتوں میں مرد کو نکاح چینی کی اجازت دی جائے۔ علاوہ انہی اور بھی بہت وجوہ ہیں جو تعدد ازواج کی ضرورت کو ثابت کرتے ہیں اور ان سب کو تفصیل سے بیان کرنے کی یہاں گنجائش نہیں ہے۔

اصل سبب تعدد ازواج کا یہ کاریوں سے چھانا ہے جو لوگ عقلوں میں تعدد ازواج کے مخالف ہیں وہ اندرونی خواہشات اور افعال کا مطالعہ فرمادیں۔ جس قوم نے زبان سے پاک تعدد ازواج کا انکار کیا ہے وہ عملی طور پر ناپاک تعدد ازواج یعنی زنا کاری میں گرفتار ہوئے ہیں انکی خواہشوں کی وسعت اور دست درازی نے ایک عورت پر قحامت نہ کر کے ثابت کر دیا ہے کہ فطرت میں تعدد اور تنوع کی آرزو ضرور ہے خدا تعالیٰ کے قانون کا یہ ہتھکڑا ہونا چاہیے کہ وہ انسان کی وسیع خواہشوں اور اندرونی میلانوں پر مطلق اور جبری ہو کر ایسی ترتیب اور طرز پر واقع ہو کہ مختلف جذبات والی طبائع کو بھی تقویٰ اور طہارت کے دائرہ میں محدود رکھے۔

مرد کیلئے تعدد ازواج چار تک محدود ہونے کی وجہ: مرد کیلئے چار عورت منگوانا محدود ہونے کی وجہ خدا تعالیٰ کی کمال حکمت و احکام لغت و مصلحت پر تھی ہے ہم عمل ازیں لکھ چکے ہیں کہ مرد کو قوتیں اور طاقتیں بہ نسبت عورت کے زیادہ عطا کی گئی ہیں۔ اس لئے کئی عورتوں سے ایک زمانہ میں نکاح کر سکتا ہے تعدد ازواج کی مصلحت نکاح کی علت غائی سے معلوم ہو سکتی ہے سو نکاح کی علت غائی جیسا کہ ہم بیان کر چکے ہیں۔ سب سے اول دائم تقویٰ و نفلت و تولد ہے اور چونکہ تمام یعنی آدم کی قوت یکساں نہیں ہوتی اس لئے خدا نے ان کی طاقتوں و قوتوں کے مناسب اگے لئے اسباب فراہم کئے ہیں سو جن اشخاص کو یہاں و توکان شہوت زیادہ ہو انکی مخالفت و نفلت کیلئے ہر سال میں چار عورتیں نومعت ہوتے اگلے پاس ہونا چاہیں اور ایسے آدمیوں کیلئے یہ عدد بین قانون قدرت کے مطابق ہے۔

تخصیص اس اجمل کی یہ ہے کہ ایسا آدمی جب کسی ایک عورت کو نکاح میں لائے گا تو کم از کم یہ عورت اس کیلئے تین ماہ تک کافی ہے کیونکہ حمل کی شناخت کم از کم تین ماہ تک مضر ہے پس اگر اس مہلہ میں اس عورت کو حمل نصیر جائے تو اسے یہاں وجوش شہوت والا آدمی اگر اس عورت سے صحبت کرے گا تو حملین پر بلا اثر پڑے وہ حمل گر جائے گا اور بیشہ ہے لہذا اس عورت کو آرام دیوے اور اس عورت سے صحبت ترک کر کے دوسری عورت نکاح میں لائے گا اگر دوسری عورت کو بھی تین ماہ تک قرار حمل ہو چلائے تو اس سے بھی صحبت ترک کرنی پڑے گی۔ کیونکہ اس سے استقلال حمل کا اندیشہ ہے اور والدین کے شہوانی جوش حملین پر بلا اثر ڈالتے ہیں۔ یہ سچ ماہ ہوئے۔ اب تیسری عورت سے نکاح کرے گا۔ اگر تیسری عورت کو بھی حمل ہو گیا تو اب اس سے بھی اس کو صحبت ترک کرنی پڑے گی۔ یہ نو ماہ ہو گئے۔ اب پہلی عورت کا وضع حمل ہو جائے گا مگر وہ غالباً تین ماہ تک حامل صحبت نہیں ہو سکتی لہذا اسکو چھٹی عورت نکاح میں لانی پڑے گی۔ اب چھٹی عورت کے حمل کی شناخت بھی تین ماہ تک مقرر ہے یہ ایک سال ہو اور اس ماہ میں

پہلی صورت ہنسکو وضع غسل سے تین ماہ گذر چکے ہیں تعلقات زنا و شوئی کے لئے تیار ہو جانے کی۔ اس طرح وضع غسل کے بعد ہر ایک نوبت دو سے اسیکے لئے مہیا ہوگی۔

ہاں یہ تعداد ہر ایک قوی اشہوت انسان کیلئے کافی اور عین قانون قدرت و فطرت کے مطابق ہے اور اس پر کوئی اعتراض نہیں ہو سکتا۔ خدا تعالیٰ نے جو قرآن کریم میں دو دو تین تین چار چار تک فرمایا ہے اس میں یہ اشارہ ہے کہ بعض آدمیوں کیلئے ہر سال میں دو عمر میں ہی کافی ہو سکتی ہیں کیونکہ بعض صورت کے لوگ انہیں ہوتی یادیر سے غسل نصیرتا ہے اور غسل کے لئے سال میں تین ہی کافی ہو سکتی ہیں اور بعض کو چار کی ضرورت پڑتی ہے۔

حامل کے ساتھ وضع صحبت کی وجہ ایک قواعد پیش استقامت حاصل ہے۔ دوسرے اس حمل سے جو لوگوں ہوگی اسکے اخلاق و اطوار میں والدین کے شوائبی جو شمر کو نہ کر بہ اخلاقی پیدا کر میں گے۔ کیونکہ جو شش شہوت کا اثر جنین پر بالضرور پڑتا ہے اور وہ طبع میں فطری ہو جاتا ہے اور کو فحشی قاعدہ کردہ سے اس بات پر اعتراض ہو سکتا ہے کہ دو دو پانچ سے صحبت کرتی چھ کیلئے مضر ہے لیکن علماء نے اس امر کی اصلاح بعض آدمیوں کے ساتھ بتائی ہے۔ اذایہ امر قانع نہ رہا۔

اب رہی یہ بات کہ چار سے زیادہ کیوں نہ جائز ہو تو غور کرنے سے معلوم ہوتا ہے کہ یہ ضرور تھا کہ ایک خاص حد تک جانے کی ہوتی ورنہ اگر حد مقرر نہ ہوتی تو لوگ حد اعتدال سے نکل کر صد ہاتھ جویاں کرنے کی نوبت پہنچاتے اور ایسا کرنے سے کن کا علاج پر اور خود اپنی جانوں پر غم اور بے اعتدالیوں کرتے اور ضرورت چار سے رفع ہو گئی تھی اسلئے زائد کو ناجائز قرار دیا۔

خلاصہ وجوہ تعدد ازواج: (۱) تنوعی (۲) حفظ القربی (۳) موافقت نہیں اور طلاق کا بھی موقع نہیں (۴) غم (۵) کثرت تولد بیات بعض بلاد اور خانہ انوں میں (۶) پورے تکامل مصالح اور سیاسی ضروریات عورت غالباً چار۔ اس کے بعد قابل نسل نہیں رہتی طائف مردوں کے کہ وہ نو سے اس تک ہمارے ملک میں اس قابل ہیں (۸) مشاہدہ کثرت زنا جن بلاد میں تعدد ازواج جائز

نہیں ان بلاد میں لغز و لغز صحت کسی اور سے متعدد جدا اسباب ہیں جو تعدد و تداخل کی ضرورت کو بیان کرتے ہیں۔

نبی علیہ الصلوٰۃ والسلام کا یہ نسبت اپنی امت کے زیادہ دینیوں کرنے کی وجہ :
 (۱) جیسا کہ آپ اپنی قوم کے مردوں کیلئے رسول تھے ایسا ہی عورتوں کے بھی رسول تھے لہذا ضروری تھا کہ کچھ عورتیں آنحضرت ﷺ کی دینی صحبت میں رہ کر آنحضرت ﷺ سے تعلیم پا کر دوسری عورتوں کو تعلیم و تبلیغ اسلام کریں سو اسی غرض کیلئے آنحضرت ﷺ نے یہ نسبت اپنی امت کے زیادہ دینوں کی ہے۔

(۲) آپ کی جسمانی و روحانی توجہ نسبت لوگوں کے بہت بڑھی ہوئی تھی آپ سو سو سال یعنی روزہ پر روزہ رکھ لیا کرتے تھے مگر امت کو اس سے منع فرمایا لوگوں نے آپ سے عرض کیا کہ آپ تو سو سو سال رکھتے ہیں تو فرمایا تم میں مجھ سا کون آدمی ہے نسبت عند ربی ہو بطبعی و یسطنبی۔ ترجمہ نہ یعنی میں اپنے پروردگار کے پاس شب بپاش ہو جاؤں وہ مجھے کھلاتا پاتا ہے۔

(۳) آنحضرت ﷺ کے نکاحوں کے حلقہ بڑی لگائی جیسا نبیوں و پیغمبروں میں ہے کیونکہ آپ کے نکاحوں کی اصلی غرض یہ تو شخص ضروری و ترم تھا یا مختلف قوموں کو ایک کرنا اور ان کے علاوہ بھی متعدد ملکی مصالح اور دینی اغراض تھیں مگر ہمارے چالیس اگلی ما فلسفی خواہش بتاتے ہیں (نور ذیاباد) ہر بیخ شاد ہے کہ جس وقت آنحضرت ﷺ نے ۲۵ برس کی عمر میں نکاح کیا تو آپ عفت اور پرہیزگاری میں تمام عرب میں مشہور تھے پھر اسکے بعد ۲۵ سال تک یعنی جب تک حضرت صدیق رضی اللہ تعالیٰ عنہ نہ ہوئے آپ نے دوسری دنیا سے نکاح نہیں کیا۔ حالانکہ عرب میں تعدد و تداخل کی رسم بلا قید کسی شرط کے مروج تھی پس ان لوگوں کا جو کہ با حق نیک افعال میں یہ اغراض تلاش کرتے ہیں یہ فرض ہے کہ وہ اسکا سبب بھی تلاش کریں کیونکہ آنحضرت ﷺ نے ۵۵ سال کی عمر تک جب آپ ۷۷ برس ہو چکے تھے ایک سے زیادہ دنیا سے

نکاح نہیں کیا اور نفسانی خواہشوں کی وقت ایک شخص کے دل پر تلج پانگھنی ہیں تو وہ جو ان کی کا وقت ہو تا ہے جبکہ جذبات جو ان کی جوش میں ہوتے

ہیں مگر اس جو ان کی کے وقت آپ نے ایک لی لی پر اس اکتفاء کیا کہ جس وقت قریش نے بیع ہو کر آپ کو یہ کہا کہ آپ صحت پر سخی کوہ اکتفا بخود میں تو ہم آپ کو اپنا مردار بنا لیتے ہیں اور خود صورت سے خود صورت اور میں آپ سے نکاح کرنے کیلئے حاضر کرتے ہیں تو آپ نے کچھ بھی پر دولت کی۔ اس سے کسی کو انکار نہیں ہو سکتا کہ نفسانی خواہشوں کے طلب کا وقت جو ان کی کا وقت ہے اور چونکہ آپ کے اس زمانہ کی نسبت آپ کے صحت ترین دشمنوں کو بھی اقرار ہے کہ آپ اس وقت طہارت پاکیزگی صحت کا نمونہ تھے اس لئے یہ الزام کہ نفسانی خواہشوں کو پورا کرنے کیلئے آپ نے شہدیاں کہیں آپ کی ذات صحت مآب پر سخت برہمن ہے۔ (۳) آنحضرت ﷺ کے بعد انی زمانہ اور آخری زمانہ میں بد اھاری تعمیر واقع ہو چکا تھا۔ انی سالوں میں جب کہ میں آپ نے تبلیغ شروع کی تو اگرچہ کفار کی طرف سے مسلمانوں کو طرح طرح کے دکھ اور لاپتہیں پہنچتی تھیں مگر رشتہ داری کے تعلق منقطع نہیں ہو چکے تھے خصوصاً اپنے لوگ جو ذی عزت و وجاہت تھے وہ نسبتاً کفار کے مسلمانوں سے مخلو کا تھے اور ان سے تعلقات بھی رکھتے تھے چنانچہ خود آنحضرت ﷺ کی ایک لڑکی ایک کافر سے بیاہی ہوئی تھی اور حضرت ابو بکرؓ کی لڑکی یا کونجی مغللی بھی ایک کافر کے لڑکے خیر بن مسلم سے ہوئی تھی۔ مگر مسلم نے یہ ہیں وہ چاہا کہ اس تعلق سے خوف ہے کہ لڑکا نئے دین میں چٹا جائے گا۔ اسکے بعد ہی حضرت عائشہؓ کا نکاح آنحضرت ﷺ سے ہوا اگرچہ ابتدا میں ایسے تعلقات تھے مگر آہستہ آہستہ یہ تعلقات منقطع ہو چکے تھے اور کسی مسلمان عورت کا نکاح کے باوجود نہ جانا سکے لئے ہلاکت کا موجب تھا بلکہ آپ کی ہجرت سے رہے سے تعلقات بھی کٹ گئے پس مسلمان لڑکیوں یا عورتوں کیلئے ضروری تھا کہ مسلمان ہی نکاح ہوں۔

ان واقعات کو مد نظر رکھ کر ہم کو آنحضرت ﷺ کے نکاحوں کو دیکھنا ہے اس سے کسی کو انکار نہیں کہ سوائے حضرت عائشہؓ کے آپ کی ساری بیویاں عورتیں تھیں انکو ہم الگ الگ جہانوں پر

تقسیم کرتے ہیں۔

اول وہ عورتیں جنہوں نے اپنے خاندانوں کے ساتھ حبش یا مدینہ کی طرف ہجرت کی تھی اور دوسری وہ عورتیں جو کسی قوم کے سردار کی لڑکیاں یا عورتیں اور بچے خاندان لڑائیوں میں مارے گئے انکا ذکر ہم اسی ترتیب سے کرتے ہیں جس ترتیب سے انکے نکاح ہونے ام المومنین خدیجہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کی وفات کے بعد سب سے پہلے آپ نے ام المومنین سوہدہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے نکاح کیا۔ سوہدہ اور ام المومنین سوہدہ ہی میں ہجرت کر کے حبش کو چلے گئے تھے اور اس جگہ وہ نکاح ہو گئیں۔ وہاں آنے پر آنحضرت ﷺ نے آپ سے نکاح کیا۔

اسکے بعد ام المومنین خدیجہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے آپ کا نکاح ہوا یہ حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی لڑکی تھیں انہوں نے بھی اپنے خاندان کے ساتھ ہجرت کی۔ جب آپ مدینہ ہو گئیں تو حضرت عمر نے پہلے حضرت عثمان کو اور پھر حضرت ابو بکر کو آپ سے نکاح کرنے کیلئے کہا۔ مگر ان دونوں نے انکار کیا اس کے بعد آپ کا نکاح رسول اکرم ﷺ سے ہوا۔ حضرت عمر کا خود حضرت عثمان اور حضرت ابو بکر کو کہنا ہوتا ہے کہ مسلمانوں کو کس قدر مشکلات تھیں۔ اسکے بعد ام المومنین ام سلمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا ہیں وہ بھی اپنے خاندان کے ساتھ اس پہلے گروہ میں شامل تھیں جو سب سے اول کھار کے غلم سے نکل کر حبش کو ہجرت کر گیا۔ ام سلمہ کے خاندان کی موت کا موجب ایک زلم ہوا جو ان کو ایک لڑائی میں لگا تھا۔ ام سلمہ کے بعد ام حبیبہ سے آپ نے نکاح کیا یہ قریش کے مشہور سردار ابو سفیان کی لڑکی تھیں۔ آپ مع اپنے خاندان کے اس دوسرے گروہ میں شامل تھیں جو ہجرت کر کے حبش کو چلا گیا تھا وہاں کا خاندان عیسائی ہو گیا اور تھوڑے روز بعد مر گیا لیکن وہ اسلام پر قائم ہیں اور آنحضرت ﷺ کے نکاح میں آئیں۔

اسکے بعد آپ کا نکاح ام المومنین زینب بنت جحش سے ہوا جو کوزینہ بن حارث نے جو جو عائشہ رضی اللہ عنہا کی بیوی تھی اسکے بعد آنحضرت ﷺ کے نکاح میں آئیں۔ اسکے بعد ام المومنین زینب بنت خزیمہ سے نکاح ہوا جو ام المومنین کے نام سے مشہور تھیں آپ کا خاندان مدینہ کی جنگ میں شہید ہو گیا تھا۔

آپ خود بھی نکاح سے دو تین ماہ بعد ہی حضور ﷺ کے دور و نفوت ہو گئیں ام المومنین میمونہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا بھی مہاجرات میں سے تھیں اور وہ ہونے کے بعد آنحضرت ﷺ کے نکاح میں آئیں اب اس طہرست سے معلوم ہوتا ہے کہ یہ جس قدر عورتیں آپ کی ازواج مطہرات میں شامل ہوئیں وہ سب کی سب ایسی تھیں جو ابتدا ہی میں مسلمان ہوئی تھیں اور آخر کفار کے ہاتھ سے طرح طرح کے دکھ اٹھا کر جلا وطنی اختیار کر کے دوسرے ملکوں میں انہوں نے پہنچی اور وہ سب کی سب قریش کے شریف خاندانوں سے تھیں۔ ایک طرف تو وہ اپنے گھر یا کہ پھوڑ بھی تھیں۔ اور اپنی جائیداد اور آسائش کو قربان کر کے صرف دین کی خاطر جلا وطنی قبول کی تھی۔ اب دوسری مصیبت یہ آچکی کہ ان کے خاندان جو محنت و مشقت کر کے انکو نکالتے تھے وہ بھی مر گئے یا جنگوں میں شہید ہو گئے اس ضمنی کی حالت میں انکی مخالفت کا اندازہ کون کر سکتا ہے کیا چاہئے تھا کہ ان عورتوں کو کفار بھرتے اور انہیں مجھد یا جانتا تاکہ وہ طرح طرح کے دکھ دیکھ ان کو بد ڈالتے یا کیا درست تھا کہ انکو بغیر خبر گیری کے پھوڑ دیا جاتا تاکہ وہ سخت حال ہو کر تباہ ہو جائیں نہیں تھیں۔ اسلام یہ نہیں چاہتا کہ ان لوگوں کو جنہوں نے مذہب اور دین کی خاطر طرح طرح کے دکھ اٹھائے تھے یہاں اذیت اور کس پیری کی حالت میں جلا ہونے کیلئے پھوڑ دیا جاتا یا تباہ اپنے ہاتھوں سے دشمنوں کے حوالہ کر دیا جاتا تاکہ جو غلم چاہیں ان پر کریں اس ضمنی کی حالت پر رحم کھا کر ہی رسول کریم ﷺ نے انکو اپنی ازواج مطہرات ہونے کا شرف عطا کیا کہ جس عزت کو انہوں نے گمراہ پھوڑ کر دین کی خاطر پھوڑا تھا اس سے بھی وہ چند عزت انکو اس دنیا میں دینا ہے

ام المومنین جو یہ یہ فور ام المومنین صفیہ رضی اللہ عنہا ان عورتوں میں سے تھیں جو قوم کے سرداروں کی لڑکیاں تھیں اور جنگوں میں گرفتار ہو کر مسلمانوں کے قبضہ میں آئیں ان میں سے سابقہ اللہ کر ایک کافر کی بیوی تھیں جو لڑائی میں ہلاک ہوئی۔

مال قیمت میں وہ ثابت ہی تھیں کے حصہ میں آئیں حضرت نے بہت سارا پیسہ دیا کرنے کے علاوہ میں ان سے مانگا جسے دے نہ سکتی تھیں چنانچہ آپ رسول اللہ ﷺ کے پاس آئیں اور سارا قصہ

آنحضرت ﷺ کے دورِ وہابان کیا اور یہ بھی بیان کیا کہ میں اپنے قوم کے سردار کی لڑکی ہوں۔ جس
آنحضرت ﷺ نے مناسب نہ سمجھا کہ وہ اپنی قوم میں واپس جائے تاکہ کوئی اور لڑکا نہ ہو اور خود
رہے وہ کہ آپ نے ان سے نکاح کر لیا کیوں کہ عربوں کی غیرت یہ برداشت نہ کر سکتی تھی کہ
ایک دہن کی لڑکی ہو کر کسی گمراہ جہ کے قادی کے نکاح میں چلائے۔

ام المومنین صفیہ عیبر کی لڑائی میں ہاتھ آئی تھیں پہلے وہ نے آنحضرت ﷺ سے عرض کیا کہ
قہدی عورتوں میں سے ایک مجھے دی جائے جس پر آپ نے اس سے کہا جسے چاہے لیا۔ انہوں
نے صفیہ کو چنا۔ مگر لوگوں نے آنحضرت ﷺ سے عرض کیا کہ وہ ایک سردار کی لڑکی ہے اور
مناسب نہیں کہ آپ کے سوا کسی دوسرے کے قبضہ میں آئے یا نکاح کرے۔ اس پر آپ نے ان
سے نکاح کیا۔

ان آخری دو لوگوں نکاحوں سے صاف ثابت ہوتا ہے کہ ان میں آنحضرت ﷺ کی غرض یہ تھی کہ
ایک تعلق سے وہ نکل کی نکل قوم لہذا سے رک چلائے اور اسی طرح پر وہ قومیں جنکی عمریں جنگوں
میں گذرتی ہیں ایک ہو جائیں یہ امر کہ اس مذہب سے آپ نے پوری پوری کامیابی حاصل کی عیسا
بدی اور صاف ہے کہ جس کے بیان کرنے کی حاجت نہیں۔

نکاح میں یہ تین مہر کاراز: (۱) نکاح میں یہ بات متعین ہوتی کہ مہر مقرر کیا جائے تاکہ
خاندان کو اس عہدہ تعلق کے قوز نے میں مال کے نقصان کا خطرہ لگا رہے اور بلا ایسی ضرورت کے
جس کے بغیر اسکو چاہو نہ ہو اس پر جرات نہ کر سکے پس مہر کے مقرر کرنے میں ایک قسم کی
پابندی ہے۔ (۲) نکاح کی غفلت بغیر مال کے جو کہ شرم گاہ گاہ نہ ہوتا ہے ظاہر میں ہوتی
کیونکہ لوگوں کو جس قدر مال کی حرص ہے اور کسی چیز کی قیمت ہے لہذا ای کے صرف کرنے سے
ایک چیز کا مستعمل بالشان ہونا معلوم ہو سکتا ہے اور اسکے مستعمل بالشان ہونے سے لویا کی آنکھیں اس
فصل کو اپنے لغت بگر کے مالک ہوتے ہوئے دیکھنے سے لعلی ہو سکتی ہیں۔

(۳) مہر کے جب سے نکاح زمانہ میں امتیاز ہو جاتا ہے پتا نہیں کہ اتعانی فرماتا ہے ان یتولوا لکم محضین عیو مصاصین۔ ترجمہ سزا دینا اپنے ماں کے تم اپنی عفت کی حفاظت کرنا ہے اور صرف مستی نکالنے والے نہ۔

یہی وجہ ہے کہ رسومِ ملت میں سے آنحضرت ﷺ نے جو بھروسہ رکھا۔

تین عین ولیمہ کی وجہ، ولیمہ یعنی نکاح کے بعد جو مام لوگوں کو روانی کھلائی جاتی ہے اسکے تقرر میں بہت سی مستلیمیں ہیں۔

(۱) اس سے نکاح کی اور اس بات کی اشاعت اور شہرت ہوتی ہے کہ عی سے دخول کرنا چاہتا ہے یہ اشاعت ضروری ہے تاکہ نسب میں کسی کو دوہم کرنے کی بھی گنجائش نہ ہو اور نکاح زمانہ میں قبیلہ بادیہ الراءے میں معلوم ہو چاہے اور لوگوں کے سامنے اس عورت کے ساتھ جائز تعلق حقیق ہو چاہے (۲) اس عورت سے اور اسکے کنبے کے ساتھ بھلائی اور حسن سلوک پایا جاتا ہے کیونکہ اسکے لئے مال کا خرچ کرنا اور لوگوں کا اس کیلئے جمع کرنا اس بات کی دلیل ہے کہ خانہ کے نزدیک عی کی وقعت اور عزت ہے اور میاں عی کے ماہین اس قسم کے امور الفت قائم کرتے ہیں خاص کر اسکے اول و نسل میں ضروری ہوتے ہیں۔

(۳) ایک حدیث نعت کا حاصل ہونا عماد شکر و سرور خوشی کا سبب ہے اور مال کے خرچ کرنے پر آدمی کو لادہ کرتا ہے اور اس خواہش کی پیروی کرنے سے سلامت کی علامت و خصلت پیدا ہوتی ہے اور عقل کی علامت چلتی رہتی ہے اسکے علاوہ بہت سے فوائد ہیں سو چونکہ سیاست مدینہ و منزلہ و تہذیب نسل و احسان کے متعلق کافی فوائد اور مصالح ولیمہ میں مودع ہیں اس لئے آنحضرت ﷺ نے اسکی طرف رغبت اور حرص دلوائی اور خود بھی اسکو عمل میں لائے اور آنحضرت ﷺ نے ولیمہ کی بھی کوئی حد مقرر نہیں کی مگر اسطورہ کی حد بھری ہے اور آپ نے حضرت صفیہؓ کے ولیمہ میں لوگوں کو طیبہ کھلایا تھا اور آپ نے ہنسی اپنی بیویوں کا ولیمہ دہ جوسے بھی کہا ہے اور فرمایا

ادا دعویٰ احدکم الی الاولیئہ علیہما تھا۔ ترہم۔ یعنی سب تم میں سے کسی کو ولیمہ کی مسئولیت دعوت میں بلایا جائے تو چھوڑ دے۔

فکاح میں تقرر گواہ و اعلان کی وجہ: سب انبیاء و ائمہ اس بات پر متفق ہیں کہ نکاح کو شہرت دینا ہے تاکہ حاضرین کے سامنے اس میں اور ذات میں تیز ہو جاوے۔ لہذا گواہ بھی مقرر ہوئے اور مزید شہرت کیلئے مناسب ہے کہ ولیمہ کیا جائے اور لوگوں کو اس میں دعوت دی جاوے اور اعلان کیا جائے کہ دوسرے لوگوں کو بھی خبر ہو جاوے اور بعد میں کوئی فراموشی پیدا نہ ہو۔

تعمین عقیدہ اور عہد کا سر منڈانے کی وجہ: اہل عرب اپنی اولاد کا حقیقہ کیا کرتے تھے۔ حقیقہ میں بہت سی مصلحتیں تھیں جن کا بیوج مصلحت بلکہ اور یہ اور غیبی کی طرف تھا اس لئے آنحضرت ﷺ نے اس کو قرار کھانڈ بھی اس پر عمل کیا اور لہروں کو بھی اسکی ترغیب دی۔

(۱) ائمہ ان مصلحتوں کے ایک یہ ہے کہ حقیقہ میں اولاد کے نسب کی اشاعت ہوتی ہو۔

(۲) اولاد صحابہ کے معنی اس میں پائے جاتے ہیں۔

(۳) اولاد ایک یہ ہے کہ نصابی میں سب کسی کے چھ پیدا ہو تا تھا تو زور دہانی سے رکھا کرتے تھے اور اسکو لہو یہ کہتے تھے یعنی تھمہ اور انکا قول تھا کہ اسکے سب سے وہ چھ نسلانی ہو جاتا ہے اسی کی مشابہت کے طور پر اللہ پاک نے فرمایا ہے صیغۃ اللہ ومن احسن من اللہ صیغۃ ہیں مناسب معلوم ہوا کہ ملت حنیفہ یعنی ابن محمدی میں بھی اسکے اس فعل کے مقابلہ میں کوئی ایسا فعل پایا جاوے جس فعل سے اس فرزند کا حلقی اور ملت لہو ایسی یا کسمبلی کا تاج ہونا معلوم ہو۔ سو جس قدر افعال حضرت لہو ازہم و اسمعیلی علیہما الصلوٰۃ والسلام کے ساتھ ممکن تھے اور انکی اولاد میں چلے آتے تھے ان میں سب سے زیادہ مشہور حضرت لہو ازہم علیہ الصلوٰۃ والسلام کا اپنے بیٹے حضرت اسمعیلی علیہ الصلوٰۃ والسلام کے ذبح کرنے پر آہوا ہونا اور پھر فرزند اقصیٰ کا اس کے فدویہ میں ذبح عظیم کے ساتھ انعام کرنا ہے اور ان دونوں کے شرائع میں سے زیادہ مشہور راج ہے جس کے بعد

سر منڈانا اور فوج کرنا ہوتا ہے جس ان باتوں میں ان کے ساتھ مشابہت پیدا کرنا ملت عقلی پر نگاہ کرنا اور اس بات سے اطلاع دینا ہوتا ہے کہ اس فرزند کے ساتھ اس ملت کا کھڑا کیا گیا۔

ساتویں روز تقیہ اور نام رکھنے کا سبب : حقیقت میں ساتویں روز کی تخصیص اس لئے ہے کہ وہ اتنا حقیقت میں کچھ فاصلہ ہو یا ضروری ہے کیونکہ سب کتبہ اس زچہ و چہ کی خبر گیری میں اول مصروف رہتے ہیں اس لئے ایسے وقت میں یہ مناسب نہیں ہے کہ ان کو حقیقت کا علم دے کر ان کا غفل اور زیادہ کیا جائے اور نیز یہ کہ لوگوں کو اسی وقت بخیرے دستہاب نہیں ہو سکتے ہمارے حقائق کرنے کی حاجت ہوتی ہے اگر پہلی روز حقیقت مستون کیا جائے تو لوگوں کو وقت ہو لہذا ساتویں روز کا فاصلہ ایک کافی اور معتد بہ مدت ہے اور ساتویں روز نام رکھنے کی وجہ یہ ہے کہ اس سے پہلے لڑکے کا نام رکھنے کی کیا حاجت ہے جو نام رکھنے میں بھی ملت چاہیے تاکہ خوب غور و تدبر کر کے اچھا نام رکھا جاوے۔ عیادت ہو کہ جنت کے سبب کوئی شراب نام مقرر کر دیں۔

چھ کے سر کے بالوں کے بر لہر چاندی تصدق کرنے کا راز : آنحضرت ﷺ نے حضرت فاطمہ کو حضرت حسن کے متعلق فرمایا کہ اے فاطمہ اس کے سر کے بالوں کو منڈا اور اور اسی کے بالوں کے چاندی خیرات کر دو چاندی کے خیرات کرنے میں یہ سبب ہے کہ چھ کا حالت میں بیخوش ہو کر غلیب کی طرف آنا خدا تعالیٰ کی نعمت ہے تو اس پر شکر واجب ہے اور بخیر شکر یہ ہے کہ اس کے دل میں کچھ دیا جاوے اور جنہیں بال جنہ کے نشان کا ہے جسے انکا اور ہونا غلیب کے نشان کے استقبال کی نشانی ہے اس لئے واجب ہو کہ اس کے دل میں چاندی جاوے اور چاندی کی خصوصیت یہ ہے کہ سونا گراں ہے بڑا امر اور کے اور کسی کو دستہاب نہیں ہو گا اور چیزیں کم قیمت ہوتی ہیں چاندی اوسط ہے۔

لڑکے کا حقیقت دو ہجرے سے اور لڑکی کا حقیقت ایک سے ہونے کی وجہ :
آنحضرت ﷺ فرماتے ہیں عن العلام شامان وعن العارفة شاة تربر :- یعنی لڑکے کی

طرف سے وہ بچریاں اور لڑکی کی طرف سے ایک بڑی حقیقت میں دینی چاہیے اسکا سبب یہ ہے کہ لوگوں کے نزدیک یہ نسبت لڑکیوں کے لڑکوں کا قطع زیادہ تر ہے لہذا وہ کا ذبح کرنا زیادتی اور اسکی عظمت کے مناسب ہے حضرت ابن قیم اسکے بارہ میں لکھتے ہیں۔ امر التفصیل فیہا تابع لسرف الذکور وما میروہ اللہ تعالیٰ بہ علی الانسی ولما کانت الذصغہ علی الولد اتم والسرور والفرحہ بہ اکمل کان المشکر علیہ اکثر فانه کلمہ کثری المعن کان شکرہا اکثر ترجمہ۔ یعنی لڑکے کیلئے وہ سے اور لڑکی کیلئے ایک بڑی سے حقیقت کرنے کی وجہ یہ ہے کہ لڑکے کو لڑکی پر فضیلت ہے اور جب لڑکے کے وجود سے والد پر تمام کمال نعمت اور سرور خوشی زیادہ ہوتی ہے تو اس پر حرم شکر واجب ہے کیونکہ جب زیادہ نعمت ملی تو زیادہ شکر کرنا لازم آتا ہے۔

عورت کے نکاح میں اجازت ولی کی حکمت: آنحضرت ﷺ فرماتے ہیں اصلاح الاوطالی۔ ترجمہ۔ یعنی ولی کے بغیر نکاح نہیں ہوتا اسکی وجہ ہے کہ نکاح میں عورتوں کو حکم کرنا روا نہیں ہے کیونکہ وہ ناقصات العقل ہوتی ہیں اور انکے فکر ناقص ہوتے ہیں اسلئے ہر اوقات عقلیت بظرف انکو راہبری نہ ہو سکے گی۔ (۲) دوسری وجہ یہ ہے کہ عاںیاء حسب کی حماحت نہ کریں گی اور ہر اوقات انکو غیر کفو کی طرف رغبت پیدا ہو سکتی اور اس میں قوم کی عار ہے پس ضروری ہوا کہ ولی کو اس باب میں حکم و ظل دیا جائے تاکہ یہ مفید رہے ہو۔

(۳) لوگوں کا عام طریق یہ ہے کہ مرد عورتوں پر حاکم ہوتے ہیں اور تمام عہدہ دست انھی کے متعلق ہوتا ہے اور سارے فریض مردوں ہیں کے متعلق ہو کرتے ہیں اور عورتیں ان کی مقید ہوتی ہیں۔ چنانچہ خدا تعالیٰ فرماتا ہے۔ المرءات قوامون علی النساء بما فضل اللہ بعضہم علی بعض۔ ترجمہ۔ یعنی مرد عورتوں پر قوام ہیں اس لئے کہ خدا نے بعض کو بعض پر فضیلت دی ہے۔ (۴) نکاح کے اندر ولی کی شرط مقرر ہونے میں عاںیاء کی عزت و حرمت ہے اور عورتوں

کو اپنا نکاح طودِ طود کرنے میں بے عزتی ہے جس کا دل بے حیائی پر ہے اور اس میں اولیاء کی مخالفت اور انکی بے قدری ہے۔ (۵) یہ بات واجبات سے ہے کہ نکاح کو زنا کے ساتھ شہرت سے امتیاز اور شہرت کی بے عزت صورت یہ ہے کہ عورت کے اولیاء نکاح میں موجود ہوں البتہ کسی صورت میں دلی کا ہونا مستحب اور کسی صورت میں شرط ہے تفصیل کیلئے فقہ کا فن ہے۔

مرد پر بعض اہل قرابت عورتوں کے حرام ہونے کی وجہ: (۱) سگاست مزاج کا یہ انتہاء ہے کہ آدمی کو اس عورت کی جاہد و قیمت نہ ہو جس سے وہ طوریہ ہو اسے یا اس سے وہ عورت پیدا ہوئی ہے یا وہ دونوں ایسے ہیں جیسے ایک باہر کی دو شاخیں یعنی بھائی بہن۔

(۲) جب اقارب خود ایسی قرابت والی عورت سے نکاح کر لیا کرتے تو کوئی شخص عورتوں کی طرف سے ان اقارب سے حقوقِ زوجیت کا مطالبہ کرنے والا نہ ہو تاہم جو دیکھ عورتوں کو اس بات کی محنت ضرورت ہے کہ کوئی شخص انکی طرف سے حقوقِ زوجیت کا مطالبہ کرنے والا ہو اور یہاں پر جہاں جس میں یہ دونوں وصل پانے جاویں یعنی ر قیمت نہ ہو یا اور کسی کا اس سے مطالبہ نہ کر سکتا طبعی طور پر مرد اور اسکے ماں بہن 'بیٹی' 'پو بھی' 'خال' 'بھئی' 'سہانچی' میں واقع ہوا ہے پس یہ سب حرام ہو گئیں۔ (۳) اسی طرح رضاعت بھی موجبِ حرمت ہے کیونکہ دودھ پلانے والی عورت شش ماں کے ہو جاتی ہے اس لئے کہ وہ اشکالِ بدن کے اجتماع اور انکی صورت قائم ہونے کا سبب ہوتی ہے پس وہ بھی فی الحقیقت ماں کے بعد ماں ہے اور دودھ پلانے والی کی ماں اور بہن کھانسیوں کے بعد اسکے بہن بھائی ہیں۔ پس اسکا نکاح ہو یا اور اسکا چچی، زوجہ، خالو اور اسکے ساتھ جماع کرنا ایسی بات ہے جس سے فطرتِ سلیمہ نفرت کرتی ہے۔

(۴) اسی طرح دو بہنوں کا جماع کرنا حرام ہے کیونکہ ان میں سوکن پنے کا سہ منفر بالحدوات ہوگا جس سے قطع رحم ہو گا اور یہ امر اللہ تعالیٰ کو منظور نہیں ہے کہ اہل قرابت میں قطع رحم ہو اور علیٰ ہذا امتیاز اس قسم کی قرابتِ ولدی قریبی عورت کا آپس میں ایک شخص کے نکاح میں ہونا حرام

ہوا چنانچہ آنحضرت ﷺ فرماتے ہیں لا یجمع بین المرأة وعصمتها ولا بین المرأة وعلما
عصمت یعنی نہ ایک عورت اور انکی پیمو بھی کو جمع کرو اور نہ ایک عورت اور انکی عقل کو جمع کرو۔

(۵) اسی طرح مصاہرت باعث حرمت ہے اسلئے کہ اگر لوگوں میں اس قسم کا دستور چلانی ہو کہ
ہاں کو اپنی بیٹی کے خانہ کی طرف اور مردوں کو اپنے خوں کی بی بیوں کی اور اپنی بی بیوں کو بیویوں
کی طرف رغبت ہو جو کہ علت نکاح کی صورت میں مختل ہے۔ تو اس تعلق کے قوت نے یا اس
تعلق کے قتل کرنے میں حکمت جو نکاح مرد مسلم یا یہودی یا نصرانیہ نہ بالعکس انکی طرف
طواہل ہائے کوشش کیا کریں۔

مسلمان مرد کا نکاح کسی یہودیہ عیسائی سے اس لئے جائز ہے کہ خدا تعالیٰ نے مرد کو غالب اور
عورت کو مطلوب قرار دیا ہے تو ایسے نکاح اور ازدواج سے یہ صورت ہوگی کہ توحید کے نقض کو باہا
اور غالب اور شرک، کفر کو پست و مغلوب کر کے دکھایا گیا جس میں یہ ایمان ہے کہ توحید شرک پر
غالب ہے اور واقع میں ایسا ہی ہوتا ہے کہ چونکہ مرد کی تاثیر قوی ہوتی ہے اس لئے عورتیں خود
یہودی ہوں یا عیسائیں وہ اکثر مسلمان ہو جاتی ہیں مگر انکے برعکس ہرگز عیسائی ہو سکتا کہ مسلمہ
عورت کا نکاح یہودی یا عیسائی مرد کے ساتھ کسی مجبوری کے سبب جائز ہو سکے کیونکہ یہ امر
حکمت الہی تکلاف ہے وچ یہ ہے کہ اگر ایسا نکاح جائز ہو تا تو یہ نقض یوں دکھائی دیتا کہ شرک باہا
اور توحید پست ہوئی اور اس امت خدا کی غیرت اور اس کا قانون قدرت و حکمت اور حضرت محمد
رسول اللہ ﷺ کی حکمت و انضیلت مانع ہیں کیونکہ ایسے ازدواج سے افضل الرسل و خاتم الانبیاء
وسید الد آدم حضرت محمد رسول ﷺ کے دین کو پست و مغلوب دکھانا چاہتا۔ سو یہ امر خدا کو منظور
نہیں ہے۔

پار مغلوباں مشو تو اسے نوی

پار امر شو کہ تا غالب شو

باب الطلاق

حکومت جو از طلاق ذمہ: واضح ہو کہ طلاق مرئی لفظ ہے جس کے معنی اردو زبان میں کھولنے یا چھوڑ دینے کے ہیں اور اصطلاح شریعت اسلام میں مرد کا اپنی عورت کو اپنے نکاح سے خارج کر دینا ہے۔ جس کا مطلب تفصیل ذیل سے عقلی معلوم ہو گا۔

واضح ہو کہ مسلمانوں میں نکاح ایک معاہدہ ہے جس میں مرد کی طرف سے اسلام اور مرد اور تعدد جان و نقد و حسن معاشرت شرط ہے اور عورت کی طرف سے عفت اور پاکدامنی اور نیک بھالی اور فراہم دہی کے عمدہ شرائط ضروری ہیں ایسا ہی یہ معاہدہ بھی شرطوں کے نوسنے کے بعد قابلِ نسخ ہو جاتا ہے صرف یہ فرق ہے کہ اگر مرد کی طرف سے شرائط نوت جائیں تو عورت خود خود نکاح توڑنے کی ہمت نہیں رکھتا مگر عورت کے ذریعہ سے نکاح کو توڑ سکتی ہے جیسا کہ اہل کے ذریعہ سے نکاح کر سکتی ہے اور یہ کی اختیار اس کی فطرتی شناختی اور تہمتان عقل کی وجہ سے ہے لیکن مرد جیسا کہ اپنے اختیار سے معاہدہ نکاح کا بنا سکتا ہے ایسا ہی عورت کی طرف سے شرائط نوسنے کے وقت طلاق دینے میں بھی خود مختار ہے سو یہ قانون فطرتی قانون سے جو مغرب مذکور ہو تا ہے مناسبت اور مطابقت رکھتا ہے گویا کہ اس فطرتی قانون کی عکسی تصویر ہے کیونکہ فطرتی قانون سے اس بات کو تسلیم کر لیا ہے کہ ہر ایک معاہدہ شرائط قرار دہ کے فوت ہونے سے قابلِ نسخ ہو جاتا ہے اور اگر فریقہ ثانی نسخ سے مانع ہو تو وہ اس فریقہ پر حکم کر رہا ہے جو فقہان شرعہ کی وجہ سے نسخ ممد کا حق رکھتا ہے سو جب ہم سوچیں کہ نکاح کیا چیز ہے تو پھر اس کے اور کوئی حقیقت معلوم نہیں ہوتی کہ ایک پاک معاہدہ کی شرائط کے نیچے وہ انسانوں کا نہ لگی سہر کرنا ہے اور جو شخص شرائط عقلی کا مرتکب ہو وہ عدالت کی رو سے معاہدہ کے حقوق سے محروم رہنے کے لائق ہو جاتا ہے اور اسی محرومی کا نام دوسرے لفظوں میں طلاق ہے جس میں مطلقہ کی حرکات سے شخص طلاق دہندہ کو کوئی بد اثر پہنچتا یا دوسرے لفظوں میں یوں کہہ سکتے ہیں کہ ایک عورت کسی کی

منکوحہ ہو کر نکاح کے معاہدہ کو کسی ایسی بد چلتی سے توڑ دے تو وہ اس عضو کی طرح ہے جو گندہ ہو گیا اور سڑ گیا یا اس دانت کی طرح جس کو کیزے نے کھا لیا اور وہ اپنے شدید درد سے بہرہ وقت تمام بدن کو ستا تا اور دکھ دیتا ہے تو اب حقیقت میں وہ دانت دانت نہیں ہے اور نہ وہ متعفن عضو حقیقت میں عضو ہے اور سلامتی اسی میں ہے کہ اس کو اکھاڑ دیا جائے اور کاٹ دیا جائے اور پھینک دیا جائے یہ سب کارروائی قانون قدرت کے موافق ہے عورت کا مرد سے ایسا تعلق نہیں ہے جیسے اپنے ہاتھ اور پاؤں کا لیکن تاہم اگر کسی کہتا تھا یا یاں کسی آفت میں مبتلا ہو جائے کہ اعضاء اور ڈاکٹروں کی مدد سے اس پر اطلاق کر لے کہ زنگہ گی اس کے کاٹ دینے میں ہے تو ہلکا تم میں سے کوئی ہے کہ ایک جان کے چھانے کے لئے اس کے کاٹ دینے پر راضی نہ ہو پس اگر ایسا ہی کسی کی منکوحہ ایسی بد چلتی اور کسی شرارت سے اس پر وبال اڑے تو وہ ایسا عضو ہے کہ بھوکا ہے اور سڑ گیا ہے اور اب وہ اس کا عضو نہیں ہے اس کو کاٹ دے اور گھر سے باہر بھجھا دے ایسا نہ ہو کہ اس کا زہر اس کے سارے بدن میں پھیل چلائے اور تجھے ہلاک کر دے پھر اگر اس کا لے ہوئے اور زہر پلے جسم کو کوئی پرندہ یا درندہ کھالے تو اس کو اس سے کیا کام کیونکہ وہ جسم تو اس وقت سے حیرا جسم نہیں رہا جبکہ اس نے اس کو کاٹ کر پھینک دیا۔

وہ ہذا تمہیں جن کی پابندی کے بعد ہر ایک شخص طلاق دینے کا مجاز ہو

سکتا ہے۔ قال الله تعالى والى الخافون نشوزهن فعهن واهجرهن فى المصاحح

واضرورهن كان اطلعكم فلايتقوا عليهن سبلاً ان الله كان علياً كعبيراً فان اخطم

شفاقى ينها فابعدوا حكماً من اهلها وحكماً من اهلها ان يربد اصلاحاً بوفق الله ينها

ان الله كان عليماً حسيباً ترجمہ :- یعنی جن عورتوں کی طرف سے نامواقت کے آثار ظاہر ہو

جائیں پس تم ان کو نصیحت کرو اور خواجگہاں میں ان سے جدا ہو اور ان کو مارو یعنی جیسی جیسی

صورت اور مصلحت پیش آوے پس اگر وہ تمہاری سمجھ اور ہو جائیں تو تم بھی ان کے طلاق یا

سزا دینے کی راہ مست نکالو وقت قد تعالیٰ صاحب ملو صاحب کہہ رہا ہے اور پھر اگر میان دعا کی حالت کا اندیشہ ہو تو ایک منصف خانہ کی طرف سے مقرر کردہ اگر منصف صلح کرانے کے لئے کوشش کریں گے تو قد تعالیٰ بن میں باہمی موافقت دینے کا ایک اندہ تعالیٰ علم والا خبر والا ہے۔

عورت کے لئے مقرر عدت کی وجہ عدت کے باوجود رحم کے احوال کا معلوم کرنا ہے چنانچہ جس عورت کو قمل مزاج حقیقی یا کھلی طلاق ملے اس کے لئے کوئی عدت مقرر نہیں ہے قد تعالیٰ فرماتا ہے یا ایہا الذین امنوا اذا نکحتم المؤمنات ثم طلقتموهن من قبل ان یمسوهن فما لکم علیہن من عداۃ تعدونہا فتموهن وسرحوهن مواءماتاً حمیلاً ترجمہ۔۔ یعنی اے ایماندارو جب تم سو من عورتوں سے نکاح کرو پھر ان کو مس کرنے سے پہلے طلاق دیدو تو تمہارے لئے ایسی عورتوں پر کوئی عدت نہیں ہے جس کی تکلیف پوری کراؤ پس ان کو یکدم مال دیکرا بھی طرح سے رخصت کرو۔

عورت کو خاوند کا سوگ چار ماہ دس دن رکھنے کی وجہ اس حکمت کی شرح تفصیل کے ساتھ فرق عدت موت عدت طلاق کے بیان میں ملاحظہ فرمائیے اور بقدر ضرورت یہاں بھی کسی قدر لکھی جاتی ہے۔ اعلیٰ ان الاحداد علی الزوج تابع للعدۃ وهو من مفضیلتها ومکملاتها فان المرأة اما تحتاج الی التزین والنحمل والنظیر لتجیب الی زوجها ومجس ما بینہا من العشرۃ فاذا طاعت الزوج وعدت منہ وہی لم تقل الی زوج اخر فاذا فلفظی تمام حقوق الاول و تاکید المنع من الثانی قبل بلوغ الكتاب اجله ان تمنع مما تصعبہ النساء ازواجہن مع ما فی ذلک من سد المریعة الی طمعہا فی الرجال وطمعہم فیہا بالریئۃ والحساب والنظیب فاذا منع الكتاب اجله صارت محتاجۃ الی ما یرغب فی نکاحہا فابیح لہا من ذلک ما یباح لذات اللوح فلا یسوی البیغ فی الحسن من ہذا المنع والاباحۃ ولو اقرحت عقول العالمین لم تطرح شیئاً حسن منہ

ترجمہ۔ واضح ہو کہ خانہ کا سوگ تابع عدت کے ہے اور یہ سوگ عدت کے مختلف اوقات اور اس کے مہلکات میں سے ہے کیونکہ عورت کو اپنے خانہ کی زندگی میں اپنی ذہنت و عقل و عقل کی ضرورت پڑتی ہے کہ اپنے خانہ کی محبوب و مرغوب رہے اور ان دونوں میں حسن معاشرت ہو پس جب خانہ مر جائے تو وہ اس کی عدت میں رہے اور دوسرے شوہر کے پاس نہیں پہنچے خانہ کا اتمام حقوق اور دوسرے شوہر کا یہ عدت کامل ہونے سے پہلے پہلے نکاح سے روکنا یہ اس کو مقتضی ہے کہ عورت کو ان امور سے منع کیا جائے جو عورتیں اپنے خانہوں کے لئے کیا کرتی ہیں نیز اس میں اس بات کا مسدود کرنا ہے کہ عورت کو مردوں کی طبع ہو اور اس کی ذہنت و اسباب کے ملاحظہ سے اس کی طرف مرد کی چشم طبع دراز ہو پس جب عدت ختم ہو جائے تو وہ ان امور کی ممانعت ہوئی جو محرک و مرغوب فی النکاح ہیں پس اس عورت کو وہ امور مباح ہونے جو خانہ والی عورت کے لئے مباح ہو آکر رہے ہیں پس یہ ممانعت اور بلاحت نہایت حسن و مناسبت پر واقع ہوئی ہے تمام عالم کی عقلیں بھی اس سے بھڑ تھوڑ نہیں کر سکیں۔

عدت طلاق ایک حیض سے زیادہ ہونے کی وجہ سوال۔ جب کہ رحم کے خالی یا مال ہونے کا علم ایک ہی حیض سے معلوم ہو سکتا تھا تو پھر طویل عدت کے مقرر ہونے کی کیا وجہ؟

جواب۔ اس کی وجہ ان مصالح الہی سے معلوم ہو سکتی ہے جن کے لئے یہ مشروع کی گئی ہے عدت کے مشروع ہونے میں چند مصلحتیں ہیں جنس کی تفصیل ذیل میں ہے۔

(۱) تم کے خالی ہونے کا علم حاصل کرنا تاکہ وہ مخلوق کا تلف نہ مل جائے سے احتیاط نسب ہو کر باعث فساد نہ ہو عدم اقرار عدت کی وجہ سے ایسے فساد اور پھلا ہوتے جن کو شریعت و حکمت الہی مانع ہے۔

(۲) طلاق دینے والے کے لئے لہذا زمانہ مقرر کرنے کی وجہ یہ ہے کہ مرد طلاق دینے سے غلام ہو

کر عورت کی طرف رجوع کر سکے۔

(۳) تقرر عدت کی وجہ خلوہ کے حق ہونا اور خلوہ خلوہ کے فوت ہو جانے سے تاہست کا اٹھنا ہے اور یہ امر زینت اور آراستگی کے ترک کرنے سے ہوتا ہے اس سے واضح ہوا کہ عدت محض رات و رجم کا علم حاصل کرنے کے لئے نہیں ہوتی بلکہ یہ امر بھی عدت کے بعض مصالح و حکمتوں میں سے ہے باقی اور مصالح بھی ہیں جو ایک شخص کی عدت میں حاصل نہیں ہو سکتیں۔

اقسام عدت (۱) حاملہ کی وہ طبع حمل تک (۲) عدت جہ و مہرگ شوہر چار ماہ و دس دن (۳) عدت مطلقہ تین ماہ (۴) عدت آبرہہ صلیبہ جس کو زیادہ عمر کے سبب یا کم عمری کے سبب جھیننا آتا ہو تین ماہ ہے۔

عدت بیوہ کی دوسری مدتوں سے مختلف ہونے کی وجہ عدت جہ و مہرگ کی چار ماہ اور دس دن مقرر ہے خواہ خلوہ کیا ہو یا نہ کیا ہو پس ایک گروہ کا خیال یہ ہے کہ عدت کا حکم محض اطاعت کے لئے ہے اس میں عقل کو دخل نہیں ہے مگر یہ بات اس وجہ سے باطل ہے اگر ایسا ہوتا تو یہ عبادت مجدد ہوتی حالانکہ عدت محض عبادت نہیں ہے کیونکہ عدت چھوٹی اور بڑی اور مطلقہ اور زوجہ اور مسلمہ و ذمیہ سب کے حق میں لازمی ہے اور یہ سب مختلف نہیں ہیں نیز اس میں نیت کی ضرورت نہیں اور عبادت میں نیت ضروری ہے پس لامحالہ اس میں مصالح ضرور ہیں اور اس کے ساتھ ہی سب اس میں اطاعت الہیہ کا قصد ہو لہذا ایمان معنی عبادت سے بھی خالی نہیں سو بعض مصالح تو نفس عدم میں ہیں جن کا حاصل رعایت حقوق زوج اول و اولاد اور رعایت حق شوہر جانی تکمیل فقرب آتی ہے پس پہلے خلوہ کی رعایت تو اس میں ایک یہ ہے دونوں میں جو تعلق نکاح کا تھا اس کا احترام اور وقت باقی رہے اور دوسری رعایت یہ ہے کہ اس میں وہی حقوق اور معاہدہ مصابحت کی کسی قدر وفاداری کا اٹھنا ہے اور تیسری یہ ہے کہ اس سے ظاہر ہو سکے اور نسب میں بھی اشتباہ نہیں ہو جائے خلوہ کی حرمت و عزت کا اس کی وفات کے بعد قابل لحاظ ہونا

اس سے معلوم ہو سکتا ہے کہ نبی صلی اللہ علیہ وسلم کی عزت و حرمت کے حقوق کی وجہ سے آپ کی رعایت کے بعد آپ کی عورتوں سے اور لوگوں پر عدم کے لئے نکاح کرنا حرام ہو گیا مادہ آپ کی حرمت کے اس میں یہ بھی حکمت ہے کہ آپ کی دنیاوی عورتیں آخرت میں بھی آپ کی لذت و مسرت ہو گئی اس لئے بھی آپ کے بعد کسی کو ان سے نکاح کرنا حلال نہیں سمجھا۔ مگر یہ امر دوسروں کے لئے نہیں ہے کیونکہ نہ اس قدر کسی شوہر کا احترام ہے اور نہ یہ حق ان کے حق میں معلوم ہے پس اگر اس حالت میں خلافت کے مرنے سے عورت کو دوسرا نکاح کرنا حرام ہو جاتا تو اس کو سخت ضرر لگتی ہو تا مگر ہاں نکاح جانی تو حلال ہوا مگر کچھ احکام حافظہ احترام شوہر مشروع ہونا چاہیے اور زمانہ جاہلیت میں اس احترام حق شوہر اور عزت عقد نکاح میں بہت مہاند کرتے تھے سال بھر تک عورت دوسرا نکاح نہ کرتی اور نہ گھر سے باہر نکلنے کی مجاز ہوتی تھی اور اس میں بھی حرج تھا اس لئے نہ اقصائی اس مہاند کو اپنی شریعت حد کے ذریعہ سے جو کہ محض نعمت و حرمت و مصلحت و حکمت پر مبنی ہے تخفیف کر دیا اور جائے اس کے چار مہینے اور دس دن کی حدت مقرر کی جو سراسر حکمت و مصلحت پر مبنی ہے کیونکہ اس حدت میں رجم میں چھ کا ہونا یا نہ ہونا معلوم ہو سکتا ہے کیونکہ چالیس دن تک رجم میں لفظ ہوتا ہے پھر چالیس دن تک سو (خون) کی پانچلی ہوتی ہے پھر اس کے بعد چالیس دن میں چھ چار ہوتا ہے اور یہ چار سے چار مہینے ہوتے ہیں پھر اس حدت کے بعد چوتھے طہر میں روح پھوگی جاتی ہے جس کا اندازہ دس دن ہے کہ اگر حمل ہو تو حرکت سے ظاہر ہو سکے اور یہ مصلحت حدت کی اس حدت خاص کی ہے۔ انظر فی شرح شارح نے ۱۰۰ کی حدت چار مہینے اور دس دن اس لئے مقرر کی ہے کہ چار مہینے کے ضمن چلے ہوتے ہیں اور اس حدت کے اندر جنین میں جان چلتی ہے اور حرکت کرنے لگتا ہے اور دس روز اس پر اور زیادہ کئے گئے تاکہ وہ حرکت چار سے طور پر ظاہر ہو جاوے اور نیز یہ حدت حمل متعلقہ کی نصف ہے جس میں حمل چار سے طور پر ایسا ظاہر ہو جاتا ہے کہ ہر شخص دیکھ کر جان سکتا ہے اور مطلقہ کی حدت میں چھ کے محسوس ہونے کا لگنا نہیں کیا گیا بلکہ اس کی حدت محض سے مقرر کی گئی اور اس حدت کی چار مہینے دس

دن سے مقرر رہی تھی۔ اور جو فرق یہ ہے کہ مطلقہ میں تو حق اور یعنی خاندانہ زائد ہوتا ہے جو نسب کی سہولت اور قرآن کو جاننا ہے پس ممکن ہے کہ عورت کو اس چیز کے ساتھ عدت گزارنے کا حکم دیا جائے جس کا علم اس کے ساتھ خاص ہے اور خاندانہ اس کو اس میں سمجھ اور سمجھ کے واقعہ میں خاندانہ موجود نہیں ہو تا اور دوسرا شخص اس کا ماضی حال اور قریب ایسا معلوم نہیں کر سکتا جس طرح خاندانہ پہچان سکتا تھا پس ضروری ہو اگر اس کی عدت ایسی مقرر کی جاوے جس کے معلوم کرنے میں قریب و امید سب برابر ہوں اور وہ چیز کے محسوس ہونے کی عدت ہے اور اس کے فرق سے عدت مطلقہ میں یہ شہدہ کیا جاوے کہ جب وہی حمل کا ظاہر دینے میں معلوم کرنا نہیں ہے پھر محض رحم کا خالی ہونا ہے تو وہ ایک شخص سے بھی معلوم ہو سکتا ہے جو اب یہ ہے کہ صرف عدت رحم مقصود نہیں ہے اگرچہ عدت رحم بھی عدت کے بعض ضروری مقاصد میں سے ہے پھر عدت میں متعدد حکمتیں ہیں اور وہ جب معلوم ہو سکتی ہیں کہ جبکہ وہ حقوق معلوم ہوں جو اس میں طوط ہیں چنانچہ عدت میں ایک تو خدا تعالیٰ کا حق ہے اور وہ اس کے حکم کی اطاعت اور اس کی طلب رضائے اور دوسرا طلاق دینے والے خاندانہ کا حق ہے اور یہ حق اس کے رجوع کرنے کے لئے لہذا لہذا نصیر لیا غلور جہت سے یا نکاح جدید ہے تیسرا حق زوجہ کا ہے اور یہ حق اس کا اختیاق نفقہ و سکونت خاندانہ پر ہے جبکہ عورت عدت میں ہو اور چوتھا حق چھوٹے کا ہے یہ حق چھوٹے کے ثبوت نسب کی احتیاط کے لئے ہے تاکہ اس کا نسب دوسرے کے ساتھ نہ مل جائے۔ پانچواں حق دوسرے خاندانہ کا ہے اور وہ یہ ہے کہ وہ اپنا پہلی دوسرے کی تکلیف کو دیکھ کر ضائع نہ کرے اور شارع علیہ السلام نے ہر ایک کے مناسب خاص خاص انجام بھی مرحب فرمائے چنانچہ رعایت حق خاندانہ میں یہ امر قرار پایا ہے کہ زوجہ گھر سے باہر نہ جاوے اور نہ خاندانہ اس کو باہر نکالے اور نیز یہ حق نصیر لیا ہے کہ عدت کے اندر اگر زوجہ سے طلاق دینے والا رجعی طلاق میں رجوع کر لے تو زوجہ مانع نہ ہو اور زوجہ کا حق خاندانہ پر نفقہ و سکونت کا صیبا کرنا ہے۔ اور حق چھوٹے کا ہے کہ اس کے نسب کا ثبوت ہو جاوے اور وہ اپنے باپ سے حق ہو اور دوسرے سے حق نہ ہو اور دوسرے خاندانہ کا حق یہ ہے کہ

اور پھر تدریجاً تم کا ہم ہونے کے بعد عورت سے دخول کر کے مہوار تم میں پہلے شخص کا چہ
 پور اس طرح سے انکشاف ہو چاہے۔ جس مطلق کے لئے تمیں بیض مقرر کر جان حقوق کے
 بموجب کی رعایت و تکمیل کے لئے ہے کہ ان میں بعض حقوق ایک بیض میں حاصل نہیں ہو سکتے
 اور عدت طلاق میں جو حقوق بیان کئے ان میں کچھ طلاق و عادت میں مشترک بھی ہیں چنانچہ حامل
 سے معلوم ہو سکتے ہیں پس اس تقریر سے اس وعدہ کا بھی ایفاء ہو گیا جو شروع شروع سرنخی کے قریب
 لگا گیا تھا کہ تفصیل مقرر آتی ہے۔

حرمیت نکاح متعدّد کی وجہ (۱) حدیث کی رسم جاری ہونے سے نسب کا خلا مطلق ہونا اور اس
 کی جہی و ربہ کی لازم آتی ہے کیونکہ اس حدیث کے گذرتے ہی وہ عورت خداوند کے قبضہ سے
 خارج ہو جاتی ہے اور عورت کو اپنا اختیار ہوتا ہے اب معلوم نہیں کہ وہ جب حاملہ ہوگی تو کیا
 کرے گی اور حدیث کا تضابط نکاح صحیح جو شریعت میں مستقر ہے اس میں اہل لازم آتا ہے کیونکہ
 کفر نکاح کرنے والوں کی خواہش غالباً شوہر شریک و گاہ کامیاب را کرنا ہوتا ہے۔

(۲) صرف جماع کی اجرت سے طبیعت انسانی سے بالکل انسان باہر ہو جاتا ہے اور بے حیائی ہے اس
 وقت سلیم بالکل پسند نہیں کرتا جاتی بلکہ جو دن قہار کے اند میں چندے اس کی اجازت ہونا جس
 سے کھد انظر اور نکاح پر قادر ہو سکتے سے تھا جیسے یہ کی غصہ میں اجازت ہو جاتی ہے پھر ان
 نتائج کے سبب ہیٹ کے لئے مضموع ہو گیا۔

حدیث سے صحیح النساء کی حرمت حدیث محمد بن عبداللہ ابن الصخر حدیثنا
 بنی عبدالعزیز بن عمر حدیثنا التریح بن سورة الجہنی ان اباه حدیثہ انہ کان مع
 رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم فقال بابیہا الناس انی کنت اذنت لکم فی
 الاستمتاع من النساء ان اللہ قد حرم ذلك الی یوم القیامہ فمن کان عندہ منہن شیئ
 فلیحل مسلماً ولا یأخذوا منہن ما التبتوا من شیئاً صحیح مسلم مع نووی صفحہ ۵۱۴۔

ترجمہ۔ یعنی آنحضرت ﷺ نے فرمایا کہ اسے نوگو میں نے تم کو صومہ النساء کی پہلے ایہادت دی تھی اب خدا تعالیٰ نے صومہ النساء کو قیامت تک حرام کر دیا ہے جس جس کے پاس ان عورتوں میں سے کوئی عورت ہو تو اس کو چھ روزے اور جو بچہ تم نے ان کو پاس میں سے کچھ مت لو۔ صحیح مسلم حدیثنا مالک بن اسمعیل قال حدثنا ابن ابی عمیر الدہری بقول احمد بنی الحسن بن محمد بن علی وانصرہ عبداللہ بن ابیہ ان علیا قال لاس غیاس ان النبی ﷺ بھی عن المعتز وعن لعموم الحمیر الاھلبہ زمن خیر بخاری وعن سفیان بھی عن النکاح المعتز فصح البخاری ترجمہ۔ یعنی حضرت علی رضی اللہ عنہ نے ان عہدوں کو فرمایا کہ نبی صلی اللہ علیہ وسلم نے صومہ النساء اور قرآنی کے گوشے سے خیر کے ایام میں منع فرمایا اور سفیان سے روایت ہے کہ نکاح صومہ ممنوع ہو چکا ہے۔

صومہ النساء کی تردید پر وجدانی دلیل: ہر شریک الطبع مہلک شریک قوم کا امیر آدمی اپنی جگہ سوچے کہ اگر شریک صومہ النساء جائز رہے گا تو اب ہے تو پھر نکاح میں اور اس میں یہ فرق کیوں ہے کہ نکاح کی نسبت کرنے میں اپنی بیٹی بس کی طرف تو عدا نہیں آتی مگر کیا لاسے شریک مجالس میں یہ کہہ سکتے ہیں کہ ہماری ماں اور بیٹیوں اور بہنوں نے اسے منع کئے ہیں۔ وجدانی رنگ میں یہ لاجواب دلیل ہے اور یقین تو یہ ہے کہ جیسے قرآن و تہذیب میں سرسخت مبارکباد قبول کرتے ہیں اس طرح اپنی اقارب عورتوں کے صومہ کے متعلق اس مبارکباد کو برداشت نہ کر سکیں یہ تو عقلی دلیل تھی اور نقلی تو یہ بیان ہو جائیں اور اور بھی نکھی جاتی ہیں۔ عن علی بن ابی طالب ان النبی صلی اللہ علیہ وسلم بھی عن معتز النساء ترجمہ۔ یعنی علی رضی اللہ عنہ نے اس حدیث کی صحیح کی اور حرمت صومہ پر صحابہ کرام کا اتفاق تھا اہل بیت حضرت ابن عباس قدیم نکی روایات اور عادات کے باعث چند روز بخوار ہے مگر جب ان کو شریعی حکم کی اطلاع پہنچی تو تہذیب صومہ سے رجوع کیا اور صومہ

کی حرمت تمام خلیہ اور شاقیہ اور بائیس اور حجاب اور ابلہ بیٹ اور صوفی اور ام میں متعلق ملیہ ہے۔

مستورات اور مردوں کے لئے اسلامی پردہ کے وجود پر وہ کے متعلق اسلام نے مرد و عورت کیلئے ایسے ایسے اصول بتائے ہیں جن کی پابندی سے ان کی عقیدت و عزت پر حرف نہ آنے اور وہابی کے اس کتاب سے محفوظ اور مصون رہیں چنانچہ اللہ تعالیٰ فرماتا ہے۔ *قل للمؤمنین یغضوا من ابصارهم ویحفظوا فروجهم ذلک ازکی لهم ان اللہ عسیر سما یسعون وقل للمؤمنات یغضوا من ابصارهم ویحفظوا فروجهم ولا ینذبن زینتھن الا ما ظہر منها ویبصرن بخصرھن علی حیوہن الی قولہ تعالیٰ ولا یصومن نار حلقھن لیعلم ما یحلیھن من زینتھن واولو الی اللہ جمیعاً ایہ المؤمنون لعلکم تفلحون ولا تقرنوا الرمانہ کما کان فاحشۃ وساء سیئلاء ولیستغضب اللہن لا یحدون نکاحاً۔* اور ہانیہ اللہ عوہا ما کتبناھا علیہم۔ الی قولہ تعالیٰ *فما عوہا حق وعلیہا۔* ترجمہ۔ یعنی ایماندار مردوں کو کہہ دے کہ آنکھوں کو نا محرم عورتوں کے دیکھنے سے چھپا کر رکھیں یعنی ایسی عورتوں کو کھلے طور پر دکھائیں جو شہوت کا عمل ہو سکتی ہوں اور ایسے موقع پر نگاہ کو پست رکھیں اور اپنی ستر کی جگہ کو جس طرح ٹھکن ہو چھپائیں (ایسی ہی کانوں کو نا محرموں سے چھپائیں یعنی مکانے کے گانے جانے اور خوش الحانی کی آوازیں نہ سنیں انکے حسن کے قصے نہ سنیں جیسا دوسری نصوص میں ہے) یہ طریق نظر اور دل کے پاک نہ بننے کے لئے عمدہ طریق ہے ایسی ایماندار عورتوں کو کہہ دے کہ وہ بھی اپنی آنکھوں کو نا محرم مردوں کے دیکھنے سے چھپائیں (ایسی ایماندار عورتوں کو کہہ دے کہ وہ بھی اپنی نصوص میں ہے) اپنے ستر کی جگہ کو پردہ میں رکھیں اور اپنے زینت کے اعضاء کو کسی غیر محرم پر نہ کھولیں اور اپنی اوڑھنی کو اس طرح سر پر لیں کہ گرہان سے ہو کر سر پر آجائے یعنی گرہان اور دونوں کان اور سر اور کپٹھیاں سب چھپا کر کے پردہ میں رہیں اور اپنے پیروں کو زمین پر نہ پھینکے والوں کی طرح کندھیں لایے وہ صحیح ہے کہ جس کی پابندی نہ ہو کر سے چھپا سکتی ہے اور دوسرا طریق چھپنے

کے لئے یہ ہے کہ اخذِ اِتِّعَالٰی کی طرف رجوع کرو اور اس سے دُعا کرو تاکہ نصو کر سے چہرے اور
 نغز شوں سے نہایت دُعا سے لگانا کے قریب مت جاؤ یعنی ایسی تقریبات سے دور ہو جن سے یہ خیال
 بھی دل میں پیدا ہو سکتا ہے اور جن کو اختیار نہ کرو جن سے اس گناہ کے وقوع کا اندیشہ ہونا
 کرنا نہایت درجہ کی بے حیائی ہے ذہن کی روالہ بہت بری ہے یعنی منزلِ مقصود سے روکتی ہے اور
 تسماری اور ہی منزل کیلئے حلتِ غلظتِ ناک ہے اور جس کو نکاحِ بیہرم نہ آوے چاہیے کہ وہ اپنے تئیں
 دوسرے طریقوں سے چہارے مثلاً روزہ رکھے یا کم کھلے یا اپنی طاقتوں سے تن آلود کام لے اور
 ان لوگوں نے یہ طریق بھی نکالے تھے کہ وہ ہمیشہ عمدہ نکاحِ غیرہ سے دست بردار رہے یا خوبے
 (حشمت) ان کے یا اور کسی طریق سے انہوں نے رہبانیتِ اختیار کی مگر ہم نے ان پر یہ حکم فرض
 نہیں کیا اور پھر وہ ان بدعتوں کو بھی پر سے طور پر نہایت بکے خدا تعالیٰ کے قول کے عموم میں یہ
 مضمون کہ ہمارے حکم نہیں کہ لوگ خوبے تئیں۔ یہ اس بات کی طرف اشارہ ہے کہ یہ اگر خدا کا
 حکم ہو چلاور سب لوگ اس پر عمل کرتے ہوتے تو اس صورت میں یعنی آدم کی قطعِ نسل ہو کر
 کبھی کاو بنا کا خاتمہ ہو پختا اور نیز اگر اس طرح پر عفت حاصل کرنا ہو کہ عضو مردی کو کاٹ دیا
 جاوے یہ در پر وہ اس صنایع پر اعتراض ہے جس نے وہ عضو یا یا اور نیز ثواب کا تمام مدار تو اس بات پر
 ہے کہ قوت موجود ہو اور پھر انسان خدا تعالیٰ کا طرف کر کے ممانعت کی جگہ اس قوت کے جذبات
 کا مقابلہ کر کے اور اجازت کی جگہ اس کے صنایع سے فائدہ اٹھا کر وہ طور کا ثواب حاصل کرے اور
 جس میں چہ کی طرح وہ قوت ہی نہیں رہی اس کو ثواب کیلئے کا کیا چہ کو عفت کا ثواب مل سکتا ہے
 ان آیات میں مع ریکر نصوس کے خدا تعالیٰ نے طلق احسان یعنی عفت حاصل کرنے کے لئے
 صرف اعلیٰ تعلیم ہی نہیں فرمائی بلکہ انسان کو پاکدامن رہنے کیلئے کافی مدد بھی بتا دے یعنی یہ
 کہ اپنی آنکھوں کو نامحرم پر نظر ڈالنے سے چہا کا انوں کا نامحرموں کی تو ازبٹنے سے چہا نامحرموں
 کے قہقہہ نہ سننا اور ایسی تمام تقریبات سے جن میں کہ اس فعل بد کا اندیشہ ہو اپنے تئیں چہا اور اگر
 نکاح نہ ہو سکے تو روزہ رکھنا وغیرہ یہ اعلیٰ تعلیم ان سب تدبیروں کے ساتھ جو قرآن شریف نے

بیان فرمائی ہیں صرف اسلام ہی سے خاص ہے اور اس جگہ ایک نکتہ یاد رکھنے کے لائق ہے اور وہ یہ ہے کہ چونکہ انسان کی وہ طبعی حالت جو شہوت کا منبع ہے جس سے انسان بغیر کسی کامل فطیر کے ٹلک نہیں ہو سکتا، ایسی ہے کہ اس کے جذبات عقل اور موقع پا کر جوش مارنے سے رو نہیں سکتے یا اگر باز بھی رو سکے تاہم سخت فطرہ میں باز جاتے ہیں اس لئے خدا تعالیٰ نے ہمیں یہ تعلیم نہیں دی کہ ہم نامحرم عورتوں کو بلا تکلف کچھ تو کہا کریں اور ان کی تمام زیہوں پر نظر بھی ڈال لیں اور ان کے تمام ناز و انداز اور ناچ و طیرہ بھی مشاہدہ کر لیں لیکن پاک نظر سے دیکھیں اور نہ ہم کو یہ تعلیم دی ہے کہ ہم ان سے بچانے اور ان عورتوں کا کلام بچانے میں لیں اور ان کے حسن کے قصے بھی سنا کریں لیکن پاک خیال سے نہیں بچو ہمیں تاکید ہے کہ ہم نامحرم عورتوں کو اور ان کی زینت کی جگہ کو ہرگز نہ دیکھیں نہ پاک نظر سے اور نہ پاک نظر سے اور ان کی خوش الحانی کی آواز میں اور ان کے حسن کے قصے نہ سنیں نہ پاک خیال سے اور نہ پاک خیال سے بچو ہمیں چاہیے کہ ان کے سینے اور دیکھنے ہی سے ایسی نظرت رکھیں جیسا کہ مرد و عورت سے تاکہ ٹھوکر نہ کھاویں کیونکہ ضرور ہے کہ بے قہدی کی نظروں سے کسی وقت ٹھوکر میں پیش آئیں سو چونکہ خدا تعالیٰ چاہتا ہے کہ بھاری آنکھیں اور دل اور ہمارے فطرت سب پاک رہیں اس لئے اس نے یہ اعلیٰ درجہ کی تعلیم فرمائی اور اس میں کیا ٹلک ہے کہ بے قہدی ضرور گناہ کا موجب ہو جاتی ہے اگر ہم بھوکے کتے کے آگے نرم نرم روٹیاں رکھ دیں اور پھر امید رکھیں کہ اس کتے کے دل میں خیال تک ان روٹیوں کا نہ آوے تو ہم اپنے اس خیال میں غلطی پر ہیں سو خدا نے چاہا نفسانی قوی کو پوشیدہ کاروائیوں کا موقع بھی نہ ملے اور ایسی کوئی تقریب پیش نہ آوے جس سے یہ فطرت جنم لے کر نکلیں اور ہر ایک پر بیخبر نگار جو اپنے دل کو پاک رکھنا چاہتا ہے اسکو نہیں چاہیے کہ حیوانوں کی طرح جس طرف چاہے بے محابا نظر اٹھا کر دیکھ لیا کرے بچو اس کیلئے اس تمدنی زندگی میں جس سسر کی عادت ڈالنا ضروری ہے اور یہ مہلک عادت ہے جس سے اس کی یہ طبعی حالت ایک بھاری طلق کے رنگ میں آجائے گی اور اسکی تمدنی ضرورت میں فرق نہیں پڑے گا یہی وہ طلق ہے جس کو احسان اور عفت کہتے ہیں

نیض میں عورت سے حرمت جماع کی وجہ خدا تعالیٰ قرآن کریم میں فرماتا ہے

وَيَسْتَلْطِقُ عَنِ الْمَحِيضِ قُلْ هُوَ اَذَىٰ فَاعْتَرِفُوا لَوِ السَّاءِ هِيَ الْمَحِيضُ وَلَا تَفْرَسُوْهُنَّ حَتَّىٰ يَظْهَرَنَ تَرَجُّمُهُنَّ - یعنی پوچھتے ہیں تمہ سے حکم نیض کا تو کوہ و نپاکی ہے سو تم نیض میں عورتوں سے کھارو کرو اور صحبت نہ کرو ان سے جب تک وہ پاک نہ ہوئیں۔ جب کہ خدا تعالیٰ نیض کو نپاکی واذی فرماتا ہے تو ایسی حالت میں صحبت کرنے سے شدید ضرر پہنچنے کا قوی دھند ہے لہذا خدا تعالیٰ نے نیض میں جماع سے منع فرمایا عیب کی رو سے جو شخص حالت نیض میں عورت سے جماع کرے اسکو مندوب ذلیل امراض لاحق ہونے کا احتمال ہے۔ جب یعنی خدش نامردی سوزش یعنی بلیں۔ جریان ہڈام والا۔ یعنی جو چھ پیدا ہوتا ہے اس کو ہڈام ہو جاتا ہے اور عورت کو مندوب ذلیل بیماریاں لاحق ہو جاتی ہیں اس کو اکثر ہمیشہ کے لئے خون ہاری ہو جاتا ہے اور چھ دامن یعنی رتہا ہر کو لگ آتا ہے بعض عورات کیلئے اکثر لوگات کا عمل کر جانے کا باعث بنتا دیکر امور کے واسطے یہ بھی ہوتا ہے چونکہ حالت نیض میں جماع کرنے سے نہ کوہ جانا امراض اور بھی دیکر عوارض پیدا ہو جاتے ہیں اسلئے خدا تعالیٰ نے اپنے بندوں پر تم کر کے حالت نیض میں جماع کرنے سے منع فرمایا۔

وجہ حرمت جماع حائض و حکمت بابت و طہی مستحاضہ احادیث سے جماع حرام ہونا اور مستحاضہ سے جائز ہونا بلکہ جو دیکہ دونوں بھاست کی قسم سے ہیں انھیں وجہ یہ ہے کہ یہ امر شارع کی کمال حکمت میں سے ہے کہ اس نے دونوں خونوں میں فرق ظاہر کر دیا کیونکہ حیض کی بھاست یہ نسبت استحاضہ کے زیادہ تر قوی ہے استحاضہ کا خون شرمگاہ کی ایک رگ سے جاری ہوتا ہے پس شرمگاہ سے جریان خون استحاضہ کا ایسا ہے جیسا کہ ناک سے نکسیر جاری ہوتی ہے اس خون کا لگنا مسخر ہے اور اس کا نہ ہونا بدلیل صحت ہے بخلاف نیض کے اگر حیض کا خون نہ ہو چلے تو وہ موجب بیماری ہے اور اس کا جاری ہونا موجب صحت ہے پس خون نیض یا استحاضہ دونوں لازم ہونے

حقیقت و حکم سب برابر نہیں ہیں یہ امر شریعت اسلامیہ کی خوبی و کامن میں سے ہے کہ دونوں
 ذونوں میں فرق ظاہر کر پائیں تاکہ وہ حقیقت میں بھی الگ الگ ہی ہیں متعلقہ کے متعلق نبی علیہ
 السلام و بالسلام سے پوچھا گیا کہ۔ هل تدع الفلوة دس استحاصة فقال لا استاذلت عرف
 و لیس بالحصہ فامرہا ان تصلی مع ہذا الدم و علل بانہ عرف و لیس بدہ حیص۔

طلاق کا تین تک محدود ہوسکتی وجہ۔ طلاق کو صرف تین میں محدود کرنے میں یہ وجہ
 ہے کہ وہ کثرت کی شروع حد ہے اور نیز طلاق میں فکر کرنا اور سوچنا اور سمجھنا ضروری ہے سو تین
 تک محدود ہونے میں اس کا موقع ملتا ہے کیونکہ بہت لوگوں کو طلاق کا مصلحت ہونا نہ ہونا معلوم
 نہیں ہوتا جب تک کہ وہ عورت کے ملک سے نکلے کا مزہ نہیں چکھ لیتے اور اصل تجربہ ایک سے
 ہو جاتا ہے اور دو سے اس تجربہ کی تکمیل ہوتی ہے اور تیسری طلاق کے بعد نکاح کا شرط کرنا تہرہ
 اور انہما کے معنی کے متعلق کرنے کیلئے ہے اس لئے کہ اگر بغیر دوسرے نکاح کے اس سے رجوع
 درست ہو تا تو یہ منجز و ریعت کے ہوتا کیونکہ مطلق سے نکاح کرنا یہ بھی ایک قسم کی ریعت ہی
 ہے اور عورت جب تک خاندان کے گھر میں اور اس کے قبضہ میں اور اس کے اقداب کے پاس ہے اس
 وقت تک نکاح ہے کہ خاندان کی رائے پر غالب رہے اور وہ بالاضطرار اس رائے کو پسند کرے
 جس کی خولی اس عورت کے سامنے یہ لوگ بیان کریں اور جب ان سے بائکل جدا ہو جاوے اور
 زمانہ کی سردی و گرمی کا مزہ چکھ لے اور اس کے بعد ہی اس شخص سے راضی ہو جاوے تو یہ رضہ
 مندی فی الواقع رضا مندی ہے اور نیز اس نکاح شوہر خانی کے اشترک میں اس کو مفاد وقت کا مزہ
 چکھنا اور بلا کسی ضروری مصلحت کے سوچے طلاق دینے کے باب میں نکاح خانی کے اشترک
 ہونے کا اقداب دینا ہے اور نیز اس اشترک میں مطلقہ نکاح کا اس شخص کی آنکھوں میں عزت دینا ہے
 اور اس بات کا جتنا ہے کہ تین طلاق پر وہی شخص دلیری کر سکتا ہے جو بغیر دلت اور حد سے زیادہ
 بے عزتی کے اپنے نفس کو اس عورت کے متعلق طبع کے قطع کرنے پر راضی و قائم کرے

طلاق رجعی کا دو تک محدود ہونے کی وجہ۔ اہل جاہلیت جس قدر چاہتے تھے طلاقیں
 بیکر رجوع کر لیا کرتے تھے اور ظاہر ہے کہ اس میں عورت پر کس قدر حکم قبلاً آیت کریمہ نازل
 ہوئی الطلاق مردان یعنی ایسی طلاق دوبارہ ہے جس کے بعد رجوع ہو سکتا ہے پھر اگر تیسری
 طلاق دے تو اس کے بعد تو بیگ وہ عورت و خاندان کی اور خاندان سے نکاح نہ کرنے پہلے کے
 لئے وہ حلال نہیں ہو سکتی آنحضرت ﷺ نے اس نکاح کے ساتھ صحبت کرنے کو بھی شرط
 فرمایا ہے اور اس اشتراط سے جاری یہ ہرگز مرد نہیں ہے کہ وہ عورت خاص حلال ہی کی فرض
 سے دوسرے سے نکاح کرے گی بعد نکاح تو بیعت کی تبدیلی کی فرض سے کرے مگر اتفاقاً وہی
 بھی طلاق ہو جاوے تو شوہر اول سے نکاح جائز ہے۔

تین طلاق دینے اور پھر نکاح ثانی کے بعد پہلے مرد پر اس عورت کے
 حلال ہونے کی وجہ۔ یہ سوال حضرت ابن قیم رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ پر وارد ہوا تھا اس پر جو
 جواب انہوں نے اپنی کتاب اعلام الموقعین عن رب العالمین میں درج فرمایا ہے ہم اس کا
 ترجمہ بطور مختصر یہاں لکھ دیتے ہیں۔ وہو هذا

تین طلاق کے بعد مرد پر عورت کے حرام ہونے اور دوسرے نکاح کے بعد پھر پہلے مرد پر جائز
 ہونے کی حکمت کو ہی ہانتا ہے جس کو امر اور شریعت اور مصالح کلیہ آئیہ سے واقفیت ہو جس واضح
 ہو کہ اس امر میں شریعتیں حسب مصالح ہر نسبت اور ہر سمت کے لئے مختلف رہی ہیں شریعت
 تو رات نے طلاق کے بعد جب تک عورت دوسرے خاندان سے نکاح نہ کرے پہلے مرد کا رجوع
 اس کے ساتھ جائز کھاتا اور جب دوسرے شخص سے نکاح کر لیتی پہلے شخص کو اس عورت
 سے کسی صورت میں رجوع جائز نہ تھا اس امر میں جو حکمت و مصلحت الہی ہے ظاہر ہے کہ نکاح جب
 مرد جائے گا کہ اگر میں نے عورت کو طلاق دے دی تو اس کو پھر اپنا اختیار ہو جائے گا اور اس کے لئے
 دوسرا نکاح کرنا بھی جائز ہو جائیگا اور پھر جب اس نے دوسرا نکاح کر لیا تو مجھ پر بیعت کے لئے یہ

عورت حرام ہو جائے گی تو ان امور خاصہ کے تصور سے مرد کا عورت سے تعلق و جھٹک چھٹے ہوتا تھا اور عورت کی چہرہ کو باکوں پر چھو کر چھو کر شریعت قرآن سے سب جاں مزاج امت موسوی نازل ہوئی تھی کیونکہ شہدہ دیور خضر اور ان پر اصرار کر رہاں میں بہت تھا پھر شریعت انجیلی آئی تو اس نے ان کے بعد حلاق کا ذوق باطل بنا کر دیا جب مرد کی عورت سے نکاح کر لیتا تو اس کیلئے عورت کو حلاق دیکھا ہرگز ہاؤنڈ تھا پھر سر بیعت محمد یہ آسمان سے نازل ہوئی جو کہ سب شریعتوں سے اکمل افضل و اعلیٰ اور پختہ تر ہے اور انسانوں کے مصالح معاش و معاد کے زیادہ مناسب اور عقل کے زیادہ موافق ہے خدا تعالیٰ نے اس امت کا دین کامل اور ان پر اپنی نعمت پوری کی اور طہیبات میں سے اس امت کیلئے بعض وہ چیزیں طہال نصبرائی ہیں جو کسی امت کیلئے طہال نہیں ہوئی تھیں چنانچہ مرد کے لئے بائو ہو کہ حسب ضرورت چار عورت تک سے نکاح کر سکتے پھر اگر مرد عورت میں نہ لے تو مرد کو اجازت دئی کہ اس کو حلاق دے کر اور عورت سے نکاح کر لے کیونکہ جب کہ پہلی عورت موافق طبع نہ ہو یا کوئی اس سے نساہ واقع ہو اور وہ اس سے باؤنڈ آئے تو شریعت اسلامیہ نے ایسی عورت کو مرد کے ہاتھ اور پاؤں اور گردن کی زنجیر بنا کر اس میں جکڑنا اور اس کی کمر توڑنے والا ہوجہ مانا نہیں تھا نیز کیا اور نہ اس دنیا میں مرد کے ساتھ ایسی عورت کو رکھ کر اس کا ذوق بھلا ہوا ہے

زندہ دوسرا سے مرد کو جو دین عالم است و ذوق

لہذا خدا تعالیٰ نے ایسی عورت کی چہرہ کی مشروع فرمائی اور وہ چہرہ بھی اس طرح مشروع فرمائی کہ مرد عورت کو ایک طلاق دے پھر عورت تین طہریاتین ہاؤنڈ تک اس اس مرد کے رجوع کا انتظار کرے تاکہ اگر عورت سدو چ جائے اور شرارت سے باز آجائے اور مرد کو اس عورت کی طواہلی ہو جائے یعنی طہائے مصرف القلوب عورت کی طرف مرد کے دل کو راغب کر دے تو مرد کو عورت کی طرف رجوع ممکن ہو سکے اور مرد کے لئے رجوع ممکن ہو سکے اور مرد کے لئے رجوع کرنے کا ذوق و مشق نہ رہے تاکہ مرد عورت سے رجوع کر سکے اور جس امر کو فسوس و شیطانی جوش نے اس کے ہاتھ سے نکال دیا تھا اس کو مل سکے اور چونکہ ایک طلاق کے بعد پھر بھی چاہیں کی طہلی

تہات اور شیطانی جھنجھوڑ کا ایسا دشمن تھا اسلئے وہ دوسری طلاق عدت مذکورہ کے اندر مشروح ہوئے تاکہ عورت باہر کی طلاق کی تکلیف کا اٹھانے کے لئے اور شرعی طلاق کو ناجائز قیود کا ایسا نہ کرے جس سے اس کے خاتمہ کو قصور آوے اور اس کے لئے جدائی کا باعث ہو اور مرد بھی عورت کی جدائی محسوس کر کے عورت کو طلاق نہ دے۔ اور جب اس طرح تیسری طلاق کی نوبت آپہنچے تو اب یہ وہ طلاق ہے کہ جس کے بعد خدا کا یہ حکم ہے کہ اس مرد کا رجوع اس عورت مطلقاً مٹا دے سے نہیں ہو سکتا اس لئے جائزین کو کہا جاتا ہے کہ پہلی اور دوسری طلاق تک تہا رجوع آپس میں ممکن تھا اب تیسری طلاق کے بعد رجوع نہ ہو سکے گا تو اس قانون کے مقرر ہونے سے وہ دونوں سدحر جائیں گے کیونکہ جب مرد کو یہ تصور ہو گا کہ تیسری طلاق اس کے درمیان اور اس کی وہی کے درمیان بالکل جدائی ڈالنے والی ہے تو وہ طلاق دینے سے باز رہے گا کیونکہ جب اس کو اس بات کا علم ہو گا کہ اب تیسری طلاق کے بعد یہ عورت بھو پر وہ ان شخص ہانی کے شرعی معروف و مشہور نکاح اور اس کی طلاق عدت کے حلال نہ ہو سکے گی اور دوسرے شخص کے نکاح سے عورت کا کوئی بھی عقلمانی نہیں اور دوسرے نکاح کے بعد بھی جینک وہ مراعات خدا اس کے ساتھ و خول نہ کر چکے اور اس کے بعد یا تو دوسرا نکاح نہ مہر جائے یا وہ اس کو رضائے خود طلاق دیدے اور وہ عورت عدت بھی گزارے جب تک وہ اس کی طرف رجوع نہ کر سکے گا تو اس وقت مرد کو اس رجوع کی تادمی کے خیال سے اور ان کے محسوس کرنے سے ایک دور اندیشی پیدا ہو جائے گی اور وہ خدا تعالیٰ کے ہاں ترین مہلکات یعنی طلاق کے واقع کرنے سے باز رہے گا یہی طرح جب عورت کو اس عدم رجوع کی واقعیت ہوگی تو اس کے اخلاق بھی درست رہیں گے اور اس سے فن کی آپس میں اصلاح ہو سکے گی اور اس نکاح حانی کے متعلق نبی علیہ السلام نے اس طرح تاکید فرمائی کہ وہ نکاح عدام کے لئے ہو پس اگر دوسرا شخص اس عورت سے اپنے پاس بھائی طور پر رکھنے کے ارادہ سے نکاح نہ کرے پس خاص حلال ہی کے لئے کرے تو آنحضرت ﷺ نے اس شخص پر لعنت فرمائی ہے اور جب پہلا شخص اسی قسم کے حلال کے لئے کسی کو رضامند کرے تو اس پر بھی لعنت فرمائی ہے۔ علی اس

عنانِ وحی اللہ علیہ لعن رسول اللہ ﷺ المحلل والمحلل له۔ ترجمہ مثنیٰ رسول ﷺ نے طلاق کرنے والے اور طلاق کرائے والے پر لعنت فرمائی تو شرعی طلاق وہ ہے جو خود ایسے اسباب سے ہو جائے کہ جس طرح پہلے خاتمہ نے اتفاقاً عورت کو طلاق دی تھی اسی طرح دوسرا بھی طلاق دے یا مر جائے تو عورت کا رجوع بعد عدت پہلے خاتمہ کی طرف یا اگر بہت درست ہے۔ پس اتنی سخت رکاوٹوں کے بعد پہلے خاتمہ کی طرف رجوع مشروع ہونے کی وجہ یہاں مذکور سے ظاہر و باہر ہے کہ اسکی عزت و عظمت امر نکاح کی اور شکر نعمت الہی کا اور اس نکاح کا وہام اور عدم قطع طوطا ہے کیونکہ جب خاتمہ کو عورت کی ہدفی سے اس کے وصل جانی تک اتنی رکاوٹیں درمیان میں حائل ہونے والی تصور ہوں گی تو وہ تیسری طلاق تک نوبت نہیں پہنچائے گا۔ انک الشارح حر مہا علیہ حتی تکبح روحاً غیرہ غلوئکہ ولعن المحلل والمحلل له لیمبا قصدها ما قصدها من عتقہ من عتقہ وکان من تمام هذه العقوبہ ان طول مدة تحريمها عليه فكان ذلك المنع فيما قصده الشارع من العقوبة فان اداعلم انها لا تحل له حتى لعنت فلا لث قروا لم يزوجها امر نکاح رعبه مفسوداً لا تحليل موجباً للعبه وبعارتها وتعصم فراقه ثلثة فروع آخر طال عليه الانظار وبعيل صرہ ما سکت عن الطلاق الثلاث وهذا واقع علی ذنن الحكمة والمصلحة والدخیر فكان التوبہ الثلاث فروع فی الرحمة نظر الزوج ومراعاة لمصلحته لعمالم يوقع الثالثة المحرمة لها عليه وهما كان تربصها غلوئہ له ورجعها اذفع الطلاق المحرم لما حل الله له واكدت هذه العقوبة بتحريمها عليه الا بعد روج واصحابه وتربص كان.

ایلاء کی مدت چار ماہ مقرر ہونے کی وجہ : خدا تعالیٰ فرماتا ہے۔ للملین یؤلون من نساء ہم تربص اربعة اشهر فان فاوا فان الله تکفروا وحیم وان عزم الطلاق فان الله سمیع علیم ترجمہ :- جو لوگ اپنی عیالوں سے جدا ہونے کے لئے قسم کھا لیتے ہیں ان کے لئے چار مہینے کا انتظار ہے سو اگر ان چار ماہ کے عرصہ کے اندر اپنے ارادہ سے باز آجائیں (اور رجوع

کر لیں) تو خدا تعالیٰ غلو و روحہ ہے اور طلاق دینے پر پلٹ کر لوہہ کر لیں (اسی طرح سے کہ و جموع نہ کریں) تو (یاد رکھیں کہ) خدا سنے اور جانتے والا ہے۔

ایلاء کے معنی قسم کھانے کے ہیں اہل جاہلیت اس بات کا حلف یعنی قسم کھایا کرتے تھے کہ اپنی بیویاں سے کبھی یا ایک مدت در تک جدا رہیں گے انہیں عورتوں پر نہایت ظلم اور ضرر تھا لہذا خدا تعالیٰ نے چار مہینے سے زیادہ مدت ایلاء کی منسوخ فرمادی اور اس ایلاء کی مدت چار مہینے مقرر ہونے میں بسے، راز میں از انفسہ چند و رن ذلیل ہیں

(۱) اس مدت کے ضمن کر ٹکی یہ وجہ ہے کہ اتنی مدت میں خود نکاح نکالیں کہ جماع کا شوق پیدا ہو گا ہے اور اگر انسان باق فہم ہو تو اس کے جموں نے سے ضرر و پانچتا ہے۔

(۲) یہ مدت سال کا ایک ٹکٹ حصہ ہے اور نصف سے کم کا اختیاب ٹکٹ کیا تھا ہوا کر ۳ ہے اور نصف کو مدت کثیر و شمار کیا جاتا ہے۔

(۳) اگر ایلاء کی مدت زیادہ ہوتی تو مرد و لا پرواہ ہو کر عورت کے جان و لفظ کو ہل دیتا اور یہ امر عورت کے لئے سخت مضرت ہے کہ وہ کہاں سے کھاتی اور کہاں سے پہنچتی اور کہاں رہتی۔

(۴) ممکن ہے کہ اس ایلاء سے مرد نے عورت سے جماع کر لیا ہو جس سے احتمال حمل ہو سکتا ہے اور میں صورت رات دم چار ماہ میں باکمل وجود معلوم ہو سکتی ہے یہی وجہ ہے کہ متونی مشاہدہ جماع کی مدت چار ماہ میں دن مقرر ہوئی ہے جیسا کہ پہلے بیان ہوا ہے پس اس مدت میں باکمل وجہ اور پردے طور سے ہر کسی کو شناخت حمل ہو سکتی ہے پھر اگر معلوم ہو اور مرد و جموع بھی نہ کرے تو پھر مدت وضع حمل تک ہے۔

(۵) خدا تعالیٰ نے جو کہ دانائے راز نہیں دیکھا ہے ایلاء کی مدت چار ماہ مقرر کرنے میں یہ راز کھائے کہ باجموع فطرتی طور سمجھتے جو ان عورت کو چار ماہ سے زیادہ اپنے مرد کی جدائی گراں دیا کو گر گزرتی ہے اور وہ جاننا اس مدت تک پھر اپنے مرد کا وہ سال چاہتی ہے چنانچہ حضرت جلال الدین سیوطی رحمۃ اللہ علیہ تاریخ الخلفاء میں لکھتے ہیں: اخروج ابن جریر قال

اخیر میں من اصطفیٰ ان عمر ینہما ہو بطوف مسج امرأة لفلول شعراء

تطاول هذا اللیل واسود جباب وارفتی ان لاجلیل الاعیہ

فلولاحدء اللہ لافسی منلہ لزوعز من هذا المریر حواہ

فقال عمر ومالك قالت اخریت روحی عند اشہر وقد اشطت الیہ قال اردت سوء ا

قالت معاذ اللہ قال فاملکی علیک بنفسک فانما هو البرید الیہ فبعث الیہ ثم دخل علی

حفصۃ فقال انی سائلک عن امر قد اہمنی فاخر حیه عنی کم لشعاق المرأۃ الی روحہا

۔ لعفصت راسہا واسحبت فل قال اللہ لا یسعی من اللعل واشتات یفعا

ثلاثة اشہر والافارعة اشہر فکتب عمر ان لا یحبسن اللجوش فوق اربعۃ

اشہر۔ ترجمہ۔ یعنی کن جرتا کہتے ہیں کہ مجھے خبر دی اس شخص نے جس کی بات کو میں سنا

جاتا ہوں کہ حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ ایک رات مدینہ منورہ کی گلیوں میں اپنی خلافت کے

نشان میں پانے خاطر رعبت گشت کر رہے تھے کہ ایک عورت کو شعر ذیل پڑھتے سنا جس کا ترجمہ یہ

ہے کہ رات دراز ہو گئی اور اس کے اطراف سخت تاریک سیاہ ہو گئے اور مجھے اس خیال نے بیدار

کر دیا ہے کہ میرا کوئی دوست نہیں ہے کہ جس کے ساتھ کھلیاں اگر خدائے بے مثل وہے مانند کا

ڈرن ہو تا تو میری اس چارپائی کی طرفین ہائی جائیں۔ پس حضرت عمر نے اس عورت کو تو اذیے

کر کہا تو کیا چاہتی ہے اس عورت نے کہا کہ آپ نے میرے خاندان کو کئی بار سے غزوہ پہ بھیجا ہے اور

اب مجھے اپنے خاندان کے ملنے کا ایشیاق ہے حضرت عمر نے فرمایا کیا تو بد خیال رکھتی ہے اس عورت

نے کہا خدا کی پناہ میرا خیال بد نہیں ہے پس حضرت عمر نے اس کو فرمایا کہ تو اپنے آپ کو خیار کس

ابھی میرے خاندان کو بلانے کے لئے قاصد روانہ کیا جائے گا پھر حضرت عمر رضی اللہ عنہ کے پاس گئے

اور حصہ سے کہا کہ میں تجھ سے ایک بات پر حتما چاہتا ہوں جس کا مجھے بڑا اہتمام و احتیاط ہے اس کو

حل کرو۔ اور وہ یہ ہے کہ کتنی مدت کے بعد عورت کو اپنے خاندان کے وصال کا شوق پیدا ہوتا ہے

حضرت نے اپنے سر پہ کر لیا اور فرمائیں حضرت عمر نے فرمایا کہ خدا تعالیٰ تجنی بات سے نہیں

شرماتا ہے جس نے اپنے ہاتھ سے تمہیں مینے کا اور پھر زیادہ سے زیادہ پار مینے کی مدت تک کا اشارہ کیا یعنی مرد کو چاہیے کہ عین دور نہ پار دے تک ضرور اپنی عورت سے ملے جس حضرت نے لظموں کے اظہروں کے نام خط لکھ کر روانہ کئے اور تاکید کی کہ کسی سپاہی کو پار دے سے زیادہ لظموں سے نہ رکھا جائے یعنی ہر سپاہی کے ہر پار دے کے بعد گھر پر آنے کی رخصت کا کام حکم یافتہ فرماید۔

وفات انبیاء کے بعد ان کی عورتوں سے اور وہ نکاح حرام ہونے کی وجہ:

انبیاء علیہم السلام کی ارواح طیبہ کو بعد مرگ بھی قریب قریب وہی تعلق اپنے اجسام سے رہتا ہے جو گل زر مرگ تھا یہی وجہ ہے کہ ان کے اجسام جنس اجسام انبیاء کے پھولتے پھٹتے نہیں چٹانچہ امدادیت میں موجود ہے اور یہی وجہ ہے کہ انکی ازواج جنس ازواج انبیاء اور وہی سے نکاح کرنے کا اختیار نہیں رکھتیں اور یہی وجہ ہے کہ انکے اموال کو جنس انبیاء ان کے وارث تقسیم نہیں کر سکتے اور ای وجہ سے حدیث لا تھورث کو معارف آیت یوحیٰکم اللہ اور آیت لا تمسکوا ازواجہ عامس بعدہ ایذا کو آیت واللہین یوحیون مسکم ویہذرون ازواجہن منکم کہہ سکتے کیونکہ آیت یوحیٰکم اللہ اور آیت واللہین یوحیون کے صدق وہ ہیں جن کی ارواح کو ان کے بدن کے ساتھ وہ تعلق نہ رہا ہو جو حالت حیات میں تھا۔ چنانچہ للرجال نصیب مما ترک الوالد ان میں لفظ ترک اور آیت واللہین یوحیون میں لفظ توفی اس کا شاہد ہے علیٰ ذہ آیت والیٰحس اللہین لولون کو امن حلفہم ذریعہ صفا میں لفظ توفی کو قرینہ مضمون معروض ہے کیونکہ جیسے مضمون توفی جس کے معنی توفی جنس کے ہیں جب بھی چہاں ہوتا ہے جب کہ کوئی چیز نکال لی جائے اور یہاں ای وقت تک ہو سکتی ہے کہ جب روح کو بدن سے نکال باہر کیا جائے کیونکہ اللہین کا صدق آیت واللہین یوحیون میں وہی ہے اور نیز وہ نہ ہو تو جسم ہو گا اور ظاہر ہے کہ جسم مورد توفی وقت مرگ نہیں ہوتا کیونکہ وہ کہیں نکالا نہیں جاسکتا جسے بھی کہنا چاہے تاکہ ایسے لوگوں کی روح کو اپنے جسم سے وہ ملاقات نہیں رہتا جو وقت حیات تھا ایسے ہی مضمون ترک بھی کہہ ان

صیت اور اور اسوال کے حق میں جب بھی کجی ہو سکتا ہے جب کہ اس خاکدان عقلی کو چھوڑ کر عام طوی کو چلے جائیں سو یہ بھی جب بھی تصور ہے جب کہ روح کو وہ تعلق نہ رہے نہ وہ ترک نہیں بہ مشکل اور ان دست و پا نہ ملاقات اور اور اسوال سے مجبور ہیں کسی وجہ ہے کہ سکتے والے کی ازواج اسوال بہ ستر اس کے ملک میں باقی رہتے کو ان نظموں میں یہ فرق ہے کہ قدحوں کے اجسام مقید ہو جاتے ہیں مگر ان قید خانہ کی جسم خاکی ہو تا ہے اس لئے وہ پھیلاؤ ہو نہ رہے تصور افضل اختیار یہ ہو کر تا ہے اور اور آفتاب و قمر کے پھیلاؤ کے مشابہ ہو تا ہے ایسی طرح وہ ہو جاتا ہے جیسے چراغ کی کسی طرف کے رکھ دینے کے وقت اس کے نور کا پھیلاؤ نہ ہو جاتا ہے سو یہی صورت عید انبیاء علیہم السلام کی موت کی سمجھ لو اتنا فرق ہے کہ سکتے میں سوائے بعض مواقع تمام اعضا میں سے روح کھینچی جاتی ہے اور تمام توانے روحانی کو مثل قوت سامعہ و قوت باصرہ اپنے اپنے مواقع سے کھینچ لیتے ہیں اور اس وجہ سے اگر قدر مناسب نہ بنے تو رفتہ رفتہ بالکل کھینچ کر باہر کر دیتے ہیں اور ارواح انبیاء کو بدن کے ساتھ حلقہ بہ ستر رہتا ہے مگر اطراف جو انب سے مست آتی ہے اس لئے حیات جسمانی کو نسبت سابق اسی طرح قوت ہو جاتی ہے جیسے طرف مذکور کے رکھ دینے کے بعد چراغ کے شعلہ میں نورانیت داغ جاتی ہے اور سکتے میں پھیلا ہو جاتا ہے جیسے فرض کر دو کہ چراغ ٹٹمانے لگے اور گل ہونے کو جو ہر حال ارواح انبیاء آرام کو بہ ستر اپنے بدن کے ساتھ تعلق رہتا ہے جبکہ کیفیت حیات میں وہ بہ اجتماع اور بھی قوت آجاتی ہے اور مثل چراغ و شعلت طرف میدان حیات و موت دونوں مجتمع ہو جاتے ہیں

الغرض کائنات حیات انبیاء ضروری ہے کسی وجہ ہے کہ انبیاء علیہم السلام کی ازواج کو نکاح جاتی کی اہلالت نہیں اور اس وجہ سے انکے اسوال میں میراث کا ہادی ہونا مقرر نہیں ہو اور نیز اس حکم میں عقلمت انبیاء بھی منظور ہے اور لفظ ترک کو ایک حدیث میں منسوب الی الانبیاء بھی ہے مگر دلائل حیات کے قریب سے وہ مشاکلت و مجاز ہے۔

عورت کیلئے ایک سے زیادہ خاوند کرنے سے ممانعت کی وجہ: (۱) عورت بولاد کے حق میں ایسی ہے جیسے زمین بیولاد کے حق میں مگر بیولاد کو قوجہ تیارہ اجزا اور لہر بانٹ سکتے ہیں اسلئے انکی شرکت میں کچھ بوج نہیں مگر ایک عورت اگر چند مردوں میں مشترک ہو تو قوجہ اشتقاقی تقاضائے حاجت اس صورت میں لول تو ایسی وجہ سے اندیشہ فساد و عناد ہے شاید ایک ہی وقت سب کو ضرورت ہو دوسرے بھد نکاح مانگو جو اشتقاقی مذکور سب اس سے اپنا مطلب نکالنے ہیں تو در صورت تولد فرزند واحد تو فرزند کو پارہ پارہ نہیں کر سکتے جو اس طرح تقسیم کر کے اپنے پارہ کو ہر کوئی لے جائے اور متعدد فرزند ہوں تو قوجہ اشتقاقی مذکور سے دافوشت و خلوت شکل و صورت دافو تاجین خلق و سیر سے دفرق قوتہ بہت موازنہ ممکن نہیں جو ایک کو لیکر اپنے دل کو سمجھ لیں پھر بوجہ تساوی بہت جملہ بولاد یہ دوسری وقتہ رہی کہ ایک کے دوصال سے اجاسر ورنہ ہوگا جتنا بولادوں کے فراق سے رنج افزا کا پڑے گا پھر اس وجہ سے خدا جانے کیا فتنہ مریا ہو۔ فرض ہر طور اس انتظام میں خرافی نظام عالم تھی۔ ہاں اگر ایک مرد ہو اور متعدد عورتیں ہوں تو جیسے ایک کسان متعدد کھیتوں اور زمینوں میں غم رہی نہی کر سکتا ہے۔ ایسے ہی ایک مرد بھی متعدد عورتوں سے بے جوا سکتا ہے اور پھر اسکے ساتھ اور کوئی خرافی نہیں عورتوں کے رنج سے پندوں فساد کا اندیشہ نہیں عقل و قال کا کچھ خوف نہیں۔

(۲) عورت موافق قواعد اسلام غلام اور مرد حاکم ہوتا ہے اور کیوں نہ ہو وہ مالک ہوتا ہے کہ اسکو مالک کہا کرتے ہیں اور کیونکہ نہ کہیں بائیاں تو مملوک ہوتی ہی ہیں بیویاں بھی بدلیل مرفان کی خریدی ہوئی ہوتی ہیں وہاں اگر اشتقاقی قریباں طلاق یعنی جیسے بائدی غلام یا اختیار خود قید نکاحی سے رہا نہیں ہو سکتے۔ ہاں مالک کو اختیار ہے وہ چاہے تو آزاد کر دے۔ ایسے ہی عورت با اختیار خود قید خاندان سے رہا نہیں ہو سکتی البتہ خاندان کو اختیار ہے چاہے تو طلاق دیدے جیسے بائدی غلام کا جان و نطق مالک کے ذمہ ہوتا ہے ایسے ہی عورت کا جان و نطق خاندان کے ذمہ ہے جیسے مالک ایک اور غلام

بانہی کئی کئی ہوتے ہیں ایسے ہی خاندانہ ایک اور عورتیں کئی کئی ہوتی ہیں بالمثل عورتیں موافق قواعد اہل اسلام مملوک اور غلام اور ندامت مالک اور حاکم ہو جائے اور خاندانہ کی طرف سے بیع و بیہ کا نہ ہو سکتا، نسل عدم الملک نہیں اگر یہ بات دلیل عدم الملک ہو اگر سے تو خاندانہ مالک ہو نا بھی عدت نہیں ہو سکتا، بیع و بیہ سے منتقل نہ ہو جائے، ثبوت ملک جنکا بیان ہو چکا اسی طرح قوت ملک پر دلالت کرتا ہے جیسے خدا کے ملک کا منتقل نہ ہونا اسکے ملک کی قوت پر دلالت کرتا ہے اور اس وجہ سے شوہر کو درپادہ مالیت خدا سے مطابقت نام ہے ہر چند خدا کے ملک کے سامنے شوہر کی ملک برائے نام ہے اور پھر اسکے ساتھ خدا کی ملک منتقل الاطلاق اور شوہر کی ملک بوجہ ثبوت طلاق ممکن الزوال مگر پھر بھی جس قدر خدا کی ملک سے شوہر کی ملک مشابہ ہے اس قدر اور کسی کی ملک مشابہ نہیں۔ الخاصل شوہر کی ملک میں کچھ کلام نہیں پورا اسکی ملک اور وہاں کی ملک سے قوی ہے وہ حاکم ہے اور عورت غلام اور غایر ہے کہ غلاموں کا قصد اور ان کی کثرت موجب عزت ہے وہ بادشاہ زیادہ معزز سمجھا جاتا ہے۔ جس کی رعیت زیادہ ہو اور حکام کی کثرت موجب ذلت ہے اور طریقہ تو حکام کی کثرت کا نہیں ہاں یہ صورت ہوتی ہے کہ بیچے سے لوہر تک جتنے حکام ہوں ان سب کا یا کثرت کا یا اصل کا حکوم ہو حاکم رعیت کو دیکھنے وہ سب کے حکوم ہوتے ہیں اور کسی کے حاکم نہیں ہوتے ان سب سے بلا کہ کوئی ذلیل نہیں اور حکام باقت حکام بالادست کے تو حکوم ہوتے ہیں اور رعیت کے حاکم اور رعیت سے معزز اور حکام بالادست سے ذلیل ہوتے ہیں اسی طرح دور تک چلے چلو بادشاہ سب کا حاکم ہو جاتا ہے اور کسی کا حکوم نہیں ہو جاس سے بلا کہ کوئی معززی نہیں ہو جاس صورت میں اگر کسی عورت کے متعدد خاندانہ ہوں تو یہ ایسی صورت ہوگی جیسے فرض کر دیا کہ شخص قوم رعیت ہو اور اس کے بادشاہ اور حاکم کثیر سب جانتے ہیں کہ یاں نہیں ہو اگر باوجود مرد کیلئے بہت سی عورتیں ہونا کوئی عیب کی بات نہیں کہ تکہ مرد خدام ہے اور عورت خدام ایک خدام کیلئے بہت خدام ہو سکتے ہیں مگر ایک خدام بہت سے خداموں کیلئے نہیں ہو سکتا۔ (۳) عورت کے اندر خدا تعالیٰ نے فطرتاً ایک شرم و حیا کا وصف ایسا ہیہ کیا ہے کہ وہ غیر مردوں

کے سامنے آتے ہیں۔ عقلی ہے عورت جب مرد سے کوئی بات کرنے لگتی ہے تو شرم کے مارے جا بجا اپنی آنکھیں بندھا لیتی ہے۔ اس سے ظاہر ہے کہ فاضلہ عورتوں کے سوائے جنگی فطرت قوت حیا بالکل ضائع ہو رہی ہے۔ باقی سب عورتیں اپنی نیچرل حالت میں مردوں سے حیا و حجاب کرتی ہیں۔ یاد دہانی کے لئے یہ بھی یاد رکھنا چاہیے کہ وہ ایک ہی خاندان کی عورتوں سے تعلق رکھنے میں یہ حیا و حجاب نہیں کتنی جیسا بازاری عورتوں میں مشاہدہ ہے۔

(۴) تجربہ اور مشاہدہ مشاہدہ ہے کہ ایک مرد عند الضرورت کئی جوڑوں کو لے تو بھی سب کے ساتھ نہاں رہتا ہے مگر ایک عورت دو خاندانوں کی بی بی ہو کر کبھی نہاں نہیں ہو سکتی اس سے ظاہر ہے کہ ایک مرد کیلئے کئی جوڑوں ہو سکتی ہیں مگر ایک عورت کیلئے کئی خاندان نہیں ہو سکتے۔

(۵) دنیا میں عورتوں کی تعداد مردوں سے اکثر زیادہ رہتی ہے اور یہ امر صحیح و دلیل ہے اس بات کی کہ ایک مرد کیلئے کئی جوڑوں ہو سکتی ہیں مگر ایک عورت کی قدرت کی مرضی نہیں

(۶) مرد کو پروردگار نے عورت کی نسبت قوی اور زندہ دست پیدا کیا ہے اور عورت کو بڑا کمزور و ضعیف اعضاء۔ لہذا اس سے ظاہر ہے کہ قوی کئی ذریعہ دستوں کو اپنے ماتحت رکھ سکتا ہے۔ نہ برعکس (۷) قدرتی تعلق کی طرف غور کریں تو ایک عورت کے اگر سو خاندان بھی ہوں تاہم ایک عمل میں وہ ایک اور سے زیادہ جن نہیں کھتی۔ مگر ایک مرد کے پاس جس قدر جوڑوں ہوں وہ سب تو والد کو چھوڑ کر بچے کا واسطہ ہو سکتی ہیں۔

بہشت میں مردوں کیلئے زیادہ عورتیں ملنے کا راز اور عورتوں کیلئے ایک سے زیادہ خاوند نہ ہونے کی وجہ: (۱) انعام میں راحت کے سلسلے اور اعزاز و اکرام کے اسباب تو دیئے جاتے ہیں پر رنج و کلفت کے سلسلے اور حقیر و توہین کے اسباب انعام میں نہیں دیئے جاتے یہ چیزیں سزا کیلئے ہوتی ہیں بہشت میں جو کچھ ہو گا بطور انعام و جزا ہو گا اگر وہاں ایک مرد کو

متحدہ عورتیں ملیں تو اعزاز و اکرام بھی ہے اور راجت و آبرام بھی ہے اور ایک عورت کو متحدہ خانہ ملیں تو راجت و آبرام تو کچھ زیادہ نہ ہو گا خاص کر اس صورت میں جب کہ مرد کی قوت سب عورتوں کی خواہش کے برابر ہو سالی جائے جیسے اہل اسلام کی روایات اس پر شاہد ہیں۔ پر جانے اعزاز و اکرام الٰہی حقیر و ذلیل و توہین ہو گی۔ اگر ایک عورت کیلئے کئی خانہ قرار دینے جاتے تو یوں کہو کہ حاکم متحدہ ہوں گے۔ اور حاکم متحدہ ہونے تو بیٹے حاکم زیادہ ہوں گے اتنی ہی حکوم میں ذات زیادہ ہو گی سو یہ حقیر اور ذلیل اور توہین عورت کے حق میں اگر جائز ہوتی تو دنیا میں کسی لمحہ میں شاید انکی اہانت ہوتی۔ بہشت میں جو جائے عزت و آبرام ہے یہ صورت حقیر پر مرکز ممکن وقوع نہیں۔ پس اگر ایک خانہ سے دفع ضرورت منظور ہوتی یا لغت میں کبر الٰہی تو اس وقت شاید لاچار ہی یہ امر مان کیلئے تجویز کیا جاتا مگر روایات محمد اہل اسلام اس پر شاہد ہیں کہ ایک مرد کو بہشت میں اتنی قوت ہو گی کہ علی الاصل میں تیس عورتوں کے پاس چاٹکے اور جس طرح رب العالمین نے دنیا کے اندر مرد و عورت کی حالت اور فطرت میں اختلاف کیا ہے یعنی مرد حاکم ہے اور عورت حکوم مرد متحدہ ہے اور عورت خدام مرد کا پاساز ہے اور عورت کا زیر۔ اسی طرح جنت میں بھی انکی حالتوں میں اختلاف ہو گا۔

عورت کیلئے کیوں ایک ہی خانہ ٹھہرایا گیا اسکی ایک اور وجہ : خدا تعالیٰ نے مردوں کو رسالت و نبوت و خلافت و بادشاہی و ولادت میں عورتوں پر فضیلت دی ہے مردوں کو عورتوں پر حاکم بنایا تاکہ وہ عورتوں کے مصالح و بہبودی میں کوشاں رہیں اور انکے امور معاش کیلئے چلنے پھرتے رہیں اور خطرناک مقلات میں وارد ہوں اور ہانگوں اور پیالوں کا طے کریں اور اپنی جانوں کو عورت کیلئے محنت و مشقت میں ڈالیں پس خدا تعالیٰ نے مردوں کو دو طاقتیں دی ہیں جو عورتوں کو نہیں دیں جب تم مردوں کی محنت و مشقت میں خود کرد گے جو کہ عورتوں کے مصالح و بہتری میں سامی رہتے ہیں تو تم پر صاف عیاں ہو جائے گا کہ عورت کی محنت مردوں کا

حصہ محنت و مشقت و کھل میں زیادہ تر ہے اور یہ امر خدا تعالیٰ کے کمال حکمت اور انکی رحمت پر بتلی ہے پس رہنمائی کہ مرد پر استغناء جو ڈالے گئے ہیں تو اس سے صاف ثابت ہوتا ہے کہ اس میں ان کو بصورت کی برداشت کی طاقت بھی زیادہ رکھی گئی ہے اور وہ کئی عورتوں کو بھی رکھ سکتا ہے اور رہنمائی کہ عورت پر استغناء جو نہیں ڈالے گئے تو اس سے ثابت ہوتا ہے کہ وہ ان کو بصورت کی برداشت کی طاقت نہیں رکھتی اس لئے خدا تعالیٰ نے عورت کی فطرت و سرشت کے مطابق ہر ایک عورت کے لیے ایک ہی خانہ تہجید فرمایا۔

کتاب الرق

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اسلامی غلامی کی فلاسفی اور سلام سے پہلے غلامی کی حالت : الحمد لله الہدی خلق الناس نوعین الای و الای لیتخذ بعضهم بعضا سخریا والصلوة و السلام علی رسولہ محمد المصطفیٰ و احمد المحضی الذی جعلہ اعدل الناس لیکون لہم اسوا حسنة و شریفا و علی الہ و اصحابہ ہذا طریق الحق و حیاة الاسلام . لہذا واضح ہو کہ جن لوگوں نے غلامی کے خلاف کھڑے ہونے کی اس قدر نصیحت کی ہے اور اس کو سر تپا ٹوٹیوں سے استغناء خلی اور معجزات سے اس قدر پرہیز کر کے دکھانے کی کوشش کی ہے کہ جو شخص لفظ سے دل سے اور جوش سے خالی ہو کر اس مضمون پر قلم اٹھائے (جس کا یہ مقصد ہو کہ ہر شئی کی تہ تک پہنچے اور بدی پر اس وقت بھی لٹکتے کیلئے تیار ہو جبکہ وہ نیکی کا لباس پہننے لگے اور نیکی کی اس وقت بھی تعریف کرنے کے لئے تیار ہو جبکہ وہ نیکی کا لباس پہننے لگے اس شخص کا فرض ہو گا کہ اللہ تعالیٰ میں اس غلام غمی کو دور کرنے کے غلامی کا رواج سراسر موقوف و فضول تھا جس سے کوئی فائدہ نہ تھا بلکہ سراسر نقصان ہی تھا اس لئے میں بھی اس غلام غمی کو دور کرتا ہوں پس سنئے حق یہ ہے کہ انسانی سوسائٹی اپنی قدرتی ترقی میں ایسی حالتوں سے ہو

گزرتی ہے کہ ان حالات کے ماتحت غلام بنانے میں نہ صرف وہ حق ہی پر تھے بلکہ ضروری تھا کہ ایسے حالات میں غلامی کا رواج ہو تا تو دنیا میں بہت سے رواج اب تک ایسے چلے آتے ہیں کہ جن پر غور کرو تو وہ دل پر ایک دہشت ہی پیدا کرتے ہیں مگر تاہم بہت سے اغراض ترقی کیلئے ان کا جاری رہنا ضروری ہے جس وقت ایک شہریاب جزئیل ۷۷ سے ۷۷ جہازوں کو جن پر ہزار ہا انسان تک کے چیدہ اور بہار نو جوان موجود ہوتے ہیں ایک دم غرق کر کے سمندر کی تہ میں پھینکا جاتا ہے یا ایک ۷۷ شہر پر گولہ باری کر کے بے شمار بے گناہ عورتوں اور بچوں کو تباہ کر دیتا ہے تو کبھی اسکی آنکھ میں ایک آسو بھی نہیں آتا مگر ہر حالت میں یہ کہنا چاہئے کہ وہ ایک سخت دل خاتم اور بے رحم انسان ہے وہ لوگ جو اپنی رحمہدلی کے سبب ایک انسان کے قتل کو برداشت نہیں کر سکتے اور انکے واقعات کو سن کر کانپ اٹھتے ہیں۔ وہی دوسرے موقعوں پر ہزار ہا انسانوں کو اپنے ہاتھ سے قتل کر کے یا اپنی آنکھوں کے سامنے قتل ہوتے دیکھ کر کبھی لرزہ نہیں کھاتے بلکہ ہر لمحہ اوقات خوش ہوتے ہیں جنگوں کا وہ انسانی سوسائٹی کی ضروریات میں سے رہا ہے اور اب تک یہی حال ہے۔ یوں یوں انسانی کوشش تاریخ کا مطالعہ کیا جاوے یہ معلوم ہو گا کہ لڑائیاں انسان کی ابتدائی ترقی میں اسکی موجودہ حالت سے زیادہ کہ ضروری رہی ہیں اور انہی جنگوں کے لوازم میں سے ہی غلام بھی ہے بلکہ در حقیقت غلامی کا رواج انسانی ترقی میں ایک عظیم مرحلہ تھا کیونکہ اس رواج کے ساتھ وہ بے رحمی جاتی رہی جسکی رو سے کل کے کل اسیر جو کسی دوسری قوم کے ساتھ جنگ میں ہاتھ لگے ہوں قتل کئے جاتے تھے۔ چنانچہ ایک عیسائی مصنف لکھتا ہے۔ مگر اس بات کو ابھی تک لوگوں نے اسی طرح نہیں سمجھا کہ کھلی توئی تاریخی ترقی میں جنگ ایک ضروری فرض کو لو کر نہائی تھی۔ اول اس لحاظ سے کہ جنگ کا اصل مقصد یہ تھا کہ حترق قومیں ایک ہو جائیں اور اس لحاظ سے یہ ضروری تھا کہ ناکھیں میں سے جو لوگ بکڑ لئے جائیں وہ ایک مائتھی کی حالت میں رکھے جائیں تاکہ وہ ہر ماں قوم کو سرفلانے کی طاقت نہ ہو اور یوں جنگ کا اصلی مقصد حاصل ہو دوام اس لحاظ سے کہ یہ مسلم امر ہے کہ لہذا وہ میں انسانی سوسائٹی میں محنت اور مشقت کے کاموں

سے گرج کیا جاتا ہے ہر مومنا آرام جلی زیادہ ہوتی ہے جس جب ایک قوم کے لوگ اپنے مخالفوں کے درمیان آکر رہیں گے تو وہ سوائے مجبوری کے کبھی کام نہ کریں گے اسلئے ضروری ہو اگر ان کو غلام بنا کر ان سے کام لیا جائے۔ اس دوسرے امر کے متعلق اس قدر کہ دیکھا کافی ہے کہ دنیا کی کسی قوم میں بھی نو، حق اور نوجی سے محنت کو اختیار نہیں کیا گیا پھر ہر ایک ملک میں جنکا ہمیں علم ہے یہی نظر آتا ہے کہ مزدوروں نے مجبور کر کے زیر دستوں کو کام پر لگایا ہے اور ان سے محنت شائق کے کام لئے ہیں اور آخر جب مدت تک یہ مجبوری چلی آئی تو پھر اس قوم کی عادت میں اور ہر داخل ہو گیا ہر لول کے لحاظ سے آزاد آدمی لازماً بنگ پیش تھے اور غلام محنت کا کام کرنے والے لوگ تھے اور یہ دونوں گروہ ایک دوسرے کیلئے ہمارے معائن تھے اور ایک کا وجود دوسرے کیلئے ضروری تھا اور یوں غیر متقابل اور جھگڑے کے دونوں ایک دوسرے کے معائن ہو کر انسانی سوسائٹی کی ترقی کے دارمغ تھے۔

اسلام میں غلاموں سے سلوک : یہ ایک امر واقع ہے جسکی تصدیق روزمرہ واقعات سے ہو رہی ہے کہ مسلمانوں میں مالک اور مملوک کا تعلق مطرب میں آقا اور نوکر کے تعلق سے بدد جہا ہوتا ہے جو لوگ صاحب مرتبہ یا صاحب ثروت ہیں وہ غریب لوگوں کو عبادت کی نظر سے دیکھتے ہیں مگر یہ حقیران مطرب ان تمام میں سب سے داغی ہوئی ہے جسکو اس بات پر فخر ہے کہ ہم غلامی کے رولج سے آزاد ہو چکے ہیں۔ اس میں شک نہیں کہ غلامی کے نام کو انہوں نے دور کر دیا ہے مگر اس کی حقیقت میں کوئی تبدیلی واقع نہیں ہوئی ایک مذہب مطرب جب ایک غیر قوم کے آدمی کو ملازم رکھتا ہے تو وہ اسے ایک وحشی سے بھی بدتر سمجھ کر سلوک کرتا ہے خصوصاً اس حالت میں جب ملازم کا کام ہوئی درجہ کا ہو اور جہاں تک عقلی اور سلوک کا سوال ہے کوئی شخص امتیاز نہیں کر سکتا کہ صاحب کا سلوک اپنے نوکر سے اچھا ہے یا قادیم زمانہ میں ایک آدمی کا تعلق اپنے غلام سے اچھا تھا شاید ہی کوئی موسم گرا گیا گزر جائے گا جب یہ آواز ہمارے کانوں میں نہ پڑتی ہو کہ ایک

غریب بلکہ عقل کو آقا نے بار بار / صرف اسلئے بلاک کر، پاک اس پر قسمت کو تنگ کر دیا تو کون عقلی
 تھی اس حالت میں میں نہیں سمجھتا کہ وہی مالک کو وہ کون اختیار اپنے غلام پر حاصل تھا جو اب
 ایک مذہب عیسائی کو اپنے نوکر پر حاصل نہیں یا کوئی نہ سلو کی وہ کرتا تھا جو اب نہیں کی جاتی اور
 گالیاں دینا یا معصومی طور پر بد لینا تو کوئی بات ہی نہیں۔ مذہب مغربی اقوام کو غلامی کے موقوف
 کرنے پر اس وقت تک فخر نہیں کرنا چاہیے جب تک کہ حقیقت غلامی یعنی نوکروں پر ظلم اور اس کے
 ساتھ بد سلوکی سے وہ نہیات حاصل نہ کر لیں اگر غلامی موقوف کرنے میں عداوی غرض یہ تھی کہ جو
 ظلم ایک مالک مملوک سے خدمت لینے میں کر سکتا ہے انکو رد کا جاوے اور ان لوگوں کو جو کہ غلام
 کہلاتے ہیں انکی ذلیل حالت سے نکال کر دوسرے انسانوں کی طرح انکو سمجھا جاوے تو میں احمس
 سے کہہ سکتا ہوں کہ یورپ میں سے ابھی تک غلامی کا رواج دور نہیں ہوا اور ابھی تک وہ مقصد
 حاصل نہیں کیا جو اسلام اس سے حیرہ سوری پہلے حاصل کر چکا ہے کیا یہ سچ نہیں ہے کہ یورپین
 ویسی ملازموں کو جن سے وہ خدمت کا کام لیتے ہیں وہ شیعوں سے اچھا نہیں سمجھتے۔ پھر اتنی بات
 سے کیا فرق ہو جائے گا کہ وہ انکا نام غلام نہیں بلکہ خادم رکھتے ہیں آقا طور غلام کے سچے تعلقات کو
 سمجھنے میں یورپ ابھی اسلام سے باوجود حیرہ صدیاں گزر جانے کے بہت پیچھے ہے جو ذات قدیم
 اقوام میں غلام کے نام سے لگی ہوئی تھی اور جو ذات آج ابھی غریب اور کم حیثیت آدمیوں کی کی
 جاتی ہے اسلام نے اسکو غلامی کے نام سے قطعاً دور کر دیا اور نہ صرف انکوں میں ہی بلکہ عملی طور پر
 اسے جز سے کاٹ دیا۔ اسلام کے تصور سے آقا اور غلام یا مالک اور مملوک کے تعلقات سچے
 برور ان تعلقات سے بدل گئے۔ آقا اپنے غلام کی محنت کے کاموں میں شریک ہونے لگا اور غلام
 اپنے آقا کی وجاہت اور عزت میں شریک ہو گیا۔ یہ صرف انہیں آقاؤں کی حالت نہ تھی جو
 سوسائٹی کے درمیانی یا بچے اور چہ میں تھے بلکہ معزز سے معزز اور وہ امتداد سے دو امتداد آقاؤں کا بھی
 یہی حال تھا سب سے پہلے ہمیں قرآن شریف کی تعلیم پر غور کرنا چاہیے کہ وہ غلاموں کے ساتھ
 کیا سلوک چاہتا ہے۔ اس بارے میں مندرجہ ذیل آیت قرآن کریم کی وارہ ہے۔ وَالصَّوْغَاءُ

ولا تشركوا به شيئاً وبالوالدين احساناً وبذی القربى واليتيم والمساكين والمجانزى
المقرى والمجانز الحب والمصاحب بالحسب وامس السبيل وما ملکت ايمانکم ان الله لا
يحب من كان محتالاً فحوراً (الانباء رکوع ۶ آیت ۳۶)۔

یعنی اللہ ہی کی عبادت کر، اور انکے ساتھ کسی چیز کو شریک مت ٹھہراؤ اور احسان کرواں باپ کے
ساتھ اور قرابت والوں اور قریبوں اور محتاجوں اور قرابت والے یتیموں اور انجمنی یتیموں اور
پاس کے یتیمین والوں اور مسافروں اور لوٹنے والوں کے ساتھ جو تمہارے قبضہ میں ہیں۔ اللہ
تعالیٰ ان لوگوں کو دوست نہیں رکھتا جو اترا نہیں (یعنی دوسروں کے حقوق کی پروا نہ کریں اور بلائی
یاد تے ہاں) (یعنی دوسروں کو حقیر سمجھیں) اس آیت شریفہ میں دو قسم کے احکام ایک ہی جگہ
اگٹھے کر کے بیان کئے گئے ہیں یعنی اللہ تعالیٰ کی عبادت اور انکی مخلوق سے نیکی اور دوسرے حصہ
میں بعض لوگ جن کے ساتھ انسان کو نیکی کرنی چاہیے خصوصاً کر کے بیان کئے گئے ہیں۔ تاکہ
انکی طرف زیادہ توجہ ہو ان دونوں احکام کو ایک ہی جگہ بیان کرنے سے یہ مقصود ہے کہ جیسا اللہ
تعالیٰ کی عبادت کرنا اور اسکا کوئی شریک نہ ٹھہرانا اسلام نے کیلئے ضروری ہے ویسا ہی مخلوق کے
ساتھ نیکی کرنا ضروری ہے کیونکہ یہی دو شریعت کے بھاری اجزاء ہیں یعنی اللہ تعالیٰ سے سچا تعلق
بیدا کرنا اور انکی مخلوق سے نیکی کرنا۔

پس جہاں انجیل غلاموں کے ساتھ سلوک کرنے کے متعلق ایک لفظ بھی کہتی نہیں
قرآن کریم اسے ایسا ضروری قرار دیتا ہے جیسا اللہ میں سے نیکی کرنا کیونکہ ایک سے ہی الفاظ میں
دونوں احکام بیان کئے گئے ہیں یہ اس قدر صاف علم غلاموں سے نیکی کرنے کا ہے جس سے کوئی
دشمن اسلام بھی انکار نہیں کر سکتا۔

چنانچہ اللہ نے اپنی دشمنی آف اسلام میں اس بات کو تسلیم کیا ہے چنانچہ وہ لکھتا ہے کہ ”یہ ہائل
صاف امر ہے کہ قرآن شریف اور احادیث میں غلاموں کے ساتھ نیکی کرنے کی بلا سے زور کے
ساتھ تاکید کی گئی ہے۔“

انکے علاوہ دینی اخوت کا سلسلہ جو اسلام نے قائم کیا وہ چائے خود ایک زبردست محرک نیک سلوک کا قلعہ آزلو عورتوں اور غلاموں کے درمیان اور آزلو مرد اور لوطیوں کے درمیان نکاح جائز قرار دینے کے ایک مشرک آزلو عورت اور مسلمان لوطی میں نکاح کے وقت ترجیح لوطی کو دی گئی اور ایک مشرک مرد اور مسلمان غلام میں ترجیح غلام کو دی گئی بات بات پر غلاموں کے آزلو کرنے کا حکم دیا گیا اور اسے عمل گناہوں کا گناہ قرار دیکر یہ سمجھایا گیا کہ غلاموں کے ساتھ نیکی کرنا اور انکو آزلو کرنا اللہ تعالیٰ کے نزدیک بہت سی محبوب فعل ہے لوطی اگر نکاح کے بعد خوش کی مرتکب ہو تو اس کی سزا آزلو عورت سے نسلب رکھی گئی ہے۔ غلاموں کے نکاح کرنے کا خاص طور پر حکم دیا گیا چنانچہ فرمایا: **وَالنِّكَاحُ الْاِيْمَانُ مَسْكَمٌ وَالصَّالِحِيْنَ مِنْ عِبَادِكُمْ وَاَمَّاكُمْ اِنْ يَكُوْنُوْا ظُهْرًا بَعْضُهُمْ اِلَىٰ بَعْضُهُمْ** (النور کو ع ۳ آیت ۳۲) ترجمہ اور تم میں سے جن کے ازواج نہیں انکے نکاح کرو۔ اور نیز تمہارے غلاموں اور لوطیوں میں سے جو نیک خست ہوں انکے بھی نکاح کرو اگر یہ لوگ محتاج ہوں گے تو اللہ تعالیٰ اپنے فضل سے انہیں لٹکی کر دیکھ۔ عقل از اسلام جو چہاں عرب میں لوطی غلاموں کے معاملہ میں تھیں ان سب کو دور کیا گیا لختلہ انکے ایک یہ بد رسم بھی تھی کہ لوطیوں سے بدکاری کرنا اس حال سے فائدہ نہ لگاتے۔ جس کی خاص طور پر ممانعت قرآن شریف میں کی گئی ہے۔ یہ ہیں قرآن شریف کے احکام ان میں سب سے پہلے یہ امر دیکھنا چاہیے کہ ان احکام سے آنحضرت ﷺ کے اقوال اور آپ کے قبہین نے کیا سمجھا اور ان پر کیا عمل کیا اس فرض کے لئے احادیث میں آنحضرت ﷺ کے اقوال اور آپ کے عمل کو سب سے پہلے دیکھنا چاہیے احادیث پر نور کرنے سے معلوم ہوتا ہے کہ جس قدر زور تمہارے نبی کریم ﷺ نے غلاموں کے ساتھ حسن سلوک کرنے پر دیا اور پھر لوطیوں میں حسن سلوک کا نمونہ دکھایا ہے اس سے اگر موازنہ کیا جائے تو یہی کتنا چہ گنا کہ کسی دوسرے مصلح نے آپ کے بالمثل بکھ بھی نہیں کیا سب سے پہلے میں صحیح بخاری کی احادیث کو بیان کرتا ہوں اور پھر دوسری حنفی احادیث کو۔

رسول اللہ ﷺ فرماتے ہیں۔ ان اخوانکم حولکم جعلہم اللہ تحت اہلبکم
فیس کما ان احوة تحت یدہ فلیطعمہ مما یاکل ولیلسہ مما یلبس ولا یتکلفوا ہم ما
بعلمہم فان کلفتمو ہم ما بعلمہم فاعینوہم یعنی یہ تمہارے بھائی تمہارے خود نگار ہیں
اللہ نے انہیں تمہارے ہاتھ کے نیچے رکھا ہے پس جس شخص کا بھائی اس کے ہاتھ کے نیچے ہو اسے
ہا ہے کہ جو چیز آپ کھاتا ہے اسی میں سے اسے بھی کھلاوے اور جو پوٹا ک آپ پینتا ہے اسی میں
سے اسے بھی پیوے اور ان پر کوئی ایسا بھونڈا اور جو ان کی طاقت سے زیادہ ہو اور اگر ان کی طاقت
سے زیادہ کام انکو دو تو پھر انکو مدد بھی دو۔

یہاں کہ اور کونسا انسانوں کا ہمدرد پیدا ہوا ہے یا کونسا مصلح ہے جس نے اپنے کامل انصاف
آقا اور غلام میں پیدا کی ہو جو صرف الفاظ تک ہی محدود نہیں بلکہ عملی رنگ میں ہے کہ مالک اور
مملوک کا ایک ایسا ہی لباس اور ایک ہی خوراک ہو پھر یہی نہیں بلکہ غلاموں کی حالت سے ہی
قابل رنگ معلوم ہوتی ہے جب ہم آپ کے ایک صحابی کے پیارے الفاظ پڑھتے ہیں۔ والظہین
نفسی یدہ لولا الجہاد فی سبیل اللہ والحج وبراہمی لا حلیت ان اموت وانا مملوک۔
قسم ہے اس ذات پاک کی جس کے ہاتھ میں میری جان ہے کہ اگر اللہ کی راہ میں جہاد اور حج اور اپنی
ماں کی خدمت نہ ہوتی تو میں پسند کرتا کہ غلامی کی حالت میں ہی مروں۔ پھر غلاموں اور لونڈوں
کے ساتھ حسن سلوک صرف اسی حد تک محدود نہیں رکھا گیا کہ ان سے کام لیا جائے اور ان کے
ساتھ نیکی کی جائے بلکہ انکی عمدہ پرورش کیلئے بھی جناب رسالت مآب علیہ السلام نے
خاص طور پر ارشاد فرمایا ہے۔ چنانچہ لونڈوں کے متعلق یہ ہدایت فرمائی قال النبی ﷺ
ایما رجل کانت له جارۃ فادبها فاحسن تعلیمها واعفها وقرۃ حیاة اجرا ان فرمایا
نبی کریم ﷺ نے جس شخص کے پاس لونڈی ہو پھر وہ انکی تادیب کرے یعنی اسے اعلیٰ درجہ کے
نیک اخلاق کی تربیت دے اور اسکو نہایت عمدہ تعلیم دے پھر اس کے بعد اسے آزاد کرے اور اس سے
نکاح کرے اس کے لئے دو ہر اجر ہے۔

اس حدیث کی طرف میں خصوصیت سے توجہ دلاتا ہوں جو یہ کہا کرتے ہیں کہ اسلام عورت کو جاہل رکھنا چاہتا ہے وہ غور کریں کہ آزاد عورتیں تو ایک طرف رہیں اسلام تو لوٹروں کے متعلق بھی یہ حکم دیتا ہے کہ انکو نہایت عمدہ تعلیم اور تربیت دی جائے اسی حدیث سے نہایت مستثنیٰ سے یہ بھی ثابت ہوتا ہے کہ اسلام کا مطیع خاطر عورتوں اور لوٹروں کو کس درجہ تک ترقی دینے کا ہے۔ بہت سی اور حدیثیں ہیں جن میں غلاموں کے ساتھ حسن سلوک کے بارہ میں تاکید کی گئی ہے ان میں سے مظلوموں کی بعض حدیثوں کا ترجمہ لیں۔ صاحب نے اپنے ترجمہ الف لیلہ کے نوٹوں میں دیا ہے اور انہی کو پڑھوں نے اپنی دشمنی آف اسلام میں نقل کیا ہے ان میں سے بعض کا ترجمہ میں یہاں کر دیتا ہوں۔

اپنے غلاموں کو اس کھانے میں سے کھاؤ جو تم خود کھاتے ہو اور وہ یہاں پر نہ آؤ۔

جو تم خود پیتے ہو اور انکو یہ کام کرنے کو نہ دو جو ان کی طاقت سے باہر کر ہو جو شخص اپنے غلام کو بلا وجہ مارتا ہے یا اسکے منہ پر مارتا ہے اسکا کفارہ یہ ہے کہ وہ اسے آزاد کرے۔ جو شخص اپنے غلام سے سختی کرتا ہے وہ جنت میں داخل نہیں ہوگا جو شخص ماں اور بیٹے میں جدائی پیدا کرتا ہے (یعنی توٹتی کوچہ کرنا) اللہ تعالیٰ قیامت کے دن اسے اسکے دوستوں سے جدا کرے۔

ان تمام احادیث سے نہایت صاف اور یقینی شہادت اس بات کی ملتی ہے کہ لہجہ اسلام میں غلام کو غلام سمجھای نہیں گیا بلکہ اسکے کام کو ٹھیک چھوڑ کر جو اس سے پیدا کیا گیا ہے وہ ہر طرح سے اپنے مالک کے برابر سمجھا گیا ہے۔ ہر دو سو سال گزار چکے ہیں جب پہلے ایک بچہ ہو رہا ہے جسی نوع انسان نے یہ بدایگیں جاری کیں نہ صرف جاری کیں بلکہ ان پر عمل کیا اور کرنا مگر قریب دو سو سال گزر جانے کے اور پھر دو سو سال کے بعد وہی کے دعووں کے کسی شخص میں اس قدر اخلاقی جرأت بھی نہیں جو ان بدایگیوں پر عمل کرنا خود کنارہ نہ ہو کر ان کے متعلق اسی قسم کی بدایگی دینے کی جرأت کرے۔

اب میں چند اور حدیثیں نقل کرتا ہوں تاکہ ناظرین کو معلوم ہو کہ اللہ نے نبی کریم ﷺ نے

کس قدر تاکید قلاموں اور لوٹریوں کے ساتھ حسن سلوک کے متعلق کی ہے۔ ایک روایت میں آیا ہے کہ مرض الموت میں آپ کے منہ میں یہ الفاظ تھے الصلوٰۃ وما ملکت امیانتکم جس کا مطلب یہ ہے کہ دو چیزوں کا خاص طور پر خیال رکھو یعنی نماز اور غلاموں اور لوٹریوں کے ساتھ حسن سلوک۔ اس حدیث سے کئی صفائی کے ساتھ ثابت ہوتا ہے کہ آپ کے دل میں انسانوں کے ساتھ اور خصوصاً اس جماعت کے ساتھ جسکو دنیا کی سب قوموں نے ذلیل سمجھا اور اب تک ذلیل سمجھ رہے ہیں (یعنی غلام) کیا ہوگی تہددی کا جوش تھا اور کس قدر ان کی بھڑی کا فکر آپ کو تھا کہ اخیر وقت میں بھی یہی لفظ آپ کے منہ سے نکلے آپ کیا چاہتے تھے۔

ایک شخص کا ذکر ہے کہ ایک دفعہ آپ کے پاس آیا اور آپ سے پوچھا کہ میں کتنی مرتبہ اپنے غلام کو معاف کیا کروں آپ نے منہ پھیر لیا اور کوئی جواب اس کے سوال کا نہ دیا اور دوسری دفعہ اور پھر تیسری دفعہ سامنے آیا اور یہی سوال دہرایا اور آنحضرت ﷺ اسی طرح پھر جواب دینے کے منہ پھیر لیا پھر چھی مرتبہ جب اس نے سوال کیا تو آپ نے فرمایا اےف عی عبدک مسعین مر فاعلی کل یوم۔ یعنی تو ہر روز سزا دہو اپنے غلام کو معاف کیا کر۔

میں پوچھتا ہوں کہ کیا آج کل اقوام میں جو مذہب کہلاتی ہیں ایک آدمی بھی ایسا ہے جو اپنے غلام کو پادجوہر اسکے قصور کے سزا دہو معاف کر سکے مگر اسلام میں غلاموں کے متعلق واقعی ایسا عمل نہ ہو آپ کا دل یہ بھی گوارا نہ کر سکتا تھا کہ غلام کو غلام پکارا جائے کیونکہ اس نام میں عداوت پائی جاتی تھی اور آپ پھندہ کرتے تھے کہ کسی قسم کی بھی تعمیر ان کی جائے پتہ نچوہ نام جاری علیہ الرحمۃ نے یہ حدیث روایت کی ہے۔ لا یفل احدکم عیدی وامسی ولیل لفسای ولنہی وغلامی۔ چاہیے کہ تم یہ نہ کہو کہ میرا غلام یا میری لوٹری بہو یوں کہو کہ میرا لڑکا یا اے میرے لوٹریوں (یہ لفظ بھی ہر ایک جو ان مرد اور جو ان عورت پر لے جاتے ہیں لفظ غلام بھی عربی میں عبد اور کنہ کہنے سے اس لئے وہ کا کہ یہ الفاظ عموماً لوٹریوں اور غلاموں پر بھی لے جاتے تھے اور وہ الفاظ جن کے لے لے کی چہایت کی ہے وہ نام ہیں آقا مردوں اور عورتوں پر بھی لے لے

جاتے ہیں اور اس نعمی کی اور توجیہ بھی ہے۔ اسکے بعد میں یہ بیان کروں گا کہ ان ہدایات پر عمل بھی کیا جاتا تھا یا نہیں اور اگر کیا جاتا تھا تو کس حد تک مگر عمل اسکے کہ میں عمل کی نظیر میں پیش کروں ایک شبہ کا ازالہ ضروری معلوم ہوتا ہے کہ اگر غلاموں کو اس قدر حقوق دیئے گئے تھے اور انکی اس قدر رعایت ضروری تھی جیسا کہ حدیثوں سے یہ ظاہر ہے تو پھر مالک اور مملوک میں فرق ہی کیا تھا۔ اسکا جواب خود آنحضرت ﷺ کی حدیث میں موجود ہے اور یہ حدیث بھی صحیح بخاری میں مذکور ہے۔ چنانچہ فرمایا۔

كُلُّكُمْ رَاعٍ وَكُلُّكُمْ مَسْئُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ فَاَلَا مَبْرَأَ الَّذِي عَلَيْهِ النَّاسُ رَاعٍ وَهُوَ مَسْئُولٌ عَنْهُمْ وَالرَّجُلُ رَاعٍ عَلَىٰ بَيْتِهِ وَهُوَ مَسْئُولٌ عَنْهُمْ وَالْمَرْأَةُ رَاعِيَةٌ عَلَىٰ بَيْتِهَا وَوَلَدِهَا وَهُوَ مَسْئُولٌ عَنْهُمْ وَالْعَدُوُّ رَاعٍ عَلَىٰ مَالِ سَيِّدِهِ وَهُوَ مَسْئُولٌ عَنْهُ

یعنی تم میں سے ہر ایک حاکم ہے اور اس سے اپنی اہل بیت کے متعلق سوال کیا جائے گا۔ پس امیر جو لوگوں پر مقرر حاکم ہے اور اس سے ان لوگوں کے متعلق پوچھا جائے گا اور عورت اپنے خاندان کے گھر پر اور انکی اولاد پر حاکم ہے اور اسے ان کے متعلق پوچھا جائے گا اور غلام اپنے آقا کے مال پر حاکم ہے اور اس سے اس کے متعلق پوچھا جائے گا اس حدیث کی رو سے ہر ایک شخص کے سیر و جہاد احکام ہے۔ اور ایک رنگ میں ایک شخص حاکم ہے اور دوسرے رنگ میں وہی مملوک ہے اسلام ایسی مساوات کی تعلیم نہیں دیتا جس سے چھوٹوں بڑوں کا امتیاز بھی اٹھ جائے اور دنیا کے کاروبار نہ ہو جائیں بلکہ ایک ایسی اخوت قائم کرتا ہے کہ کام بھی سب کے الگ الگ رہیں اور سوسائٹی میں بڑے بھی ہوں اور چھوٹے بھی۔ مگر اسکے ساتھ ہی ان میں انسان اور پھر بھائی ہونے کی حیثیت سے ایک مساوات بھی ہونے کا حکم مقرر کرنے سے اسلام کی پاک تعلیم کا یہ خفا ہے کہ آقا ﷺ کے کام کو ذلیل سمجھ کر اسے ہاتھ نہ لگانے دے اور آقا کا کام غلام کی عزت سے بڑھ کر سمجھا جاوے جس پر بھی حکم ہے کہ ضرورت کے وقت آقا کا کام کے کام میں انکی مدد کرے اور جو فوائد آقا لھاتا ہے غلام کو ان سے محروم نہ رکھا جائے البتہ فرق دونوں میں یہ رکھا ہے کہ آقا کو چاہیے کہ وہ اپنے غلام سے نیکی کرے اور احسان دے اور غلام کا فرض ہے کہ وہ اپنے آقا کی سچے دل سے

فرمانبرداری کرے وہ اپنے اپنے مفروضہ کاموں کو نکالیں۔ باقی امور میں وہ مسلہ ہی ہیں۔

اب میں چند مثالیں بیان کرتا ہوں۔ عداوت نبی ﷺ نہ صرف معظم ہی تھی بلکہ ہر بات میں خود ایک پاک نمونہ بھی تھے۔ یہی وجہ تھی کہ آپ کی تعلیم کا وہ نذر دست اثر آپ کے صحابہ اور مسلمانوں پر ہوا۔ حضرت انسؓ نے آپ کے واقعات خاموشی کے ساتھ بتائی کرنے کے بیان کئے ہیں۔ چنانچہ وہ فرماتے ہیں کہ میں دس سال تک آنحضرت ﷺ کی خدمت کرتا رہا اس عرصہ میں کبھی آپ نے مجھ کو کلمہ تک نہیں کیا۔ جب میں نے کوئی کام کیا تو مجھے یہ نہیں کہا کہ یہ کام تم نے کیوں کیا اور اگر کوئی کام نہیں کیا تو یہ نہیں کہا کہ یہ کیوں نہیں کیا اور آپ کا سلوک تمام دنیا سے جدا کر دیا۔

تو حضرت عائشہؓ فرماتی ہیں کہ آنحضرت ﷺ نے کبھی کسی خادمہ یا کسی عورت کو نہیں مارا۔ آپ کے صادق صحبت اور گفتمن بھی آپ کے عقلی قدم پر ہی چلتے تھے۔ ایک دفعہ کا ذکر ہے کہ آپ نے امیران جنگ میں سے ایک امیر ایک صحابی کو ابغلم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو بلور غلام کے دیا اور انکو صحیح کی کہ اس سے نیک سلوک کرنا۔ ابغلم اس غلام کو لے کر گھر گئے اور اپنی بی بی کو کہا کہ آنحضرت ﷺ نے مجھے یہ غلام دیا ہے۔ اور ساتھ ہی یہ وصیت کی ہے کہ اس سے حسن سلوک کرنا۔ بی بی نے کہا کہ اس صحیح پر تم پر راکھ کھر عمل کر سکتے ہو۔ سوائے اسکے کہ غلام کو آزاد کرو۔ چنانچہ ابغلم نے وہ غلام اسی وقت آزاد کر دیا۔ ذہاب نے اپنے ایک غلام کو ایک لوطی کے ساتھ لیا اور اسکی ہاک کاٹا اور غلام آنحضرت ﷺ کے پاس گیا آپ نے پوچھا کہ کس نے تمہارے حال کیا ہے غلام نے کہا ذہاب نے چنانچہ اسی وقت ذہاب کو طلب کیا گیا اس نے جو دیکھا تھا بیان کیا۔ آنحضرت ﷺ نے غلام کو فرمایا کہ جا تو آزاد ہے پھر غلام نے کہا یا رسول اللہ میں کس کا سوتی کھاناں کھاؤ۔ (یعنی میرا سعادان اور مدکار کون ہو گا) آپ نے فرمایا خدا اور اسکے رسول کا سوتی۔ چنانچہ اسی وعدہ کے مطابق آپ جب تک جیتے رہے انکی مدد کرتے رہے آپ کی وفات کے بعد وہ حضرت ابو بکر کے پاس آیا اور اقدہ آنکھ پڑا اور لایا اس پر حضرت ابو بکر نے اسکے بعد حضرت عمرؓ کے پاس حاضر ہو آپ نے پوچھا تو کہاں پہنچا چاہتا ہے عرض کیا مصر میں۔ اس پر حضرت عمرؓ نے حاکم

مصر کے ہم علم گھوڑا کہ اسکو اٹکے گزارو کیلئے زمین دیو۔ جتان اٹھ گیا پاپک و عدہ طاہور گیا پاپک اس کا ایفاء ہوا۔

یو مسعود انسدادی فرماتے ہیں کہ میں ایک دفعہ اپنے غلام کو مار رہا تھا کہ ناگہاں میں نے اپنے پیچھے سے یہ توڑ سن۔ یو مسعود یاد رکھو کہ جس قدر طاہور حاکم تم اس پر ہو اس سے زیادہ طاہور حاکم خدا تم پر ہے یو مسعود فرماتے ہیں کہ جب میں نے پیچھے ہٹ کر دیکھا تو آنحضرت ﷺ تھے میں نے عرض کیا یا رسول اللہ میں نے اسی وقت اسکو خدا کیلئے گزارا کر دیا آپ نے فرمایا کہ اگر تم اسے آڑو نہ کرتے تو تم آگ میں پڑتے۔

حضرت ابو ہریرہؓ کے متعلق روایت ہے کہ آپ نے ایک روز دیکھا کہ ایک آدمی سوار ہے اور اسکا غلام اٹکے پیچھے پیچھے بھاگ رہا ہے آپ نے فرمایا اسے اپنے پیچھے اٹھا لو کیونکہ یہ تمہارا بھائی ہے اور اسکی روح بھی تمہاری روح کی طرح ہے۔

کہتے ہیں میں نے لوہاڑ گود دیکھا کہ وہ ایک عہد لباس پہنے ہوئے ہیں میں نے پوچھا تو فرمایا کہ ایک دفعہ میں نے ایک آدمی کو اس سے مراد کوئی حکام ہے کچھ دھلا کھا۔ اس نے میری شکایت نبی کریم ﷺ کے پاس کی آپ نے مجھے مخاطب کر کے فرمایا کہ تم نے اسکی ماں سے اسکو مار دیا تو پھر فرمایا کہ تمہارے غلام اور نوکر چاکر تمہارے بھائی ہیں جس شخص کا بھائی اسکے ہاتھ کے چپے ہو اسے چاہیے کہ اپنے کھانے سے اسے کھلاؤ اور اپنے لباس سے کپڑا پہناؤ سے تم اپنے غلاموں کو ایسا کام نہ دو جو ان کی طاقت سے زیادہ ہو اور اگر وہ تو پھر اٹکے کرنے میں نورد دو۔

حضرت عثمان رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے متعلق روایت ہے کہ آپ نے ایک غلام کی نافرمانی کی وجہ سے اسکا کان مروڑا اور پھر اپنے فضل سے توبہ کی اور اسی غلام کما کہ تو بھی اسی طرح میرا کان مروڑ۔ مگر اس نے انکار کیا آپ نے اصرار کیا تو اس نے آہستہ آہستہ کان مروڑنا شروع کیا آپ نے کما زور سے مروڑا کیونکہ میں قیامت کے دن سزا برداشت نہیں کر سکتا۔ غلام نے جواب دیا اے میرے آقا جس دن سے تو ڈار تا ہے اسی دن سے میں بھی ڈار تا ہوں۔

حضرت زین العابدین کا ذکر ہے کہ ایک دفعہ ان کے ایک غلام نے بھیڑ کو پکارتے ہوئے
 اٹکی ایک جنگ توڑ لی انہوں نے کہا کہ تم نے کیوں ایسا کیا۔ کہا آجکو غصہ دوانے کیلئے۔ آپ نے
 فرمایا میں نے تجھے یہ تعلیم دی میں اسے غصہ دوانے کا یعنی شیطان کو۔ جانور تو خدا کیلئے توڑو ہے۔
 غلاموں یا آنکروں کو رو غلاموں کو بلا سے بلا سے غصہ دے دیئے جاتے تھے۔ اسامہ کو جو کہ
 حضرت زید کے چچا تھے خود آنحضرت ﷺ نے ایک فوج کا سربراہ بنا لیا تھا کہ یہ فوج روانہ ہو
 آنحضرت ﷺ کا انتقال ہو گیا حضرت ابو بکر کو لوگوں نے کہا کہ آپ کسی اور سے آدمی کو حاضر
 بنا لیں۔ مگر آپ بہت ناراض ہوئے کہ جو کام میرے پیارے محبوب اور آقا نے کیا ہے میں اسے
 منسوخ کروں۔ جب فوج کی روانگی کا وقت آیا تو آپ اسامہ کے ساتھ ساتھ بیول روانہ ہوئے اور
 وہ سوار تھے۔ انہوں نے عرض کی کہ اے خلیفہ رسول اللہ یا آپ بھی سوار ہو جائیں اور ہاتھ
 اجاڑنا میں کہ میں بھی بیول چلوں مگر آپ نے نہ مانا اور کچھ دیر تک صحبت کرتے ہوئے اسی
 طرح ساتھ گئے۔

جب حضرت عمرو نے مصر کی فتح کا ارادہ کیا تو بول صلح کا پیغام دیکر ایک جماعت حاکم
 مصر کے پاس گئی جس کا سردار عبادہ کو قرار دیا جو عجمی تھے اور عجمی اس زمانہ میں اہل عربوں کے
 فروخت ہوتے تھے۔ جب یہ جماعت حاکم مصر کے سامنے آئی تو اس نے کہا کہ اس عجمی کو باہر
 نکال دو انہوں نے کہا کہ یہی تو ہمارا سردار ہے اور جو کچھ یہ کہے گا کرے گا۔ اس کے ہمراہ ہیں۔
 متو قس حیران ہو اور پوچھا تم نے ایک عجمی کو اپنا سردار کیوں کر بنا لیا۔ انہوں نے کہا سرداری
 ہمارے درمیان قومیت یا رنگ پر نہیں بلکہ فضیلت پر ہے سو یہ ہم سب میں سے افضل ہے۔

حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ جیسے بادشاہ کا سلوک جو اپنے غلاموں سے تھا وہ ظاہر کرتا ہے کہ
 ابتدائی اسلامی سوسائٹی میں غلاموں کی کیا حیثیت تھی اور وہ لوگ کس طرح پر اپنے پیارے نبی
 ﷺ کے لشکروں پر عمل کرتے تھے۔ جب حضرت ابو عبیدہ نے امیر مہاجرین کو لکھا تو آپ فی الخور
 روانہ ہو گئے آپ کے ساتھ آپ کا غلام بھی تھا۔ مگر سواری کیلئے اونٹ صرف ایک ہی تھا اس لئے خلیفہ

اور غلام باری باری اس پر چڑھے اور جس کی باری نہ ہوتی وہ پیدل ہر نو روز تک جب آپ صید کا کے ذریعے کے قریب پہنچے تو انکا غلام کی باری سواری کی آگئی آپ اتر کر سے ہوئے اور غلام کو سوار کیا اور آپ پیدل ہر نو بھاگتے تھے اور تمام نظریں آپکی طرف لگی ہوئی تھیں اور عید نے اس بات سے ڈر کر کہ امیر المومنین کو اس طرح پیدل بھانٹا ہوا دیکھ کر بروہ ظلم کی لہلہا پر بر اثر نہ ہو اور مہلدا جنگ درخ پلٹ دے عرض کیا تمام نظریں آپ کی طرف لگی ہوئی ہیں اس صورت میں یہ مناسب نہیں کہ آپ کا غلام تو سوار ہو اور آپ نو کرہوں کی طرح ساتھ ساتھ بھاگیں۔

حضرت عمرؓ اس بات کو سن کر غضب میں آئے اور فرمایا کہ تجھ سے پہلے مجھے ایسے کسی نے نہیں کد ہم سب لوگوں سے زیادہ ذلیل اور حقیر اور سب سے تمہارے تھے خدا نے اسلام کے ذریعے ہمیں برائی اور عزت دی اور اگر ہم حق راہوں سے جو کہ اسلام نے ہمیں سکھائی ہیں فلک چل کر عزت تلاش کریں گے تو پھر خدا ہمیں ذلیل کرے گا۔ جس سے آپ کا یہ مطلب تھا کہ اسلام نے تعلیم دی ہے کہ تم اپنی عزت اسی میں سمجھو کہ اپنے غلاموں کو اپنے برابر نہ گوارا کر ہم اس مسالمت میں اپنی دولت بکھنے نہیں گے۔ تو پھر خدا ہمیں ذلیل کرے گا۔ کیونکہ اسکی تالی ہوئی رہا کہ ہم چھوڑیں گے۔ میں چاہتا ہوں کہ آیا آج بھی دنیا میں کوئی ایسا قانع موجود ہے یا کوئی چھوٹی سے چھوٹی ریاست کا حکمران ایسا موجود ہے یا کوئی شخص جو کسی بڑے عہدہ پر مستعد ہو ایسا ہے کہ وہ ایسی اخلاقی جرات دکھائے جو حضرت عمرؓ نے دکھائی یا نیک سلوک کا وہ نمونہ دکھائے جو ایک بڑے بادشاہ اسلام نے دکھایا۔ کیا حضرت عمرؓ اس سے جدا تھے تھے کہ ایک نئے فتح ہوئے ہوئے ملک پر رعب کا قائم رکھنا کسی قدر ضروری ہے؟ نہیں وہ طوب بکھتے تھے بھر جیسے وہاں معاملات کو بکھتے تھے ایسا کوئی نہ سمجھتا تھا مگر اسلام کے انکام کی سچی عظمت انکے دل میں تھی وہ صدق دل سے جانتے تھے کہ ہر ایک عزت اور شوکت انھیں راہوں پر چلنے سے ملے گی اور اگر بعد کے زمانہ میں مسلمانوں نے غلاموں اور نو کرہوں کے ساتھ اس طریق کے رچا کو چھوڑ دیا تو یہ وہی بات ہے جو حضرت عمرؓ نے سچی تھی۔ انہوں نے اسلامی راہوں کو چھوڑ کر لوہ راہوں سے عزت تلاش کی

پس وہ عزت کو کھو بیٹھے۔ اب بھی جو مسلمان غیر مسلمان اقوام کے نقل قدم پر چل کر دنیا میں معزز بنا چاہتے ہیں اور اسلام کی راہوں کو عقارت کی نظر سے دیکھتے ہیں، انہیں یہ بات یاد رکھنی چاہیے

مگر یہ جو دن عملی تعلیموں کے جن میں پچھلے مسلمان پڑ گئے اور مرد روزانہ سے نبی کریم ﷺ کی تعلیم پر کاربہ ہونے سے دور چاہئے یہ امر قابل غور ہے کہ آپ کی نیک تعلیم ایسی مانگے
 ظونوں کے اندر راجحی تھی یا یوں کہو کہ آپنی قوت قدسی ایسی ان پر غالب آگئی تھی کہ اس پر بھی
 مسلمانوں کا سلوک اپنے نوکر رہا اور غلاموں سے غیر اقوام کے سلوک کی نسبت بدتر بنا گیا رہا ہے
 اور یہ شکر کا مقام ہے کہ ہمیں اس کا ثبوت دینے کی کوئی ضرورت نہیں خود یہ سائنسوں نے اسکو تسلیم
 کر لیا ہے۔ لیکن اہل لیلہ کے انگریزی ترجمہ کے نوٹوں میں لکھتا ہے۔ اور یہ وہ شخص ہے جو ہاتھوں
 مصر میں رہا اور مسلمانوں کی حالت کو غور کی نظر سے دیکھا رہا۔ وہ کہتا ہے کہ ”مسلمانوں میں
 غلاموں کے ساتھ عوامانیک سلوک کیا جاتا ہے۔“

دوسرے ممالک کی نسبت وہ لکھتا ہے کہ ”جن سائنسوں نے دوسرے اسلامی ممالک میں سفر کیا ہے
 انکی شہادت غلاموں کیساتھ مسلمانوں کے حسن سلوک کے متعلق بہت ہی قابل اطمینان ہے“
 اور پھر لکھتا ہے کہ قرآن شریف اور احادیث میں جو بد امتیاز غلاموں کے ساتھ حسن سلوک کے
 متعلق ہیں عوامان سب پر پابان کے زیادہ حصہ پر مسلمان لوگ عمل کرتے ہیں جس سے صاف
 معلوم ہوتا ہے کہ اسلام کی تعلیم غلاموں کے ساتھ حسن سلوک کے متعلق یہ سائنسوں کے کمال
 کے مطالعہ کی تعلیم کی طرح نہیں کہ سراسر سچے سچے بڑا ہر باقا تقدیہ کر رہیں اور جب اسکو دیکھیں تو
 ایک بھی عمل دنیا میں نظر نہ آئے۔ یہ تو ایک غیر محسب عیسائی ہے مگر پادری ٹیڈ کو بھی یہ امر
 تسلیم کرنا پڑا ہے جیسا کہ وہ لکھتا ہے کہ ”مسلمانوں کا ممالک میں غلاموں کے ساتھ سلوک بہت
 اچھا ہے مقابلہ اس سلوک کے جو امریکہ میں کیا جاتا ہے جہاں غلاموں کا رواج عیسائی اقوام کے
 نیچے رہا“ ایسا ہی انسائیکلو پیڈیا بیریکا میں ایک عیسائی مضمون نویس مسلمانوں کے درمیان غلامی کے
 رواج پر لکھتا ہے ”شرقی اسلامی ممالک کی غلامی عوامانیکیت میں مزدوروں کی طرح کام کرنے کی

غلامی نہیں بلکہ گھر کے کاروبار کے متعلق ہے غلام کو خانہ ان کے ایک ممبر کی طرح سمجھا جاتا ہے اور اسکے ساتھ محبت اور نرمی سے سلوک کیا جاتا ہے قرآن شریف غلاموں کے ساتھ نرمی اور مہربانی سے سلوک کرنے کی روٹ پھوٹتا ہے اور غلام آزاد کرنے کی ترغیب دیتا ہے۔

اب اس اسلامی تعلیم اور ان واقعات حقیقی کو جاننے کرنے کے بعد میں اپنے منصف مزاج ناظرین سے یہ سوال کرتا ہوں کہ یہ غلامی جسکے رولز کو اسلام نے روک نہیں دیا کیا یہ ایسی غلامی ہے کہ اس لفظ کے معمولی مفہوم کی رو سے جو دنیا سمجھا جاتا ہے اس کو غلامی کہہ سکیں نہیں بلکہ جہاں تک کہ آجکل کی نوکری کے ساتھ دیکھا جاتا ہے میں سمجھتا ہوں کہ اس وقت دنیا میں جس قدر لوگ غلام کے نام سے موسوم ہیں وہ ایک اسلامی غلام پر رفق کریں گے اور وہ اس غلامی کی حالت سے اس غلامی کی جہالت کو بدرجہا بھر سمجھیں گے۔ غلامی کے معمولی مفہوم کی رو سے تو یہ کتنا بھی جائز نہیں کہ ایک حد تک بھی اسلام نے غلامی کی اجازت دی کیونکہ ہر ایک بدی جو اس سے پیدا ہوتی تھی اسلام کی تعلیم نے اس بدی کو جز سے کاٹ دیا جو اپنے آقا کے رول ہے اسکو غلام کیوں کہا جائے گا اور یہ سادات اور خانہ ان کے ایک ممبر کی طرح ہونا صرف لفظ ہی لفظ نہ تھے بلکہ عملی بھی ہے یہ دونوں باتیں اس سے ظاہر ہوتی ہیں کہ جہاں آقا کھائے وہی غلام کھائے جہاں مالک پتہ وہی مملوک پتہ جہاں اور ہے اسی جگہ غلام رہے طاقت سے زیادہ کام نہ دینا کسی سختی سے اسے ظالم نہ کرنا اور نہ مارنا اس سے بچنا کہ کوئی اصلاح کی دنیا طوا ایشن نہ ہو سکتی تھی یہ زیادہ لفظ پرست ہے اور جائے مغز کے چھلکے پر خوش ہو جاتا ہے نام کو تو غلامی موقوف کر دی گئی مگر افسوس ہے کہ غلامی کی حقیقت ابھی تک مذہب ممالک میں اسی طرح موجود ہے مگر یہ دنیا کی لے گی کہ جب تک غلاموں کے ساتھ وہ رفق اور نیکی کا طریق نہ رہتا جہاں کہ جس کی تعلیم تیرہ سو سال ہونے ایک انسانوں کے بچے اور رو اور خدا کے رکن گنیدہ میں سب سے بڑے و گنیدہ نے دی تھی تب تک غلامی کی سو تو فی صرف لفظ سو تو فی ہے اور حقیقت اس سے وہ اصلاح نہیں ہوئی جو دنیا کی اخلاقی ترقی کیلئے ضروری ہے اسلام ہی کی تعلیم وہ عملی تعلیم ہے جس پر دنیا چل سکتی ہے اور جس پر انسان انسانوں کیلئے مفید اور خدا تعالیٰ کا سپاہی بن سکتا

المصالح المعتبرة لاحکام العقول

جلد سوم

کتاب البیوع

بسم اللہ الرحمن الرحیم خود و نصی علی رسول الکریم

وجہ حلت بیع مسلم: اعاقد جس اشخاص کا امتزاج ہے کہ بیع مسلم خلاف قیاس ہے کیونکہ وہ معدوم اشیاء پر ہوتی ہے اور معدوم اشیاء کی بیع خلاف قیاس و عقل ہے آنحضرت ﷺ فرماتے ہیں لا بیع ما لیس عندک یعنی اس چیز کی خرید و فروخت نہ کر R سو R نہ ہو۔

الجواب۔ واضح ہو کہ بیع مسلم من وجہ موافق قیاس و عقل کے ہے کیونکہ بیع مسلم میں بیان و صف و معرفت قدر و جنس اور بیع کی طرف سے چیز کے لواکر نے کاذب شرط ہے اور یہ بیع اس معاوضہ کی طرف ہے جو اجارہ میں منافع پر ہو پس بیع مسلم کا قیاس من کل الوجوه معدوم شئی پر کرنا کہ جن کے حاصل ہونے کا احوال معلوم نہ ہو درست نہیں ہے۔ البتہ صورت بیع معدوم کے مشابہ ہے لیکن حقیقتاً معنی بیع موجود کے مشابہ ہے خدا تعالیٰ نے عاقلوں کی فطرت میں اس امر کی تمیز رکھی ہے۔ کہ وہ ان چیزوں میں فرق کرتے ہیں کہ جن کا انسان نہ مالک ہو سکتا ہو اور نہ اس کی مقدار بتا سکتا ہو اور نہ یہاں ان اشیاء کے کہ جمہلاً بیع کرنا کاذب لیتا ہے اور وہ عاقدوں کے لواکر نے پر قادر ہو یہ 7 فرق اجمالی ہے باقی تفصیل فرق وہ راستے پر نہیں دکھائی دیتا۔ پس اس میں وحی کی ضرورت ہے پس اس کی جزئیات کے احکام نقل سے تلاش کے چاہیں کہ کہاں یہ درست ہے مثلاً مسلم اہل نظر اور کہاں یہ درست نہیں مثلاً بیع ثمار نقلی طور۔

جو از اجارہ کی حکمت: جو لوگ اجارہ کو خلاف قیاس کہتے ہیں انکا گمان ہے کہ اجارہ ایک معدوم چیز کی خرید ہے کیونکہ منافع عقد اجارہ کے وقت معدوم ہوتے ہیں۔ لیکن R اب یہ ہے کہ

شریعت نے عقل منافع کے وجود کو جہائے وجود منافع کے قرار دیا ہے لوگوں کی ضرورت پر نظر کر کے پس وہ گویا سود مند ہیں۔ مگر معنی موجود ہیں جیسا بھی ہم مسلم میں لکھ چکے ہیں۔

فخر و مردار و خنزیر و مت کی خرید و فروخت و اجرت زنا و اجرت کاہن حرام ہونے کی وجہ: اشیاء کی حرمت کا دوسرا چند امور ہے جو تھے ان کے ایک یہ ہے کہ بعض اشیاء عادت کے اعتبار سے معصیت پر مشتمل ہوں یا لوگوں کو ان اشیاء سے اس قسم کا لانا کہ وہ قبیح حاصل کرنا مقصود ہو وہ ایک قسم کی معصیت گناہ ہو مثلاً ضرر سے بظہور وغیرہ۔ وجہ یہ ہے کہ ان چیزوں کی بیع کا طریق جاری کرنے اور اسکے بنانے میں ان معاصی کا ظاہر کرنا اور لوگوں کو ان معاصی پر آمادہ کرنا اور طبیعت دانا اور ذہن یک کرنا یا جانا ہے لہذا اصلیت کلمی کا مقنا ہے کہ ان چیزوں کا بیع و شراء کرنا اور انکا گھروں میں رکھنا حرام کیا جائے کیونکہ اس میں ان معاصی کو دور کرنا اور لوگوں کو اس بات کی طرف متوجہ کرنا ہے کہ وہ ان چیزوں سے پرہیز و اجتناب کریں۔ اسی وجہ سے آنحضرت ﷺ نے فرمایا ان الله ورسوله حرام بيع الحمر والخنزير والاصنام ترجمہ یعنی خدا تعالیٰ اور اسکے رسول نے شراب اور مردار اور خوک اور عیوں کا خرید و فروخت حرام کیا ہے اور پھر فرمایا ان الله اذا حرم شيئا حرم لحمه یعنی خدا تعالیٰ جب جس چیز کو حرام کرتا ہے تو اسکی قیمت کو بھی حرام کرتا ہے۔

یعنی جب ایک چیز سے قطع اٹھانے کا طریق مقرر ہے۔ مثلاً شراب صرف پینے کیلئے اور مت صرف پر مشتمل کیلئے بنائے جاتے ہیں اور ایسے خدا تعالیٰ نے اسکو حرام کیا ہے۔ پس حکمت کلمی کا مقنا ہے کہ اگر بیع کو بھی حرام کیا جائے اور نیز آپ نے فرمایا مہر البعی حیث یعنی اجرت زنا کی حیثیت ہے اور آنحضرت ﷺ نے کاہن کی اجرت سے منع فرمایا اور منطیہ کے کسب سے بھی منع فرمائی۔

وجہ یہ ہے کہ جس مال کے حاصل کرنے میں گناہ کی آمیزش ہوتی ہے اس مال سے بوجہ بیع

حاصل کرنا حرام ہے۔ ایک تو یہ کہ اس مال کے حرام کرنے اور اس سے انتقال نہ حاصل کرنے میں مصیبت سے باز رکھا ہے اور اس قسم کے معاملات کے دستور جاری کرنے میں فساد کا جاری کرنا اور لوگوں کو اس گناہ پر انداز کرنا ہے دوسری وجہ یہ ہے کہ لوگوں کی سمجھ اور خیال میں فطری طور پر یہ بات سائی ہوئی ہے کہ شمن بیج سے پیدا ہوتا ہے تو مادہ اعلیٰ میں اس شمن کیلئے ایک وجود تشبیہی ہوتا ہے جس میں بیج اور اس عقل کی شناخت مادہ اعلیٰ کے علم میں اس شمن اور اس اجرت کے اندر سرایت کر جاتی ہے۔ اور لوگوں کے نفوس میں بھی اس صورت عملیہ کا اثر ہوتا ہے اسی واسطے آنحضرت ﷺ نے شراب کے بارے میں اس کے پوزنے والے اور نچڑھانے والے اور پینے والے اور لے جانے والے اور جس کے پاس لے جاتا ہے سب پر سنت کی ہے اور اس کی وجہ یہ ہے کہ مصیبت کی زد کرنا اور اس کا پھیلاؤ اور لوگوں کو اس کی طرف متوجہ کرنا بھی مصیبت اور زمین میں فساد پاکرنا ہے اور ایک یہ وجہ ہے کہ لہاست کے ساتھ احتیاط کرنے میں مثلاً مردار و خون و گوبر اور پانسانہ وغیرہ کے ساتھ احتیاط کرنے میں نہایت قہاحت اور خدا تعالیٰ کی ماضی ہے اور اس کے سبب سے شیاطین کے ساتھ مطابقت پیدا ہوتی ہے اور پاکیزہ لوگوں کو خدا تعالیٰ پسند فرماتا ہے اور چونکہ کسی قدر مخالفت کے خیر بھی چاہا نہیں ہے اسلئے کہ بالکل اس باب کے مسدود کرنے میں لوگوں پر نہایت وقت و شواری ہوتی ہے لہذا اسی قدر ضروری ہو کہ ان ہتھاک چیزوں میں سے جس کی ضرورت شدید واقع ہوتی ہے جیسے کھانا اس کی بیج کی توجیحات دیدی چاہے تاکہ لوگوں کا مزاج نہ ہو اور بیج کو مسخ کر دیا جاوے کیونکہ اس میں کسی کا سراج نہیں جیسے گروہ خنزیر کی بیج۔

کتاب الاکل والشرب

وجوہ حرمت خنزیر: (۱) اس بات کا کہ اس کو علم نہیں کہ یہ جانور لول و درجہ کا لہاست خولہ ہے غیرت و اجرت ہے لہذا اسے حرام ہونے کی وجہ ظاہر ہے کہ ایسے پلید اور بد جانور کے گوشت کا اثر

بدن اور روح پر بھی پیدا ہی ہو گا۔ کیونکہ یہ بات ثابت شدہ اور مسلم ہے کہ غذاؤں کا اثر بھی انسان کی روح پر ضرور ہوتا ہے۔ پس اس میں کیا شک ہے کہ ایسے بد کا اثر بھی رہی ہو گا۔ جیسا کہ یونانی طبیبوں نے اسلام سے پہلے بھی یہ رائے ظاہر کی ہے کہ اس جانور کا گوشت ہائما سر میا کی قوت کو کم کرتا ہے اور روحنی کوزہ مانتا ہے جس جب کہ یہ امر مسلم ہے کہ تغیر بدن تغیر اخلاق کے اسباب میں سے زیادہ تر قوی سبب غذا ہے لہذا ایسے جانور کا گوشت کھانے سے شریعت اسلامیہ نے منع فرمایا۔ جسکی صفات دنیہ شیطانی کے ساتھ بالکل مشابہہ رکھتی ہوں اور ملائکہ سے لایہ ہو چکا جب ہوں اور اخلاقی مسائل کے خلاف صفات کو پیدا کرتے ہیں۔

(۲) خنزیر یعنی خوک نجاست کی طرف بہت مانگ ہے خصوصاً انسان کا لفظ یعنی نہ از انکی خوراک ہے۔ انکا گوشت اسی نجاست سے پیدا ہوتا ہے۔ پس انکا گوشت کھانا گویا اپنی نجاست کھانا ہے۔

(۳) صاحب لہرن الاذیہ یہ لہار گوشت خوک اور انکی حرمت کے تیرہ جو ذلیل قرہ کرتے ہوئے ظاہر فرماتے ہیں کہ اس جانور کا گوشت فطرت انسانی کے خلاف ہے وہ دیکھتے ہیں کہ گوشت خوک مولد ظلال غلیظہ ست و سورث حرم شدید و صداع حرم و داء اللیل و اوجاع الفاسل و فساد عقل و ذوال مردت و غیرت و محبت و باعث فحش است و اکثرے لاطرق غیر اسلامی آخرای خورند و عقل از ظہور نور اسلام گوشت آخر اور بڑا دہائی فرد سخت و حد قزاق اور ذہب اسلام حرام و حج آں معلوم و موقوف گردید بسیار کثیر بد ہونہ است۔

نیز انکا گوشت کھانے سے انسان پر نور اور نوری مہرائں حملہ آور ہوتے ہیں

جملہ درندوں اور شکاری پرندوں کے حرام ہونے کی وجہ: سادے درندے جانور جنگی مرثت و فطرت میں لڑائی سے چھینا اور سولت سے زخم پہنچا اور جن میں سخت دلی ہے سب حرام ٹھہرائے گئے ہیں۔ یہی وجہ ہے کہ آنحضرت ﷺ نے ہمراہی کے بدلے میں

فرمایا ہے۔ اوبہا کل احد یعنی کیا میزے کو بھی کوئی انسان کھاتا ہے۔ یعنی اسکو کوئی نہیں کھاتا۔ وجہ حرمت ظاہر ہے کہ ان جانوروں کے کھانے سے انسان میں دردِ نہ کی پیدا ہو جاتی ہے کیونکہ انکی طبیعت احتمال سے خارج ہوتی ہے اور انکے دلوں میں رحم نہیں ہوتا اسی واسطے ہر فطری پرندہ کے کھانے سے بھی آنحضرت ﷺ نے منع فرمایا ہے اور بعض جانوروں کو آپ نے فاسق سے تعبیر فرمایا انکے کھانے سے ان ہی جیسی خصلت کھانوالے میں بھی پیدا ہو جاتی ہیں۔ عن ابی ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ ان رسول اللہ ﷺ حرم یوم عیبر ککل ذی ناب من السباع . وعن جابر حرم رسول اللہ ﷺ عیبر اللحم الا نسۃ ولحوم البعال وککل ذی ناب من السباع وذی مغلط من الطیر . ترجمہ :- یعنی حضرت ابو ہریرہؓ سے روایت ہے کہ خیر کے دن نبی علیہ الصلوٰۃ والسلام نے ہر ایک ذی ناب درد سے کو حرام فرمایا اور جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے کہ آنحضرت ﷺ نے خیر کے دن اعلیٰ گدھے اور بچروں کے گوشت اور ہر ایک ذی ناب کو یعنی درد سے جانوروں اور بچوں والے پرندوں کو حرام فرمایا۔

شیر۔ میزبان۔ بچھ۔ گیدڑ۔ کومڑی۔ نعل۔ باز۔ شاہین۔ خیل۔ باشاؤغیرہ سب حرام ہیں کیونکہ یہ سب ذی ناب اور درد سے جانور ہیں۔

وجہ حرمت مرد اور خون : (۱) مردار کا حرام ٹھکانا عین نکست لہی ہے کیونکہ جانور کے بدن کو پاک کرنے والا روح ہے جب روح اس سے جدا ہو جائے تو انکی مخلوق کو دور کرنے والا نہیں رہتا بلکہ وہ مخلوق انکے سارے بدن کو فاسد کر دیتی ہے اور بہت بد مزہ اور بد بو اور بد تاثیر ہو جاتا ہے۔ چنانچہ جو لوگ مٹھی سے مردار غرار ہوتے ہیں انکی صورت بد شکل و اچھا بھلا ایسے قبیح ہوتے ہیں کہ گویا انکا راج ہی انسانیت سے خارج ہوتا ہے ورنہ اللہ تعالیٰ و فرشتے انکی فطرت و جبلت ہو جاتی ہے۔

(۲) مردار کے اندر ایک فطرناک زہر ہوتا ہے جو کاتبہ انسان کیلئے اچھا نہیں ہوتا

چنانچہ جتنی مردار خور قومیں ہیں انکی زبان اور عقل سوئی اور بندی ہوتی ہے۔

(۳) خون کے اندر اس قسم کا زہر ہوتا ہے جس سے اعصاب کو متحجج اور قانع اور

استرخا ہو جاتا ہے۔

(۴) خون کا کھانا اور معدوں کے اخلاق کی طرف مائل کرتا ہے اور مزاج میں فسوسہ بھی

پیدا کرتا ہے جیسے کہ بیماریوں اور مردار خوروں میں جو کہ خون کھانے کے مستعد ہیں یہ اخلاق ظاہر ہیں لہذا اگھضائے حکمت الہی سے یہ چیزیں حرام کی گئیں۔

(۵) کھڑی و مردار خون کی حرمت کی وجہ خدا تعالیٰ نے یہ بیان فرمائی ہے کہ یہ گندی

چیزیں ہیں انکے کھانے سے انسان کا ظاہر و باطن گندہ بن جاتا ہے اور ایسا ہی غیر اللہ کے نام پر کسی

چیز کے ذبح کرنے اور انکے کھانے کا وبال ہے کہ وہ سب بے قاصق ہونے کا چنانچہ خدا تعالیٰ فرماتا

ہے۔ *الا ان ینکون مینہ اودما مسفوحا اولحم غسرو لانه رجس اوفسقا اعل لغیر اللہ*

یہ ترجمہ۔ یعنی حلال نہیں ہے مردار اور خون جاری اور گوشت خوک کا کھانا کیونکہ یہ چیزیں

گندی ہیں (ان کے کھانے سے گندے اخلاق گندے اعمال ظاہر ہوتے ہیں اور ایسا ہی غیر اللہ

کے نام پر ذبح کی ہوئی چیز کا کھانا بھی حلال نہیں ہے کیونکہ ایسے جانور کے کھانے سے انسان

فاسد و بکار بن جاتا ہے اور مرض مردار کا کھانا اس لئے شریعت میں منع ہے کہ مردار کھانے والے کو

بھی اپنے رنگ میں لاتا ہے اور نیز ظاہر ہے کہ صحت کے لئے بھی مضر ہے اور جن جانوروں کا خون

اندر ہی اندر رہتا ہے جیسے گنا گھونٹا ہوا یا لاشی سے مارا ہوا یہ تمام جانور و حیوانات مردار کے حکم

میں ہی ہیں کیا مردہ کا خون اندر رہنے سے اپنی خونیت سے تمام گوشت کو خراب کرے گا اور نیز

خون کے کیڑے جو حال کی تعلقات سے بھی جمنا ہوتے ہیں مگر ایک زہرناک خونیت جانور

میں پیداویں گے اسی لئے تمام حلال میں مردار جانور ہیں حلال کا تو اس بات پر اس لئے اطلاق

ہوا کہ ظہیر لہذا اس سے ان ملت والوں کو اس بات کی نصیحت چلتی ہوئی کہ یہ چیزیں نصیحت ہیں اور

لذا سب بطلہ کا اس واسطے اطلاق ہے کہ ان کے علم میں اکثر مردار چیزوں میں زہر پھیلتا ہوا ہے

مردار جانور کے بدن میں مرتے وقت اخلط سیدھ بکھل جاتے ہیں جن کو انسانی مزاج سے مناسبت ہوتی ہے پھر اس بات کی ضرورت ہوتی کہ مردار جانور کو غیر مردار سے جدا کیا جاوے اس کا انقباض انکام شرمیہ کی تحصیل سے کیا گیا جن کی وجہ آگے قتل بھی ہے ان سریشوں میں حرمت مذکورہ غیر اہل کتاب اہل وقت ذبح جانور پر اہل غیر اللہ کے نام ذبح کئے ہوئے اس لئے کہ یہ کھینچہ دم لحم الخنزیر ماحل بہ لغیر اللہ۔ کے آثار میں یہ عقوبت ہے کہ مردار کا اثر بد جسم پر اور خون کا اثر بد روح پر اور گوشت ذک کا اثر بد الحلق و مادات پر اور ذبح ہام غیر اللہ کا اثر بد اعتقاد است پر پڑتا ہے۔

کوئے کے بعض اقسام۔ چیل۔ سانپ۔ بھو۔ چوہے کی وجہ حرمت : حیوانت کی طبیعت میں قوموں کو ایذا پہنچانے اور تکلیف پہنچانے اور ان سے کسی چیز کا ایک لینا ہے اور یہ ان پر لوٹ کرنے کی غرض سے فرسٹ کے منتظر رہتے ہیں اور ان میں شیطانی کلام کے قبول کرنے کا مادہ ہے اس لئے وہ سب حرام ہیں اور اللہ ہیٹ ہو یہ میں ان کی تفصیل آئی ہے چنانچہ حضرت عائشہ صدیقہؓ نے آنحضرت ﷺ سے بالفاظ ذیل روایت فرمائی ہے۔ قال رسول اللہ ﷺ خمس فواسق يقتلن فی الحرم المکرمة والغزاة والمقرب والعرب والحدی والکلب الطور وواہ الثرمذی۔ ترجمہ۔ یعنی پانچ جانور جو کہ فاسق ہیں ان کو حرام میں بھی قتل کیا جاوے چہا۔ بھو۔ کور۔ چیل۔ وچوانہ کور۔

چونکہ حرام کے جانوروں کے مارنے اور شکار کرنے میں نسی حرمی۔ لہذا آنحضرت ﷺ نے ان جانوروں کو انگی شدت سرگشی و صیان کے باعث حرام میں بھی مار ڈالنے کا حکم فرمایا کیونکہ باقی دوسرے حرام میں بھی امن نہیں مل سکتا پس آنحضرت ﷺ نے ان جانوروں کو فاسق فرما کر ان کی حرمت کی وجہ بیان فرمائی ہے یعنی جو کوئی ان جانوروں کو کھائے گا اس میں لیس کے فواسق پیدا ہو جائیں گے دوسرے ان جانوروں کو فاسق کہتے ہیں اس امر کی طرف ایسا فرمایا کہ ان جانوروں کو

ہنس قدر کوئی پالٹی ہائے اور اگی پر درخی کرے اسکو بلا خر ضروریں کے اور حق احمد تروت کو قوز
 دینے کے۔ اور اس امر کی وجہ کہ آپ نے کیوں ان جانوروں کو حرام نہ کہا اور خاسق فرمایا یہ ہے کہ
 اگر آپ یہ فرما دیتے کہ یہ جانور حرام ہیں تو پھر اگی وجہ حرمت کیلئے جنکا آپ یہ فرما دیتے کہ یہ
 جانور حرام ہیں تو پھر اگی وجہ حرمت کیلئے جنکا آجکے یہاں کرنا مطلوب تھا وہ بارہ کلام وہ ہر اناچ تا انڈا
 ایک ہی بار میں حرمت اور وجہ حرمت یہاں فرمادی اونیست جو اجمع الکلمہ آنحضرت ﷺ کی
 صلت ہے۔

ب ان جانوروں کی وجہ حرمت ظاہر ہے کہ جو کوئی انکا گوشت کھاوے وہ انھی کے
 وصف کے ساتھ متصف ہو جائے اور ان جانوروں کے اوصاف کا مذموم ہونا ظاہر ہے مگر اس سے
 ہر کو امر لو نہیں۔ فقہ میں اسکی تفصیل نکلی ہے۔

وجہ حرمت حشرات الارض ہنر لہر پاؤ وغیرہ : وہ حیوانات جنکی سرشت و فطرت میں
 ذلت اور گڑ بوں میں پھیلا بنا پایا جاتا ہے مثلاً جو باور و گھر حشرات الارض وغیرہ جو اس قسم کے
 جانور ہیں وہ سب حرام ہیں اور اگی وجہ حرمت یہ ہے کہ انکا کھانے والا انھی جانوروں کے اوصاف
 اور متصلتیں قبول کرتا ہے۔ دوسری وجہ حرمت ان جانوروں کی یہ ہے کہ تمام حشرات الارض
 میں گناہ ہوتا ہے انکا کھانے سے انسان پاک ہوتا ہے۔

وجہ حرمت کتے اور بلی کی : کتا اور بلی دونوں اور گھ سے جانور ہیں اور حرام چیزوں کو کھاتے
 ہیں کتا بھید اور صاف مذمومہ کے شیطان ہوتا ہے چنانچہ اسکو آنحضرت ﷺ نے شیطان فرمایا
 ہے پس اس کے کھانے والے کو بھی شیطان اور درندہ بنا چاتا ہے وہ لو صاف ذمیہ یہ ہیں کہ کتا
 طبیعت ترین و ذلیل ترین و خسیس ترین و خریس ترین حیوانات سے ہے اسکی صفت اسکے طبیعت سے
 آگے نہیں گزرتی۔ اسکی شدت حرمت میں سے ایک بات یہ ہے کہ جب وہ چلتا ہے تو شدت حرمت
 کی وجہ سے ناک زمین پر رکھ کر زمین کو سونگھ جاتا ہے۔ اور اپنے جسم کے سارے اعضاء کو پھیلا

کہ ہمیشہ اپنی دہ کو سونگتا اور جب اسکی طرف پتہ کیونکہ تو وہ فرما حرام و فسق کی وجہ سے اسکو کافرا ہے۔ الغرض یہ جانور بلا احتیاج و ذلیل اور بی امت ہوتا ہے گندے مردار کو بہ نسبت تازے گوشت کے زیادہ پسند کرتا ہے اور لہذا بہ نسبت حلوٰۃ کے بڑی رغبت سے کھاتا ہے اور جب کسی ایسے مردار پر پہنچے جو صد ہا کتوں کو ذرا دھڑکھانے میں دیتا اور اسکی بد خلقی میں سے ایک یہ امر بھی عجیب ہے کہ جب وہ کسی خستہ حال اور پھٹے پرانے کپڑوں والے شخص کو دیکھتا ہے تو اسکو بھونکتا اور اس پر حملہ آور ہوتا ہے گویا اس کو حقیر سمجھتا ہے جو کہ خاصہ ہے کبیر کا اور جب کسی بچہ اور اچھے لباس والے اور رعب ناک توئی کو دیکھتا ہے تو اسکا مطیع ہو جاتا ہے گویا اسکے لئے مقلد ہونے سے حار نہیں کرتا ذلیل جاہ کی شخصیں یہ شعبہ ہے تعلق کا۔

پس جب کتے کے ایسے اوصاف مذکور ہیں تو جو شخص اسکو کھاتا وہ بھی ان ہی اوصاف سے مشابہ ہوتا۔ لہذا یہ جانور حرام ٹھہرایا گیا اور چونکہ کتابا لہذا میں اسکے ساتھ زیادہ تھیں ہوتا ہے جیسا کہ مشابہ ہے اسکے بلا خاص ضرورت کی صورتوں میں اسکا پانا بھی ممنوع قرار دیا گیا کہ اسکی صفات خبیثہ اس شخص میں اثر کریں گی۔ اور چونکہ ان صفات خبیثہ سے ملائکہ کو نظر سے ہے تو اس شخص سے ملائکہ بھرا اختیار کرتے ہیں چنانچہ وہ ایسے گھر میں بھی نہیں آتے جہاں کتا ہوتا ہے اور سیاست کے ملائکہ اس سے مستثنیٰ ہیں۔

وجہ حرمت گرگٹ کی اور اسکے مارنے کی تاکید شدید کار از: نبی علیہ الصلوٰۃ والسلام نے گرگٹ کے مارنے کا حکم صادر فرمایا اور فرمایا کہ حضرت ابراہیم علیہ الصلوٰۃ والسلام کی آگ پر یہ پھونک مارا تھا اسکی وجہ یہ ہے کہ بعض حیوانات کی سرشت و خلقت میں یہ مادہ اعلیٰ ہے کہ ان سے مدام الحال قبیحہ و مہیئت شیطانہ صادر ہوتی رہتی ہے اور وہ حیوانات شیطان کے قریب تر ہوتے ہیں اور سورہ کے اعتبار سے اسی کے تابع ہوتے ہیں۔

اور رسول کریم ﷺ نے معلوم کر لیا تھا کہ گرگٹ بھی ان ہی حیوانات میں سے ہے اور

اس بات پر آپ نے نگاہ فرمایا کہ وہ حضرت ابراہیم علیہ الصلوٰۃ والسلام کی آگ کو پھونکتا تھا۔ شیطان کے دوسرے کے سبب سے اس کا یہ کام جتنھائے طبع سے تھا۔ اگرچہ اس کے پھونکنے سے آگ میں کچھ اثر نہ ہو جاتا تھا۔ گرنے کے عقل کرنے میں تپ نے وہ ہے سے نسبت دلائی۔ ایک تو یہ کہ اس میں نوع انسانی کی ایذا کا اندھا قیاس ہے گویا اس میں فکرم شیطان کا توڑ پھور اس کے دوسرے کا دور کرنا ہے۔ دوسری وجہ اس کے گوشت کا مضر ہو جانا چنانچہ مخزن الاودہ میں گرنے کے متعلق لکھا ہے کہ کے

رائی گزردہ چون بگزد شدہ است و سبب بگزدہ گوشت آں سم قائل است و عارضی گزردہ از خوردن آں سے دو جن فوآدہ پیش نظر باقیاب و در دور ایام گمراہی و تن سرخ شکر و در حال آں باندہ و چشمہائے آں شمع۔ جمالت حرکت میندہ برائے آنکہ صید شود و ایمر طرف کہ باندہ بید و پندوں صید ہو گس و امثال آں سے نزدیک و آید مرعت زبان خوردہ در می قرد و آں رائی بیاہ و از دور کہ می بند رفت آں را صید می کند و حشرات کی مانند ہزار پید و عرق بیاہ صیدی کند و بخورد۔ اس سے بھی اس جانور کی حرمت کی ایک وجہ صاف ظاہر ہے کہ اس کا گوشت قائل و مسلک ہوتا ہے۔

الو و چنگاؤڑ کی وجہ حرمت : ہم عقل میں لکھ چکے ہیں کہ خدا کا اثر بہ ان کے علاوہ روحانی انطوائی و الملور پر بھی ہوتا ہے۔ اس پر ہمہ یعنی ان کی سماعت اور ذلت عین شدہ امر باندہ ضرب المثل ہے چنانچہ جب کوئی سماعت و ذلت توئی کا کام کرتا ہے تو اس کو کہتے ہیں انو تو نے ایسا کام کیوں کیا۔ صاحب مخزن لکھتا ہے کہ خوردن گوشت آں سورے الطبی و ذلت توئی در جمیع امور است یعنی اس جانور کا گوشت کھانے سے انسان میں گندہ انہی و سماعت و ذلت توئی پیدا ہوتی ہے۔ اس جانور کی حرمت کی وجہ ظاہر ہے کہ جو کوئی اس کو کھاتا اس کو لو جانا پڑتا یہی حال چنگاؤڑ کا ہے کہ اس جانور کی فطری کو رہیسی و سماعت و ذلت بھی ایسی مشہورہ معروف ہے کہ ضرب المثل ہو گئی ہے چنانچہ جب کوئی ظاہر دہا ہر حق کو نہیں مانا تو اس کو کھا کرتے ہیں شیرے سمے کہ روز روشن راشب قراری دہ۔ یعنی چنگاؤڑ ہے کہ روز روشن کو رات قرار دیتا ہے جس کو کوئی اس جانور کو کھاتا اس کی

خفا کی ہڈی کی آنکھ میں گاری پیدا ہوتی۔ لہذا اس جانور کا کھانا بھی حرام ہو۔

گدھے اور چھپر کی حرمت کی وجہ : وہ حیوانات جو نہاستوں اور بچا کیوں میں اپنی زندگی بسر کرتے ہیں اور ان میں رہتے ہیں اور وہی کھاتے ہیں یہاں تک کہ ان کے بدن بھی ان میں گھرے رہتے ہیں مثلاً گدھا جو عموماً اس تلمس نہاست کے حماقت و قوتی و ذلت میں بھی ضرب المثل ہے چنانچہ جو کوئی وہ قوتی و حماقت کا کام کرتا ہے تو اسکو گدھے کا خطاب ملتا ہے جس اگر ایسے جانور کا گوشت کھائے تو باضرور اس میں ذلت اور حماقت و قوتی و بے تعیزی کا اثر آجائے اور یہ جانور مزاج نوح انسان کے مخالف ہے لہذا طب کے اعتبار سے بھی اسکو کھانا نہ چاہیے۔ نیز رسول اللہ ﷺ نے ہر ایک ایسے جانور کے کھانے اور اسکا دودھ پینے سے منع فرمایا ہے جو نہاست کھاتا ہے اسکی وجہ بھی ظاہر ہے وہ یہ جب جانور کے اعضاء نے نہاست کو جذب کر لیا اور وہ اسکے اجزاء میں بھیل گئی تو اسکا لحم بھی مثل نہاست یا اس جانور کے مثل ہو گیا جو نہاست میں اپنی زندگی بسر کرتا ہے۔

وجہ پیدائش جانور ان و اشیاء حرام : (۱) سوال۔ جب کہ بعض جانوروں اور بعض اشیاء کے کھانے سے انسان کو مریخ کہا گیا ہے اور انگوٹوں پر حرام ٹھہرایا گیا ہے تو پھر خدا تعالیٰ نے انکو کیوں پیدا کیا ہے۔ وہ کس کام آتے ہیں۔

جواب خدا تعالیٰ فرماتا ہے۔ هو اللذی علق لکم ما فی الارض جمیعاً یعنی تمہارا پروردگار وہ ہے جس نے پیدا کی ہیں تمہارے لئے تمام وہ چیزیں جو زمین میں ہیں۔ اس سے واضح ہوا کہ اگر ایک چیز کا استعمال ایک وجہ سے حرام ہے تو دوسری وجہ سے حلال ہے۔ دیکھو گدھے کا کھانا حرام ہے مگر اس پر سواری کرنا اور اس پر بھار ڈالنا حلال ہے۔ ایسا ہی تمام درندہ جانوروں کا کھانا حرام ہے مگر انکے ہڈوں کی پوستیں بنا کر پھینا حلال ہے ایسا ہی اور حرام جانوروں اور اشیاء حرام کے حلقہ کچھ لوگ کہ من و جوارح استعمال حرام ہے اور من و جوارح حلال ہے اور جس جانور سے کسی قسم کا

انقاع طلال نہ ہو اس سے قدرت پر استدلال تو ہو سکتا ہے یہ بھی اسکے پیدا کرنے میں ایک نعمت ہے۔ علاوہ انقاع و استعمال کے اسے پیدا کرنے میں یہ بھی نعمت ہے کہ یہ حرمت خدا تعالیٰ کی باز میں چنانچہ آنحضرت ﷺ فرماتے ہیں الا لکنک ملکت حسی وان حسی اللہ تعالیٰ محارمہ ترجمہ۔ سلوک ایک بادشاہ کی باز ہوتی ہے اور خدا تعالیٰ کی باز اسکے حرمت ہیں پس اس میں نہ دل کا استحسان بھی ہے

خلاصہ وجوہ حرمت حیوانات و اشیاء محرمة: تمام وہ جانور جو حرام کئے گئے ہیں انکی وجوہ حرمت اہل ہیں

(۱) شبائے و کندگی

(۲) کورندگی یعنی ایسے جانوروں کے کھانے سے انسان درندہ طبع بن جاتا ہے۔

(۳) شیطانی امور سے مشابہت۔

(۴) سمیت بعض جانور و چیزیں زہر دار ہونے کی وجہ سے حرام ہیں۔

(۵) کج اخلاقی یعنی بعض جانوروں کے کھانے سے انسان بد اخلاقی بن جاتا ہے۔

(۶) بد اعتقادی کے آثار پیدا ہوتے ہیں۔ جیسے ساحل نہ لغیر اللہ کا کھانا

وجہ حرمت چھبکلی عقون الاویہ میں کھایے اس آں وزغ است و چین مصطلح آں است کہ بری آں رہام لہ مس ولدی ر لوزغی نامند کہ بخاری چپاسری نامند خوردن آں مورث سل وامراض روہ است۔ اس سے حرمت کی وجہ ظاہر پاکت ہے۔

حرمت میں مذکورہ غیر اہل کتاب و مذکورہ بنام غیر اللہ و مردار کے بر لہ ہونے کی وجہ مذکورہ بالا امور پر حضرت ابن تیمیہ رحمہ اللہ علیہ نے کچھ سوال و جواب لکھے ہیں ہم ان کا ترجمہ تفصیلاً درج کر دیتے ہیں۔

سوال مذکور غیر اہل کتاب و مردار کی حرمت میں مرداری کی کیا وجہ ہے گویا سائل کا یہ خیال ہے کہ سب کے مردار میں یہ خون جذب ہو جاتا ہے تو وہ اس کی وجہ سے حرام ہو جاتا ہے مگر غیر اہل کتاب مردار میں۔ غیر اللہ کے ذبح سے خون جذب نہیں ہوتا تو پھر اس سے کس طرح جانور حرام ٹھہرایا جاتا ہے۔

جواب (۱) یہ بات قطعی ہے کہ مردار کی حرمت کا سبب ایک ہی امر کو یعنی خون کے جذب ہونے کو قرار دیا جاتا ہے بلکہ حرمت مردار کی بہت سی وجوہ اسباب ہیں مگر صرف جذب خون کی وجہ سے حرمت مردار ہوتی تو اس سوال کو وقت ہوتی مگر جب کہ مردار جانور کے حرمت کے متعلق اسباب ہوں تو کسی ایک سبب کے نہ ہونے سے اور اسباب حرمت کی کلی نہیں ہو سکتی کیونکہ اس سبب متعدد کا کوئی اور سبب ظریف اور قائم مقام ہو جاتا ہے جس سے مردار جانور کو حرام کہا جاتا ہے

اور یہ اسباب اور وجوہ عقلاً شمار ہو سکتے ہیں بس صرف وجہ کے ظاہر نہ ہونے سے حکم شریعت سے کیونکر انکار ہو سکتا ہے شریعت نے کوئی وجہ رکھی ہو گی اس کا کچھ مختصر بیان بطور نمونہ کے آنکھ کی بان دوسریوں میں آوے گا۔ وقت ذبح جانور پر ٹھیکر پڑنے کا اور غیر اللہ کے نام پر ذبح کئے ہوئے جانور کی حرمت کی وجہ)۔

سوال۔ کیا شریعت اسلامیہ نے دونوں قسم کے مردار جانوروں میں مرداری نہیں کی ہے حالانکہ انکی موت کے مختلف اسباب ہیں گویا شریعت نے وہ مختلف اور مختلف باتوں کو جمع کیا اور وہ متماثل اور مشابہ امور کو الگ الگ کر دیا کیونکہ ذبح کرنا اور حقیقت ظاہری و حسی طور پر ایک قسم کا ہے تو پھر کیا وجہ ہے کہ شریعت اسلامیہ نے ذبح کی بعض صورتوں سے حیوان کو مردار ہونے سے خارج کیا اور بعض صورتوں سے حیوان کو مردار قرار دیا حالانکہ کوئی وجہ فرق کی نہیں جس میں وہ متماثل اور امور کو الگ الگ کر دیا پھر اس ذبح علی غیر اسم اللہ کو اور وجہ کو ایک حکم میں داخل کیا تو اس میں وہ عقلاً چیزوں کو جمع کر دیا؟

جو آپ شریعت نے دونوں مرداروں کے لغوی نام میں مدہری نہیں رکھی پھر انکے اسم شرعی میں مدہری رکھی ہے یہی مردار کا شرع میں بہ نسبت لغت کے عام ہے اور شارع علیہ السلام لغوی ناموں میں کبھی نقل سے اور کبھی عموم سے اور کبھی خصوص سے تعریف کرتے ہیں۔ اور اہل عرف بھی ایسا ہی کیا کرتے ہیں جس سے یہ بات شرع و عرف میں منکر نہیں ہے باقی حرمت میں انکو اسلئے یکساں ٹھہرایا گیا ہے کہ خدا تعالیٰ نے ہم پر پلیدیاں حرام کی ہیں۔ کبھی اور پلیدی جو کہ موجب حرمت ہوتی ہے اسکو بھی کبھی شارع علیہ السلام ظاہر فرماتا ہے اور کبھی پوشیدہ رکھتا ہے اور جو پوشیدہ ہو اس پر ایک علامت رکھ دی ہے جو انکی شناخت پر دلالت کرے۔ پس مردار میں تو جذب خون سبب ظاہر موجود ہے اور کبھی اور مردار اور تارک قسیمہ کے ذرا حد میں اور جو جانور غیر اہل ذمہ کے ہم سے ذبح کیا گیا ہو ایسے مذموم جانور میں بھی ایسی پوشیدہ شناخت اور پلیدی سرايت کر جاتی ہے جو کہ موجب حرمت ذبح ہے۔ اور اسکے فحشی ہونے کے سبب ایک علامت اسکے وجود پر قائم کر دی ہے یعنی علی اسم اللہ اسکا ذبح نہ ہو ورنہ اس سبب فحشی کی طرف حق تعالیٰ نے اشارہ بھی فرمایا ہے یعنی جن جانوروں پر خدا تعالیٰ کا نام وقت ذبح نہیں لیا جاتا انکو خدا تعالیٰ فسق فرماتا ہے اور فسق پلیدی ہے پس جہاں پلیدی ہو وہاں حرمت ضرور لاحق ہو جاتی ہے ولا تاكلوا مما لم يذكر اسم الله عليه وانه الفسق (انعام ۸)

توضیح اسکی یہ ہے کہ اس میں کچھ شک نہیں ہے کہ خدا تعالیٰ کا پاک نام ذبح کرنا کو پاک کرتا ہے اور ذبح کرنا اسے اور ذبح جانور سے شیطان سے دور کر دیتا اور مناد جتا ہے جب خدا تعالیٰ کا نام ذبح پر نہ لیا جائے تو ذبح کرنے والے اور ذبح جانور میں شیطان سرايت کر جاتا ہے اور شیطان کی شناخت جانور میں تاثیر کرتی ہے کیونکہ شیطان جانور کے خون کے قائم مقام ہو جاتا ہے اور خون ہی اسکا مال ہوتا ہے چنانچہ آنحضرت ﷺ فرماتے ہیں ان الشيطان بجوى من ہي ادم كجوى الدم یعنی شیطان جسنى آدم میں اسکے رگ اور پٹر اور خون کے جلدی ہونے کے مقاموں میں پنتا ہے اور وہ سب پلیدیوں سے بڑھ کر ہے پس جب ذبح کرنے والا خدا تعالیٰ کا نام لیتا

ہے تو شیطان قرآن کے ساتھ ہی خارج ہو جاتا ہے اور نہ وہ چپاک ہو جاتی ہے اور اگر اللہ پاک کا نام نہ لیا جاوے تو وہ پلیدی خارج نہیں ہوتی اور جب خدا تعالیٰ کے دشمن یعنی شیطان اور جنوں کا نام نہ لیا جاوے تو ذبوح میں پلیدی زیادہ ہلا جا جاتی ہے۔

ربا ہے کہ جب ذبح بخوسی وغیرہ ہو گو اللہ ہی کے نام سے ذبح کرے اسکی حرمت کا سبب یہ ہے کہ ذبح کا نام ہی مقام مبادت الہی ہے اس لئے خدا تعالیٰ نے دونوں کو صحیح کیا ہے چنانچہ فرماتا ہے فصل لومک وانحر قل ان صلاحی ونسکى ومحیای ومماتى قد رب العلمین والیدین جعلنا هالکم من شعائر اللہ لکم فیہا خیر فاذا ذکر واسم اللہ علیہا فاذا وجبت جنوبہا فکلوا منها واطمئنا للذابح والذبح کذلک سحر یا مالکم لعلکم تشکرون ان یدان اللہ لحو مہا ولا دمانہا ولكن ینالہ التقویٰ منکم خدا تعالیٰ نے بتایا کہ ہم نے ان جانوروں کو ان لوگوں کو سحر کیا اور طہال ٹھہرایا کہ ان پر خدائے تعالیٰ کا نام لے کر ان کو ذبح کریں کیونکہ خدائے تعالیٰ کو تو انسان سے تقویٰ منظور ہے جس سے مراد خدائے تعالیٰ کے حکم کی فرمانبرداری کر کے اسکا قرب پانا اور وقت ذبح جانوروں پر خدا کا نام لینا ہے اور جبہ وقت ذبح حیوانات پر خدائے تعالیٰ کا نام نہ لینے سے گناہ منع اور ناپسند ہے کیونکہ اس مکروہ فعل سے ان ذبوح جانوروں میں پلیدی کا اثر ہو جاتا ہے اور اسی طرح اگر ذبوح پر خدائے تعالیٰ کے سوائے کسی اور کا نام لیا جاوے تو وہ ذبوح مردار کی طرح ہو جاتا ہے جیسا ابھی قریب بیان ہوا ہے جب کہ تسمیہ ترک کرنے اور خدائے تعالیٰ کے سوائے کسی اور نام لینے سے ذبوح حرام ہو جاتا ہے تو جسکو خدائے تعالیٰ کا دشمن ذبح کرے جو چپاک ترین مخلوقات ہے اسکا ذبوح جانور بالادنی حرام ہو گا کیونکہ ذبح کرنے والے کا فعل و ارادہ اسکی طبیعت بالظہور ذبوح میں مؤثر ہوتی ہے۔

جب کہ غیر ذبوح جانور کا خون گوشت میں جذب ہو کر گوشت بنی بن جاتا ہے تو پھر اسکی حرمت کی کیا وجہ ہے: اسکی تحقیق کہ آیا ہر مرگ خون گوشت

میں جذب ہو جاتا ہے یا بعد استعمال کے گوشت جھاتا ہے یہ ہے کہ مستعمل ہونے کیلئے تو قوت باہرہ کی اور قوت حملہ کی یعنی اس قوت کی ہسٹاکام یہ ہے کہ ایک ٹی کو دوسرے کی طرف مستعمل کر دے ضرورت ہے اور ظاہر ہے کہ بدن کی سب قوتیں جیسے قوت باہرہ اور سب قوتائے حیوانی حیات ہی کے ساتھ ہیں اور وجہ اس کی یہ ہے کہ اعطائے حیوانی مثل چشم و گوش و غیرہ ان قوتی کیلئے ایسے ہیں جیسے آئینہ نور کیلئے یعنی قابل اور متحد سو جیسے اصل نور آئینہ میں نہیں ہو تا پھر آفتاب میں ہو تا ہے ایسے ہی اصل قوتائے حیوانی نفوس حیوانی میں ہوتے ہیں اعضاء میں نہیں ہوتے یہی وجہ ہے کہ جیسے آئینہ بے لہذا آفتاب نور کے انعکاس سے بیکار ہیں اس صورت میں بعد مرگ استعمال ممکن نہیں۔ نہ وہ جذب ہی ہو گا جو بعد مرگ کا نور خون نہیں نکلا اور جذب ہو تو پھر ناپاکی چھینی ہے جانور کو خلق سے ذبح کرنے کی حکمت: (۱) جانور کو خلق سے اسلئے ذبح کیا جاتا ہے کہ مجمع خون کا دل اور جگر ہے اور خون کو اس جگہ سے نکالنے کا نزدیک تر یہی راہ ہے۔ اس واسطے طبیعوں کے یہاں مقرر ہے کہ اس جگہ کے مولو کو قے کر اگر نکالتے ہیں۔

(۲) اگر جانور کے بدن کا لہو کسی اور طرف سے نکالا جائے تو جانور دیر میں مر جا اور اسکو تکلیف بہت ہوتی ہے اور خلق سے ذبح کرنے سے جلدی مر جاتا ہے۔

(۳) سانس کی آمد اور رفت کا یہی راہ ہے اور سانس محدود ہے لہذا روح اور مرکب روح یعنی خون کو اسی راہ سے نکالنا مناسب ہے۔

(۴) روح اور خون خدا سے پیدا ہوتے ہیں اور لہذا اسی راہ سے جہلی ہے لہذا روح و خون کو جدا کرنے کی مناسب راہ یہی ہے۔

وجہ حلت پھلکی و ٹڈی بغیر ذبح: (۱) پھلکی اس وجہ سے ذبح نہیں کی جاتی کہ اسکے بدن کا اصلی مادہ پانی ہے اور پانی بالطبع پاک اور پاک کرنے والا ہے اس جیسے کہ نہاست پانی میں اثر نہیں کرتی ایسا ہی آبی جانور کی روح جدا ہونے سے اس میں نہاست اثر نہ کرے گی اور حاجت ذبح کی نہ

رسی اور ٹڈی اس سب سے ذبح نہیں کی جاتی کہ وہ خون بہا رہی نہیں رکھتی اور تعلق اسکی روح کا بدن سے بلا واسطہ خون کے مثل تعلق روح پہلا اور درخت اور دیگر جڑات کے ہے اور اس طرح کے تعلق کا بہا ہونا موجب نہاست نہیں ہوتا کیونکہ اس بہائی سے خون بہتا نہیں ہوا اور اس حالت میں اگرچہ تمام دریائی جانور اور تمام مشرکات اور مشرک ہیں مگر وہ سب ذاتی نہاست اور غذائے نجس و معتر ہونے کے حرام ہیں۔ خلاف پھلی زڈی کے کہ وہ ذاتی و جارحی نہاست سے پاک و سالم ہیں۔ اسی واسطے ان دونوں کیلئے خاص استثناء ہوا۔ چنانچہ نبی علیہ الصلوٰۃ والسلام فرماتے ہیں۔ احلنا لئنا میتان و ذمنا اما المیتان الحوت و البحر و اللعان الکبد و الطحال۔ ترجمہ: یعنی ہمارے لئے دو میت اور دو خون حلال کئے گئے لیکن دو دھنوں سے مراد تو پھلی اور ٹڈی ہیں اور وہ خونوں سے مراد بکر اور تلی ہیں۔ اور بکر اور تلی دو عضو ہیں مگر یہ دونوں خون کے مشابہ ہوتے ہیں۔ لہذا آنحضرت ﷺ نے اس شبہ کو رفع کر دیا جو ان سے پیدا ہوتا تھا نیز پھلی میں مثل ٹڈی کے دم مسلوح یعنی طون رہا نہیں جو بالذات کئے لئے بھی ذبح کرنا مشروع نہیں ہوا۔

شتر اور گاؤ اور گاؤ میشش اور بھیرا اور بگڑی اور دنبہ کی حلت کی وجہ: (۱) یہ ہمارے جانور دراصل مزاج انسانی کے موافق اور سحر سے و مستحل المزاج ہوتے ہیں اس لئے حلال ٹھہرانے گئے ہیں اور ان جانوروں کو خدا تعالیٰ نے بکرتہ الانعام فرمایا ہے اور اس موافق و اعتدال کے سبب دنیا میں زیادہ تر انہیں جانوروں کا گوشت یعنی آوم استعمال کرتے ہیں نظرت انسانی اس امر کی متفقہی ہے کہ جیسا کہ یعنی آوم کی خوراک کا کچھ حصہ باجمت سے ہوتا ہے ایسا ہی کچھ حصہ اسکا حیوانات سے ہو اور اسکی خوراک کیلئے حیوانات بھی وہ مقرر ہونے مناسب تھے جو اسکے مزاج کے موافق ہوں لہذا خدا تعالیٰ نے ایسا ہی کیا۔

(۲) جبکہ انسان جامع حلال و حلال ہے تو اسکی خوراک میں حلال و حلال دونوں کا ہونا مناسب تھا

لفظ انسان کی طور پر کہہ سکتے ہیں اور مقرر ہوئے جن میں جمال و جلال ہر دو صفات موجود ہیں۔

ہر ان گور خر، خرگوش، شتر مرغ کی حلت کی وجہ سے وہ جانور جو جنگل میں رہتے ہیں اور
انہیں انعام کے مقابلہ میں وہ سب حلال ہیں کیونکہ ان میں ذمہ انعام کے پاک و سحرے سے
موصاف موجود ہیں اور وہ حرام انسان کے موافق اور مطابقت میں مثلاً ہر ان گور خر، شتر مرغ وغیرہ۔
ایک دفعہ نبی صلی اللہ علیہ وسلم کو کسی شخص نے پلور پدیا کے گور خر کا گوشت بھیجا تو آنحضرت
ﷺ نے اسکو قبول فرما کر کھال فرمایا۔

وجہ حلت مرغ و مرغابی و کبچنگ و کبوتر و مانند آں : ان پر عہدوں کا گوشت حرام
انسانی کے موافق و مفید ہے لہذا حلال ٹھہرے۔

بہشت میں حلت شراب کی وجہ ۔ سوال شراب جو دنیا میں ممنوعات اور حرمت سے ہے
وہ کیونکر بہشت میں روا ہو جائے گی۔

جواب (۱) اللہ تعالیٰ فرماتا ہے کہ بہشتی شراب کو اس دنیا کی قدر و انگیز شرابوں سے بہتر
مناستہ نہیں ہے چنانچہ قرآن کریم میں بہشتی شراب کی صفت یوں فرمائی ہے ۔ و سفہم
وہم شراباً طہوراً۔ ترجمہ۔ یعنی لوگ بہشت میں داخل ہوں گے اللہ ان کو پاک شراب طور
پائے گا۔ جو خود بھی پاک ہوگی اور دل کو کمال طور پر پاک کر دے گی۔

اور بہشتی شراب کے متعلق یہ بھی فرمایا ہے۔ و نکس من معس لا یصدون عہا ولا
یسفون الہی قولہ تعالیٰ لا یسفون فیہا لغوا ولا تالیما الا قلیلاً سلاماً سلاماً۔ ترجمہ کا
حاصل یہ ہے کہ وہ شراب صافی کے پائے جو آپ نال کی طرح مصفی ہوں گے بھیجیں کو
دیتے جائیں گے وہ شراب ان سب عیبوں سے پاک ہوگی کہ درد سر پیدا کرے یا دماغی اور بدستی
اس سے طاری ہو اور بہشت میں کوئی تھوڑا سا عیب ہوتا ہے جسے نہیں آنے کی گورنہ کوئی گناہ کی
بات سنی جائے گی۔ بلکہ ہر طرف سلام سلام جو رحمت اور محبت کی نشانی ہے جسے میں آجنگا۔ شرح

انگلی یہ ہے کہ شراب میں وہی ہمیں ہوتی ہیں ایک نشہ اور سر اور اور ان دونوں میں باہم تضاد ہے نشہ ہوشی کا نام ہے اور وہ ہوشی میں نہ رکھی ہو تا ہے نہ راست نہ خم نہ خوشی۔ اس صورت میں دونوں کا اجتماع ایسا ہو گا جیسا کہ تمام مرکبات عنصریات میں گرمی سردی کا اجتماع ہو تا ہے مگر جیسے باہم و جہ کہ گرمی سردی باہم متضاد ہیں ایک شئی کی تاثیر پر دونوں نہیں ہو سکتیں اور اس وجہ سے پانی اور آگ کا اترار کرنا پڑتا ہے ایسی ہی وجہ مذکور نشہ اور سرور شے واحد کا اثر تو بھی نہیں سکتے خواہ خود ایسی کتنا پڑے گا۔ کہ نشہ کسی اور چیز کی خاصیت ہے اور سرور کسی اور چیز کی خاصیت۔ اگر شراب میں وہ چیز نہ رہے جسکی خاصیت نشہ ہے پھر قدرت الہی کی تھیلی سے پھان کر اسکو ہوا کر دیں تو پھر اس صورت میں شراب فقط لذت اور سرور ہی رہ جائے گا اور بے شک ہر ناقل کے نزدیک وہ شراب حلال ہوگی۔

فرض یہ ہے کہ طبع حرمت شراب کی تمام عقائد اور قانون حرمت کے نزدیک ایسی نشہ ہے اور اہل اسلام انگلی حرمت کے جیسی قائل ہیں وہب تک اس میں نشہ ہو۔ اگر شراب سر کہ نہ جائے اور نشہ نہ رہے تو وہ پھر اسکے پینے میں شامل نہیں کرتے۔ اور قرآن وحدیث فقہ میں بھی لگے۔ جہ مذکور ہے بالکلہ وجہ حرمت وہ نشہ ہے اور چونکہ وہ ایک ہدی چیز کے ساتھ قائم ہے اور اس وجہ سے اسکا ہوا ہونا ممکن تو در صورت بدلتی فقہ اور سرور ہی شراب میں باقی رہ جائے گا اور ظاہر ہے کہ شراب کو جو کوئی پیتا ہے وہاں سرور پیتا ہے۔ لاجہ ہوشی نہیں پیتا سو کلام اللہ میں لذت کا ثبوت ہے جو باہر سرور ہے اور نشہ کی شئی ہے جو وہ ممانعت شئی پیتا تو لفظ لا لغوہا ولا لہم اس پر مشابہ ہے پھر دنیا میں نشہ کی چیزوں کی اس وجہ سے ممانعت شئی کہ نشہ کے وقت حکام نہ لوندی ادا نہیں ہو سکتے سو یہ اندیشہ زندگانی، نیاک ہی ہے اور مرگ تمام انکام ساتھ ہو جاتے ہیں بہشت میں ہر کوئی لڑا انکام بہشت فیروہ سے فارغ الہال ہوگا۔ وہاں اگر شراب حلال ہو جائے تو کیا حرج ہے ہر تن میں مکھی پڑنے سے اسکو اس میں غوطہ دے کر نکالنے کی وجہ : یہی علیہ

اصولاً اور اسلام فرماتے ہیں۔ اذا وقع الذباب في احدكم فليبعه نه ليطرحه فان لم ياحد احدنا حبه شفاء وهي الاخرقاء ترجمہ جب کہ تمہارے کسی رتن میں کبھی آج سے تو کبھی کو اس میں آجیا کر پھر اسکو پھینک دو کیونکہ اسکے ایک پر میں شفا اور دوسرے میں بیماری ہے۔

اور ایک روایت میں یہ بھی آیا ہے کہ وہ کبھی اس پر کو مقدم کرتی ہے جس میں بیماری ہے تفصیل اس اہمال کی یہ ہے کہ خدا تعالیٰ نے حیوان کے اندر انکی طبیعت کو تعمیر بدن کیلئے پیدا کیا ہے وہ طبیعت اکثر لوگات سوار سوار ہے جو جڑوں کو ہونے کی قابلیت نہیں رکھتے اتفاقاً ان سے اطراف کی طرف دور کرا جتی ہے لیکن وجہ ہے کہ اطباء جانوروں کی دم کھانے سے منع کرتے ہیں اور کبھی اکثر لوگاتے شراب غذا جو جڑوں کو ہونے کی صلاحیت نہیں رکھتی کھاتی رہتی ہے اور انکی طبیعت اسی مادہ فاسد کو اسکے عضو نہیں یعنی پر کی طرف پھینکتی رہتی ہے اور نہ انکی حکمت یہ ہے کہ جس چیز میں زہر رکھا ہے تو اس میں تریاقیہ مادہ بھی رکھا ہے۔ چنانچہ سانپ کے زہر کا تریاق سانپ کے سر میں ہوتا ہے ایسا ہی اور جانوروں کا ہوتا ہے ورنہ اگر جانوروں میں زہر تو ہو مگر ان میں تریاقیہ مادہ نہ ہو تو کوئی جانور زندہ نہ رہ سکے۔

پانی اور برتن میں سانس لینا ویچو نکلتا منع ہونے کی وجہ : عن ابی ہریرۃ قال رسول اللہ ﷺ اذا شرب احدکم فلا یففس فی الاماء فاذا اراد ان یعود فلیبح الاماء لم یبعہ ان کان یوید۔ یعنی حضرت ابی ہریرہ رضی اللہ عنہ سے روای ہیں کہ جب تم میں سے کوئی شخص پانی پینے لگے تو برتن میں سانس نہ لوے اور پھر جب سانس لینا چاہے تو برتن کو مت سے ہٹا لیوے اور پھر جب پینے کا ارادہ کرے تو برتن مت سے لگے۔ دوسری حدیث میں ابن عباس رضی اللہ عنہما نے حضرت رضی اللہ عنہ سے روای ہیں۔ لم یسک الرسول اللہ ﷺ یففس فی الشراب یعنی رسول کریم صلی اللہ علیہ وسلم پانی میں نہ بھونکتے تھے۔

اور ایسا ہی ایک اور حدیث میں حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہما سے روای ہیں۔ نہیں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ان

بصیح ہی الاقارہ۔ یعنی نبی علیہ الصلوٰۃ والسلام نے رتن میں پھونکنے سے منع فرمایا ہے۔ (ابن ماجہ)
 سانس کا پانی میں لینا یعنی پانی میں پھونکنا اسلئے منع ہوا کہ سانس تمام گندے حشرات لنگر باہر آتا ہے اور
 پانی میں سانس لپا ہوا ہے پانی میں پھونکا ہوا ہے تو ان معتمد حشرات سے پانی مضر ہو جاتا ہے جو اندر
 سے باہر آتے ہیں اور اس طرح سے وہی حشرات اندر چلے جاتے ہیں جن سے حدوث امراض کا
 خطرہ ہے۔ انسان کے اندر آمد و رفت سانس کی گویا الہی مشین ہے جسکے ذریعہ سے گندے اور
 متعفن مادے برومباہر نکلنے ہیں اور جانہ ہو اس کے اندر آتی رہتی ہے اور اسکے ذریعہ سے انسان کی
 صحت قائم رہتی ہے۔ الغرض اندر کے گندے اور متعفن حشرات اور مادے جو سانس کے ذریعہ
 سے باہر آتے ہی انکو کھانے پینے والی چیزوں میں سانس کے ذریعہ سے ڈالنا ممنوع ہوا کہ اس سے
 امراض پیدا ہوتے ہیں۔

انسان کیلئے گوشت کھانا کیوں جائز ہوا: انسان کو مثل شیر و چیتا، بھیڑیا، غیرہ کچھالیوں کا
 مٹا ہوا س جانپ مشیر ہے کہ اسکی غذا اصلی گوشت ہے اور اہل عقل کے نزدیک یہ بات کم از
 اجازت نہیں اور ظاہر ہے کہ انسان کو جنسی چیزیں دی گئی ہیں۔ انکو کھان جیسے دیکھتے سنے کیلئے ہیں
 اس لئے ان سے صاف مہاں ہے کہ یہ دیکھتے سنے کی اجازت ہے ایسے ہی کچھالیوں کو بھی خیال فرما
 لیجئے ہاں یہ بات مسلم ہے کہ سارے حیوانات یکساں نہیں ہر کسی کے گوشت میں ہدانا شیر ہے۔
 لہذا جس جانور کا گوشت مفید ہو گا وہی جائز ہو گا۔ جس جانور کا گوشت مضر ہو گا اور ضرورت نا جائز
 ہو گا کیونکہ خداوند کریم کے امر و نہی و اجازت و ممانعت قوی کے نفع و نقصان کے لحاظ سے ہے۔
 اپنے نفع و نقصان کے لحاظ سے نہیں۔ اسلئے سور اور شیر و غیرہ اور نہ سے نا جائز اخلاقی کے کھان
 ممانعت ہو گئے اور انکا کھانا انسان پر حرام ہو گیا۔ تاکہ انکے کھانے سے حرج میں بد نظمی نہ پیدا ہو
 جانے جیسے گرم غذا سے گرمی اور سرد سے سردی پیدا ہوتی ہے ایسے ہی حیوانات کے کھانے سے
 انکے حرج کے موافق انسان میں اخلاق پیدا ہوتے ہیں۔

گوشت ترکاریاں کھانے سے انسان کے روحانی اخلاق کیسے پیدا ہوتے ہیں: ہم جمل ازیں لکھ چکے ہیں اور اس بات کو دوبارہ یاد دلاتے ہیں کہ غذا کا اثر جسم پر ویسا ہی ہوتا ہے جیسا غذا کا مزاج ہو۔ گرم غذا سے گرمی اور سرد سے سردی کا پیدا ہونا مسلم ہے اسی طرح حیوانات کے کھانے سے انسانی اوصاف کا تغیر و تبدل ہو جاتا ہے۔ مادہ یعنی ایشیا ترکاریاں اور سٹلے کیونکہ وہ غیرہ کھانے سے انسان میں نرمی و علم و علم و رحم کے اوصاف پیدا ہوتے ہیں اور گوشت کھانے سے اس میں شجاعت و جسارت و قوت غضب کو تحریک ہوتی ہے چونکہ انسان جامع جلال و جمال ہے لہذا اسکے لئے جلال اور گوشت دونوں قسم کی غذا میں متوال ہوئیں اگر انسان سے قوت غضب یا نکل مفقود ہو جائے تو انسانی منفیت سے محروم ہو جائے اور اسکے بہت سے امور غلط پڑے ہو جائیں کیسے گرمی کی ضرورت ہوتی ہے اور کیسے سردی کی حاجت: کبھی گلہو یہ مفید ہوتی ہیں اور گاہے شیریں سے حاجت بر آری ہوتی ہے۔ جہاں تلخ لہو یہ کے ساتھ معالجہ کرنا ہو وہاں شیریں اشیاء کا استعمال کرنا اور اسر نقصان دہ انیر مفید ہو گا۔ کبھی شصہ و غضب سے ہی کام لگنا ہے اور نرمی سے بچنا ہے اور گاہے نرمی و رفق و علم سے معاملہ سنورا تا ہے اور غصہ و غضب سے خراب ہوتا ہے۔ اسی طرح لہو کو کچھ لولور مرچ بھی چیز اور نیم بھی تلخ اشیاء اور قند بھی شیریں چیزوں کا انسان کیلئے پیدا ہونا اس جانب مشیر ہے کہ انسان کو مادہ ایک ہی چیز کا استعمال کرنا مضر ہے۔ گاہے تلخ اور گاہے شیریں گاہے غلہ و میوہ جات و سبزی اور گاہے گوشت گاہے رحم اور گاہے غضب کچھ تازہ کرے اور اسی طریق سے حالات قائم ہو سکتی ہے۔

انسان میں قوت غضب و علم و غیرہ کی حکمت: انسان کی فطرت پر نظر کر کے معلوم ہوتا ہے کہ اسکو مختلف قوتیں اس فرض سے دیے گئے ہیں تاکہ وہ مختلف وقتوں میں حسب تقاضائے محل اور موقع قوتی کو استعمال کرے گا انسان میں غلہ اور غلٹوں کے ایک قوتی بحری کی

فطرت سے مشابہ ہے۔ اور دوسرا اطلاق شیر کی سفت سے مشابہہ رکھتا ہے۔ پس خدا تعالیٰ انسان سے یہ چاہتا ہے کہ وہ بکری بننے کے محل میں بکری بن جائے اور شیر بننے کے محل میں وہ شیر بن جائے اور خدا تعالیٰ ہرگز نہیں چاہتا کہ وہ ہر وقت ہر محل میں بکری ہی بنا رہے اور نہ یہ کہ ہر جگہ وہ شیر ہی بنا رہے اور جیسے ماگ وہ یہ نہیں چاہتا کہ ہر وقت انسان سوتا ہی رہے یا ہر وقت ہانکتا ہی رہے یا ہر دم کھاتا ہی رہے یا پیشہ کھانے سے منہ بند رکھے اسی طرح وہ یہ بھی نہیں چاہتا کہ انسان اپنی اندرونی قوتوں میں سے صرف ایک قوت پر ذور ڈال دے اور دوسری قوتیں جو خدا تعالیٰ کی طرف سے اسکو ملی ہیں۔ تو اسی خدا نے اس میں ایک قوت غضب اور خواہش انتقام کی بھی رکھی ہے۔ پس کیا مناسب ہے کہ ایک خدا کو قوت کو تو خدا سے زیادہ استعمال کیا جائے اور دوسری قوت کو اپنے میں سے نکالت کر بیگ یا ہڈے اسکو خدا پر اعتراض آتا ہے۔ گویا اس نے بعض قوتیں انسان کو ایسی دی ہیں جو استعمال کے لائق نہیں۔ کیونکہ یہ مختلف قوتیں اسی نے تو انسان میں پیدا کی ہیں۔

پس یاد رہے کہ انسان میں کوئی بھی تو خدا کی نہیں ہے بلکہ انکی بد استعمال ہی ہے۔ قرآن شریف میں خدا تعالیٰ فرماتا ہے۔ جَوَاءَ سِنْفَةٍ مِّنْهَا فَمَنْ عَطَىٰ وَأَصْلَحَ فَاجْرَاهُ عَطَىٰ ۗ اِنَّهُ لَمَنْ اَكْرَمُ كُوْنِي فَتَمْسِيں دَكْحَةٍ مِّنْهُنَّ اَمَّا تُوَزَّدُوْنَ فَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ تو اسکی سزا ای تو رہی ہے جو اس نے کی۔ لیکن اگر تم ایسی صورت میں گناہ معاف کرو کہ اس معافی کا کوئی نیک سبب پیدا ہو اور اس سے کوئی اصلاح ہو سکے۔ یعنی مثلاً مجرم آئندہ اس عادت سے باز آجائے تو اس صورت میں معاف کرنا ہی بہتر ہے اور اس معاف کرنے کا خدا سے اثر ملے گا۔

اس آیت میں دونوں پہلوؤں کی رعایت رکھی گئی ہے اور حق اور انتقام کو مصلحت وقت سے دھرت کر دیا گیا ہے سو یہی حکیمانہ مسلک ہے جس پر نظام عالم کا چل رہا ہے۔ رعایت محل اور وقت سے گرم اور سرد دونوں کا استعمال کرنا ہی عقلمندی ہے جیسا کہ تمہارے کہتے ہو کہ ہم ایک ہی قسم کی غذا پر پیشہ ذور نہیں ڈال سکتے بلکہ حسب موقع گرم اور سرد غذا انکی ہڈے رکھتے ہیں اور ہڈے اور گرمی کے وقتوں میں کپڑے بھی مناسب حال ہڈے رکھتے ہیں۔

پس اس طرح ہماری اخلاقی حالت بھی حسب موقع تبدیل ہو جاتی ہے ایک وقت غصہ دکھانے کا مقام ہوتا ہے وہاں نرمی اور درگزر سے کام لیا جاتا ہے اور دوسرے وقت نرمی اور تواضع کا موقع ہوتا ہے وہاں رعب و کھانا سئلہ پن سمجھا جاتا ہے غرض ہر ایک وقت اور ہر ایک مقام ایک بات کو چاہتا ہے پس جو شخص رعایت و مصالح و اوقات نہیں کرتا وہ حیوان ہے نہ انسان اور وہ وحشی ہے نہ مذہب قرآنی تعلیم یہ نہیں کہ کسی جگہ شرکاً مقابلہ نہ کیا جائے اور شرعیوں اور خالوں کو سزا نہ دی جائے بلکہ یہ تعلیم ہے کہ دیکھنا چاہیے کہ وہ عمل اور موقع گناہ گنہے کا ہے یا سزا دینے کا پس مجرم کے حق میں اور نیز جانک خلق کے حق میں جو کچھ فی الواقع بھڑ بھڑی صورت اختیار کی جائے اس وقت ایک مجرم گناہ گنہے سے اور بھی دلیر ہو جاتا ہے پس اللہ تعالیٰ فرماتا ہے کہ اے محمد! کی طرح صرف گناہ گنہے میں یا سزا دینے میں پس جو عمل اور موقع کے مناسب ہو وہی کرو۔

یوقت ذبح جانور پر تکبیر پڑھنے کا راز بہر تاثیر کے لئے ایک موثر ہے اور ایک قابل آفتاب کی تاثیر سے جو آئینہ منور ہو جاتا ہے اور آتشیں شیشہ میں شعاعیں آجاتی ہیں تو ان دونوں صورتوں میں آفتاب موثر ہے اور آئینہ اور آتشیں شیشہ حائل اور قابل اگر لوسر آفتاب نہ ہو یہ نورانیت جو آئینہ میں آجاتی ہے اور یہ سوزش جو آتشیں شیشہ میں پیدا ہوتی ہے ظہور نہ کرے اور اگر اوسر آئینہ اور آتشیں شیشہ نہ ہو تب بھی یہ نورانیت اور یہ سوزش ظاہر نہ ہو۔ اسی طرح تکبیر وغیرہ ذکر اللہ موثر ہیں اور حیوانات معینہ قابل اور متاثر اگر موثر کی جانب بائیں خالی ہو یا سجائے ذکر اللہ کچھ اور ہو تب بھی حالت حضور نہیں اور اگر قابل کی جانب بائیں خالی ہو یا سجائے معینہ کے اور کوئی حیوان ہو تب بھی حالت حضور نہیں بلکہ تکبیر کے موثر ہونے کی وجہ سمجھو کہ جب تکلیف الہی نے انسان کے لئے ان حیوانات کو جو زندگی میں اس کے مثل ہیں مہیا کر دیا اور ان حیوانات پر اس کو قدرت عطا فرمائی تو وہاں یہ ہو کہ ان حیوانات کی جان نکالنے کے وقت اس نعمت سے ناقل نہ ہو اور ناقل نہ ہونے کی یہی صورت ہے کہ اللہ تعالیٰ کا نام ان پر ذکر کریں۔ چنانچہ اللہ تعالیٰ

فرماتا ہے۔ لیلہ کبر و اسم اللہ علی ما رواہہم من بیہمة الامعام۔ ترجمہ یعنی خدا تعالیٰ کا نام لیں اس چیز پر جو خدا تعالیٰ نے ان کو عطا فرمائی چار پاؤں میں سے۔ شرع اس کی یہ ہے کہ غلہ پھل وغیرہ نباتات کا یعنی قوم کے لئے ہونا تو ظاہر تھا کون نہیں جانتا کہ یہ چیزیں نہ ہوتیں تو یعنی آدم کو زندگی عطا تھی البتہ حیوانات کا یعنی قوم کے لئے ہونا اس وجہ سے عقلی تھا کہ عقل ہی قوم کے دست پا و چشم و گوش وغیرہ اعضا و قوتی ان کے حق میں بھی آلات انتفاع ہیں پھر جیسے غلہ پھل وغیرہ نباتات یعنی قوم کے کام آتے ہیں ایسے ہی حیوانات ہم سنگ یعنی قوم نظر آتے ہیں البتہ نباتات میں پیدا کرنے کے سوا اور اجازت کی ضرورت ہے ورنہ ایسے ذبح جو اعلیٰ درجہ کی ایذا ہے کیونکہ عقل ہے اور یہ اعلیٰ درجہ کا ظلم ہو گا اور کیوں نہ ہو ہماری تمساری ملک برائے نام ملک ہے جب ہماری مملوکیات میں تصرف بے اجازت ظلم سمجھا جاوے تو خدا تعالیٰ کی مملوکیات و مخلوقات میں تصرف بے اجازت ظلم کیوں نہ ہو گا اسلئے اس کی اجازت کی ضرورت چڑی۔ مگر ہر کس و عا کس جانتا ہے کہ مالک کی اجازت اس وقت منحور ہے جب تصرف کرنا مالک کو مالک سمجھتا ہو اور اگر کسی اور کو سوائے مالک کے مالک سمجھ بیٹھے تو جائے اجازت ظلم غیر مالک ممانعت ضرور ہے علیٰ ہذا القیاس انعام کی توقع اسی وقت ہو سکتی ہے جب کہ حقوق ممانعت اسی کو لو اکنے جائیں اور اگر بالفرض مالک کے حقوق کسی اور کو لو اکنے جائیں تو اس وقت انعام کی جگہ اللہ مستحق سزا ہو گا اسلئے لغرض رفع اشکال ذبح کے وقت ممانعت اور اجازت کا اعلان ضرور ہو گا یہی وجہ معلوم ہوتی ہے کہ اہل اسلام اور اہل کتاب کے مذہب میں وقت ذبح بسم اللہ کا کتنا ضروری سمجھتے ہیں۔ بالمثلہ وقت ذبح خدا کا نام لینا موافق عقل ضروری ہے۔

غیر اللہ کے نام پر ذبح کئے ہوئے جانور کی حرمت کی وجہ: لوہ کی تقریر سے ثابت ہے کہ لفظ کا کھانا خدا کی اجازت پر جتنی ہو گا مگر یہ ٹھہرے تو پھر اعلان اجازت خدا کو ہی ضروری ہے تاکہ یہ وہم صورت حال ذبح سے نہ پیدا ہو کہ وہ خدا کی ذات کا محتاج نہیں ہوں

اہانت خدا کے موردِ عمدہ و مملو کات میں خاطرِ ثلوثِ تعریف کر سکتا ہے جس سے اس کا کالم ہو جائے اور خدا کی تعظیم نکلتی ہے پھر اس پر اس اعلان میں یہ بھی فائدہ ہو گا کہ خدا کا نام سن کر حیوانات کو وہ چہ اعتقادِ مذہبی بصورت اور اپنی مملو کت کی جان دینی تسل ہو جائے۔

القصہ خداوندِ عالم مالک الملک ہے اور حیوانات اسکی محتاج۔ اسلئے ان کا محتال ہونا اگر وقتِ ذبح خدا کا نام لینے پر موقوف رکھا جائے اور غیر خدا کے نام پر ذبح کئے ہوئے جانور کو اگر حرام کہا جائے تو چاہے کیونکر مالک کو یہ گراں نہیں ہو تا کہ اسکی اہانت سے اسکی مملو کات میں تعریف کیا جائے پھر بے اہانت تعریف کبھی گوارا نہیں ہو تا اور اگر اہانت کے سوائے یہ بھی پیش آہائے کہ تعریف کرنا وہ اس شئی کو کسی اور کے نام کہتا پھر اور اسی کے نام سے اس میں تعریف کرے تو گوارا ہونا کھانی سزائے بغضت اسلئے تہویج کی جائے گی اور وہ چیز اس سے جھین لی جائے گی یہی وجہ معلوم ہوتی ہے کہ اہل اسلام ایسے ذبح کو جس پر غیر خدا کا نام وقتِ ذبح لیا جاوے یا غیر خدا کا سمجھ کر اور انے نام خدا کے نام پر ذبح کیا جائے حرام کہتے ہیں اس تقریر سے تو وقتِ ذبح خدا کے نام لینے کی ضرورت اور غیر خدا کے نام لینے کی خرابی صوح ہو گی۔

حرمت شراب و قمار بازی کی وجہ : چونکہ لوگوں کی معاش اور خانگی تدبیر اور سیاست عدان یعنی شہروں کا انتظام پھر عقل و قیصر کے کھل نہیں ہو سکتی اور شراب خوردی کی عادت سے تمام انسانی انتظامات میں الجھل پڑ جاتی ہے اس سے جنگ و جدال اور ذاتی رنجشیں پیدا ہوتی ہیں اور طبائع انسان میں جو دہودہ خواہشیں ہیں وہ بھی عقلوں کو مغلوب کر لیتی ہیں پھر ان میں ایسے البیر وائل کا میلان ہو جاتا ہے اور تمام تدبیر کو وہ تلف کر دیتے ہیں اگر ایسی ایسی حرکات کی روک ٹوک نہ کی جائے تو لوگ ہلاک ہو جائیں اسی روک ٹوک کے لئے شراب کو حرام کیا گیا۔ شراب میں بہت سی خرابیاں کا اندیشہ ہے جن سے خدا تعالیٰ کی نافرمانی ہوتی ہے شراب کی وجہ سے خدا کی جانب خاص توجہ نہیں ہو سکتی تمدن اور خانہ داری کے انتظامات سب درہم برہم ہو جاتے ہیں

اسلئے شارع نے شراب کو نجاسات میں داخل کیا ہے چنانچہ خدا تعالیٰ فرماتا ہے شراب ناپاک اور شیطان کا فعل ہے ورس من عمل الشيطان ان لے خدا نے اس کو بہت تاکید کے ساتھ حرام کیا ہے نعمتِ قلبی کا بھی اکتفا ہو کہ ان کو چشام اور پاختہ کی درلر کر دیا جائے تاکہ لوگوں کے سامنے اس کی برائی متعل ہو جائے اور اس سے خود علوان کے دلوں کو اس کی طرف سے کشیدگی ہو جائے اور اس کی حرمت کے اور بھی وجوہ ہیں جب فسادوں کے جامع ہیں چنانچہ خدا تعالیٰ فرماتا ہے۔ **استبريد الشيطان ان يوقع بكلم العداوة والبغضاء في الحمر واليسر ويصدوكم عن ذكر الله وعن اصوله اهل النعم منهون**۔ ترجمہ شیطان چاہتا ہے کہ ذالے تم میں دشمنی اور عقل شراب اور جوئے سے اور رو کے تم کو خدا کی یاد سے اور لذت سے بکراں تمہارا بھی آگے نبی علیہ الصلوٰۃ والسلام فرماتے ہیں۔ **عالمسکو ككيرة طفيلة حرام**۔ یعنی جو چیز بہت نخر اور ہودہ تھوڑی بھی حرام ہے قدر باری یعنی جو اس لئے حرام ہے کہ اس سے مال باحق ضائع ہوتا ہے اور بھگڑے پیدا ہوتے اور تدبیر مطلوب حرام ہو جاتی ہیں اور معانات جس پر کہ تمدنی زندگی کا اور دہار ہے اس سے انسان امتزاض کرتا ہے اگر امارے اس بیان کی تصدیق نہ ہو تو بکر اور کر کہ کسی تم نے جو لڑیوں کو من باتوں سے خالی اور آسودہ حال نہ دیکھا ہو گا یہاں شراب پینے والے کا حال ہے ان کے مضارہ فساد و شمار ہیں اور جس گمراہ قوم ملک میں شراب کی کھڑت ہوگی وہاں مصائب کی کھڑت ہوگی یہی وجہ ہے کہ ممالک یورپ میں کھڑت شراب نوشی کے باعث مصائب جرم کی بھی یونان فو مارتی ہو رہی ہے اور نہ جاز یورپ میں ٹیم ایک چھوٹا سا ملک ہے جس کی آبادی 1/3 ملین سے زائد نہیں ہے لیکن ایک لاکھ نو ہزار شراب خانے ملک میں موجود ہیں یعنی ہر چالیس شخصوں کے لئے جن میں عورتیں اور لڑکے بھی شامل ہیں ایک شراب خانہ ہے گذشتہ نصف صدی میں ٹیم کی آبادی میں فی صدی پچاس کی ترقی ہوئی لیکن شراب خانہ فی صدی سو اعلوان زیادہ ہوئے لعل ٹیم ایک سال میں 5 ملین شراب پیتے ہیں اور مجموعی مقدار وہ کروڑوں لاکھ چالیس ہزار پونڈ شراب میں صرف کرتے ہیں یعنی روزانہ ستاون ہزار چھ سو پونڈ کی شراب

خوری ہوتی ہے فی کس 3/113 اور فی خانہ من پندرو پنجہ سالانہ کا حساب بالواسطہ ہے اس شراب خوری و اسراف کا نتیجہ یہ ہے کہ تعداد جرائم بہت بڑھی ہوئی ہے بھروسوں میں فی صدی اسی قوم کشی کرتے ہیں ۳۷ فیصد خاندان ہتے ہیں ۷۹ فقر و قانقہ میں بسر کرتے ہیں اور ۵۷ فی صدی مجنون اور پاگل ہیں حقیقت میں اسلام نے شراب کو حرام کر کے نوع انسانی پر غیر معمولی احسان کیا ہے اسلام میں مسکرات کی ممانعت صاف طور پر بتائی ہے کہ اس پاک مذہب کو شوائبیت سے کس قدر نبرد ہے ہم اس جگہ یہ سوال نہیں کرتے کہ اگر خلاف اسلام کوئی مذہب شوائبیت کی راہ نہیں بتاتا تو کیوں اس میں شراب جیسی بری چیز کی کوئی ممانعت نہیں۔ کیونکہ یہ مضمون اس وقت ذہر صحت نہیں مگر ہم پوچھتے ہیں کہ اگر شراب شوائبی خیالات کو ابھارنے والی ہے جیسا کہ کل دنیا تسلیم کر رہی ہے تو کیا کسی مذہب کا شراب سے منع کرنا اور شراب خوری کو قصداً روک دینا اس امر کی حقیقی اور قطعی شدت نہیں ہے کہ وہ شوائبی خیالات سے چھڑانے اور احتیاجی طور روح و دل کی پاکیزگی کی طرف بلانے والا ہے اگر اسلام ایک نفسانی مذہب تھا اور اسکی غرض بھی تھی کہ شوائبی خواہشات کو پورا کرنے کے ذریعے تاوانے اور انکی رونا کھول دینے تو پھر اس نے شراب کو کیوں منع کیا اور شراب خوری کو کیوں جلا سے کا۔

ہمیں اور بھی قہر ہو تا ہے جب ہم بعض نام کے مسلمانوں کو یہ کہتے ہوئے سنتے ہیں کہ اسلام کے اصول ایک لہوائی سوسائٹی کیلئے ترویج کئے گئے تھے جس کا مطلب دوسرے لفظوں میں یہ ہے کہ گویا یہ اصول ایک وحشی قوم کیلئے ترویج کئے گئے تھے اور آجکل مذہب اقوام کے لئے وہ موزوں نہیں جو حال ان مسلمانوں سے جو آجکل شراب خوری سے تلاء ہو رہے ہیں یہ وحشی قوم ہی اچھی رہتی افسوس ہے کہ لوگ واقعات کی بناء پر نتائج پیدا نہیں کرتے بلکہ جو ایک خیال دل میں گھڑ گیا ہے اسی کی پیروی کرتے ہیں کوئی پاکیزگی اس پاکیزگی کے بارے میں نہیں جس کی اسلام نے تعلیم دی ہے مگر اس حقیقی پاکیزگی کو نفسانیت کہا جا تا ہے حالانکہ اس شوائبیت کو جس کی طرف شراب خوری انسانوں کو لے جا رہی ہے پاکیزگی کے نام سے موسوم کیا جا تا ہے شراب ہی وہ چیز ہے جو

انسان کے لسانی جذبات کو جوش میں آتی ہے ای شراب خوردگی کی علت کو اسلام نے جڑ سے کاٹ کر انسانوں کو تباہی جذبات سے آزاد کر دیا ہے ابھی تک دنیا اس حقیقی نور سے بے خبر ہے مگر وہ زمانہ بہت قریب آیا جاتا ہے کہ دین دنیا کی آنکھیں اس نور کے دیکھنے کے لئے کھولی جائیں گی اور جب اسلام کے اصول دنیا کو معلوم ہوں گے تب سمجھ میں آئے گا کہ وہاں کیزگی ان لوگوں کے وہ مہنگان سے بھی بدتر ہے جو اسلام سکھاتا ہے۔

حرام سود کی وجہ سود کی ایک کثیر اوقوع صورت یہ ہے کہ مقرض نے جتنا قرض لیا ہے اس سے زیادہ دیا پھر کو لو اکرے یہ حرام اور باطل ہے کیونکہ تمام مقرضوں کا یہ قاعدہ ہے کہ اس قسم کا قرض اپنی مابست اور پریشانی کی وجہ سے لے تو لیتے ہیں لیکن حسب ہدہ اس کا بظاہر کرنے سے دو چند و سہ چند ہوتا چلا جاتا ہے کہ اس سے خلاصی کبھی ممکن ہی نہیں اور اس میں جھگڑوں اور عام غصوں کا گمان غالب ہے اور جب کہ مال کے کلا جانے کا اس طرح طریقہ ہو جائے گا تو اس کی وجہ سے کھیتیاں اور تمام صنعتیں حروک ہو جائیں گی راستے اس پیشہ کو حرام ٹھہرایا گیا۔ عن ابن مسعود قال لعن رسول اللہ ﷺ کل الربوا وهو كلفه وشاهدته وكاتبه (مسلم وترذی شریف از جمعہ۔ یعنی لعن مسعود رضی اللہ عنہ راوی ہیں کہ رسول خدا ﷺ نے بیان لینے والے اور دینے والے اور سود کا معاہدہ لکھنے والے اور سود کے گواہوں سب پر لعنت فرمائی ہے اور خدا تعالیٰ قرآن کریم میں فرماتا ہے۔ ہا ہا ہا اللہیں اموا اللواظظ وفروا ما بقی من المروان ککم مومنین فان لم تفلحوا فاذنوا بحرب من اللہ ورسولہ ترجمہ۔ اے ایمان والو! اور اللہ سے اور چھوڑ دو جو سودہ گیا ہے اگر تم مومن ہو پھر اگر تم ایسا نہیں کرتے اور سود لینے اور دینے سے باز نہیں آتے ہو تو تم کو طہ اور اسکے رسول کی طرف سے اعلان جنگ ہے اور دینے کی ممانعت اسلئے ہے کہ اگر سود دینے والے ہی نہ ہوں یعنی سود پر قرض کوئی نہ لے تو پھر سود خوار بھی کوئی نہ رہے بلکہ اس قحکار رسم کی بنا بھی ہو جائے پس اس اعتبار خاص سے یہ زیادہ تر گناہ ان لوگوں کا ہے جو

سود کے دینے کے معاہدہ پر قرض لینے اور ہر سود کمانے والے لوگوں سے قرض لینے ہیں جن قوموں کا پیشہ سود خواری کا تھا وہ بلا ٹریڈ میل، مطرود ہو گئیں۔ مثلاً ان کے قوم یہود ہے کہ چہ بھرائی کہیں سلطنت نہیں ہے جس ملک میں جاتے ہیں ایسے اسباب مہیا ہو جاتے ہیں کہ ڈیل ہو کر انکو لھانچتا ہے اسکی جڑ بھی ہے کہ یہ سود خواری قوم ہے جب لوگ سمجھتے ہیں کہ انکے بچے سے چھٹکارا نہیں ہو سکتا تو اپنے بدشاہوں کے پاس پھلیاں کھاتے ہیں اور ہر انہیں علم ہوتا ہے کہ اس ملک سے نکل جاؤ۔

نیز سود خواروں کے اخلاق بہتر سے ہوتے ہیں۔ ایک شخص حکایت کرتے تھے کہ میں نے ایک فقیر کیلئے ایک سود خوار سے سفارش کی تو وہ کہنے لگا کہ پانچ روپے میں دیوڑیاں گا کر میرے پاس رہتے تو سو سو میں سو سو سو ۹۹۹۹ لاکھ ہو جاتا۔ لھکنو میں ایک سلطنت تھی وہ بھی محض سود سے چل رہی تھی۔ پہلے انکے مہلات پر ایسری فونوں کے بدلہ میں گئے پھر وہ جنگ کرنے کے قابل نہ رہے اور آخر وہ وقت آیا کہ یہ سلطنت رہا ہو گئی محض ناچار لوگ کہتے ہیں کہ سود کے غیر کام نہیں چل سکتا حالانکہ بارہ سو سو سو کا بارہ سو سو سو میں نے اسلئے کہا کہ تیرہویں صدی میں مسلمانوں نے سود لینا ہی شروع کر دیا۔ تجربہ ہوتا ہے کہ پھر سود کے سب کام چل سکتے ہیں اور اسلئے سو سو سو سود کی اور بھی ہیں جو فائدہ میں مذکور ہیں انکی تحریم کی علت دار الفاضل ہے یعنی اس کا سمجھنا۔ کل ہے جو فائدہ کی کتابوں میں مذکور ہے۔

حرمت سود پر دلائل قویۃ قرآن شریف کی وہ آیات جن میں سود کی ممانعت کا ذکر ہے: دوسری آیت جس میں سود خواری کی حرمت اس سے بھی زیادہ پر زور الفاظ میں بیان کی گئی ہے یہ ہے۔ یا ایہا الذین امنوا اتقوا اللہ وذر والعا بقی من الربوا ان کنتم مومنین فان لم تفعلوا فأنذونا بحرب من اللہ ورسوله وان تبتم فذکم ونوس اموالکم لا تظلمون ولا تظلمون۔ وان کان ذو عسر فامطروا الی عسرة وان تصد

قوا خیر الکم ان حکم معلوم (قرہ) یعنی اے مسلمانوں! تم ایمان رکھتے ہو تو اللہ تعالیٰ سے ڈرو اور جو سو لوگوں کے ذمہ پائی ہے اسکو چھوڑ دو اور اگر ایسا نہیں کرو گے تو اللہ اور اس کے رسول سے لڑنے کیلئے ہو شاید ہو اور اگر توبہ کرتے ہو تو اپنی اصل رقم تم کو پہنچتی ہے نہ تم کسی کا نقصان کرو اور نہ کوئی تمہارا نقصان کرے اور اگر کوئی تک دست تمہارا مقروض ہو تو فرمائی تک کی سہلت دو۔ اگر سمجھو تو تمہارے حق میں یہ اور زیادہ بہتر ہے کہ اسکو خود ہی معاف کرو۔

کھانا کھانے سے پہلے ہاتھ دھونے کی وجہ: کھانا کھانے سے پہلے ہاتھ دھونا اس لئے مشروع ہے کہ اس فعل سے انسان جملہ امراض متعدیہ سے محفوظ مصون رہتا ہے کیونکہ اجرام موزیہ جو کہ مورثہ امراض متعدیہ ہوتے ہیں وہ ہاتھ دھونے سے اتر جاتے ہیں اور انسان کے اندر نہیں داخل ہوتے۔

کتاب البجایات والحدود

بسم اللہ الرحمن الرحیم لعمدہ ونصلی علی رسولہ الکریم

اصابت: واضح ہے کہ اللہ تعالیٰ نے عھن بنی آدم کی خاطر آراہم و اس مذہب کی سر کرنے کیلئے حکم ایسے قوانین اور احکام مقرر فرمائے جو نبی آدم کے پیش نظر رہنے سے وہ ایک دوسرے پر ظلم و تعدی نہ کر سکیں اور جو کوئی ان قوانین کا تقض کرے اسکی سزا لوی کے مشابہہ سے باقیوں کیلئے عبرت ہو۔

زانی عھن وغیر عھن کی سزا میں فرق کی وجہ: عھن کی حد سنگساری اور غیر عھن کی حد درے لگانا ہے اور عھن وہ ہے جس میں یہ صفات ہوں۔ آزر و مسلمان ماقبل بالغ۔ اس نے کسی عورت سے صحیح نکاح کیا ہو اس سے بھتر بھی ہو اور عورت بھی انہیں صفات سے موصوف ہو اور رجم میں ان شرطوں کا ہونا اسلئے مقرر ہوا کہ رجم سزائے شدید ہے اور ان صفات میں لغت مزید ہے چنانچہ ظاہر ہے تو جہاں تک ظن یعنی ذی نعتوں کے ساتھ جرم کار تکاب محتوم شدیدہ کا

موجب ہونا چاہیے دوسرے یہ کہ امور خاص طور پر زنا سے مانع ہیں چنانچہ عقل کا مانع ہونا کون نہیں جانتا اسی طرح بولغ سے عقل کا کمال ہوتا ہے اسلام خود فواحش سے زاجر ہے یعنی بے حیائی کے کاموں سے روکنے والا ہے آزاد آدمی نکاح صحیح پر اپنے اختیار سے نکلا رہے اور دہلی سے سری ہو جاتی ہے اور حلال سے سر ہو جانا حرام سے خود مانع ہے جو مرثوب ہو اور یہ صفات رنہت کی مکمل ہیں۔ کیونکہ مجنون کی صحبت سے خطر ظاہر ہے اور باطل کو چونکہ خود رنہت کم ہوتی ہے اسلئے اسکی طرف مرد کو بھی کم رنہت ہوتی ہے اور منکوحہ کی صحبت میں اسلئے بے رنہتی ہوتی ہے کہ اندر بیٹہ اولاد کے نظام ہونے کا ہوتا ہے اور کافر عورت سے بھی زوجہ اشکاف دین کے رنہت کم ہوتی ہے۔ اور جانین میں ان صفات کے ہونے سے نعمت اور رنہت منکوحہ کامل ہے اور دونوں مانع قوی ہیں لہذا نکاح جرم سے پھر بھی لہذا نکاح کرنا موجب ہو گا عقوبت شدیدہ کا اور دور جہم ہے اور ان صفات کے نہ ہونے سے مانع اتنے قوی نہیں گو مانع اس وقت ہیں۔ کیا اسلام اور عقل و بولغ مانع نہیں ہیں مانع کے ہونے کے سبب تو عقوبت مشروع ہوئی اور ان کے اس درجہ قوی نہ ہونے سے وہ عقوبت خلیف ہوئی اور دوسرے لگتا ہے۔ (من اہدایہ مخلصہ)

چوری کی سزا میں چور کے ہاتھ کاٹنے اور زنا کی سزا میں شر منگوانہ کاٹنے کی وجہ : چور کی سزا میں چور کا ہاتھ کاٹنا اور زنا کی سزا میں زانی کی شر منگوانہ کاٹنا خدا تعالیٰ کی نہایت حکمت و مصلحت پر مبنی ہے۔ کیونکہ خدا تعالیٰ کی حکمت اور انکی رحمت اور انکی مخلوق کی مصلحت میں جائز نہیں ہے۔ کہ ہر مجرم کا وہی عضو کاٹا جائے جس سے اس نے گناہ کیا ہو کیونکہ اس طرح ہر ایک پر نظر کی آنکھ لٹکی جاتی اور بری بات کے سننے والے کے کان کاٹے جاتے اور ہر بد نہانی کرنے والے کی زبان کاٹنی جاتی اور ہر ایک ظلم سے طمانچہ مارنے والے کے ہاتھ کاٹے جاتے۔ اور اس طرح کی سزا میں جو زیادتی و تہور ذکر نہا چاہو پو شیہ رہ نہیں ہے کیونکہ اس میں عدم لحاظ مراتب ہوتا ہے اور خدا تعالیٰ کے اسمائے حسنی اور انکی صفات عالیہ اور انکی افعال حمیدہ اس امر کو نہیں

چاہئے کیونکہ حد مقرر کرنا عقل اس ہی کیلئے نہیں ہے ورنہ اگر اس امر کا ارادہ ہوتا تو مجرم کو قتل کرنا ہی لازم ہو جا حد مقرر کرنے سے مقصود خود مرتکب کو گناہ پر توجہ دہا کرنا اور سزا کا تصور آگندہ کیلئے عہدہ دلانا منظور ہے اور دوسرے آدمی ایک کی سزا سے عبرت لے کر میں اور نیز یہ بھی کہ مجرم مذاب و سزا سے 'خالص قلب' کی طرف رجوع کرے اور یہ بھی کہ حد کی سزا سے انسان کو مذاب آخرت یاد آجائے اور مصالح یعنی قوم کو سمجھ کر بھی آگندہ بدیوں سے باز آجائے اور یہ مصالح قطع اعضاء کو مقتضی نہیں مطلق سزا کو مقتضی ہیں پھر یہ بات کہ چور کیلئے قطع یہ کیوں تجویز کیا سو اس میں ایک اور بات ہے۔ وہ یہ کہ چور چوری پر شیعہ طور پر کرتا ہے۔ جیسا کہ سرقہ کا قطع اس پر دلالت کرتا ہے چنانچہ کہتے ہیں کہ ہاں عقلیں ہاں عقلیں کی طرف چوری سے دیکھتا ہے جب کہ وہ اسکو خلیہ نظر سے دیکھتا ہو ورنہ چاہتا ہو کہ اسکو کوئی معلوم کرے۔ سو چوری کا کرنا اور پر شیعہ اور خائف دبتا ہے کہ مہلک اس سے کوئی واقف ہو تو مامور ہو جائے اور جب وہ کوئی چیز اٹھاتا ہے تو اپنے آپکو چھڑانے کیلئے بھاگتا اختیار کرتا ہے اور اس بھاگنے میں قوت ہاتھوں اور پاؤں سے ہوتی ہے کیونکہ دونوں ہاتھ انسان کیلئے ایسے ہیں کہ جیسا پر نہ دیکھنے لانے کے دوباند ہوتے ہیں۔ اور پاؤں کا دخل بھاگنے میں ظاہر ہے پس چور کا ہاتھ کاٹنے کی سزا اس کی ہاتھوں سے قوت کو گتہ کرنے اور دوبند چوری کرے تو اسکو باآسانی پکڑنے کیلئے ہے۔ جب پہلی دفعہ چوری کرے تو اسکا ایک ہاتھ کاٹا جائے تاکہ اگلی دو دفعہ میں کمزوری واقع ہو جائے پھر دوسری دفعہ چوری کرے تو اسکا ایک پاؤں قطع کیا جائے تاکہ اسے بھاگنے میں زیادہ کمزوری ہو ہلکے اور کوئی بھی اسکو بھاگنے نہ دے۔ اور اس کے بعد تیسری چور تھی بد میں چوری کرنا اس کا ہار ہے اس طرح پھر قطع سزا میں تجویز نہیں کیا گیا۔ اگر ہار دہیا کرے مجبوس کیا جائے تاکہ لوگ اسکے دکھ سے ڈر سہائیں۔

اور ذہنی کی شرمگاہ سزا میں اس لئے نہیں قطع کی جاتی کہ ذہنی تو سدا سے بدن کے ساتھ رہتا ہے اور تمام بدن سے لذت لیتا اور قصائے شہوت کرتا ہے اور زنا کا فعل اکثر زانیہ کی مرضی و رضایہ بھی ہوتا ہے وہ اس امر سے نہیں ڈرتا جس سے چور ڈرتا ہے یعنی طلب کرنے اور محفوظ رہنے سے۔ اس

لئے زنا میں غیر محسن کے سادے جان کو دوسے لگانے اور محسن کو تمام بدن کے سنگسار کرنے کی سزا دی جاتی ہے۔ باقی یہ کہ اس میں سنگساری تب ہی نہ ہوتی صرف دونوں پر کفارہ کی جاتی تو اس کی وجہ یہ ہے کہ چونکہ زنا سے نسب جلاتے ہیں اور نسب جلانے سے تعارف و شناخت اور دین کے زندہ کرنے کی ادوار باطل ہو جاتی ہے اور اس میں بلاکت کثرت و چاہی نسل انسانی لازم آتی ہے پس زنا اکثر امور میں عقل سے 'مشابہت' رکھتا ہے لہذا 'انگلی' بعض صورتوں میں قصاص سے توہین و معیہ کی گئی تاکہ ہیبا عقل کرنے سے اور لوگ دک جائیں اور دنیا میں امن و اصلاح ہو کیونکہ اصلاح سے انسان عبادت الہی کی طرف رغبت کرتے ہیں اور عبادت الہی نعمائے الخروی حاصل کرنے کا ذریعہ ہیں۔

بیز زانی کی شرمگاہ کو قطع کرنے میں اسکو آئندہ نسل سے محروم نصیر لازم آتا ہے اور یہ امر خدا تعالیٰ کی حکمت و مصلحت کے برخلاف ہے کیونکہ خدا تعالیٰ چاہتا ہے کہ لوگوں کی اولاد و ذریت انکی عبادت سے اثرات پیدا ہو اور قطع شرمگاہ سے قطع نسل لازم آتا ہے لہذا یہ امر مشروع نہ ہوا۔

بیز زانی کی شرمگاہ قطع کرنے میں بے سزائی بھی ہے اور یہ اوپر بیان ہو چکا ہے کہ سادے بدن سے جرم زنا کا مرتکب ہوتا ہے تو پھر سادے جسم کو پھوڑ کر ایک عضو کو سزا دینا خلاف عدم قہا لہذا اصل اس امر کا تحقیقی ہوا کہ زانی کے سادے جسم کو سزا دینا ہے۔

شراب خوری زنا و اوطت سر قد میں کفارہ مقرر نہ ہونے کی وجہ: حضرت ابن قیم رحمۃ اللہ علیہ لکھتے ہیں۔ ما کان من المعاصی محرم الحس کالظلم والظواہش فان الشارح لم یشرع له کفارۃ لہذا الا کفارۃ فی الزنا و شرب الخمر و قذف المحصنات و السرقة و لیس ذلک تخفیفا من مرتکبها بل لان الکفارۃ لا یعمل فی هذا الجنس من المعاصی وانما عملها فیما کان مباحا فی الاصل و محرم لعرض

کھالو طلی ہی الصیام والاحرام ترمیم۔ جو گناہ حرام کی جنس سے ہوں مثلاً عظم نور امور فاحشہ اسکے لئے شارع نے کوئی کفارہ مقررہ مشروع نہیں فرمایا اس لئے زنا شراب خوری محبت عورتوں کو حسرت لگانے اور چوری کرنے میں کوئی کفارہ مشروع نہیں ہوا اور ان گناہوں کا کفارہ مشروع نہ ہونا ان کے ارتکاب کرنے والوں سے تخفیف نہیں ہے بلکہ ان میں کفارہ ایسکے مشروع نہیں ہوا کہ اس جنس کے گناہوں میں کفارہ اثر نہیں کرتا کفارہ کا اثر وہاں ہے کہ جو امر دراصل مباح ہو اور کسی عارضی سبب سے حرام ہو چکے مثلاً بار مضان و حالت احرام میں جماع کرنے سے کفارہ لازم آتا ہے مگر اور عنوان صدر کے گناہوں میں کفارہ اور بڑے سخت گناہ ہیں اس لئے ان میں سزا ہی ہے کفارہ نہیں۔

حالت حیض میں عورت سے جماع کرنے میں کفارہ اور عورت کی ویر میں جماع کرنے سے عدم کفارہ کا راز: عن ابن مسعود عن رسول اللہ صلی اللہ علیہ والہ وسلم فی الذی ہائی امراف وہی حائض قال ینصدق بدینار او نصف دینار۔ ترمیم اس شخص کے حق میں جو اپنی عورت سے حالت حیض میں جماع کرے نبی علیہ الصلوٰۃ والسلام نے فرمایا کہ ایک دینار یا آدھا دینار اور کفارہ صدقہ دید سے (لکن مباح) ہم عمل ازیں اور لکھ چکے ہیں کہ وہ امور جو دراصل مباح ہیں مگر کسی عارضی امر سے حرام ہو چکے ان کا ارتکاب ایسی عارضی حالت میں موجب کفارہ ہے سو حالت حیض میں جماع کا حرام ہونا عارضی حیض سے ہے لہذا اس میں کفارہ مقرر ہوا اور یہ امر سوائقی ہی سے ہے اور وہ میں عورت سے جماع کرنے میں کفارہ اس لئے مقرر نہیں ہوا کہ یہ امر کبھی مباح نہیں ہوا۔ پس کفارات میں شارع کا یہی طریق ہے کہ جو امور مباح ہیں اور کسی عارضی امر سے حرام ہو جائیں ان میں کفارات نہیں اور جو امور حرام ہیں ان میں صدقہ و تعزیرات ہیں اور یہ امر نہایت مطابق حکمت و مصلحت کے ہے۔

قتل میں دو گواہ اور زنا میں چار گواہ مطلوب ہونے کی وجہ قتل میں دو گواہ پر

اکٹھا کرنا اور زنا میں چار گولہ مانگنا شایع حکمت و مصلحت لہی پر مبنی ہے کیونکہ شارع کا مقصود تھا اس وحد زنا میں احتیاط کرنا ہے سو قتل میں تو وہ احتیاط یہ ہوتی کہ اگر قتل میں چار گولہ مطلوب ہوتے تو خونریزیاں بکثرت ہوتیں اور لوگ قتل میں زیادہ لیر ہوتے اور اکثر مقتولوں کے کاہل تھا اس سے بچ کر زیادہ خونریزی کا باعث ہوتے اور زنا میں وہ احتیاط یہ ہوتی کہ زنا میں چار گولہ مطلوب ہونے میں اس امر کی زیادہ پروا چاہنی ہے پس زنا کے متعلق ایسے چار گولہ مطلوب ہونے جو فضل زنا و چشم دیدہ و اللہ زنا ایسے طور سے بیان کریں جس میں احتمال و گمان کا شائبہ نہ ہو ایسا ہی اقرار زنا میں چار گولہ سے کم اقرار پر اکٹھا نہیں کیا گیا کیونکہ اکٹھا بھی اس امر کی پروا چاہنی میں مبالغہ ہے جس کا اکتفا کرنا خدا تعالیٰ کو سخت ناہند ہے چنانچہ اس امر فصیح و فہم کی مومنوں میں اشاعت کرنے والے کے لئے خدا تعالیٰ زیادہ آخرت میں عذاب الیم کا ہونا قرآن مجید میں بیان فرماتا ہے

شراب کا ایک قطرہ پینے سے وجوب حد اور کئی سیر بول پینے و گندگی کھانے سے عدم وجوب کی وجہ: (۱) یہ امر شریعت اسلامیہ کی خوبیوں سے اور مطابق عقل سلیمہ اور موافق مصالح عامہ کے ہے کیونکہ خدا تعالیٰ نے انسان کی طبیعت میں بول پینے و گندگی کھانے سے جنسی و طبعی نفرت و کراہت رکھی ہے اور یہ طبعی نفرت ہی انسان کو ایسے امور پر اقدام کرنے سے روکنے میں کافی و دوائی ہے لہذا اس میں حد کی ضرورت نہ ہوتی اور شراب پینے کے لئے طبیعتوں کے زیادہ تر خواہشمند ہونے سے ان کے لئے سخت سزا مقرر کرنا مناسب ہوتا تاکہ کم اور کثرت ہر مقدار کے شراب پینے سے لوگ رک جائیں یعنی حاجہ ہے کہ تھوڑی سی شراب پینے سے بھی اگرچہ وہ نشہ آور نہ ہو حد مقرر ہوئی کیونکہ تھوڑا سا شراب چاہے اس کی طرف دای ہے۔

(۲) شراب پینے سے جو نفاذ و ضرر لازم و متحدی ہوتے ہیں وہ بول پینے و گندگی کھانے کی بہ نسبت کئی چند زیادہ ہے لیکن بول پینے و گندگی کھانے کی مصرت اسی شخص تک محدود رہتی ہے جو پینا یا کھاتا ہے اور وہ بھی اتنی شدید نہیں جس قدر شراب میں ہاچہ ذوال عقل شدید ہے۔

حکمت حدود و کفارات : حدود و کفارات سے اس لئے بھی مقرر ہوئے کہ گناہوں پر جہود و
 باغ لوگوں کو ہوتی رہے جیسا کہ حق تعالیٰ فرماتا ہے۔ لیلوی وہاں امورہ ترجمہ یعنی تاکہ اپنے
 کے کا حرم چکے اگر حدود مقرر نہ ہوتے تو سرکش لوگ شراروں سے باز نہ آتے اور سرکشی میں
 بدستے۔ کفارات بھی اسی امر کیلئے مقرر کئے گئے ہیں اور جو مصلحتاً حدود کے لوہے بیان ہو چکے ہیں۔
 وجہ قصاص : قصاص قتل و جگہ و فساد کو باز رکھنے کیلئے قرار دیا گیا ہے خدا تعالیٰ فرماتا ہے۔
 ولکم فی القصاص حیوة یا اولی الالیاب۔ ترجمہ۔ یعنی اسے چھکنو و قصاص میں تمہارے
 لئے زندگی ہے۔

حرمت قتل کی وجہ : اگر باہمی لڑائیاں لوگوں میں رہیں تو تباہیاں اور شہر خراب اور دیہات ہو
 جائیں اور تمام امور معاش میں عقل پڑ جائے اور تمدنی زندگی میں خطرناک جاہلیاں اور پادیاں ظاہر
 ہوں اس واسطے قتل حرام ہوگا پس قتل اگر تجویز ہوگا تو کسی حد سے قصاص وغیرہ کی مصلحت کی وجہ
 سے تجویز ہوگا اور قتل کے علاوہ کبھی دوسرے اسباب بھی پلاک کیلئے اختیار کئے جاتے ہیں وہ بھی
 مثل قتل ہی کے حرام ہیں۔ مثلاً کبھی لوگوں میں کینہ کا جوش پیدا ہوتا ہے اور قصاص کا ان کو اندیشہ
 و فکر ہوتا ہے اس لئے کھانے میں ذہر ملا دیتے ہیں یا جلاو سے قتل کر ڈالتے ہیں یہ بھی قتل کی طرح
 ہے پس اس سے بھی بدتر ہے قتل تو رہتا ہوتا ہے اس سے نجات بھی ممکن ہے لیکن اس سے تو جتنا
 مشکل ہے سو ایسے امور بھی فراموشی کے سبب اور پیک میں غلطی انداز ہونے کی وجہ سے حرام
 مقرر کئے ہیں۔

حرمت سرقت کی وجہ : معاش کے طریقے خدا تعالیٰ نے اپنے بندوں کیلئے یہ قرار دیے ہیں
 کہ مہاج زمین سے کوئی چیز حاصل کریں اس میں موٹی چرائیں کھیتی باڑی زراعت تہذیب سے
 معاش پیدا کریں اور اطمینان معاش کے امانت سے شہروں و دیہات میں تدبیر کا انتظام کریں

اس وجہ سے لازم ہو گا کہ چوری اور غضب سے بچنا کریں کیونکہ یہ ایسے امور ہیں کہ ان سے تمہارا عقل آتا ہے اور یہ امن عام میں اختلال کی صورت ہے اس لئے یہ امور خدا تعالیٰ کو پسند نہیں۔

حرمت زنا کی وجہ: (۱) فاسق و فاجر کھلا ٹھکانا جائے تو صاف ظاہر ہو گا کہ وہ تہذیب و تمدن کے تو معتقد ہیں لیکن ان پر قصافی خواہشیں غالب ہو جاتی ہیں جو ان سے باخبر نہیں کرتی ہیں وہ خود خوب جانتے ہیں کہ ہم کتنا بگڑے ہوئے لوگوں کی رہ گئے ہیں ان سے لڑنا کرنا ہے اور اگر کوئی انکی بڑی یا بہن سے ایسی حرکت کرے تو قصہ سے کاپٹے لگیں وہ خوب جانتے ہیں کہ لوگوں پر ان ہر انہوں کا وہی اثر ہوتا ہے اور ایسے اثروں کا ہونا انتظام توہن کیلئے سخت معسر ہے لیکن باوجود اس جاننے کے خواہشات نفسانیہ انکو اٹھاتا کرتی ہیں اور راز اس وہدائی اثر کا یہ ہے کہ تمہارا میں یہ نسبت مردوں کے زیادہ عقل مردوں کو ہوتا ہے اس واسطے ہاں ہم ان میں یہ خیال پیدا ہو گیا ہے کہ ہر شخص کی ذاتی دوسرے سے پیٹھ و ہوا میں دوسرا شخص کسی قسم کی حرمت نہ کرے اور زنا کی اصل بھی حرمت ہے اسلئے یہ خیال اور یہ اثر ہر شخص کا فطری اور وجدانی ہو گیا ہے جس ایک سبب تو حرمت زنا کا یہ امر فطری ہے اور دوسرا سبب ایک مصلحت عقلی ہے وہ یہ کہ زنا سے خللا نسب ہو جاتا ہے۔ اور نیز وہ عقل اور طبعا کا ضعیف ہے اس لئے بھی یہ طریق ضابطہ صحیح اور وہ اسے اس لئے لفظ تعالیٰ اسکی منع کرنے میں فرماتا ہے۔ لَا تَقْرُبُوا الزَّوَالَاتِ كَمَا فَا حَشَهُ وَمَا سَبِيلاً تَرْجُو یعنی ان اسباب کے نزدیک بھی نہ جاؤ جن سے زنا تک نوبت پہنچے کیونکہ زنا سے حیاتی کام اور ہر طریق ہے کیا نکالے اگر یہ نہ لگے تو فاسدہ کو رو جو کہ عظیم ہیں لازم آئیں اور اسباب کے نزدیک نہ جانے کا یہ مطلب ہے کہ بیکار صورت کو نہ دیکھو اور نہ اس کے صحت و صحت کی باقی سونہن کو دیکھ کر جان کر تمہارے خیالات زنا کی طرف رجحانیت ہوں اور جن سے زنا تک نوبت پہنچے۔

حرمت لواطت کی وجہ: ایسی عادت سے نسل انسانی کی بربادی ہوتی ہے اس طریق سے گویا

انسان احکام الہی کو چلا کر اس کے مخالف طریقے سے قصائے حاجت کرتا ہے اس وجہ سے ان افعال کا رد اور نہ سوم ہو بلکہ لوگوں کی طبیعتوں میں جم گیا ہے قاسق فاجر ایسے افعال کرتے ہیں لیکن ان کے جو اذکار اقرار نہیں کرتے اگر ان کی طرف ایسے افعال کی نسبت کی جائے تو شرم و حیا سے مر جانا گوارا کرتے ہیں ہاں جو شیخ فطرت سے جدا ہو گئے ہوں تو ان کو پھر کسی کی حیاتی نہیں رہتی اور وہ ایسے افعال عمل میں لاتے ہیں۔

حد تعزیر کا مفہوم میں کیا فرق ہے: حد عربی لفظ ہے اس کے معنی باڈر کہتے اور اندازہ کرنے کے ہیں اور اصطلاح شریعت میں کسی گناہ کی سزا دینے کا جو اندازہ حد لانے اس طرح مقرر و محین کر دیا کہ اس میں کسی کی رائے سے کی و ناشی نہیں ہو سکتی اس کو حد کہتے ہیں مثلاً عصی زانی کو سنگسار کر دیا غیر عصی کو درے لگانا اور چور کے ہاتھ کاٹنا وغیرہ

اور تعزیر وہ ہے کہ جس گناہ کی سزا میں حد تعالیٰ نے کوئی حد مقرر نہیں کی بلکہ اسکی سزا حسب حال زمان و مکان حکام کی رائے پر چھوڑی گئی ہے۔ البتہ اس کیلئے کچھ کلیات نکال دیے ہیں کہ انکی مخالفت جائز نہیں اہلقت میں تعزیر کے معنی لاسب دنیا تعظیم کرنا آتے ہیں سو یہ امر بھی حد تعالیٰ کے احکام کی عزت و تعظیم کیلئے قائم کیا گیا ہے تاکہ لوگوں کے دلوں میں احکام الہی کی عزت و شوکت قائم رہے اور انکی جنگ عزت نہ ہو اور یہ دونوں افضل غیر مباحہ کی سزا میں مقرر ہوئے ہیں۔

اور کفارہ وہ ہے جو ایسے امور میں بطور بدلہ و تہان کے مقرر ہو جو اصل میں مباح ہوں مگر کسی عارضی سبب سے حرام ہو جائیں مثلاً باور رمضان اور حالت احرام میں جماع کرنا کہ اولیٰ کا کفارہ یہ ہے کہ ایک روزے کے بدلے پے درپے دو ماہ روزے رکھے یا ساٹھ مساکین کو روزہ وقت کھانا کھلا دے اور چائی کا کفارہ قربانی دینا ہے احکام المؤمنین میں لکھا ہے۔ واما التعزیر فہی کل معصیة لاسد فیہا ولا کفارۃ فان المعاصی ثلثة انواع نوع فیہ الحد و کفارۃ فیہ و نوع فیہ

الكفارة ولا حد فيه وبوع لاحد فيه ولا كفارة فالاول كما لسرافا والزنا والقتال
والثاني كالوطى في بهار رمضان والوطى في الاحرام والثالث قبله الاحية
والحطوة بها ودحول الحمام عبر ميرو واكل الميتة والدم ولحم الخنزير وبحوذ لثت
فاما النوع الاول فالحد فيه معن عن التعزير واما الثاني فهدل بحب مع الكفارة فيه
تعزير ام الاعطى فولس واما الثالث فهدل التعزير قولاً واحداً ترجمه۔ تعزير ان گناہوں
جن میں مشروع ہے کوئی حد اور کفارہ نہیں ہے کیونکہ گناہ کے تین اقسام ہیں۔ ایک وہ قسم ہے
جن میں حد مقرر ہے اور کفارہ ان میں مقرر نہیں ہے اور ایک وہ قسم ہے جن میں کفارہ ہے اور حد
مقرر نہیں ہے اور ایک وہ قسم ہے جن میں نہ کوئی حد مقرر ہے اور نہ کفارہ ہے پہلی قسم جیسے چوری
زنا تحست لگاتہ ان میں حد مقرر ہے اور دوسری قسم یعنی وہ جن میں صرف کفارہ مقرر ہے حد
نہیں جیسے بار رمضان کے دن میں یا حالت احرام میں بخل کرنا اور تیسری قسم یعنی وہ جن میں نہ
کوئی حد ہے اور نہ کفارہ ہے صرف تعزیر ہے جسے انجمنی عورت کا اور لینا اور اسکے ساتھ طہلہ
مکان میں ڈھنسا اور حمام میں بغیر ازلہ کے داخل ہونا اور مردار کو شت خاک کھانا وغیرہ سو پہلی نوع
میں حدی تعزیر کی جگہ کافی ہے اور دوسری میں آہ کفارہ کے ساتھ تعزیر عمل واجب ہے یا نہیں اس
میں دو قول ہیں۔ اور تیسری میں نفس تعزیر ہے بلا اختلاف۔

وجہ حرمت وعدہ شکنی : حد شکنی اس لئے حرام ہے کہ جس انسان کے ساتھ وعدہ کیا جاتا
ہے وعدہ شکنی سے اسکو ضرور تکلیف پہنچتی ہے اس کو وعدہ شکن پر اعتبار و انتقاد سارہ ہوتا ہے جب وعدہ
کنندہ یہ وعدہ سنت کسی کو ضرور تکلیف پہنچانے کی فرض سے نا حق وعدہ توڑتا ہے تو ظہیراً اللہ اس
سے اس پر لعنت الہی رہتی اور ملائکہ رحمت کی توجہ اس سے رہ گشتہ ہو جاتی ہے اور مال و حزن کی
سود میں اس کے داعی ہو جاتی ہیں یہی وجہ ہے کہ خدا تعالیٰ نے اولو بالعدون کا امر فرمایا ہے
تاکہ انسان نفس وعدہ کی وجہ سے مستحق لعنت نہ ہیں۔

دماغی رکھنے اور موٹپھوں کے کٹوانے کی وجہ : دماغی ایسی چیز ہے کہ اس سے پھولنے والے کی قیڑ ہو سکتی ہے اور مردوں کیلئے ایک قسم کا جمال اور انکی عقل کو پورا کرنے والی ہے اس واسطے اس کا دھنا ضروری ہو اور اسکا ترشوانا جنس کا طریقہ ہے اور انہیں عقل الہی کی تعمیر بھی پائی جاتی ہے دماغی ترشوانے کی وجہ سے دماغی مرد اور خاندانی لوگ دنیوں میں شمار ہو جاتے ہیں تمام انبیاء صلحاء و لامعاہم رکھتے آئے ہیں اگر دماغی منڈوانے میں کوئی مصلحت اور فائدہ ہوتا تو وہ سب سے پہلے منڈواتے کیونکہ ایسے لوگ تمام دنیا کیلئے بھڑی دھملائی کا نمونہ بن کر آیا کرتے ہیں اور موٹپھیں کٹوانے کی وجہ یہ ہے کہ جس کی موٹپھیں دماغی ہوتی ہیں جب وہ کھاتا پیتا چتا ہے اس میں بھر جاتی ہیں اور میل کیل میں کود رہتی ہیں اور یہ بھی جنس کا طریقہ ہے جس کی نسبت آنحضرت ﷺ فرماتے ہیں۔ *حالفوا المشکریں فصوا الشولوب و اعطوا اللھی یعنی شرکوں کی مخالفت کرو موٹپھیں ترشوا اور دلاصلیاں دھنا۔*

عقوق والدین کی حرام ہونے کی وجہ : والدین اور اولاد کی تربیت میں ایسے ایسے شہائد سمیٹتے اور انکی پرورش میں تمہیں اور مشقتیں اپنی جانوں پر برداشت کرتے ہیں جو نتائج بیان نہیں ہیں اسلئے والدین کی خدمت گذاری کو لازمی طریقہ قرار دیا گیا۔

شطنج بازی، کبوتر، شیر بازی، پتنگ بازی، آتش بازی وغیرہ کی حرمت کی وجہ : بعض لوگ تم لگا کرنے والی چیزوں میں مشغول ہو جاتے ہیں یہ ایسی چیزیں ہیں جنکی وجہ سے دنیا و آخرت کی ضروریات سے بے گھری ہو جاتی ہے اور اوقات ان میں ضائع ہو جاتے ہیں جیسے ہلرنگ اور کبوتر بازی اور شیر بازی اور دیگر جانوروں کا لڑانا وغیرہ انسان جب ان چیزوں میں مشغول ہو جاتا ہے تو پھر اس کو کھانے اور پینے اور ضروریات کی خبر نہیں رہتی پھر اسوقت کہ شباب و کھار جاتا ہے اور وہاں سے نہیں تھکا پھر اگر ایسی چیزوں میں مشغول رہے گا ستر عام

ہو جائے تو یہ لوگ تمام شر پر جو چاہیں اور اپنی اور اپنی جان کی انگو خیر نہ رہے۔ اس سے من مشاغل سے منع کر دیا گیا چنانچہ ایک بہ نبی علیہ الصلوٰۃ والسلام نے ایک شخص کو ایک کوتر کے پیچھے ہاتے دیکھا تو فرمایا کہ ایک شیطان ہے جو کہ ایک شیطان کے پیچھے ہاتا ہے اسی طرح آنحضرت ﷺ نے جانوروں کے لڑانے سے منع فرمایا ہے۔ شطرنج کے بارہ میں روایت موجود ہیں۔ اور ایسے ہی منافق جن جن امور میں ہوں وہ سب بھی اس حکم میں شریک ہوں گے۔

مردوں کو سونا اور ریشم پہننے کے ممنوع ہونے کی وجہ (۱) سونا ایک ایسی چیز ہے جس پر بھی لوگ فخر کرتے ہیں اگر ایسے ہی اغراض سے سونے کے زیور پہننے کا عام دستور جاری رہ جاوے کہ مرد اور عورت سب کو عام ہو جاوے تو کثرت سے طلب دنیا کی ضرورت پڑے خلاف چاندی کے کہ اس میں مردوں کو صرف انگشتری کی اجازت دینے سے یہ مسئلہ لازم نہیں آتا۔ اسی یہ بات کہ عورتوں کو کیوں اجازت ہوئی۔ سواصل یہ ہے کہ عورتوں کو آرائشی کی زیور ضرورت ہوتی ہے تاکہ انکے خاندانوں کو قیمت ہو۔ یہی سبب ہے کہ تمام عرب و عجم میں یہ نسبت مردوں کے عورتوں کی آرائشی کا زیادہ تر دستور ہے اس لئے ضروری ہوا کہ عورتوں کو یہ نسبت مردوں کے زیادہ قیمت کی اجازت دی جائے لہذا آنحضرت ﷺ نے مع انکہ اس فرق کے فرمایا ہے احل الذهب والحرير لا بائع اعنى وحرم على ذمورھا۔ یعنی سونا اور ریشم میری امت کی عورتوں کی لئے حلال کیا گیا ہے اور مردوں پر حرام کیا گیا ہے ایک اور حدیث میں ہے کہ ایک شخص کے ہاتھ میں آنحضرت ﷺ نے سونے کی انگوٹھی دیکھ کر فرمایا تم میں سے ہر شخص آگ کا ٹکڑا چاہے وہ اسکا سپہ ہاتھ میں لے اور حریر کے متعلق فرمایا من لبس الحرير في الدنيا لم يلبسہ يوم القيمة یعنی جس نے دنیا میں حریر پہنا تو وہ قیامت کے دن اسکو نہ پہنے گا۔ یہ تو پہننے سے متعلق تقابلی اور طرق استعمال میں مرد اور عورت اور چاندی سونا سب برابر ہیں چنانچہ سونے اور چاندی کے برتن میں ہانی پینا آپ نے فرمایا لا تشربوا علی طیبة الذهب

والفضة ولا تاكلوا مما صحابها فانها لهم من الدنيا ولكم من الآخرة۔ ترجمہ۔ سونے اور چاندی کے برتن میں مت پیو اور نہ انکی رکابی میں کھاؤ کیونکہ ان کیلئے تو وہ دنیا میں ہیں اور تمہارے لئے آخرت میں ہیں۔ (۲) مردوں کے لباس پر تشبیہ سے مردوں کو تشبیہ کرنا ضروری تھا لہذا سونا اور چاندی اور نیشہ پہننا عاموں اور توں کیلئے مخصوص ہو گا اور ہاں تشبیہ اکثری سیم مردوں کیلئے حرام ہو اسی امر کی طرف حضرت ابن قیم ارشاد فرماتے ہیں۔

بحريم الذهب والحرير علي طر حال حرم الله ذريعه التشبيه بالنساء المتلعون فاعلہ یعنی سونا اور نیشہ کو مردوں پر حرام کر دینے سے معلوم ہوا تشبیہ کرنے کے ذریعہ کو حرام فرما دیا ہے جس کے قائل پر لعنت وارد ہوئی ہے۔ (۳) خدا کو نہایت بیش پسندی ناپسند ہے حریم کا لباس پہننا اور سونے چاندی کے برتنوں کا استعمال کرنا ایسے امور ہیں کہ انسان کو اسٹل انسان میں گرا دیتے ہیں یعنی نہایت ہستی میں اور فکروں کو تاریک خیالات کی طرف دیتے ہیں غرض یہ تو معلوم ہوا کہ نہایت درجہ کی بیش پسندی خراب امر ہے لیکن وہ کوئی بے قاعدہ تشبیہ امر نہیں جسکے مواقع ظاہری مٹانوں سے ایسے تشبیہ ہوں جنکی وجہ سے ہر ایک لوثی اور اعلیٰ سے باز رہے کہ سب سے بڑا بچہ لوگوں کی حالت مختلف ہونے سے بیش پسندی کی بھی حالت یکساں نہیں ہوا کرتی بعض لوگوں کے سامان بیش اوروں کی نظر میں اعلیٰ بیش ہوتی ہے اور بعض لوگوں کی نظر میں جو شے عید ہوتی ہے اوروں کی نظر میں ہی عید نہیں ہوا کرتی ہے اور وجہ سے شرع نے جب بیش پسندی کی خوبیاں بیان کیں تو ان اشیاء کا خصوصیت کے ساتھ ذکر کر دیا کہ جن سے لوگ صرف بیش و آرام ہی کیلئے متعلق ہوا کرتے ہیں اور ان سے لوگوں میں بیش حاصل کرنے کی عادت شائع ہو گئی ہے اور شرع نے انکی اور وہی لوگوں کو ان اشیاء پر متعلق پایا تھا اس واسطے شرع نے کہاں بیش و آرام کے مواقع ان خاص امور کو قرار دے کر ان کو حرام کر دیا اور طریق قدرت جن اشیاء سے قطعاً اٹھایا جاتا ہے یا اطراف ممالک میں انکی عادت ہے ان پر شرع نے بیکہ التفات نہیں کیا اس لئے حریم اور سونے چاندی کے برتن عرم اواب سے شدت کئے گئے اور ان پر عید بھی ارشاد فرمائی گئی

پتا چپ آنحضرت ﷺ فرماتے ہیں۔ لا تاكلوا من امة الذهب والفضة ولا تشربوا من صحتها فانها في الدنيا ولكم في الاخرة اور فرمایا اللہی بشراب ہی امة ذهب والفضة اما بحر جو فی بطنہ مار سہمہ ترجمہ نہ کھاؤ سونے اور چاندی کے برتنوں میں اور نہ بیچ چاندی سونے کے برتنوں میں کیونکہ یہ برتن مخالفین اسلام کیلئے دنیا میں ہیں اور تم کو آخرت میں ملیں گے جو تمہیں سونے چاندی کے برتن میں پینا ہے انکے جیتے میں دوزخ کی آگ بخش کر آئی اور یہ حرکت کمانے پینے ہی کے ساتھ مخصوص نہیں ہے بلکہ ساری قوم نفع کو شامل ہے لہذا شامل نہیں ہے کہ چاندی اور سونے کے برتن کے ساتھ غسل یا وضو کرے یا ان سے تھلے یا سر نہ دہنی مانے۔ اور اسی تقریر سے غیر اہل اسلام کہا تھا کہ اس دغیر و عہد کرنے کی ممانعت معلوم ہو گئی ہوگی کہ مقصود تنبیہ ہے انکے اوضاع و اطوار سے انکی برت صاف نظیر مردوں کا زبان لباس پینے سے طہا احتضن ہونا ہے۔

تصویر رکھنے کی ممانعت کی وجہ : اس میں صحت پر حق کارروا نہ مطلق ہوتا ہے (جنت اللہ) یعنی جب انکی عام عبادت ہو جائے گی اور عام میں ہر طرح کے لوگ ہوتے اور دیکھنے والے مختلف قسم کے ہوتے ہیں تو ضرور کسی نہ کسی وقت اس میں مفیدہ پیدا ہوگا جیسا پہلے ہو چکا کہ خاص مانے والوں نے ہر مشق نہیں کی محض یاد رکھوں کی یادگار بنائی تھی پھر آخر انکی نوبت پہنچی اس وقت دیکھ لیجئے کہ باوجود علوم قدیرہ و علوم جدیدہ کی روشنی پھیلنے کے ایک دہے معززیر مٹر صاحب کی نکارت سنی ہے کہ صحیح ائمہ کو اپنے حق کی تصویر کو نہایت لوبہ و تعظیم سے حلیم چاہا کر پھر کوئی اور کام کرتے ہیں جب انگریزی زبانوں کے ایک اعلیٰ طبقہ میں ایسے افراد موجود ہیں تو بالکل عام آدمی پر کیا حکم رہا جس لئے تصویر رکھنے کو عقابھی ضرور حرام کہنا ہے۔

کتاب الفرائض

جائیداد میں منتقداروں کے حصے مقرر ہونے کی وجہ : بسم اللہ الرحمن الرحیم

الحمد لله الذي فرض علينا من العورات لكل احد من الرجال والنساء ليصون الناس من الاعتداء على حقوق الاثرياء والصلوة والسلام على رسوله حاتم الامياء وعلى الذين اتبعوا الهدى وطريق الاستواء

امام بعد واضح ہو کہ (ا) اسلام نے میت کی جائداد میں حقداروں کے حصے اسلئے مسمیٰ مقرر کئے ہیں کہ حقداروں کے حقوق محفوظ رہیں اگر میت کے اقرباء اور اولیوں میں سے کُل جائداد کا ایک ہی شخص کو اختیار کئی دیا جائے اور دوسرے اقرباء کے حصے اس میں مقرر نہ ہوں تو اکثر ایسے افراد ہوتے ہیں کہ جائداد کو اپنی ذاتی اغراض میں اڑا دیتے ہیں اور اپنے فوائد و اغراض و عیش کے سوائے دوسرے حقداروں کی ضرورت و راحت اور انکے حقوق کی پروا نہیں کرتے اور جائداد میں ظالمانہ تصرف شروع کر دیتے ہیں حتیٰ کہ سارے ترکہ کو اپنے عیش و عشرت میں خورد و نہر کر دیتے ہیں۔ لہذا اللہ تعالیٰ نے ان ظالمانہ کاروائیوں کو روکنے اور انکے اند کو کیلئے جائداد میں ہر ایک حقدار کے حصے مسمیٰ فرمایا ہے تاکہ ایک ہی شخص دوسرے حقداروں کے حصوں کو اپنی اغراض میں خورد و برد نہ کر سکے بلکہ حصوں کے مطابق جائداد کو سب اہل حقوق لیکر اپنے اپنے حصے سے آزادی کے ساتھ منبج ہوں اور اسی کے قریب قریب اس رسم میں خرابی ہے جو بعض جگہ جاری ہے کہ والد اکبر یا لکھنوی دوسرے اہل حق گزارہ طوائف چنانچہ ان لوگوں کے ظالمانہ تصرفات کا مدت دن مشاہدہ ہو رہا ہے جس کا کہ غائب ایسا نہیں جو سہولت سے ہر گزارہ خواہ اس کا استعمال کر سکے۔ چنانچہ میراث کے حصے مقرر ہونے کی لگائی اللہ تعالیٰ نے قرآن کریم میں یہ بیان فرمائی ہے کہ اقربائے میت کے حقوق ضائع ہو کر خورد و برد نہ ہو جائیں۔ للرجال نصيب مما ترك الوالدان والاولادون مماثل منه اوكتو نصيباً مفروضاً الی قوله تعالیٰ اللین یا کلون اموال الیتامی ظلماً انما یا کلون فی بطونهم فارا و یصلون سعیرا یو حکم اللہ فی اولادکم للذکر مثل حظ الانثیین. الا ین (بہ سورہ نساء) اس جگہ بتایا گا کہ خصوصیت سے اس لئے فرمایا کہ مساوات میت کے چھوٹے چھوٹے بچے رہ جاتے ہیں اور

لائے تھے یا میت کے دوسرے اقربا سارے مال کو خورد و کردہ دیتے ہیں لہذا اٹھیا کرنے میں سخت
 و عید وارد ہوئی پھر شخص کی تفصیل کیلئے مذکورہ بالا آیات کے آگے جو صبحم اللہ کی عبادت
 شروع ہوتی ہے جس کا مفصل ذکر آگے توے کا تو مصلحت اہل ہاندلو کی تھی۔ باقی خود ہاندلو کی
 بھی اس میں مصلحت ہے اور یہ کہ کسی بلائی سے بلائی نہاندلو میں بھی متعدد حصہ داروں کے حقوق
 اور جسے معین و شخص ہونا سکے لئے حفاظت و استحکام کا موجب ہے کیونکہ ہر ایک حصہ دار اپنے
 معین حقوق کی وجہ سے اس مشترکہ ہاندلو کی بھڑی و بھڑی کے سنی کرے گا پس جس ہاندلو
 کے حقوق زیادہ ہوں گے اسی قدر اس کیلئے استحکام کا سبب ہے یہ تو مشترکہ رہنے کی صورت میں
 ہے اور اگر تقسیم کر لیں تو ہر شخص کے اصل مالک اور دوسروں کے گذر خوار ہونے کے ایسا احتیاج
 ممکن نہ تھا کیونکہ ایسے امر میں کون سنی کرتا ہے جس سے زیادہ شیخ دوسرے لوگ ہوں یا یہ توئی
 غصہ خواص ہیں ہر شخص کے مالک مستقل ہونے کے باقی اگر کوئی اپنا حصہ بالکل لانے لگے اور اس
 مصلحت سے کوئی شخص قانون میراث کو خلاف سخت سمجھے اس لانے کا ذمہ دار اس شخص کی بدتہ
 ہری و قلت قدر ہے اس کا اگر اعتبار کیا جائے تو میراث ہی کی کیا تخصیص ہے جس شخص کو اپنے
 کمسور اموال میں بھی ایسا کرنے دیکھو اس اس سے جین کر اس سے بلاے بھائی کے حوالہ کر دو پھر
 یہ فطری امر ہے کہ اپنی چیز اپنے ہاتھ سے لڑا اس قدر اذکار نہیں جتنا اپنی چیز دوسرے کے ہاتھ
 میں ہوئے وقت ان دوسروں کا دست نگر ہونا اور باقی اگر کسی کا ذوق ہی باطل ہو گیا ہو تو اس سے
 خطاب ہی نہیں۔

حقیقت تقسیم میراث: تامل اصول میراث یہ ہے کہ اس کا دار جین امور ہے ایک تو
 میت کے بعد اس کی جگہ اسکی عزت اور مرتبہ میں اور جو باتیں اس قسم کی ہیں ان میں اس کا قائم
 مقام ہونا کیونکہ انسان کی اس بات میں ہلائی کو شش ہوتی ہے کہ اسکے بعد اسکا کوئی قائم مقام ہے۔
 دوسرا خدمت اور غمخواری اور محبت اور شفقت اور جو باتیں اس قسم کی ہیں تیسرا قرابت جو ان

وہ نون باتوں پر بھی مشتمل ہے اور تینوں میں زیادہ تر اس تیسری بات کا اعتبار مقدم ہے اور پھر وہ طور پر ان سب کا عمل وہ شخص ہے جو نسب کے نمود میں داخل ہے جیسے باپ اور نانا اور نانا اور پوتا یہ لوگ سب سے زیادہ وراثت کے مستحق ہیں مگر وضع طبعی کے اعتبار سے کہ جس پر قرآن مجید میں عالم کی ماں ہے وہ باپ کا قائم مقام ہوتا ہے اور اسی کی لوگوں کو تہنہ اور امید ہو کرتی ہے اسی کی خاطر نکاح کرتے ہیں اور ولاد کے پیدا ہونے کی کو مشغول کرتے ہیں اور باپ کا بیٹے کی جگہ قائم ہونا وضع طبعی کا متعلق نہیں ہے اور نہ لوگوں کو کسی کی آرزو اور امید ہوتی ہے حتیٰ کہ اگر کسی شخص کو اس کے مال میں اختیار دیا جائے تو یقیناً اسکے دل پر ولاد کی فضولری باپ کی فضولری پر غالب ہوگی اس واسطے تمام لوگوں کا دستور ہے کہ ولاد کو باپ پر مقدم سمجھتے ہیں اور پھر قائم مقام ہونے کا احتمال بھائی میں ہے اور پھر جو اس کے مانند صغیر قوت ہندو کے ہیں اور اس کی قوم اور اس کے نسب کے ہیں باقی رہی خدمت اور شفقت تو اس کا اول ملنے قرابت قریبہ والی عورت ہے اور سب سے زیادہ ماں اور بیٹی اس امر میں اس کی مستحق ہیں اور جو ان کے مانند نسب کے نمود میں داخل ہیں اور بیٹی بھی فی الجملہ باپ کے قائم مقام ہوتی ہے اور اس کے بعد بھتیجہ کہ یہ بھی قائم مقامی سے خالی نہیں پھر جس عورت سے علاقہ نزدیکی کا ہے وہ خادم ہوتی ہے پھر ماں شریک بھائی بہن ان عورتوں میں ماہ میراث صرف خدمت و شفقت یا مع القرابت ہے باقی عورتوں کے اندر حمایت اور قائم مقامی کے معنی نہیں پائے جاتے کیونکہ عورتیں ملاقات غیر قوم میں نکاح کر لیتی ہیں اور اسی قوم میں داخل ہو جاتی ہیں الہذا بیٹی اور بہن میں کسی قدر یہ معنی پائے جاتے ہیں لیکن عورتوں کے اندر محبت اور شفقت کے معنی کامل طور پر پائے جاتے ہیں اور اس امر کا ملکہ اول بہت قریب کی قرابت جیسے ماں اور بیٹی پھر بہن اور اول یعنی میت کی قائم مقامی کامل طور پر تو باپ اور بیٹے میں پایا جاتا ہے اور ان کے بعد بھائی پھر بہن اور ام جانی یعنی شفقت سب سے زیادہ باپ میں اور بیٹے میں پایا جاتا ہے پھر بیٹی اور بھائی بھائی میں پایا جاتا ہے اور اس کا یہ ملکہ قرابت قریبہ ہے اس وجہ سے بچپن کے لئے جیسے وہی پھر بھی کیلئے حکم نہیں ہے کیونکہ پھر بھی مصیبت کے

وقت کام نہیں آسکتی بس طرح طرح کا کام آتا ہے اور چو جائی قرابت میں بھی ایشیہ کے رولہ نہیں ہے اور تملہ اصول میراث یہ ہے کہ جب مرد و عورت ایک ہی درجہ کے ہوں تو مرد کو ترجیح دینی جاتی ہے کیونکہ عزت کی حمایت کے لئے مرد ہی مخصوص ہیں اور انکی یہ وجہ بھی ہے کہ مردوں پر ننگے بہت ہوتے ہیں پس زیادہ تر یہی مستحق ہیں کہ انکو وہ مال دیا جائے مخالف عورتوں کے کہ یہ اپنے خاندانوں یا باپوں یا بھائیوں کے ذمہ ہوتی ہیں اور تملہ ان اصول کے یہ ہے کہ جب وارثوں کی ایک جماعت پائی جائے تو اگر وہ سب وارث ایک مرتبہ کے ہیں تو اس ترکہ کی تقسیم ان سب پر ضروری ہے کیونکہ ایک کو دوسرے پر تقسیم نہیں ہے اور اگر ان کے درجہ مختلف ہیں تو اسکی دو صورتیں ہیں یا تو وہ سب ایک ہم اور ایک جہت میں داخل ہیں اور اس میں قاعدہ یہ ہے کہ قریب اولیٰ کا صاحب ہو کر اولیٰ کو میراث سے محروم کر دیتا ہے دوسری صورت یہ کہ ان کے ساتھ جہات مختلف ہوں کہ اقرب صاحب ہو گا اولیٰ کا صاحب ہو کر اولیٰ کو محروم تو نہیں کر تا لیکن حصہ اس کا کم کر دیتا ہے تملہ ان اصول کے یہ ہے کہ سهام کہ جن سے حصوں کی تقسیم ہوتی ہے ان کے اہراء ایسے ظاہر ہو چکا نہیں کہ محاسب غیر محاسب سب اول اولیٰ میں ان کی تمیز کر سکیں اور آنحضرت ﷺ نے اپنے اس قول مبارک میں اس بات کی طرف اشارہ فرمایا ہے اما لعلہ امیہ لا یکتب ولا یحسب یعنی ہماری لوگ ہیں نہ لکھتے ہیں اور نہ حساب کرتے ہیں کیونکہ جس چیز سے تمام منکھین کو خطاب کیا جائے اس میں یہ بات ضروری ہے کہ ایک تو اس کے حساب کرنے میں تعلق و غور کی حاجت نہ ہو اور دوسرے ظاہر نظر میں کسی دشمنی کی ترتیب اس میں معلوم ہو جائے لہذا شروع سے معاملات میں سے دو قسم کے سهام اختیار کئے ہیں ایک تو محشین اور ثلث اور سدس اور دوسرے سے نصف ربع ثمن کیونکہ ان دونوں کا خروج اصلی و اولیٰ کے بعد یعنی دو اور تین اور ان دونوں میں تین مرتبہ پائے جاتے ہیں کہ ان تینوں میں اوپر کو جاتے ہوئے نسبت ضعف کی ہے یعنی دو گنے کی نسبت اور نیچے اترتے ہوئے نسبت نصف کی ہے اور اس میں کسی دشمنی کا بالکل ظاہر و محسوس ہونا بالکل اقرب ہے۔

مرد کا حصہ عورت سے دو چند ہونے کی وجہ : خدا تعالیٰ فرماتا ہے۔ یوصیکم اللہ فی اولادکم للذکر مثل حظ الانثی فان کنی منساہ فوالی انتن علیہنثلثا متول وان کانت واحداقلھا النصف ترجہ۔ یعنی سنا ہے اللہ تعالیٰ تمہاری اولاد میں (میراث بانٹنا) اگر مرد کے لئے دو اور عورتوں کے حصہ ہے پھر اگر عورتیں دو سے زیادہ ہوں ہیں ان کو میت کے ترکہ کا دو ٹکٹہ ہے اور اگر ایک ہے تو اس کے لئے نصف ہے مرد کا حصہ عورت سے دو چند ہونے کی وجہ یہ ہے کہ خدا تعالیٰ فرماتا ہے۔ الرجال و فراعون علی النساء بما فصل اللہ بعضہم علی بعض وبما انفقوا ترجہ۔ یعنی مرد حاکم ہیں عورتوں پر اس لئے کہ خدا تعالیٰ نے بعض کو بعض پر اور کی و فضیلت دی ہے اور اس وجہ سے کہ انہوں نے مال خرچہ کئے ہیں اپنی عورتوں کی جائز میں۔

ایکلی بیٹی کو نصف حصہ میراث ملنے کی وجہ : ایکلی بیٹی کیلئے نصف ترکہ مقرر ہوا کیونکہ جب ایکلا بیٹی ہو تو اس کو سارا مال ملتا ہے جس سمٹھانے تعریف میں جو کہ للذکر مثل حظ الانثین سے منسوم ہے ایکلی بیٹی نصف میراث کی مستحق ہے

دو اور دو سے زیادہ بیٹیوں کو دو ٹکٹہ ملنے کی وجہ : دو کو دو ٹکٹہ اس لئے ملنے ہیں کہ اگر بیٹی کے ساتھ بیٹا ہو تو اس بیٹی کو ٹکٹہ ملتا اس لئے دوسری لڑکی کے ہونے سے ہر حق کوئی ٹکٹہ سے کم نہ ہونا چاہیے یہی تشریح دوسری بیٹی کے حق میں جاری ہے اور چونکہ بہت کا عظیم سے زیادہ ہے ہی نہیں اگر زیادہ بھی ہو گی اسی عظیم میں سب شریک ہوں گی۔

میت کی اولاد ہو تو اسکے والدین میں سے ہر ایک کیلئے چھٹا حصہ مقرر ہونے کی وجہ : خدا تعالیٰ فرماتا ہے۔ ولا یورث لکل واحد منہما الدس مما ترک ان کان له ولد فان لم یکن له ولد ورنہ ابواہ فالامہ الثلث فان کان له اخوة فالامہ السمس

ترجمہ۔ یعنی میت کے والدین میں سے ہر ایک کا حصہ چھٹا ہے اس مال میں سے جو میت چھوڑ کر مرے نظر علیہ اس میت کے اولاد ہو چکی اگر میت کے اولاد نہیں ہے اور والدین وارث ہوں تو میت کی والدہ کا تیسرا حصہ میراث میں ہے اور اگر میت کے بھائی موجود نہیں تو میت کی والدہ کو چھٹا حصہ ملتا ہے۔

یہ بات تم کو واضح ہو چکی ہے کہ یہ نسبت والدین کے اولاد میراث کی زیادہ تر مستحق ہے اور انکی صورت یہ ہے کہ ان کو وہ ٹکٹ اور والدین کو ٹکٹ دیا جائے تاکہ زیادہ استحقاق ظاہر ہو اور باپ کا حصہ ماں کے حصہ سے زیادہ ملنے نہیں مقرر کیا گیا کہ بچے کے قائم مقام ہونے اور انکی معاونت کے اعتبار سے باپ کی فضیلت عصب ہونے کی ایک مرتبہ اعتبار کی جا چکی ہے تو اسی فضیلت کا دوبارہ حق تعالیٰ میں اعتبار نہ ہو گا۔

میت کے اولاد نہ ہو تو سارا ترکہ والدین کو ملنے کی وجہ : جس صورت میں میت کے اولاد نہ ہو تو والدین سے زیادہ کوئی حقدار نہیں ہے لہذا سب ترکہ والدین کو ملے گا اور باپ کو ماں پر فضیلت ہوگی اور اس مسئلہ میں جس فضیلت کا اعتبار کیا گیا ہے وہ فضیلت تعالیٰ نہیں فضیلت عصب ہے۔

میت کے ماں اور بھائی بہن ہوں تو ماں کو چھٹا حصہ ملنے کی وجہ : اگر ماں اور بھائی بہن وارث ہوں اور بھائی بہن ایک سے زیادہ ہوں تو ماں کو چھٹا حصہ دیا جائے گا کیونکہ یہ اخوت والے عصب نہیں ہیں اور دور چاکر عصبیات موجود ہیں تو چونکہ عصبیت اور شفقت و محبت باہم برابر نہیں اسلئے نصف انکو اور نصف انکو ملے گا اور پھر وہ نصف جو شفقت کا حصہ ہے ماں پر اور انکی اولاد پر تقسیم ہو گا اور چونکہ ماں کا پہلے حصے سے کبھی کم نہیں ہو جا اسلئے انکو تو ماں کو دین کے اور باقی ان اولاد کو جو کہ میت کے بھائی ہیں دیا جائے گا اور اگر یہ اخوت والے عصبیات ہیں تو ان میں قرابت قریبہ و حمایت دونوں جمع ہو گئیں اور بر ملاوقات انکے ساتھ اور وارث بھی ہوتے ہیں

مثلاً بیٹی اور بیٹے اور خاندان بھرا کر ماں کو پختے حصے سے زائد دے میں تو اوروں پر بھی ہوگی۔

ترک زوجہ سے بشرط عدم اولاد خاندان کو نصف اور بشرط اولاد چوتھائی حصہ ملنے کی وجہ اور ترک خاندان سے زوجہ کو چوتھائی حصہ اور بشرط اولاد انھوں

حصہ ملنے کی وجہ : خدا تعالیٰ فرماتا ہے وَلَكُمْ نِصْفُ مَالِكِ اِذَا جَاءَكُمْ اَنْ لَمْ يَكُنْ لِهِنَّ وَاَوْلَادٌ كَانَ لِهِنَّ الرِّبْعُ مِمَّا تَرَكْنَ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُوْصِيْنَ بِهَا اُولٰٓئِہِیْنَ . ترکہ یعنی تم کو تمہاری بیویوں کے ترکہ میں سے چوتھائی حصہ ملے گا اگر وہ وصیت نہ کرے اور نہ ان کے اولاد ہو۔

اور خدا تعالیٰ فرماتا ہے۔ وَلِهِنَّ الرِّبْعُ مِمَّا تَرَكْنَ اِنْ لَمْ يَكُنْ لَكُمْ وَاَوْلَادٌ كَانَ لَكُمْ وَلِذٰلِكَ نَاوَلٰہِہٖنَّ مِمَّا تَرَكْنَ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ تُوْصَوْنَ بِہَا اُولٰٓئِہِیْنَ . ترکہ یعنی تمہاری بیویوں کو تمہارے ترکہ میں سے اگر تمہاری اولاد نہ ہو تو چوتھو حصہ ہے مگر اگر تمہاری اولاد ہے تو بیویوں کو تمہارے ترکہ میں سے انھوں حصہ ملے گا اور اس وصیت کے جو تم نے کی ہے اور بعد اوائے قرض کے خاندان کو ترکہ اس لئے ملتا ہے کہ اسکو بیوی اور اسکے ماں پر قبضہ ہوتا ہے جس یا کھل مال کو اسکے قبضہ سے نکالنے میں اسکی ضرورت مانی ہے اور بیوی خاندان سے اپنی خدمت اور بھاری اور صحبت کا سہارا سے لیتی ہے لہذا خاندان کو وہی پر فضیلت ہے۔

چنانچہ خدا تعالیٰ فرماتا ہے۔ الرَّحَالَ لِرٰٓءَاۤءِ عٰلِی السَّہَابِ یعنی مرد عورتوں پر حاکم ہیں۔ مگر اس بات کا عمل اعتبار کیا گیا ہے کہ اسکے باہم قورات میں سے اولاد پر بھی تھی نہ ہو اس لئے یہ حصص مناسب و مستطاب مقرر کیے گئے۔

(تنبیہ) ہمیں سخت تعجب آتا ہے اور لوگوں پر کہ جب کوئی عورت نکاح کر لیتی ہے تو جس حصہ کی اور مالک ہوتی ہے اور یہ اس سے لے لیتے ہیں حالانکہ اردو نے قانون شرع اسلام اور اختیار رکھتی ہے کہ نکاح کرنے کے وقت وہ اپنا حصہ بچا لے یا اپنے پاس رکھے اور قائل رہے۔ ایسے ہی سخت عقلی کے مرتکب ہوتے ہیں وہ لوگ جو دنیا اور مطلقہ سے نکاح کر دیا اور وہ اس کے لئے لیتے ہیں

خداوند خدا تعالیٰ فرماتا ہے۔ وَلَا يَحِلُّ لَكُمْ أَنْ تَأْخُذُوا بِمَا بَيْنَهُمْ مِنْ امْرَأَتَيْكُمْ وَلَوْ سَلَخْتُمْ لَهُنَّ الْخُيُوفَ فِئْتَانِمْ سَلَخْتُمْ لَهُنَّ الْخُيُوفَ فِئْتَانِمْ سَلَخْتُمْ لَهُنَّ الْخُيُوفَ فِئْتَانِمْ
 نہیں ہے کہ مطلقاً وہ عورتوں سے دیا ہو ایک ماں یا بیٹی کو اناطریط طبع میں عورت ہونے کی وجہ سے نکاح کرنا جائز ہے۔

اولاد میت کے وارثوں کو کم و بیش جیسے ملنے کی وجہ سے : اللہ تعالیٰ ایک جگہ فرماتا ہے۔ وَإِنْ كَانَ رَجُلٌ يُورَثُ كَلَالَةً أَوْ امْرَأَةٌ وَلَهُ أَخٌ أَوْ أُخْتٌ فَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِمَّهَا النِّسْبُ وَإِنْ كَانَكَ مِنَ الْكُلْتِ فَتِلْكَ لَهَا شَرَكًا فِي الْوَرْثَةِ إِنْ كُنْتُمْ عَلَيْهِمْ وَارِثِينَ كَمَا تَرِثُونَ عَنْ أَبَوَيْكُمْ عَنْ أَبِي وَالْأُمِّ بِمَا تَرِثُونَ
 ہوتا ہے نکاح ہو یعنی اس کے لوالہ اور بہن نہ ہو اور اس کے بھائی یا بہن ہو تو ان دونوں میں سے ہر ایک کو پانچواں حصہ ملے گا۔ اور اگر وہ زہدہ ہوں تو سب ٹکٹ میں شریک ہوں گے اور دوسری جگہ فرماتا ہے۔ بِمَسْهُونِكَ فَلِلَّهِ يَعْصِيكُمْ فِي الْأَلْيَانَةِ الْوَارِثِينَ أُولَئِكَ يَرْثُونَ وَاللَّهُ يَخْتَارُ
 نصف ما تروك وهريرثها ان لم يكن لها ولد فان كانت اثنتين فلهما الثلثان مما ترك
 وانا كانوا احوية رجلا والنساء فللكم مثل حظ الاثنتين ترجمہ یعنی تمہ سے مسئلہ دریافت کرتے ہیں اولاد میت کے ترکہ کے متعلق ترکہ دے کہ خدا تعالیٰ تم کو اولاد میت کے ترکہ کے متعلق یہ فتویٰ دیتا ہے کہ اگر کوئی مرد مر جائے جس کے لوالہ نہ ہو اور اس کی بہن ہو تو اس کی ایک بہن کو اس مرد کے ترکہ کا نصف ملے گا اور وہ مرد اس بہن کا وارث ہوگا اگر اس کے لوالہ نہیں ہے پھر اگر وہ بہنیں ہوں تو ان دونوں کو اس کے ترکہ میں سے دو ٹکٹ ملے گا اور اگر میت کے بھائی اور بہن مخلوط ہوں تو مرد کو عورت سے دو چند ملے گا۔ یہ آیت بالا جمع باپ شریک کی لوالہ میں ہے اور کمال کے تقسیم حصص کی حقیقت بھائی اور بہن کے حصوں کی فلاسفی میں ظاہر کی گئی ہے اس سرفی میں میت کے لوالہ اور بھائی بہن ہوں گے۔

میت کے چچا اور اسکی لوالہ کے مستحق وراثت ہونے اور اسکی خالہ کے میراث سے محروم ہونے کی وجہ : میت کے چچا کی لوالہ کا مستحق وراثت ہے اور اسکی

نہ ہو کہ انکی ماں کی طرف سے ہوتی ہے اسکے میراث میت سے محروم رہنے کی وجہ یہ ہے کہ چچا کی ماہر میں میت کی چشتی و طرفہ داری و حمایت اور وہ موازات زندگی میں زیادہ ہوتی ہے اور والدہ نے رشتہ دارانہیوں کی طرف سے وہ تاپہ دہاں کی طرف منسوب کئے جاتے ہیں لہذا وہ محسورہ عقلماء کے اقرباء کے ہوتے ہیں۔

عذاب و ثواب قبر پر اعتراضات اور حضرت ابن قیم جوزی رحمۃ اللہ علیہ کے ان پر فلسفیانہ جوابات : حضرت ابن قیم رحمۃ اللہ علیہ کے سامنے مندرجہ ذیل اعتراضات عذاب و ثواب قبر کے متعلق پیش کئے گئے کہ ظہور ذہنی فکر میں عذاب و ثواب قبر کو ہم کیا جواب دیں جو کہتے ہیں کہ قبر و دنیا کے گڑھوں میں سے گڑھایا بھشت کے بانوں میں سے باغ کی طرح ہو سکتی اور کیونکر کشادہ اور نیک ہو سکتی ہے جب کہ میت نہ اس میں داخل ہو سکتی ہے اور نہ کھڑی ہو سکتی ہے وہ کہتے ہیں کہ ہم قبر کھودتے ہیں تو اس میں نہ تو اٹھ سکتے اور نہ کھڑے ہو سکتے ہیں جو مردوں کو لوہے کے گڑھوں اور جہازوں سے بندتے ہوں اور نہ وہاں سانپ اور اژدہا سے دیکھتے ہیں اور نہ بھڑکتی ہوئی آگ ہم محسوس کرتے ہیں اور اگر میت کے احوال میں سے کوئی حال قبر کھود کر معلوم کریں تو ہم میت کو اسی ایک حالت غیر حسیہ پر پاتے ہیں اور ہم اس کی آنکھ پر سیاہ اور اس کے سینے پر دانی کا دانہ بھی تو ہم اس کو اسی ایک ہی حالت غیر حسیہ پر پاتے ہیں اور مردہ پر تا حد نظر قبر کس طرح طرخ یا نیک ہو سکتی ہے حالانکہ ہم اس کو اسی ایک حالت پر دیکھتے ہیں اور قبر کی کشادگی کو اسی حد پر پاتے ہیں جس حد پر کہ ہم نے اس کو کھودا تھا نہ زیادہ ہوتی ہے اور نہ نیک ہوتی ہے اور قبر کی گد میں عقلی کس طرح ممکن ہو سکتی ہے اور فرشتے اور وہ صورت جو مردہ کے ساتھ اٹس بکڑیں یا اس کو اور دوسری قبر میں کس طرح جا سکتے ہیں وہ کہتے ہیں کہ ہر ایک حالت جو عقل و مشاہدہ کے برخلاف ہو وہ کہنے والے کی عقلی خطا ہے وہ کہتے ہیں مصلوب یعنی جس کو پھانسی دیا گئی ہو کہ ہم نہ اس سے کھڑی ہو تو چوں کہ دیکھتے ہیں وہاں یہ نہ اس سے منکرہ تکمیر کا سوال ہو تا ہے

نہ وہ حرکت کرتا ہے اور نہ اس کے جسم پر آگ دیکھی جوتی دیکھی جاتی ہے اور جس کو اور ندوں نے پھاڑ کھایا ہو اور یہ ندوں نے نوح لیا ہو اور اس کے ٹکڑے در ندوں کے کناروں اور یہ ندوں کے کناروں اور ساڑوں سے ششموں اور ہواؤں کے طبقوں میں الگ الگ ہو جاتے ہیں اس کے ٹکڑوں سے باوجود الگ الگ ہونے کے سطرچ سوال و جواب ہونا ممکن ہو سکتا ہے اور جس کے جسم کے ٹکڑوں کی یہ حالت ہو جائے اس کے ساتھ دو فرشتوں منکر و نکیر کا سوال و جواب کرنا کس طرح ممکن ہے اور ایسے شخص پر قبر بکشت کے ہانوں میں سے ہانغ یا دوزخ کے کڑھوں میں سے گراھا کس طرح ہونا ممکن ہے اور کس طرح قبر اس پر لگ ہو سکتی ہے یہاں تک کہ مردہ کی پہلیاں قبر کے ملنے سے باہر کی باہر ہو جاویں۔

جو بات واضح ہو کہ ہم پہلے چند باتیں بطور تمہید ذکر کرتے ہیں جن سے جو بات واضح ہو جائیں گے۔ (۱) کہ سوالوں نے ایسی کوئی بات نہیں بتائی جسکو عقلیں محال ہائیں اور وہ اس کے محال ہونے پر قطعی حکم دے سکیں بلکہ سوالوں کی خبر و جانہ قسم کی ہوتی ہے ایک تو وہ جس پر عقل اور فطرت کو ایسی دے اور سے اور جن کو عقلیں در پافت نہ کر سکیں مثلاً شیب کی باتیں جو سوالوں نے عالم برزخ اور قیامت اور عذاب کے متعلق منسلک بیان فرمائی ہیں اور باقی ہر محال میں سوالوں کی خبر میں از روئے عقل سلیم محال نہیں ہوتی ہیں (اور اگر وہ ظاہر اعتقاد محال ہو اور نہ سچ سے نسبت بھی اس کی حالت ہو تو اس موقع پر دوسرے قواعد شرعیہ کے موافق تامل واجب ہو گی لہذا قبر کے واقعات دوسری قسم کی خبر ہے جو عقلاً تو محال نہیں مگر وہاں تک عقل کی طور سائی نہیں وہ وہی کی حالت ہے۔ باقی جو شخص اس کو محال سمجھتا ہے وہ عقل اس شخص کا ایک ذیلی اور وہ ہم ہے جس کو صاف ذیلی اپنے ضم لفظ میں معقول صریح جانتا ہے وہ سر الامر ہے کہ نبی علیہ الصلوٰۃ والسلام کی مراد کہ وہ ان افرات و تفریط کے سمجھا جاوے اور آپ کے حکام سے وہ مراد نہ لگتی جاوے جس کا آپ نے ارادہ نہ کیا ہو جو شخص آپ کی مراد و مطلوب سے اور طرف باہر

گیا اور اسکے قرارداد فی معنی سمجھنے میں غفلت اور کوتاہی کی توجہ سید محمد رفیع سے لے کر تک پہنچے۔ اور خدا اور رسول کے کام میں لوگوں کی لگاؤ نہیں واقع ہونے سے اسلام میں بہت سے گمراہ اور بدعتی فرقے پیدا ہو گئے ہیں مثلاً قدریہ۔ طہ۔ خارجی۔ معتزلہ۔ مہمبہ۔ رافضی وغیرہ یہاں تک کہ دین اسلام اکثر ایسے ہی لوگوں نے چھوڑ دیا ہے انکی طرف سے کئی کئی اصلاحات کرتے ہیں مگر تیسرا یہ ہے کہ اللہ تعالیٰ نے تمہیں مقام انسان کیلئے نصبرائے ہیں اور دنیا و آخرت کا ہر ایک مقام کیلئے علیحدہ علیحدہ حکم احکام نصبرائے ہیں جو اسی سے مخصوص ہیں اور انسان کو بدن اور نفس سے مرکب کیا اور دنیا کے احکام بدنوں پر نصبرائے اور روحوں کو بدنوں کے تابع کیا ہیں لہذا شرعی احکام ان حرکات سے مرکب کئے ہیں جو زبان اور انداموں سے ظاہر ہوتے ہیں اگرچہ دل میں کچھ اور باتیں چھپی ہوئی ہوں اور خدا تعالیٰ نے ہر ذرغ کے احکام روحوں پر نصبرائے اور جسموں کو روح کے تابع کیا ہیں جیسا کہ روح دنیا کے احکام میں بدنوں کے تابع اور بدن کے دروازے سے دروازے تک ہوتی اور لذت پاتی ہے قبر یعنی عالم ہر ذرغ میں جسم و کھوں اور تنکھوں میں روح کے تابع ہو جاتا ہے اس جگہ بدن ظاہر ہے اور روح پوشیدہ اور عالم قبر یعنی عالم ہر ذرغ میں روح ظاہر و غالب ہو گی اور بدن پوشیدہ اور ہر ذرغ کے احکام روحوں پر جاری ہوں گے یعنی دکھ اور سکھ روح کو جب پہنچے گا تو وہ صاحب روح کے جسم پر بھی سرایت کرے گا جیسا کہ دنیا میں جسم کو کچھ راحت بد کہ پہنچے تو اس کا اثر روح پر بھی سرایت کرے گا جیسا کہ دنیا میں جسم کو کچھ راحت بد کہ پہنچے تو اس کا اثر روح پر بھی سرایت کر جاتا ہے (بہت یہ ہے تو ان واقعات کا ظاہری قسم پر ظاہر ہونا ضروری نہیں وہ سب احکام روحانی ہیں جسم روح مدد کرتی ہے اور وہ سب واقعات بھی اس عالم کے ہیں پس انکا محسوس ہونا بھی ضروری نہیں بلکہ عاقل ممکن بھی نہیں۔ اللہ اعلم) خدا تعالیٰ نے اپنی رحمت و لطف و احسان سے اس امر کا نمونہ دنیا میں بھی سونے والے کے حال سے ظاہر فرمایا ہے کہ کچھ خواب میں جو دکھ اور سکھ سونے والے کو پہنچتا ہے وہ اسکی روح پر جاری ہو جاتا ہے اور اسکی بدن اسکے تابع ہو جاتا ہے ایسا ہی عالم ہر ذرغ میں بھی جسم اور روح کیلئے دکھ اور سکھ سونے والے کو پہنچتا

ہے وہ انہی روحوں پر جاری ہوتا ہے اور اس میں بدن انکے تابع ہوتا ہے۔ ایسا ہی علمہ ذرخ میں بھی جسم اور روح کے لئے کھو اور کھو کا طریق جاری ہے یہاں اس خواب سے بھی بڑھ کر جو کاتھو تک اس عالمہ ذرخ میں روح کا حج اور ظہر ہو تا ہے کامل ہوتا ہے اور روح کا عقل بدن سے تو عام حالات میں ظہر نہیں نکلن ایک غیر معلوم ہے یہ بھی رہتا ہے بدن سے اس کا بالکل اطلاق اور جدائی نہیں ہوتی۔

اب رہا قبر احقام یعنی آخرت سوہب مشراہد ہو گا اور لوگ قبروں سے انہیں کے تو اس دن سکھو اور دکھ کا حکم روح اور جسم دونوں پر غالب اور ظہر وہاں ہو گا تو کور جلالہ مضامین سے تم پر ہو رہا ہو گا کہ جو کہ رسول اللہ ﷺ نے غلاب قبر اور اس سکھو اور دکھ خواب اور غلاب اور غلی اور کشادگی ذرخ کے کڑھا ہونے یا کھٹے کے باغ ہونے کی خبر دی ہے وہ مطابق عقل کے ہے ملاحظہ نہیں اور اس میں کھو شک وہب نہیں کہ اگر کسی پر یہ بات سمجھنی مشکل ہو تو اسکی تلافی اور اسکی قلت علم کہا عث ہے۔

انسان کو قبر میں غلاب و خواب ملنے کا نمونہ : اس سے عجب تر یہ بات ہے کہ وہ شخص ایک ہی سفر پر سوتے ہیں اور ایک کی روح کو سکھو و عین ہو گا اور جب جاگے تو سکھو و رست و آرام کے آثار اس کے بدن پر ظاہر ہوں گے اور ایک کی روح کو دکھ ہو جاوے اور جب جاگتا ہے تو دکھ غلاب کا اثر اس کے بدن پر ہوتا ہے اور ایک کو دوسرے کے حال سے اطلاع نہیں ہوتی اسی پر عالم ذرخ کے غلاب و خواب کا استدلال کر لو اور دلائل سے یہی ثابت ہے کہ اسلامی اصول کی رو سے جسم کی رفاقت روح کے ساتھ دائمی ہے گو موت کے بعد یہ فانی جسم روح سے الگ ہو جاتا ہے مگر عالمہ ذرخ میں مستعد طور پر روح کو کسی قدر اپنے افعال کا جزو سمجھنے کیلئے ایک جسم ملتا ہے اور وہ جسم اس جسم کی قسم سے نہیں ہو تا بلکہ ایک نور سے تاریکی سے جھنسی اللہ کی صورت ہو وہ جسم پیدا ہوتا ہے کہ اس عالمہ ذرخ میں انسان کی عقلی حالتیں جسم کا کام دیتی ہیں اور اگرچہ یہ راز ایک

واقعی رہا ہے مگر غیر معقول نہیں ہے انسان کامل اسی زندگی میں ایک نورانی وجود اس کثیف جسم کے علاوہ پاتا ہے۔ اور عالم مکاشفات میں اسکی بہت مثالیں ہیں۔ جیسا کہ عالم مکاشفات میں سے کچھ حصہ ماوراء اس قسم کے جسم کو جو کہ افعال سے چرہ ہوتا ہے۔ قلوب اور استعدا کی نگاہ سے نہیں دیکھتے فرض یہ جسم جو کہ افعال کی کیفیت سے بنتا ہے یہی عالمہ رزق میں ایک ہد کی جزا کا نکل ہو جاتا ہے اسباب مکاشفہ کو عین ہد لری میں مردوں سے ملاقات ہوتی ہے اور وہ طاقتوں اور گمراہی اختیار کرنے والوں کا جسم ایسا بنا دیکھتے ہیں کہ گویا وہ صومخیں سے نکلیا گیا ہے۔ ہر حال مرنے کے بعد ہر ایک کو ایک نیا جسم ملتا ہے۔ نوراہ نورانی ہو نوراہ ظلمانی لیکن خدا تعالیٰ نے ان امور آخرت کو بواسطہ عقل منکھوں کے دریافت کرنے اور پانے سے اور پردہ اور پوشیدہ رکھا ہے اور یہ بات خدا تعالیٰ کی کمال حکمت پر دل ہے تاکہ مومن ایمان بالغیب کے ساتھ منکرین سے متمیز ہو جائیں۔ چنانچہ فرشتے قریب الموت قومی پر اترتے ہیں اور اسکے نزدیک آکر بیٹھے ہیں اور وہ انکو دیکھتا ہے اور اس کے پاس اس کیلئے کفن اور خوشبو کا شرف میں سے پیدا ہوا رزق میں سے ہوتی ہے اور وہ حاضرین کے سلام اور دعا پر آمین کہتے ہیں اور ملاقات بعض قریب الموت قومی کہتے ہیں خوش آمد یہ اور مردہ کے سوا حاضرین میں سے ان فرشتوں کو کوئی بھی نہیں دیکھتا اس ہادہ میں آثار وہے عباد ہیں۔

امور آخرت میں سے یہ پہلا امر ہے جو اس دنیا میں انار سے درمیان واقع ہوتا ہے اور بوجہ اس دنیا میں واقع ہونے کے ہم کو دکھائی نہیں دیتا حالانکہ یہ سب کچھ اسی دنیا میں واقع ہوتا ہے پھر فرشتے روح کی طرف اپنا ہاتھ بلاسا کر اس کو قبض کر لیتا ہے اور روح سے بات چیت کرتا ہے اور حاضرین نے فرشتے کو دیکھتے ہیں نہ اس کی آواز سنتے ہیں پھر روح نکلتی ہے اور اسکا نور آلب کی شعاعوں کی طرح اور اسکی خوشبو کو سونگے سکتے ہیں پھر وہ فرشتہ روح کو نیکر مانگ کے گروہ میں جاتا ہے اور حاضرین یعنی قومی اسکو دیکھ نہیں سکتے پھر روح ایک خاص اعتبار سے واپس آکر مردہ کا نساہ اور اسکا اظہار دیکھتی ہے اور کہتی ہے مجھے آگے لے چلو یا کہتی ہے مجھے کہاں لئے جاتے ہو مجھے کہاں لئے جاتے ہو اور لوگ اسکی کوئی بات بھی نہیں سن سکتے۔

لحد قبر میں مردہ کے پاس فرشتہ پہنچنے کی صورت : اسی طرح جب مردہ کو لحد میں رکھا جاتا ہے پورا اسی قبر پر مٹی ڈالی جاتی ہے تو مٹی فرشتوں کو مردہ کے پاس جانے سے روک نہیں سکتی بلکہ اگر پتھر بھی کندہ کیا جائے اور مردہ کو اس میں رکھ کر اس پتھر کو قلعی سے سرسبز کر دیا جائے تو بھی مردہ کے پاس فرشتے کے پہنچنے سے یہ امر مانع نہیں ہو سکتا کیونکہ اجسام نکلیں اور ان لیلیدہ کے فرق کو مانع نہیں ہوتے بلکہ ان اجسام نکلیں سے تو جن بھی گذر جاتے ہیں اللہ تعالیٰ نے پتھر اور مٹی کو فرشتوں کیلئے ایسا کیا ہے جیسا فضا پر مٹی کیلئے جس میں وہ لاتے پھرتے ہیں اور قبر کی فراخی و کشادگی بالذات روح کیلئے ہوتی ہے اور بدن کو روح کی صحیحہ میں کشادگی ملتی ہے ورنہ جسم تو بہت تنگ و تنگ جگہ میں رہتا ہے۔

ضابطہ القبر : اسی طرح قبر کا مردہ کو گھٹنا حق ہے مردہ کی پہلیاں اور عمر کی عمر چلی جاتی ہیں اس میں کچھ شک نہیں اور اس بات کو عقل رو نہیں کر سکتی جاتی یہ بات کہ اگر کوئی شخص مردہ کی قبر کو دیکھ کر اسکو دیکھے تو اس کی پہلیاں اسی پہلی حالت پر ہوتی ہیں اور عمر کی عمر کھائی نہیں دیتیں سو خدا قادر مطلق کو کوئی بات اس سے روک نہیں سکتی کہ یہ سب روحانی طور پر واقع ہو گا اور ان حواس سے محسوس نہ ہو۔

قبر کے فرشتوں اور آتش جہنم و نعمائے جنت کے نہ دکھائی دینے کی وجہ : قبر کی آگ اور سبزی نہ دنیا کی آگ کی قسم میں سے ہوتی ہے اور نہ دنیا کی بجلی و سبزہ کے مانند ہے جو دیکھ کر معلوم ہو سکے وہ آخرت کی آگ اور آخرت کی سبزی کی قسم سے ہوتی ہے اور اس کو اول دنیا معلوم نہیں کر سکتے اور یہ امر اسلئے ہوا کہ پر وہ بالغیب کی حکمت قائم ہے جس میں ہر جگہ ہے کہ وہ شخصوں کو ایک دوسرے کے پہلو پہ پہلو دفن کیا جاتا ہے اور انکے اعمال متفرق ہوں تو ان میں سے ایک دوزخ کے گڑھے میں جاتا ہو اور انکے پاس والے پر حرارت دوزخ کی نہ پہنچ سکتی ہو بلکہ یہ دوسرا جنت کے باغ میں ہو گا اور انکے پاس والے دوزخی کو انکے آرام و عین سے حصہ نہ پہنچ

سکتا ہو یہ بات بھی ظلماتِ کفری میں سے ہے اور خدا تعالیٰ ان باتوں پر قادر ہے کیونکہ وہ سب اس نے انسان کو ایسے بنا رکھے ہیں کہ وہ اپنی ایک چیز میدان میں رکھ کر اس پر عقل کو اطلاع دیتا اور دکھاتا ہے عقل کی اس سے چشم بند کی کرتا ہے تو پھر خدا تعالیٰ جو خالقِ کمال ہے اور قادرِ مطلق سے اس کے آٹے ایسے امور کی طرح، ممکن، مستحکم ہو سکتے ہیں اور یہ ایمانِ بالغیب کی حکمت ہے کہ یہ عالم اور موشیخوں کے حق میں نہیں ہے لہذا وہ مردہ کی پکار فریاد سنتے ہیں اور محسوس و معلوم کرتے ہیں جیسا کہ رسول اللہ ﷺ نے فرمایا ہے۔

یہی عالم برزخ کا قیاس دنیا کے امور و مشاہدات پر کرتا محض جمالیات اور گمراہی ہے اور نبی علیہ الصلوٰۃ والسلام کو حتمًا تا اور خداوند تعالیٰ قادرِ مطلق کو ایسے امور سے عاجز ہانا ٹھہرانا ہے اور یہ سب اسے اور سب کی جمالیات و گمراہی و ظلم ہے کیونکہ وہ قادر ہے کہ جس بات کو جس پر چاہے کفارہ کرے اور لوگوں کی نظر سے اس کو پوشیدہ رکھے وہ قادر ہے کہ لوگوں کو ایک چیز تک دکھائی دے اور جالانگہ وہ سب کفارہ اور خوشبودار اور بہت بڑی اور نورانی اور روشن ہو اور لوگ اسکو دیکھ نہ سکیں اور اسی طرح یا نفس۔

عالم برزخ کے بعد ایک دوسرا عالم حشر برپا ہو گی وجہ: انسان کے مرنے کے وقت عالم برزخ میں جڑ اور سزا شروع ہو جاتی ہے اور روزِ ذمی، روزِ ذمی، روزِ ذمہ میں اور ہمیشگی برزخی بحشر میں جلتے ہیں مگر اسکے بعد ایک اور عقلی اعلیٰ کا دن ہے کہ خدا تعالیٰ کی بڑی حکمت نے اس دن کو ظاہر کرنے کا اتفاق کیا ہے کیونکہ اس نے انسان کو پیدا کیا تاکہ وہ اپنی خالقیت کے ساتھ شناخت کیا جائے اور پھر ایک دن سب کو کمالِ زندگی عقلی کر ایک میدان میں جمع کرے گا تاکہ وہ اپنی قادریت کے ساتھ پہچانا جائے پھر اس روز صبیٰ بہشت اور صبیٰ دوزخ میں قرار ہوگا۔

یہی موت ہے باسعادت اور جانے سعادت اول ہے کیونکہ خدا تعالیٰ نے آدم کیلئے دو اشقیں ٹھہرائی ہیں اور ان دونوں میں نبی آدم کو نشانی بدی کہا کہ وہ دیا جائے گا پہلی سعادت

میں تو روح اور جسم کی جدائی ہے اور اسکو پہلے اور اخیر اشیاء زندگی کی طرف چلا جاتا ہے۔

اور دوسری بحث وہ ہے جس میں خدا تعالیٰ روح کو جسم سے ماننے کا اور قبروں سے انحصار بحث یا روح کی طرف چلاوے گا خدا تعالیٰ نے ان دونوں قیامتوں کا ذکر قرآن کریم میں مشرکین سے فرمایا ہے جن میں ایک بڑی دوسری چھوٹی قیامت ہے اور وہ ذکر سورہ سومین وغیرہ سورہوں میں آیا ہے چنانچہ یہ آیت اس میں مشکل صریح کے ہے۔ النار ہم صون علیہا غلوا و عسبا و ہوم غلوم الساعۃ اذ حلوا ال فرعون اشد العذاب۔

جواب اس سوال کا کہ قبر کے سوال و جواب محدود ہیں یا غیر محدود :
سوال۔ اگر قبر کے سوال میں دلتہ وغیرہ محدود ہیں تو وہ خوب یا کئے چلیں اور وہاں پاس ہو چلیں یا کہ غیر محدود ہیں۔

جواب : ایسا نہیں ہو سکتا یہ ایک ایمانی کیفیت ہے جو دنیاوی امتحانوں کی طرح نہیں کہ قوی نکاند و کمزور وغیرہ سے پاس ہو سکے باہر وہاں جس رنگ سے دل رنگین ہو گا اسی کا اعتبار ہو گا اور اسی کے موافق قبر میں رنگ پر دست کا سامان مہیا ہو گا۔

جواب اس سوال کا کہ فرشتگان قبر کے سوالات کس زبان میں ہوں گے :
ہمیں عربی فارسی اور انگریزی سیکھتے سب زبانیں خدا نے بتائی ہیں پھر کیا خدا کا سمجھا ہو اور فرشتہ کسی زبان سے کا ضرور سکتا ہے وہ ہر زبان بول سکتا ہے۔

قبروں سے تعلق ارواح کا اذیع استبعاد : ارواح کا تعلق قبروں سے بھی ہوتا ہے اور اس میں کوئی عمل عقلی لازم نہیں آتا اور اس کیلئے عقل میں کوئی ریاضت نہ کر سکے ہم خدا تعالیٰ کے قانون قدرت میں ایک عقلمندانہ ہیں اور یہ کہ حقائق الاشیاء کے معلوم کرنے کے اللہ تعالیٰ نے مختلف طریقے رکھے ہیں جیسے ہم کہتے ہیں کہ بعض امور کی حقیقت صرف زبان ہی سے معلوم ہوتی ہے

پھر عقل خواہ آگہ کے ارضیہ سے معلوم ہوتے ہیں اور عقل حقائق کا پتہ صرف کان لگاتے ہیں اور عقل ایسے امور ہیں کہ جس مشنک کے ارضیہ سے انکا سراغ پتا ہے اور کتنے ہی حقائق ہیں کہ وہ مگر قوی یعنی دل سے معلوم ہوتے ہیں فرض اللہ تعالیٰ نے حقائق معلوم کرنے کیلئے مختلف طریق اور ذریعے رکھے ہیں مثلاً مصیبتی یا ناپ اہلی کو اگر کانوں پر رکھیں تو وہ انکا مزہ معلوم نہ کر سکیں گے اور نہ انکے رنگ کو دیکھا سکیں گے ایسا ہی اگر اسکو آنکھوں کے سامنے کریں گے تب بھی انکے ذائقہ کے حقائق پتہ نہ کر سکیں گے اس سے صاف طور پر معلوم ہوتا ہے کہ حقائق الاشیاء کے معلوم کرنے کیلئے مختلف قوی اور طاقتیں ہیں اب آگہ سے اگر کسی چیز کا ذائقہ معلوم کرنا ہو اور وہ آگہ کے سامنے پیش ہو اور ذائقہ کا اس سے اور آگہ نہ ہو تو کیا ہم یہ کہہ سکتے ہیں کہ اس چیز میں کوئی ذائقہ نہیں یا کوئی تو ذائقہ لگتی ہو مگر ہم کالہ نہ کر کے زبان سے وہ کام لینا چاہیں تو کب ممکن ہو سکتا ہے؟ ذہن کے فلسفی مزاج لوگوں کو یہ بلا اصرار لگا ہوا ہے کہ وہ اپنے علم کی وجہ سے کسی حقیقت کا انکار کر بیٹھتے ہیں روزمرہ کاموں میں دیکھا جاتا ہے کہ یہ سب کام ایک شخص نہیں کرتا ہمہ جہاں خد متیں مقرر ہیں سو پائی لاتا ہے دھوئی کپڑے دھو جاتا ہے فرنیچہ تقسیم عمت کا سلسلہ ہم طرد انسان کے کام میں پاتے ہیں اس اصل کو یاد رکھو کہ مختلف قوتوں کے مختلف کام ہیں انسان مختلف قوی لے کر آیا ہے اور مختلف خد متیں جدا جدا قوت کے سپرد ہیں ذہن فلسفی ہر ایک بات کا فیصلہ اپنی عقل خاص سے چاہتا ہے حالانکہ یہ طریقہ عقل غالب ہے تاریخی امور تاریخ ہی سے ثابت ہوں گے اور خواہ اشیا کا تجربہ ہونا تجربہ صحیح کے یہ نہ کرنا کہ سکتا ہے امور تو ایسے کا پتہ عقل دے گی اس طرح متفرق طور پر ایک ایک ذائقہ ہیں انسان دھوکہ میں مبتلا ہو کر حقائق الاشیاء کے معلوم کرنے سے اسی وقت محروم رہ جاتا ہے جب کہ وہ ایک ہی چیز کو مختلف امور کی تکمیل کا ذریعہ قرار دے لیتا ہے ذرا اسی نظر سے یہ بات خوب سمجھ میں آجاتی ہے اور روزمرہ ہم ان باتوں کو دیکھتے ہیں۔

پس جس طرح روح کے جسم سے مفارقت کرنے یا تعلق یگانے کا فیصلہ عقل سے نہیں ہو سکتا

پور اگر ایسا ہو تا تو فلسفی اور حکماء اس باب میں اختلاف میں جتنا ہوتے اسی طرح پر قبور کے ساتھ جو تعلق ارواں کا ہوتا ہے یہ ایک امر واقعی تو ہے مگر اسکا پتہ دینا اس آئندہ کا کام نہیں یہ کشفی آئندہ کا کام ہے اگر عقل عقل سے اسکا پتہ لگانا ہوا تو کوئی عقل سے اس کا پتہ لگائے کہ روح کا وجود بھی ہے یا نہیں ہزار ہا اختلاف اس مسئلہ پر موجود ہیں اور ہزار ہا فلاسفہ و ہر میں اپنے موجود ہیں جو اسی کے منکر ہیں اگر ذی عقل کا یہ کام تھا تو اس میں اختلاف کا کیا سبب کیونکہ جب آئندہ کا کام دیکھنا ہے تو میں نہیں کہ سکتا کہ ذی عقل تو ایک چیز کو دیکھتی ہے اور ہر کی دیکھی ہی آئندہ اس چیز کو نہ دیکھے پس جب ذی عقل روح کا وجود بھی یقینی طور پر نہیں دیکھتی تو اسکی کیفیت اور تعلقات کا علم تو کیا ہوتا ہے گی۔ یہ ظاہر روح کے وجود اور اسکے تعلق و فیروہ کی چشمہ نبوت سے لے کر کچھ لکھا ہے پس یہ امر کہ ارواں کا قبور کے ساتھ تعلق ہوتا ہے اس چشمہ سے لینا چاہیے جنکو کسی قدر کشفی آئندہ نے بھی بتلایا ہے کہ اس تو وہ خاک سے ارواں کا ایک تعلق ہوتا ہے اور السلام علیکم یا اهل اللود کہنے سے جواب دیتا ہے۔ جو قوی ان قوی سے کام لے جن سے کشف قبور ہوتا ہے تو وہ ان تعلقات سے دیکھ سکتا ہے ہم ایک اور بات کو مثال کے طور پر پیش کرتے ہیں کہ ایک تنک کی ذلی اور ایک مسمری کی ذلی رکھی۔ اب عقل محض ان پر کیا تعلق دے سکے گی ہیں اگر انکو پتھیں گے تو وہ جداگانہ حروں سے معلوم ہو جائے کہ یہ تنک ہے اور وہ مسمری ہے پس اگر کسی میں حس لسان ہے نہیں تو لیکن اور شیر میں کا وہ فیصلہ کرے گا پس جس طرح آفتاب کے پڑھنے میں ایک اندھے کے انکار سے فرق نہیں آسکتا اور ایک مسلوب العقل کے طریق استدلال سے فائدہ نہ اٹھانے سے اس کا اجمال نہیں ہو سکتا اسی طرح ہر اگر کوئی محض کشفی آئندہ نہیں رکھتا تو وہ اس تعلق روح کو کیونکر دیکھ سکتا ہے پس اس کے انکار سے محض اسلئے کہ وہ دیکھ نہیں سکتا اسکا انکار ہائز نہیں ہے کیونکہ ایسی باتوں کا پتہ عقل اور قیاس سے کچھ نہیں لگتا اللہ تعالیٰ نے اسی لئے انسان کو مختلف قویاں دیے ہیں اگر ایک ہی حاسہ سب کام نہ بنا تو پھر اس قدر قوی کے عطا کرنے کی کیا ضرورت تھی کہ جن میں بعض قویاں کا تعلق آئندہ سے ہے اور بعض کا کان سے بعض زبان کے متعلق ہیں اور بعض

ناک سے اسی طرح مختلف قسم کی قسمیں انسان رکھتا ہے سو قور کے ساتھ تعلق ارواح کے دیکھنے کیلئے عقلی حس کی ضرورت ہے اگر کوئی فاقدِ عقل یعنی جس کو عقل نہ ہو گا تو اس تعلق کی نسبت یہ کہے کہ یہ ٹھیک نہیں ہے تو قائل کہتا ہے۔ لہذا وہ عظیم اصول و السلام کی ایک کثیر تعداد اور کروڑوں اولیاء و صلحاء کا سلسلہ دنیا میں گزرا ہے اور مجاہدات کرنے والے بے شمار لوگ ہو گزرے ہیں وہ سب اس امر کی زندہ شہادت ہیں کہ ان کے تعلقات کی کیفیت وجہ عقلی طور پر ہم معلوم کر سکتے ہیں مگر ان تعلق سے انکار نہیں ہو سکتا۔ فرض عقلی دلائل ان ساری باتوں کا فیصلہ کئے دیتے ہیں کہ عقل اور اک نہ کر سکے جیسے کان اگر چہ دیکھ نہ سکیں تو انکا کیا تصور ہے وہ اور تو ت کا کام ہے۔

فرض روح کا تعلق قبر کے ساتھ ضرور ہوتا ہے انسان میت سے کلام کر سکتا ہے ارواح کا تعلق آسمان سے بھی ہوتا ہے جہاں اس کیلئے ایک مقام ملتا ہے اور یہ ایک ایسی مسلم بات ہے کہ بعد ازاں کی کتابوں میں بھی اس کی کوئی موجود ہے پس یہ مسئلہ عام طور پر مسلمہ مسئلہ ہے۔ جو اس گمراہ فرقے کے جوئی قائلے روح کرتا ہے اس طرح بلاشبہ مرنے کے بعد انہما سے ان سے بھی روح کا تعلق رہتا ہے کہ جنوں کی رو میں ظہین میں ہوتی ہیں اور بدوں کو جہنم میں لیکن روحوں کا روحانی تعلق بدوں کے ذرات کے ساتھ رہنا ضروری ہے خواہ کسی کو قبر میں دفن کر میں خواہ چاہیں خواہ وہ اوب جائے ذرے ذرے کے ساتھ روح کا تعلق باآوازِ ضم رہتا ہے۔ اسکی نظیر ایک حادثہ کافی ہے حادثہ کا تعلق دیکھنے کہاں سے کہاں تک رہتا ہے۔ ایسا ہی روح کا تعلق باوجود ظہین و جہنم کے تعلق بدوں کے ساتھ بھی ہے اور ضرور ہے مگر اس دنیا کی آنکھیں محسوس نہیں کر سکتیں کیونکہ عالم غیب کے اسرار کو دنیاوی آنکھیں نہیں دیکھ سکتیں اور نہ دکھایا جانا مناسب ہے کیونکہ پھر ایمان بالغیب نہیں رہے گا جس پر فلسفہ امتیاز کا قائم ہے لیکن صرف محسوس نہ ہونے کے سبب کسی امر کا انکار صرف عقل کی بدہمتی ہے۔ قبر کا ٹھکانہ یا فراخ ہونا یہ بھی ایک عالم باطن کے اسرار سے ہے جسے اہل دنیا کی آنکھیں دیکھ نہیں سکتیں عقلیں اور بافت نہیں کر سکتیں ہاں اہل کثرت

صوفی دلولیاء اللہ لوگ وہ ماہرین سے اس کو دیکھ لیتے ہیں اللہ من اسماوات کشف قلوب کے ذریعہ سے مردوں کو قبروں میں معذب یا مشابہ دیکھتے ہیں۔

حقیقت میں صراطِ آخرت : عالمِ آخرت میں ہر ایک سعید اور شقی کو مشغل کر کے دکھایا جائے گا کہ وہ دنیا میں سلامتی کی راہوں میں چلایا اس نے بلاکت اور جہنم کی راہیں اختیار کیں سو اس دن وہ سلامتی کی راہوں کو صراطِ مستقیم اور نمایاں بلکہ راستہ نور جس سے تہوار کرنا اور لوہر لوہر ہونا اور حقیقت جہنم میں گرنا ہے مشغل کے طور پر نظر آئے گی اور جو لوگ دنیا میں صراطِ مستقیم پر چل نہیں سکتے وہ اس صراط پر بھی چل نہیں سکیں گے کیونکہ وہ صراط اور حقیقت دنیا کی روحانی صراط کا ہی ایک نمونہ ہے اور جیسا کہ ابھی روحانی آنکھوں سے ہم دیکھتے ہیں کہ ہمارے صراط کے دائیں بائیں اور حقیقت جہنم ہے اگر ہم صراط کو چھوڑ کر اپنے طرف ہوئے تب بھی جہنم میں گرے اور اگر بائیں طرف ہوئے تب بھی گرے اور اگر سیدھے صراطِ مستقیم پر چلے تب جہنم سے بچ گئے۔ یہی صورت دوسری طور پر عالمِ آخرت میں ہمیں نظر آئے گی اور ہم آنکھوں سے دیکھیں گے کہ در حقیقت ایک ہی صراط ہے جو چلنے کی شکل پر دو رخ پر بٹھا گیا ہے جس کے اپنے بائیں دائیں ہے تب ہم بائیں گئے جائیں گے کہ اس پر چلیں سو اگر ہم دنیا میں صراط پر چلتے رہے ہیں اور اپنے دائیں بائیں نہیں چلے تو ہم کو اس صراط سے کوئی خوف نہیں اور نہ جہنم کی پہاچ ہم تک پہنچے گی اور نہ کوئی فزع اور خوف ہمارے دل پر طاری ہوگا بلکہ نور ایمان کی قوت سے چمکنی ہوئی ہر قی کی طرح ہم اس سے گزر جائیں گے۔ کیونکہ پہلے دنیا میں اس سے گزر چکے ہیں۔

صراطِ اخروی کی فلاسفی حضرت ابن عربی کے الفاظ میں : قدسی فی صفة الصراط انه اذق من الشر واحد من الصیف وکلہ الشر بعد فی الدنیا لا یعلم وجه الحق فی المسئلة عند اللہ ولا من هو المصیب من المجتہدین بعینہ فحکما بالشرع احد من الصیف واذق من الشر فی الدنیا نا للشرع هنا هو الصراط المستقیم ولا

بڑا ہی کل رکعتوں کی الصلوٰۃ بقول اعدا اعدنا الصراط المستقیم یہوا حد من السیف واذق من الشعر الطہورہ فی الاخرۃ محسوس ہیں و اوضح من ظہورہ فی الدنیا الالہی دعا الی اللہ علی بصیرۃ کالمسویٰ و اتعافہ فالجہنم اللہ یندرجاتہ الاسباب فی الدعاء الی اللہ علی بصیرۃ ای علی علم و کشف و قدور و فی حیران الصراط یتظہر بوم القیامۃ لا یصار علی قدر سور الماریں علیہ فیکنون ذقیفانی حق قوم و غیر یفانی حق آخرین یتصدق ہذا لیسر قولہ تعالیٰ نور ہم یسعی بین یدیہم و یمانہم و المسی مٹی و ما طریق الا الصراط و اما قال یمانہم لان المومن فی الاخرۃ لا شمال لہ کما ان اهل النار لا یمن لہم ہذا بعض احوال ما یکون علی الصراط و اما الکالیب و الحطائف و الخسک ہی من صور اعمال ہی ادم لمسکہم علی الصراط فلا یتہون الی الحد ولا یقعون فی النار حتی ینزکہم الشعاۃ و العایۃ الالہیہ فیس تجاوز ہنا تجاوز اللہ عنہ ہذا امن النظر مسعر النظرہ اللہ و من عفر العفا اللہ عنہ استغسی حلف ہنا من عبادہ استغسی اللہ حلفہ عنہ ہذا و من شدد علی ہذا الامتہ شدادہ علیہ و اما ہی اعمالکم نرد علیکم فاستلزموا امتکرام الاحلاق فان عند العاملکم سعا عاملکم نہ عبادہ کان ماکان و کان ماکانوا۔ تربیہ ہی صراط اثر ہی کی صفت میں آیا ہے کہ وہ بال سے ہار یک تر اور گلوار سے تیز تر ہے اور ایسی دنیا میں علم شریعت کا حال ہے کہ اکثر مسائل میں رور راست جو عند اللہ مقبول ہے پند یہ ہو قطعاً معلوم نہیں ہو تا جس دنیا میں مسائل کا حکم شرع میں گلوار سے تیز تر اور بال سے ہار یک تر ہے۔ پس شریعت یہاں صراط مستقیم ہے اسی لئے عدہ نماز کی ہر رکعت میں کتا ہے۔ "اعدنا الصراط المستقیم" پس وہ گلوار سے تیز تر اور بال سے ہار یک تر ہے اور آخرت میں دنیا کی یہ نسبت اس کا ظاہر ہو چکا شیخ تر ہو گا مگر جنہوں نے علی و جبر البصیرت خدا تعالیٰ کی طرف دعوت کی عقلی رسولوں اور انکے اہل حق کے انکو خدا تعالیٰ انبیاء کے درجہ کے ساتھ ملحق کر دے گا اور احادیث میں آیا ہے صراط قیامت میں

گزرنے والوں کے نور کے موافق ظاہر نہ نکالیں وہ ایک کے حق میں باریک ظاہر ہو گا اور دوسرے گروہ کے حق میں کشادہ اور اس خبر کی تصدیق خدا تعالیٰ کے اس کلام سے ہوتی ہے کہ مومنوں کا نور ان کے آگے اور اپنے طرف دوزخ اور انظر آنے کا نور وہاں صراط کے بغیر کوئی دلو نہ ہو گی اور خدا تعالیٰ کے کلام میں جو آیا ہے کہ انکا نور اپنے طرف دوزخ کا ہو گا یہ اسلئے ہے کہ آخرت میں مومن کا کوئی بائیں نہ ہو گا۔ جیسا کہ دوزخوں کیسے دایمان ہو گا۔ یہ تو صراطِ اخروی کے بعض احوال ہیں مگر زبور اور پختنے والے اور کوکھرو کے کانے یہ قوی یعنی آدم کے عملوں کی صورتیں ہوں گی جو انکو صراط پر نہ کر لیں گی پس ابھی نہ بحث میں جاہیں گے اور نہ دوزخ میں کریں گے یہاں تک کہ انکو شہادت اور حمایت الہی پہنچی جاوے گی پس جس نے یہاں پر درگزر کیا خدا تعالیٰ اسکو صاف کرے گا اور جو کوئی خدا سے اپنا حق کھوش کر کے لے گا تو خدا تعالیٰ وہاں اس سے اپنا حق کھوش کر کے لے گا اور جو کوئی اس امت پر سختی کرے گا خدا تعالیٰ اس پر سختی کرے گا یہ صرف تمہارے اعمال ہیں جو تم پر وارد ہوں گے پس اچھے اعمال کو لازم بکرو کیونکہ خدا تعالیٰ کل تم سے وہی معاملہ کرے گا جو تمہارے اعمال کے ساتھ کرے۔

حقیقت صراطِ مستقیم ہمو جب تحریر حضرت امامی غزالی: امام محمد غزالی رحمہ اللہ تعالیٰ فرماتے ہیں کہ انسان کا کمال یہ ہے کہ جہاں تک ہو سکے فرشتوں کی مشابہت پیدا کرے جن میں اوصاف متضاد جیسے انسان میں ہیں نہیں ہیں اور انسان ان اوصاف سے علیحدہ ہو جانے کے مشابہ ہو گا کہ حقیقت میں علیحدہ ہو جائے ہو اور وہ توسط ہے جیسے کہ سمویا ہو پانی کہ نہ گرم ہے اور نہ سرد اور عود کا رنگ کہ سفید اور نہ سیاہ جس کیبھی نور فضول فریبی انسان کی دو صفتیں ہیں اور صحت اس میں توسط کا درجہ رکھتی ہے جس میں نہ کجی ہے اور نہ فضول فریبی۔

پس صراطِ مستقیم وہ توسط حقیقی ہے جو بال سے بھی زیادہ باریک ہے اور جو شخص کہ ان صلاحت متضادہ کے دونوں سروں سے حمایت درجہ اور ہوتا ہے تو اولو کمالوں دونوں سروں سے

علاج میں ہو گا مثلاً ایک لوہے کے حلقہ کو آگ میں ڈال کر کے زمین پر رکھیں اور پھر اسکے اندر دوسرا میں ایک چوٹی کو داخل دیں تو وہ اسکی کڑی سے لہاگے کی اور جو جگہ سب سے دور ہو گی وہاں ٹھہرے گی پس بڑے مرکز کے اسی کو اور کوئی جگہ نہ ملے گی اور وہی مرکز حقیقی ہے کیونکہ اسکو ہر طرف سے نہایت درجہ کلاہ ہے اور اس مرکز یا نقطہ کا مطلق عرض نہیں ہے پس صراطِ مستقیم وہی وسط ہے دونوں سروں سے اور اس وسط کا مطلق عرض نہیں ہے اسلئے وہاں سے بھی زیادہ باریک ہے پھر جب خدا تعالیٰ قیامت میں اسی صراطِ مستقیم کو متحمل کر دے گا تو جو کوئی اس دنیا میں صراطِ مستقیم پر ہو گا یعنی اس نے صفات متضادہ انسانی کے استعمال میں حتی المقدور توسط اختیار کیا ہو گا اور کسی جانب مائل نہ ہو اور کلاہ صراطِ آخرت پر بھی سیدھا چلا جاوے گا۔

حضرت ملا جمال اللہ بن دوانی رحمہ اللہ علیہ لکھتے ہیں کہ اسلامی شریعت آخرت میں بہ اکل صراطِ مستقیم روزِ آخر پر متحمل ہو کر دکھائی دے گی پس جو شخص ہادیہ شریعتِ اسلام پر یہاں سیدھا چلا اور کبر نہ ہو اس کو وہاں بھی اس پر چلنا آسان ہو گا۔ اور جو یہاں ہی ٹیڑھا رہا اور اس صراطِ مستقیم پر نہ چلا اسکے لئے وہاں بھی چلنا دشوار ہو گا۔

حقیقت قیامت : حقیقت قیامت کا مضمون مولانا محمد قاسم صاحب مرحوم ہانوتوی رحمۃ اللہ علیہ کے مضمون کا انتخاب ہے جو یہاں درج کیا جاتا ہے واضح ہو کہ جو اشیاء مختلفہ لافرائض چیزوں سے مرکب ہو ا کرتی ہیں جیسے پھل کی اسکاٹلہ آدمیوں کے لئے اور گھس گھاس جانوروں کیلئے ایسی چیزوں کو انتہام کار توڑ پھوڑ کر جدا کر کے اپنے اپنے ٹھکانے پر بچھا دیتے ہیں اور اسکے مناسب انکو کام میں لاتے ہیں مثلاً کھیتی کو ایک روز کات پھانٹ توڑ پھوڑ گھس اور ٹلہ کو جدا جدا کر کے گھس کو کوپوں میں اکٹھا کر دیتے ہیں اور ٹلہ کو کو ٹیوں کھاتوں ریشوں میں جمع کر لیتے ہیں اور پھر اس کو کو ٹانوی جانوروں کو کھاتے رہتے ہیں اور ٹلہ کو بلا ضرورت آپ کھاتے رہتے ہیں پھر اپنے کھانے میں بھی یہ تفریق ہے کہ چھان پھوڑ کر اچھے اچھے ٹلہ کو اپنے لئے رکھتے ہیں اور

تاقص کو خداس اور شاگردانشوں اور جانوروں کو نکالتے ہیں۔ مگر نور سے دیکھا تو اس عالم اجسام کو بھی مختلف اور خاص اجزاء سے بنایا ہوا پیدا چنانچہ اس کے ہر رکن اور ہر جزو سے ہماریاں بنے کہ یہ نور کام کا نور اور کام کا اس میں نور کچھ خاصیت ہے اسکی اور کچھ خاصیت ہے زمین میں اور ہی نہیں اور پانی میں اور ہی کچھ خاصیت ہے جس میں نور کام کے کا نور کام کے عالم اور کام کے نور اور کام کے ذکی نور بھی میں فرق ہے کلی اور کلی میں تفاوت مرد اور عورت میں اختلاف مرد و عورت میں افتراق فرض جس چیز کو دیکھئے اسکا رنگ وہ کچھ اور ہی ہے۔

ہر گل دارنگ ہونے اور گراست

اس میں بھی یہی ہو چاہیے کہ ایک روز تو زبھوز کر سب کو جدا جدا کر دیں یہاں تک کہ نیکوں کو انکے نیکانے میں اور بدوں کو انکے نیکانے میں پہنچا دیں سو اس اپنے موقع میں پہنچی جائے گا نام جزو سزا و عوم القیامت ہے۔

اور سننے مجموعہ عالم کو دیکھئے تو ایسے ہے جیسے آدمی یا کسی جانور کا جسم جیسے چشم و گوش و دست و پو وغیرہ اعضاء جدا جدا کام کے ہیں ایسے ہی اس مجموعہ عالم میں زمین و آسمان وغیرہ ارکان جدا جدا اسطرف کے ہیں جیسے اس جسم خاکی میں عناصر اربعہ کی جدا جدا خاصیت ہے ایسے ہی اس عالم چاکر میں مخلوقات اور سنہیات کی جدا جدا طبیعت اور خواہشات نفسانی کی جدا جدا تاثیر ہے جسم خاکی میں ہر کسی فلذ کے قلب کے باعث مزاج اصلی میں تغیر آجاتا ہے تو اسکا نام مرض ہو جاتا ہے اور اسکی وجہ سے اگر روح کو مفارقت جسم سے کرنی پڑے تو اس کا نام موت ہے۔

ایسے ہی اس عالم چاکر میں کسی رکن یا لواحق کے قلب کے باعث اگر ذکیب اصلی میں فرق آجائے اور کوئی کیفیت تازہ غلور میں آئے تو اسکا نام علامت قیامت ہے اور اسکی وجہ سے اس روح عظیم کو جو محفلہ روح انسانی اس مجموعہ کیلئے ہو چاہیے چنانچہ نظام عالم اور اسکے حسن و انکام سے ظاہر ہے اس مجموعہ سے اگر مفارقت کا ارتق ہو جائے تو اسکا نام قیامت ہے مگر یہ ہے تو جیسے بعد مرگ تفریق اجزاء جسم انسانی و حیوانی ضرور ہے یہاں بھی بعد مفارقت مذکورہ تفریق اجزاء عالم

نہ ہو جائے سو جیسے بعد از اجزاء جسم انسانی ہر جزو کے اپنے اپنے کردہ کے ساتھ اتصال لازم ہے ایسے ہی بعد تفریق اجزاء عالم ہر جزو کو اپنے اپنے طبقہ میں جہاں لازم ہے سو نیکوئیوں کا طبقہ جنت میں جہاں اور بدوں کا طبقہ دوزخ میں جہاں ہی جزو سزا ہے۔

اور نیکوئیوں پر سزا سے کھانا بچواتے ہیں اور دوزخی سے بچنا سزاواتے ہیں جب وہ قسم ہو جاتا ہے تب کہیں اسکو مزدوری معاہدہ کرتے ہیں اور وہ اس کی یہ ہوتی ہے کہ مزدوری اس کام کے عوض دیتے ہیں اگر وہ کام حسبہ لکھو اور کھانا تو اس کو اس کی اجرت نوالہ کی دوزخ الٹا تھو ان پر بادی جامد و جنس کا اس سے قصدا کرتے ہیں مگر چونکہ یہ بات بعد ہی میں ہی ہوتی ہے اس لئے مزدوری بھی بعد ہی میں ملتی ہے اور اگر وہ کام ایسا ہو کہ ایک آدمی نہیں کر سکتا اور ایک دن میں نہیں ہو سکتا تو بہت سے آدمی بہت سے دنوں میں اسکو پورا کرتے ہیں تو مزدوری کے وصول میں اور بھی دیر نکلتی ہے بالخصوص جبکہ وہ کام ٹھیکہ پر کر لیا جاتا ہے تو مزدوری کا حال تھا اور اگر انعام و سزا کا قصہ ہو تو پھر تاخیر میں ہرگز حرج ہی نہیں کیونکہ حق غیر کا نہ دینا ظلم ہے اور حق میں غیر معاہدات میں بیع اور اہارہ کی صورت میں اپنے ذمہ جانتا ہے اور تا ہے انعام اور سزا میں اپنے ذمہ کوئی بات جانتا نہیں ہوتی جو تاخیر میں ظلم کا احتمال ہو پاتی یہ بات خود مہاں ہے کہ جیسے اوائے حق غیر میں تاخیر بری ہے اپنی حق کے وصول میں تاخیر عمدہ ہے اسلئے اپنے حقوق کی سزا میں تو تاخیر بری ہو ہی نہیں سکتی۔ رہا انعام وہ کوئی حق و واجب نہیں ہو تا جو اسکی تاخیر بری ہو یاں حقوق العباد کے دلوانے میں شاید تاخیر بری معلوم ہو اسکا جواب یہ ہے کہ حکام دین جو کہ خدا کی طرف سے عدل و انصاف کی تاکید ہے اس پر سب اہل مذہب اور تمام اہل حق شاہد ہیں دنیا میں جو کچھ وصول ہو سکے اسکے دلانے میں تو خدا کی طرف سے تعیل ضروری ہو چکی۔ بائیں ہمہ آخرت کا قصہ بدو ہا مگر چہ تک خدا بدوں کے حق میں فقط حاکم ہی نہیں والدین سے زیادہ شفیق اور مہربان ہے تو اگر اسکے وقت ضرورت کیلئے اسکے حقوق کو دینے دے تو اس وقت لنگر اسکے حوالے کرے تو اس سے بھر ہے کہ قبل وقت ضرورت اسکو کھو نہیں سو وقت کمال ضرورت تو وہی وقت ہے جب کہ عالم اسباب

سراسر خراب اور بد بنا جائے کوئی حیلہ وہ حیلہ اور سبب اور ذریعہ معانی کا پائی نہ رہے اس وقت نہ کوئی حیلہ ہو گا نہ کوئی سامان نفاذ خدا کی رحمت یا ظاہر میں اپنے حقوق ہوں گے۔

اور سٹے نشوونما کر کار قوت نامیہ ہے تو تصور یعنی مناسب حال نامیات یعنی وہ اجسام جن میں ذہن کی صلاحیت ہے۔ صورت و شکل کا بنا دینا قوت مصورہ کا کام ہے مگر چونکہ خدا کا اجسام ایک صورت ہوتی ہے تو یہ معلوم ہوتا ہے کہ قوت مصورہ منجملہ خدام قوت نامیہ ہے جیسے حیوانات میں قوت نامیہ منجملہ خدام نباتات ہے اور عالم کو دیکھا تو قافی صورت سے نہیں اور جس صورت کو دیکھا وہ ایک اصل اور ایک معنی کو آشوش میں لئے ہوتے ہیں جس سے معلوم ہوا کہ ہر وصف اور ہر معنی ایک صورت قابل تصور عالم شدات سے عالم محسوسات کے رکھتا ہے چنانچہ خاک کو دیکھا وہ حقیقت میں صورت سے یعنی شکل ہے اور پانی کو دیکھا تو وہ صورت معانی سے اسٹے اس میں بھی بہت سی صورتوں سے ترکیب ہے یعنی روح انسانی مثلاً قوت باصرہ قوت سانس و غیرہ قوتی کے مجموعہ کا نام ہے اور یہ سب لوصاف اور معانی ہیں انکے مقابل میں جو شکل عطا ہوئی تو لہجہ سے اعطاء شکل کی ترکیب کے بعد پیدا ہوئی ہے جس کا حاصل وہ صورت مرہب ہے مگر پھر دیکھا تو وہ معانی اور لوصاف جو معانی اور لوصاف ہنوز جن کو عطا نہیں ہوئے اسٹے ہم قوت نامیہ عالم پر ضرور ہے کہ جیسے کی تو مرہب و غیرہ کی چابھت اور شہوت سے جو منجملہ معانی اور لوصاف میں بعد پیدا ہوتا ہے اور پھر اس بعد سے جو پیدا ہوتا ہے اور انجام کار کہاں سے کہاں قوت پہنچتی ہے اور یہ سب نشوونما اور تصور یعنی قوت نامیہ مصورہ کی کار پر وازی ہوتی ہے ایسے ہی وہ معانی غیر شکل ظہور میں آئیں اور صورت دکھائی کہ نگہ یہ چینی ہے کہ یہ عالم باطرور اصل قوت نامیہ کی کار پر وازی کا تصور ہے اس لئے قوت مصورہ باطرور منجملہ خدام قوت نامیہ ہے سو حیوانات اور نباتات میں اگر کچھ قوت نامیہ کا تصور ہے تو وہ ایسا ہے جیسا نور آفتاب زمینوں اور ذروں اور روشنیوں میں تصور کرتا ہے فرض جیسے یہاں جو کچھ ہے وہ اصل کار پر قوت ہے جس کو آفتاب کے ایسے ہی عالم میں جہاں کہیں قوت نامیہ ہے وہاں اصل کا تصور ہے جس کو قوت نامیہ

عالم کیسے مگر جب بعض معانی اور اسباق کو دیکھا کہ بنو قتل نہیں ہوئے چنانچہ تمام افعال اختیار کی اور انکی بھلائی اور برائی وغیرہ کو بنو یہ خلق سے مٹا نہیں ہوا تو یوں معلوم ہوا کہ بنو یہ عالم قتل چھڑ کر تڑپے تفصیل اسکی یوں ہے کہ چھڑا کر چھڑا خود شوق طرفین اور ہمسات فریقین کی ایک صورت ہے اور قتل معانی اسباق ہے مگر اسکے اندر جو کچھ یعنی پوشیدہ معانی ہیں انکو بنو صورت نہیں مٹی سو جب چھڑا کچھ بن گیا تو یہ معلوم ہوا کہ اس میں کس قدر قوتیں کتنی تھیں چھڑا تصور اب ہوا ہے ورنہ پہلے سے اتنا تو جانتے تھے کہ یہ چھڑا دونوں نزدیک کی تمام قوتوں کا اجمال ہے اسلئے وقت تفصیل یہ ضروری ہے کہ حاصل ترکیب و حاصل اجتماع جملہ قوتائے طرفین کے موافق اسکو صورت عنایت ہو مگر جو قصبہ یہاں ہے وہی قصبہ نسبت عالم اجسام نظر آتا ہے یہ قوت عملیہ عالم باہر کا اجمال ہے یعنی وہ ہے کہ بنو تمام معانی کی صورتیں نہیں لیں۔ اگلا عمل علم خداوندی اور تمام سامان قدرت خداوندی کا اس عالم کو اجمال کے طور پر گھرنے کے تفصیل ہوتی تو تمام معانی قتل ہوتے یہ ضرور ہے کہ جیسے بنو قوت نامہ و قوت مصورہ مادہ و حیوی کی صورت منقلب ہو کر صورت چھڑا پاش پاش ہو جاتی ہے ایسا ہی بنو قوت نامہ و قوت مصورہ یہ شکل عالم پاش پاش ہو کر بنو عالم کو اور قتل مٹا ہو۔

اور نئے حکام دنیا کا یہ دستور ہے کہ جس شراب قصبہ والے باقی ہو جاتے ہیں اور راولہ نہیں تو انکو سزائے سخت پہنچاتے ہیں یعنی انکو قتل کرتے ہیں یہ انما القتل یعنی عرقید کرتے ہیں اور اس شرکو جلا پھونک کر خاک سیاہ کر دیتے ہیں اور عمارت کو توڑ پھوڑ مسمار کر کے اجنت سے اجنت چلا دیتے ہیں اور وہ اسکی یہ ہوتی ہے کہ جرم اخلاص سے بنا ہر کوئی جرم نہیں اسکی مناسب کیا ہے کہ وہ سزا دی جائے جس سے بنا کر کوئی سزا نہ ہو مگر فور سے دیکھیں تو نبی آدم رحمت خداوندی اور یہ زمین و آسمان ان کے رہنے کا مکان۔ کیونکہ انھیں کیلئے بنایا گیا ہے پھر ان کا یہ حال کہ بلا حائق تمام عالم میں ترمولور سرکش روز افزوں ہے اگر راولہ چند روز کیلئے آگے تو وہاں ہے جیسا چراغ مردہ منبھا لے لیتا ہے اس لئے یوں یقین ہے کہ ایک نہ ایک روز یہ اخلاص کا سنگیر ہو جائے

اور بول نہ سکا۔ وجہ تھی کہ اس نے تھوڑا سا دماغی سے کسی وجہ ہوئی کہ بیٹھ اٹھا۔ کھینٹے کھینٹے اور جھیم جھیم کئے ٹٹا۔ عذاب سے بڑے سے کئے تھوڑے اور سر کھینٹی کھینٹے ان میں سے کچھ نہیں ہو اسے یہ ضرور ہے کہ ایک روز نماز میں جہاں جہاں نماز قائم یا ٹھہرائی ہو جائے اس وقت مختصراً قہارنی ضد ہو نہ ہی یہ ضرور ہے کہ اس عالم کو نواز چھوڑ کر بول کر دیں اور تمام نبی آدم کو گرفتار کر کے انکوائی شان کے مناسب جڑوسز لویں۔ (قاسم ہانو توئی)۔

حقیقت مکافات اعمال یعنی انسان کو نیکی پر اجر ثواب اور بدی کرنے پر عذاب ملنے کی وجہ: (۱) انسان کھینٹے دو جہاز موجود ہیں یعنی کھینٹنے والے ایک جہاز خیر ہے جو نیکی کی طرف اسکو کھینچتا ہے جیسا کہ یہ امر مشہور ہے اور محسوس ہے کہ مسالوات انسان کے دل میں بدی کے خیالات چلتے ہیں اور اس وقت وہ ایسا ہی کی طرف مائل ہو جاتا ہے کہ گویا کوئی اسکو بدی کی طرف کھینچ رہا ہے پھر بعض اوقات نیکی کے خیالات اس کے دل میں چلتے ہیں اور اس وقت وہ ایسا نیکی کی طرف مائل ہو جاتا ہے کہ گویا کوئی اس کو بدی کی طرف کھینچ رہا ہے اور مسالوات ایک شخص بدی کر کے پھر نیکی کی طرف مائل ہو جاتا ہے اور نہایت شرمندہ ہو جاتا ہے کہ میں نے برا کام کیا کیا اور کبھی ایسا ہو جاتا ہے کہ گویا نیکی کی طرف مائل ہو جاتا ہے اور نہایت شرمندہ ہو جاتا ہے کہ میں نے برا کام کیا کیا اور کبھی ایسا ہو جاتا ہے کہ ایک شخص کسی کو گالیاں دیتا ہے اور بدی اور پھر باہم ہو جاتا ہے اور دل میں کھتا ہے کہ یہ کام میں نے برے ہی کیا اور اس سے کوئی نیک سزا کھاتا ہے یہ مسالوات چاہتا ہے یہ دونوں قسم کی قوتیں ہر ایک انسان میں پائی جاتی ہیں اور شریعت اسلام نے نیکی کی قوت کو نیک اور بدی کی قوت کو شیطان سے موسوم کیا ہے اور جو نیکی کا لقاہ کرتا ہے اسکا نام فرشتہ رکھا ہے اور جو بدی کا لقاہ کرتا ہے اسکا نام شیطان اور ابلیس قرار دیا ہے۔

یہ دونوں قوتیں انسان میں موجود ہیں اور ان دونوں کی حالتوں سے تم نگاہ نہیں کر سکتے اور انکے پیدا کرنے میں خدا تعالیٰ کی حکمت یہ ہے تاکہ انسان اپنے نیک اعمال سے اجر پانے کا

مستحقِ لعنہ تھے کیونکہ اگر انسان کی فطرت ایسی واقع ہوئی کہ وہ ہر سال ایک کام کا ایک بار وہی اسکو ثواب نہ ہوتا کیونکہ وہ اس کی فطرت کا خاصہ ہو تا لیکن اس حالت میں کہ اس کی فطرت دو شخصوں کے درمیان ہے اور وہ عقلی کی کشش کی اطاعت کرتا ہے اس کو اس عمل کا ثواب مل جاتا ہے اور یہی حال بدی کے بدلے کا ہے یعنی جس قوت کا مطیع ہوتا ہے اس کے مطابق بدلہ پاتا ہے۔ ان کا ان خیر الفجزاء خیر وان کان شر الفجزاء شر۔

(۴) انسان کی عقلی اور اعتقادی غلطیاں ہی دراصل خدا کی جڑ ہیں اور وہی درحقیقت خدا تعالیٰ کے غضب سے آگ کی صورت پر متحمل ہو جائیں گی (مگر چونکہ حق تعالیٰ کو ہر ایک کا انہام معلوم ہے اس لئے اس نے پہلے سے سب سامان مہیا کر رکھا ہے اور جس طرح پتھر پر تخت شرب تکتے سے آگ نکلتی ہے اسی طرح غضب الہی کی ضرب انہیں بد اعتقادوں اور بد عملیوں سے آگ کے شعلے نکالنے کی اور وہی آگ بد اعتقادوں اور بد کاروں کو کھا جانے گی جیسا کہ تمہاری کھینچے ہو کہ عقل کی آگ کے ساتھ خود انسان کی اندرونی آگ شامل ہو جاتی ہے تب دونوں مل کر اس کو ہضم کر دیتی ہیں اسی طرح پر غضب الہی کی آگ بد اعتقادی اور بد عملی کی آگ سے بھڑکتی ہے سو جو لوگ ایسے طور کی زندگی بسر کرتے ہیں کہ نہ تو یہی خدا شناسی کی وجہ سے انکے اعتقاد درست ہیں اور نہ وہ بد اعمالیوں سے باز رہتے ہیں پھر ایک چموتے خیاب پر بھروسہ کر کے دلیری سے گناہ کرتے ہیں انکو علم ہی نہیں کہ دراصل ہر انسان کے اندر دو ذراغ کا شعلہ اور اندر ہی نہایت کا چشمہ ہے دو ذراغ کا چشمہ فرد ہو جانے سے خود نہایت کا چشمہ جو شہ مارتا ہے لیکن یہ علوم حاصل نہیں ہو سکتے جب تک انسان حقیقی طور پر اسلام میں داخل نہ ہو اور اسکے پاک علم سے فیض نہ اٹھائے جو کہ آسمانی علوم کو نیکر آیا ہے

(۴) جزاء مزائے انسانی کی یہ وجہ بیان کی گئی ہے کہ صورتِ نوحیہ کا اتھکاء ہے جیسا کہ چارہائے جب گھاس چرتے ہیں اور درخت سے جب گوشت کھاتے ہیں تو ان کا مزاج گھج و سالم رہتا ہے اور جب چارہائے گھاس کے کھانے گوشت کا استعمال کرتے اور درخت سے کھانے گوشت کے

گناہ لگاتے ہیں تو ان کا اصلی مزاج بخیر ہوتا ہے یہی حال آدمی کا ہے جب وہ ایسے اعمال کرتا ہے کہ جن کی روح میں بدگوارگی نہ لگتی تھی اور نیاز مندی کا اثر ہوتا ہے تو اس انسان میں پائیزتی اور فیاضی و عدالت کے آثار پیدا ہوتے ہیں اور انکی کلی روحانی مزاج درست ہے اور جب ایسے کام کرتا ہے کہ جنگی روح ان امور کے برخلاف ہوتی ہے تو انکی کلی حالت بخیر ہوتی ہے اور جب وہ اس جہان سے انتقال کرتا ہے تو اسی حالت کے موافق اس سے معاملہ ہوتا ہے۔

حقیقت بہشت و دوزخ: اس میں کام نہیں کہ ہر قسم کی چیزوں کا لذت دار ہوں یا بے لذت ہوں لذت اور تکلیف دونوں ہی سے خیر ہے۔ تو اس صورت میں انکے اجزاء کا شیرازہ بھی جدا جدا کر کے اپنی اپنی جگہ پہنچائیں گے مگر یہ تقسیم رنج و راحت بھی اسی تقسیم نکل و جی میں داخل ہے کیونکہ لذت بھلائی کے اقسام میں سے ہے اور نیکوئی کی۔ تو انکی اصل کے بھی دو مقام ہوں گے جن کو بہشت و دوزخ کہہ کے تعبیر کیا ہے اس لئے یوں سمجھ میں آتا ہے کہ دنیا کی ہر قسم کی لذتیں اگرچہ عورتوں سے صحبت کرنا ہی کیوں نہ ہو بہشت میں پائی جائیں۔ ہاں زیادہ ہو تو کچھ عیب نہیں اور علیٰ ہذا تقاضا دوزخ میں دنیا کی ہر قسم کی تکلیفیں موجود ہوں۔ البتہ اگر ان سے زیادہ بھی ہوں تو کچھ اور نہیں دوسرے وہاں کی لذتیں اور تکلیفیں کو یہاں کی لذتوں اور کلفتوں کے مترادف ہوں پھر یہاں کی لذتوں اور کلفتوں کو وہاں کی لذتوں اور کلفتوں سے کچھ نسبت نہ ہوگی کیونکہ یہاں کی لذتیں نہ خالص لذتیں ہیں نہ یہاں کی تکلیفیں خالص تکلیفیں ہیں اور اس تقریب سے یوں خلاص ہوتا ہے کہ وہاں کی لذتیں اور تکلیفیں خالص لذتیں اور خالص تکلیفیں ہوں۔ یہ حال بہشت و دوزخ جن جن مکانوں کو کہتے ہیں انکا ہونا چاہتا ہے۔

جواب اس سوال کا کہ دوزخ و بہشت کا مقام کہاں ہے: یہ سوال ازروئے عقل قابل استماع نہیں موجود ہونے کیلئے یہ لازم نہیں کہ ہم کو معلوم ہی ہو اگرے خود اس زمین میں ہزار ہا مقلدات اور اشیاء ایسی ہیں کہ ہم کو معلوم نہیں ہیں اگر زمین و آسمان کے اندر ہو اور ہم کو

معلوم نہ ہو تو کیا محفل ہے اور اگر زمین و آسمان کے باہر ہو تو کیا منتفع ہے مطلقاً تو وہ لوگوں امر ممکن تھے مگر خصوصاً سے باہر ہو نہ سکتے ہوتے۔

جواب اس سوال کا کہ نعمائے جنت دنیاوی نعمتوں کی طرح ہونگے : اس سوال کے جواب میں خدا تعالیٰ کا کلام پاک یوں وارد ہے۔ فلا تعلم نفس ما أحصى لہم من لطفہ احسن ترجمہ یعنی کوئی نفس تجلی کرنے والا نہیں جانتا کہ وہ کیا کیا نعمتیں ہیں جو اسکے لئے مقرر ہیں اور ان نعمتوں کے بارے میں حدیث نبوی میں یہ بھی لکھا ہے اعدت لعبادہ الصالحین مالا عين رأت ولا اذن سمعت ولا خطر على قلب بشر۔ یعنی نیک بندوں کیلئے میں نے وہ نعمتیں آخرت میں تیار کی ہیں جو نہ کسی آنکھ نے دیکھیں اور نہ کسی کان نے سنیں اور نہ کسی دل پر اس کا خیال گزرا۔

یہ تو ظاہر ہے کہ دنیا کی نعمتیں ہم پر عقلی نہیں اور وہ لوگوں اور جانوروں وغیرہ کو ہم جانتے ہیں اور ہمیشہ یہ چیزیں کھاتے ہیں سو اس سے معلوم ہوا کہ وہ چیزیں اور ہیں اور انکو ان چیزوں سے صرف نام کا اشتراک ہے ہنس ہنس نے بہشت کو دنیا کی چیزوں کا مجموعہ سمجھا اس نے قرآن شریف کا ایک حرف بھی نہیں سمجھا چنانچہ آیت اول کی شرح میں اللہ سے سیدنا سولانا صلی اللہ علیہ وسلم فرماتے ہیں کہ بہشت اور اسکی نعمتیں وہ چیزیں ہیں جو نہ کسی آنکھ نے دیکھیں اور نہ کسی کان نے سنیں اور نہ دونوں میں گزریں حالانکہ ہم دنیا کی نعمتوں کو آنکھوں سے بھی دیکھتے ہیں اور کانوں سے بھی سنتے ہیں اور دل میں بھی وہ نعمتیں گزرتی ہیں پس جب کہ خدا تعالیٰ اور اسکا رسول ان چیزوں کو ایک نرالی چیز میں ملاتا ہے تو ہم قرآن سے دور جا پڑتے ہیں اگر یہ گمان کریں کہ بہشت میں بھی دنیا ہی کا وہ لوگوں جو کھا جائے اور سمجھوں سے وہ پاتا ہے تو یہ لوگوں دیکھنے والے جانوروں کے وہاں دماغ کے ریڑھ موجود ہوں گے اور وہ عقول پر شہد کی کھوپڑیوں نے بہت سے چھتے لگائے ہوں گے اور فرشتے تلاش کر کے وہ شہد نکالیں گے اور شہروں میں داخلیں گے۔ کیا ایسے دنیاوت

اس تعلیم سے، کچھ مناسبت رکھتے ہیں، جس میں یہ آیتیں موجود ہیں کہ: "نجانے ان چیزوں کو کبھی نہیں دیکھا۔"

قیامت میں ہاتھ پاؤں کے لانے سے دفع تعجب: اس سے آگے کر اسوفاں کا ایجاد ہو جاوے، استبداد کے دفع کے لئے کافی ہے۔

التماس۔ یہاں تک لکھنے کے بعد ابھی متفرق تحریرات مختلف مضامین پر پہلے سے اپنے پاس رکھی رہ آئیں، جن میں خاص خاص امور پر عقلی گفتگو کی گئی ہے تو ان تحریرات کو بھی بطور مضمون اس مجموعہ کا جز بنا کر مناسب معلوم ہوا۔

ضمیمہ نمبر ۱

مقولہ از: پروفیسر علی گڑھ، مصلحتی پبلشرز، لاہور، ۱۹۰۵ء، جلد سوم صفحہ ۱۲۳۔

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

کیا مسلمانان عالم کیلئے سال شمسی موزوں ہو سکتا ہے؟ فی الحقیقت جس قدر سائنسیک یعنی سائنسی معلومات کو ترقی ہوتی جا چکی اور جس قدر کہ حقائق عالم کا انکشاف زیادہ ہو گا، اسی قدر اسلامی امور کی صداقت کے حقائق ثابت حاصل ہوتی جائے گی۔ بظاہر شمسی سال میں تقبیلہات کی ایسی خوبی موجود ہے کہ اسکا پہلی ہی امور کے لئے مفید ہو جاتا ہے۔ جنتِ شریف کیا جاسکتا ہے اور چنانچہ کہہ زمین کی، ماری حرکت کو ۳۶۵ دن اور چند گھنٹوں اور منوں میں اور اپنے مرکز کے گرد ختم کر لیتی ہے اور بارہ حصوں میں تقسیم کر لیا جاتا ہے اور پھر گھنٹوں کی کسر ات کو چھ سال اور منوں کی کسر ات کو ہر چھ صدی میں سال کہیں بنا کر پورا کر لیتے ہیں اس لئے جو موسم ہر ملک میں جس مینے کے لئے تھیں ہے انھیں تقابلاً نہیں ہو جاتا اور ہمیشہ مینوں کے نام ہی بتا دیتے ہیں کہ آیا ان ایام میں دور دورہ گرمی یا جاتا ہے یا عمل اور عملی ہمار

اور فرض کاہر خلاف اسکے سال قمری میں مہینوں کے ساتھ ساتھ نہ تقنین موسم ہے نہ باقاعدہ سالانہ اوقات کی تقسیم کیونکہ قمری سال مقرر المظہر میں موسم گرما کا آغاز ہے تو اس سے نو برس سال اس نام کے قمری مہینے میں گزرتا ہذا پڑا ہوگا کیونکہ نو سال بعد چائے اپریل کے صفر کا مہینہ بخاری سے مطابقت پائے گا وہ اسکی یہ ہے کہ چاند زمین کے گرد ۲۹ روز ۱۲ گھنٹے ۲۴ منٹ ۶۸ ثانیہ تک میں اپنا دورہ چکر کر لیتا ہے اسکے معنی یہ ہیں کہ چار فرض آفتاب کے محاذ آکر جب دوسری مرتبہ اسی نقطہ واپس آتا ہے تو اس کو ۲۹ روز ۱۲ گھنٹے ۲۴ منٹ ۶۸ ثانیہ تک صرف کرنا ہوتے ہیں اور یہی باعث ہے کہ رویت ہلال بھی ۲۹ روز اور بھی ۳۰ روز میں ہوتی ہے اور اسی کلام قمری مہینہ ہے اسکے اہتمام سے قمری سال تقریباً ۳۵۵ دن کا ہوتا ہے اور اس لئے سال شمسی سے ہر دس عام تقییبی کم ہے یہی کمی ہر چوتھے سال یعنی تین برس کے فتنم ہونے پر بعد ستان میں ایک لونڈا کا مہینہ اضافہ کر دینے سے پوری کر لی جاتی ہے حالانکہ اسلامی سال قمری میں بھی کسی تقییبی ضمیمہ کی جاتی اور اس لئے ہمیشہ ہر سال دس اور بھی گیارہ روز کی کمی سے مہینوں اور موسموں میں اختلاف ہوتا رہتا ہے۔

لب نمود طلب یہ امر ہے کہ آیا یہ ظاہری نقص اسلامی سال قمری کا اور حقیقت عیب ہے یا ثواب ظاہر اس میں کوئی نکتہ نہیں کہ سال شمسی میں تغیر اور تبدل موسم وقت معینہ پر ہونے پر ذرا امت اور تہارت میں کافی امداد ملتی ہے اور وقت پر کاشت و لغیرہ کا انتظام کر لیا جاتا ہے لیکن دراصل ذرا امت کے لئے مہینوں کا جاننا کوئی ضروری شرط نہیں ہے بلکہ اس کا اہتمام موسم کے تغیر پر منحصر ہے مثلاً ہندوستان میں جو کوئی کامینہ آہنا اس لئے کافی نہیں ہو سکتا کہ کاشتکار لوگ تغیر ہی شروع کر دیں بلکہ اس کے لئے ہادش کا ہونا اذنی ہے چنانچہ او حریبدش شروع ہوتی قبل یعنی اہل چاہارائی کا کام جاری ہو گیا اگر ہادش نہ ہو تو جو کوئی اور اگست سب سنی اور جون کے درمیان میں اسی طرح اہم ہادش فتنم ہونے کے بعد جب دست بدلی ہوئی معلوم ہوتی ہے اور سردی کا آغاز ہر عالم اور جاہل کو یکساں طور پر محسوس ہوتا ہے تو لوگ سرمایائی انتظام میں مصروف ہو جاتے ہیں

اور کاتھارونگ فصل ریح کے دنے میں سمائی جوتے ہیں اور ان کو اس امر کے جانے کی ضرورت لاحق نہیں ہوتی کہ اس مینے کو انگریزی میں کیا کہتے ہیں اور ان میں اس کا کیا نام ہے۔

الفاضل جو ٹوٹی کا ہر سال ششی میں فخر آتی ہے اس پر کار بدار نیلوی کا انحصار نہیں ہے بلکہ تغیر موسم پر ہے بلکہ اس قدر ضرورت بھی صرف ہندوستان میں محسوس ہوتی ہے جہاں تین موسم مقرر ہیں حالانکہ تمام دیگر ممالک میں بارش کے اوقات عموماً غیر صحیح ہیں کہیں تو بارش ہوتی ہی نہیں اور کسی ملک میں ہوتی ہے تو کوئی دن خالی نہیں جاتا اس لئے ظاہر ہے کہ سال ششی کا وجود جس قدر کہ انضباط اوقات کیلئے ضروری ہے اس قدر لوازم زندگی کیلئے ہبہ نہیں اور اگرچہ چند پہلوؤں پر نظر ڈالنے سے اسکے فوائد مان لے جائیں تو سب سے مشکل یہ امر پیش آتا ہے کہ تمام عالم کے مذہب اور غیر مذہب عالم اور چائلڈ اور انٹ کے لئے کون ذریعہ ہے کہ جس سے وہ صحیح حساب تواریخات ششی کا کریں اور اگر ایک مینے کی ایام شماری میں غلطی پڑ جائے تو کس قدر ترقی علامت سے وہ اپنی جہتوں کو صحیح رکھ سکیں فرض اس تقریر سے یہ ہے کہ جب تک مصنوعی ذرائع مثل ہنتری وغیرہ کے نہ حاصل ہوں یا ہر ملک و قوم میں چند مہم اور جو تھی نہ ہوں جن پر ہنتری کا مدار ہوا اس وقت تک عوام کیلئے کوئی فطرتی اور قدرتی ذریعہ نہیں ہے کہ سال ششی کا اجرا ہو سکے چنانچہ باوجود عظم و فضل کے ہندوستان کے قدیم علماء نے بھی اگرچہ سال ششی بتایا کہ تک ہندوستان میں بالخصوص فصول عبادت کے باعث اسکی ضرورت تھی لیکن ذریعہ حساب لگانے کا چاند ہی کو قرار دیا اور اس کے دور کی کمی کو برتین جس میں ایک مینے اضافہ کر کے رفع کر دیا لیکن اسلام نے جو تمام عالم کیلئے یا نورسل رہنمائی ہوئے کا دعویٰ کرتا ہے اس لئے کہ مینے کو بلا جانے کی ممانعت فرمادی اور ہم دیکھتے ہیں کہ اس اقلت کی فلاسفی آج قدرانی معلومات نے سہایت خوب صورتی سے بتا رہی ہے اور سال قمری سے ہر مسلمان کو خوبوہ خواہ وہ ہوا یا ناخواہ وہ ہندوستان کے سرسبز میدان میں ہو یا عرب اور صحرائے اعظم افریقہ کے تنق و ترقی دیکھ جان میں جلال دیکھ کر اپنے مینے کا حساب لگانے کا طریقہ ایسا سہل بتا دیا ہے کہ اسکو اس معاملہ میں نہ پڑتے ہی سے

پہلے کی ضرورت ہوتی ہے نہ جہزی کو اٹھ پلٹ کرنے کی باہر اکثر اسکو جہزیوں کے مصنوعی حساب کے دعوے پر جو رویت ہلال سے متعلق ہوتے ہیں خندہ زنی کا موقع ملتا ہے اب یہ دیکھنا پاتی ہے کہ لوہرات زندہ کی میں سے جن کیلئے تعین لوقات کی ضرورت ہے زراعت عبادت اور ملازمت کے علاوہ عبادت بھی ایک لازمہ امر ہے جسکو ہر مذہب میں لوقات تعین ہیں اور ان میں روزانہ کی پہلی ضرورت مطلقاً ہے اور عبادت کیلئے ہر مذہب میں لوقات تعین ہیں اور ان میں روزانہ بھی ہیں اور سالانہ بھی چنانچہ سالانہ لوقات مقررہ میں سے وہ اس وجہ کی عبادت ہیں جو لاکھانہ اسلام میں داخل ہیں یعنی روزہ اور حج روزے کے لئے ایک مہینہ مقرر ہے اور حج کے لئے بھی ایک دن خاص کر دیا گیا ہے جانا اس لئے کہ جو بیاد مٹی موافقت ہے یا کوئی اور مصلحت مانگ حقیقی کے علم میں ہو پھر حال تعین وقت کسی نہ کسی صورت ہر ایک انہما کے مذہب اور طریقی عبادت میں موجود ہے پس جانتے غور ہے کہ اگر ماہ صیام کیلئے طحا سال شمسی ٹھنڈے اور چھوٹے دن مثلاً دسمبر یا جنوری منتخب کئے جاتے ہیں یعنی مارچ اور ستمبر کے مہینے تو اسلام ہر سال یہ اعتراض وارد ہوتا کہ سموات کیلئے کیا اچھے دن چھانٹے ہیں اور اگر اس لحاظ سے پیش کیلئے اپیل سے لے کر اگست تک کے کوئی تیس روز پھندا کر لئے جاتے تو ان ایام کی باجھل برداشت ظہنوں سے کبھی نہ کبھی اہل مذہب کے دل میں یہ کلکا گذرنا کہ دیدہ واری کیسی سخت اور مشکل کر دی گئی ہے کہ روزے کے ایام پیش کے لئے ایسے وقت میں کر دیئے ہیں کہ آسمان جتنا ہے اور زمین اتنی ہے فرض سال شمسی کے لحاظ سے حج اور ماہ صیام کا تقرر کبھی خالی از اعراض نہیں ہو سکتا لیکن یہ مانگ جو وجود سال قمری کی فوقیت کے ہیں وہ معلومات قدیم کی بنا پر ہیں لیکن مجھے یہ دکھانا ہے کہ جدید جغرافیائی معلومات نے اس مسئلہ پر کہاں تک روشنی ڈالی ہے چنانچہ اس علم کے باہرین جغرافیہ واقف ہیں کہ خط استواء کے لحاظ سے زمین کی تقسیم نصف کرہ شمالی اور نصف کرہ جنوبی میں ہوتی ہے اور چونکہ آفتاب چھ مہینے شمال میں اور چھ مہینے جنوب میں خط استواء کے رہتا ہے اسلئے دونوں کرہوں میں ایک ہی وقت میں موسم برعکس رہتا ہے یعنی اگر نصف کرہ شمالی میں گرمی ہے تو جنوبی میں چارہا

گویا جون کا مہینہ یورپ ایشیا شمالی امریکہ شمالی افریقہ میں سخت گرمی کا ہوتا ہے تو جنوبی افریقہ جنوبی امریکہ اور آسٹریلیا میں گزا کے کے چارے کا ہوتا ہے اس لئے کہ ظاہر ہے کہ اگر سال شمسی کے حساب سے کوئی مہینہ مقرر ہو تو آوغی دیا بیسٹ اکیف میں رہتی اور وہ سری نصف آرام میں۔ کیونکہ موسم کے ساتھ طوائف میل بہ نماز میں بھی تفاوت ہے یعنی موسم گرما میں تابا حصہ دیا میں ۱۲ گھنٹے سے لے کر ۲۰ گھنٹے تک کا دن ہوتا ہے اور خلاف اسکے موسم سرما میں ۱۲ گھنٹے سے لیکر ۱۳ گھنٹے تک کا دن رہ جاتا ہے اسکے معنی یہ ہیں کہ اگر جون کا مہینہ ماہ صیام ہو تو نصف کرہ شمالی کے باشندوں کو طاوہ چشمہ حرارت اور تقنی کی شدت برداشت کرنے کے چودہ افرادہ اور تیس گھنٹے تک روزہ رکھنا چاہیو اور کرہ جنوبی میں باوجود سردی کے چھ یا آٹھ گھنٹے تک پیش و لذت دیلای ترک کرنا کافی ہو گا اور یہی ایک مسئلہ صحت کر دیا کہ نغوذ بانہ جس نے یہ قاعدہ قرار دیا ہے وہ خود کرہ زمین کی ساخت اور اس پر موسموں کی کیفیات اور تغیرات سے واقف ہے اور وہ مذہب جس میں ایسا قاعدہ ہو ایک لوکل یا مختص القام مذہب ہے نہ کہ یونور سل یعنی عالمگیر اس اشکال کو سال قمری ہی نے طے کیا ہے اس کے مینے پچیس برس تک ہر شمسی موسم کے حصہ میں سے گزرے ہیں اور اگر ایک زمانہ عہدت گرمیوں میں آتا ہے تو چند سال بعد فصول میں اور پھر یہاں میں چنانچہ ہر ۳۶ سال کی مدت میں نصف کرہ شمالی اور نیز جنوبی میں ماہ صیام ہر موسم کے ہر حصے میں گزر کر ایک ایسا بدل کی صورت پیدا کرتا ہے جس سے صاف روشن ہے کہ دین اسلام جس وقت کے نزدیک دین حق ہے وہ وقت پاک ہے جس کو حکیم مطلق اور خداوند حق کہتے ہیں جو مالک اور صانع ہر شے کا ہے اور جو تمام امور عالم سے ذولی واقف ہے اور علیہ اصول صرف اس سیکھو حکیم کی آہنی مدد سے قائم ہو سکتا ہے جو اس زمین کا پیدا کرنے والا اور صانع ہے ورنہ جس زمانہ میں دین اسلام چکا ہے اس وقت نہ جنوبی امریکہ معلوم تھی نہ نرسواں اور آسٹریلیا کا وجود تھا نہ نصف کرہ شمالی و جنوبی میں اختلاف موسم کی حد درجہ تھی علیٰ ہذا لایاں لام حج بھی ایک موسم پر منحصر نہیں ہیں اور روزہ روزہ ہر موسم میں آتے رہنے سے تہاج کو ہر موسم میں سفر کرنے کا موقع مل سکتا ہے

پس وجہ بات خدا کرہ بالا سے ظاہر ہے کہ مسلمانان عالم کے لئے پورے عدل کے ساتھ سال قمری ہی موزوں ہو سکتا ہے نہ کہ سال شمسی فقط۔

ضمیمہ نمبر ۲

مقولہ مشیر مراد آبادیہ ۱۸ نومبر ۱۹۱۳ء

لا تعلق باب الموعۃ حتی تطلع الشمس من مغربہا

حدیث صحیح میں سے ایک حدیث ہے جس کے باوجود معنی یہ ہیں کہ جب تک آفتاب اپنی جائے غروب سے طلوع نہ کرے گا اس وقت تک قہر کا روزہ بند نہ ہو گا یعنی ہر غنکار کی قہر اس وقت تک قبول ہو جاوے گی جب تک آفتاب اپنی جائے غروب سے طلوع نہ کرے گا اور جب ایسا ہو جائے گا۔ تو پھر باپ قہر بند ہو جائے گا۔ اور کسی کی قہر قبول نہ ہو گی یہ ایک ایسی حدیث ہے کہ نہ تو جس کی صحت میں شک ہو سکتا ہے اور نہ یہ اپنے میں پر شیدہ طور پر کوئی ایسے معنی دے سکتی ہے کہ جو کچھ سولت پیدا کریں اب وہ موقع ہے کہ جس کو بجز ایک نئے اسلامی قومی کے ہر ایک تعلیم یافتہ نوجوان اور آزاد طبع شخص چاہے وہ فلسفہ سے کچھ نسبت رکھتا ہو یا نہ رکھتا ہو اور طولاً سائنس کے نام کے سوا اور کچھ بھی نہ جانتا ہو یقیناً یہ کہ اٹھے گا کہ (معاذ اللہ نقل کفر کفر ہاشد کئی احوال لایہ کبھی اعلیٰ منطلق ہے اور یہ کبھی اسلامی پیشین گوئی ہے اور کس طرح اسلامی فلاسفر اور علماء ریاضی و انہاس پر اعتماد رکھتے ہیں نہ تو محض ہی اس کو تسلیم کرتی ہے اور نہ مشاہدہ ہی اس حیل کو درست ثابت کرنا ہے اور ہمارے آریہ بھائی اگر کہیں اس حدیث کو من پادہیں گے تو جنت سے قانون قدرت کا لٹھ اڑا کر اپنی دہریت فلک لٹاپنے لگیں گے اور مسائل جنت کے تھوڑے سے جاننے والے بھی کتنا شروع کر دیں گے کہ مغرب سے طلوع آفتاب کے کہا معنی بھلا کیا مغرب کسی خاص شہر کا نام ہے روزانہ کا مشاہدہ اور تجربہ تو ہم کو بتا رہا ہے کہ ہر ملک کا مشرق اور مغرب جدا جدا ہے اور روزانہ ہر ایک جگہ کا نقطہ مشرقی و نقطہ مغرب بہ لٹا رہتا ہے تو پھر

ہو کون سا مغرب سے جس سے قیامت نے دن آفتاب طلوع کرے گا اور اگر ہر روز کا نقطہ مشرق
نقطہ مغرب ہو کر طلوع آفتاب ہونے پر قیامت آنا چاہئے تو چوبارہ تک ہر درجہ کے باشندوں
کے واسطے جدا جدا قیامتیں ہوتے ہوتے (۱۸۰) روز میں (۱۸۰) قیامتیں ہوں گی جو سال پر ہر
اسی قسم کے صد ہا غزوات آنے تک سے آزادی پسند اصحابِ مخیر صاف علیہ الحیات کی اس بچی
ناشین کوئی پر کرنے کو تیار ہو جائیں گے اور علومِ جدیدہ کے شیدائی تو ممکن ہی نہیں ان مسائل پر
جو قطعی اور یقینی طور پر نہ ثابت ہو جائیں بلکہ تحقیقاتِ جدیدہ سے میں اہل حق کے ارادہ پر نہ تنقید
جدا میں اعتبار کریں ان کو وہی آسانی پر ہی اعتبار نہیں بلکہ ہم لوگوں کو (جو ایسے مسائل کو اچھا جزو
ایمان سمجھتے ہیں) تو آزادی پسند اصحابِ اہم پر سب باندھنا ہی حکمِ سلطوں کا پابند کہتے ہیں اور خود ان
میں سے اصل حضرات اپنے پیغمبروں کے خیالی عزیز و اقارب ہر روز گوں کے لحاظ سے سال الفطرت
میں کبھی نہ ہی مسئلہ کی گنجی نہ کریں اور اسکی تفسیر و تہلیل پر علی الامان آواز نہ ہو جائے مگر بالحقین
ہو اپنے دل میں تو ایسے مسائل کو حکمِ سلطوں خیالی کرنے میں ایسی صورت میں سخت ضرورت اس
امر کی ہے کہ زمانہ خود ہی جیسے ظلمین پیدا کرے جو اسلامی مسائل کے ساتھ ہی علومِ جدیدہ کے
بھی ماہر ہوں اور وہ اسی طرح اسلامی کا لحاظ موجودہ فلسفہ سے کریں جس طرح امام غزالی و امام
رازی وغیرہ نے قدیم فلسفہ کو مذہب کے مطابق کر کے اس کو مذہب کے تابع کر دیا

لہذا میں اپنے اصل مطلب سے کس قدر دور نکل گیا کیونکہ میرا مدعا طلوع آفتاب از
مغرب ممکن بلکہ لازم ثابت کرنا تھا اور یہاں میں کچھ اور ہی بیان کرنے لگا۔ لیکن جناب اگرچہ
مغرب سے آفتاب کا طلوع ہو ناظاہر نہایت ممکن اور سخت حمید لائقاں ہے جو ظاہر اہل حق ہماری
خوش عقیدگی پر محمول کیا جاسکتا ہے مگر حضرت خود اور مسائل میں تحقیقاتِ جدیدہ ہماری نہ تھی
طور پر مخالفت کرے اور مذہب کو حق و ہستی سے اکھاڑنے کے واسطے تیار ہو جائے مگر اس مسئلہ میں
تو ہمارا وہ جو سر پر چڑھ کے نالے کے ”کے مصداق تحقیقاتِ جدیدہ ہی ہمارا ہاتھ پائی ہے اور وہ ہی
رہنمائی کر کے ہم کو اپنی جرات دہاتی ہے کہ ہم طلوع آفتاب از مغرب ممکن ہی نہیں بلکہ ضروری

اور رات چھتے کرنے کو تیار ہیں اور وہ اس طرح کہ آج یہ مسلمہ ہر سے کہ مشرق و مغرب نفس فرض اور نسیحی نام ہیں نہ پتہ اور یہ کہ ہاے ظنون آفتاب و مشرق اور ہاے خروپ آفتاب کو مغرب کہتے ہیں اور سال ہر نیت یا مشرق و مغرب ہو تا رہتا ہے جس کی ابتداء اول سلطان سے اور ایسا آخر قس تک ہوتی ہے جانی ۲۵ جون سے ۲۵ ستمبر تک (۱۵۲۱ھ) میں ہر روز تاج مشرق اور تاج مغرب قدرت نے ہوا ہے سو جب عرض ہند کے پھر چہ کہ آفتاب اپنی شعاؤں سے ۹۰ درجہ مشرق اور ۹۰ درجہ مغرب کو کسرے زائد روشن کرتا ہے اس سبب سے روزانہ نقطہ مشرق یعنی مغرب ان لوگوں کا ہے جو ہم سے بارہ جزائر میل اور پ میں آباد ہیں یہ الخفاف مشرق و مغرب سو جب طول بلد کے ہے یہ تو اس قدر مطلق کی روزانہ کی قدرت نہ لگائی ہے لیکن جس مغرب سے ہم کو حصہ کرتا ہے حقیقاً یہ وہ مغرب نہیں ہے اور ممکن ہے کہ بعض اصحاب اس مثال کو نہ مانیں کہ اس سے انوار اہل ماجست نہ ہو اللہ اسکو ہم اپنی ہی حالت پر پھوڑتے ہیں اور اس صحیح مغرب کو آپ نکالتے ہیں جنکی بات خبر صادق علیہ الصلوٰۃ والسلام نے پیشین گوئی فرمائی ہے مجھے ان اصحاب سے کوئی حصہ نہیں جو طلقت عالم ہی کے قائل نہیں ہیں اور دنیا خیال ہے کہ یہ عالم اپنا تک اور تحقیق پورا ہو گیا ہے کیونکہ ان کے اس خیال باطل کی تردید ایک ملحدہ چیز ہے۔ اور ایسے منکرین وہ برعین کی قلبی حقیقتات جدیدہ خود ہی کھولتی جاتی ہے لیکن وہ شخص جو آفتاب کو قدریمہالذات نہیں مانتا پسہ مخلوق اور اعلیٰٰت جانتا ہے اسکو یہ بھی ضرور ماننا چاہئے گا کہ سب سے اول روز یعنی عین وقت پیدائش آفتاب نے کسی ایک نقطہ سے طلوع کیا ہو گا پس سب سے پہلے آفتاب نے جس نقطہ سے طلوع کر کے اپنی شعاؤں سے سطح زمین کو روشن کیا وہی نقطہ مشرق حقیقی آفتاب کا ہے اور عدل فی القسم کی رو سے چوتھ دن اور رات کو مساوی زمانہ ملنا چاہئے یعنی رات دن میں سے ہر ایک پورے بارہ گھنٹے کا ہونا چاہیے جیسا کہ سالانہ میں دوبارہ ۲۱ مارچ و ۲۳ ستمبر کو ہوتا ہے اور ان دونوں تاریخوں کو اکثر بلد۔ مشہورہ میں دن رات مساوی طور پر پورے ۱۲۔۱۳ گھنٹے کے بعد جس نقطہ پر آفتاب آیا ہو گا وہی حقیقی مغرب اس کا ہے جس کا علم خداوند عالم کو ہے کہ آفتاب کا اصلی مغرب یہی

یہ اب قابل ملاحظہ یہ امر سے حدیثِ مقدس میں بھی من معربھا لرشاہہ یعنی اپنی جاسے معرب سے نہ کہ یوں فرمایا گیا ہو کہ من معربکے معنی تسماءے معرب سے انہ اپنے معرب اور تسماءے معرب نے صاف کر دیا کہ صحیحاً ہمارا معرب تو محض فرضی اور نسبتی ہے اس وجہ سے کہ اس عالمِ علم کی علیہ الحقیات وعلما کے علم میں یہ امر اس وقت موجود تھا کہ ہر طبقہ کے رہنے والے مسلمانوں کا معرب جداگانہ ہے لہذا معرب کی اضافت اسی آفتاب کی طرف فرمائی گئی جس سے مراد اصلی یہ ہے کہ جس روز آفتاب کو موجود کر کے خلاقِ عالم نے پہلا مطلع اور مشرق پھلایا تھا اسی اعتبار سے پہلا معرب جس نقطہ پر ہے روز قیامت آفتاب اسی نقطہ سے طلوع کرنے کا اور دنیا ملت پلٹ ہو کر مشرق کا معرب اور مغرب کا مشرق ہو جانا بھی ہو سکتا ہے یوم تبدل الارض غیر الارض (اسی روز کے بعد یہ زمین دوسری زمین سے بدلی جائے گی یا یہ بات تو ثابت ہو گئی کہ حقیقی مشرق و مغرب آفتاب کا کوئی ایک خدا کے علم میں ہے لیکن یہ بات اہم ہوتی ہے کہ طلوع آفتاب مغرب سے کیونکر ہو گا اور یہی ذرا مزید سمجھ کر ہے جس کا یقین علمت مشکل ہے لیکن خدا کا شکر ہے کہ تحقیقات ہدیہ نے اس معرہ کو بھی حل کر دیا اور آج سے ساڑھے چار سو برس قبل سے اس کا پتہ پتلا ہم کو شروع ہو گیا ہے کیونکہ تحقیقات ہدیہ نے ساڑھے چار سو سال ہونے کے ہم کو ایک ایسا پتھر دستیاب کر لیا جس سے ہم نے قطب لہلہایا اور اسی پتھر کے ذریعہ سے خط شمالی قائم ہو گیا بعد اسی خط پر دوسرے خط مارنے سے پاروں سمتیں صحیح طور پر قائم ہو گئیں اسی کا صدقہ تھا جس کے ذریعہ سے ہمیں نے علم جہانزدانی میں بہ ترقی دکھائی اب آپ اگر لندن و پیرس کی رصدگاہوں میں چل کر موجودہ زمانہ کے بیست دانوں سے دریافت فرمائیے تو وہ آپ کو حال کی تحقیق اور اس وقت کے مشاہدہ و تجربہ سے بتا دیں گے کہ قطب نما کی سوئی شمال سے مشرق کو تپتی جاتی ہے۔ تحقیقات ہدیہ کی رکت سے یہ بات آج ہم کو معلوم ہوئی ہے کہ قطب نما کی سوئی شمال کی جانب سے مشرق کو بہت رہی ہے یعنی نقطہ شمال جو آج سے ساڑھے چار سو سال قبل تمدنی شمال نقطہ کچھ صدیوں بعد نقطہ مغرب بنائے گا جب ایسا ہو گا تو لازمی امر ہے کہ نقطہ مغرب نقطہ جنوب اور نقطہ

مغرب نقطہ جنوب اور نقطہ جنوب مشرق بنائے جس کی مطلب اس حدیث مقدس کا ہے کہ
 خدا نے قارہ مظلومہ المروج کو معتدل المنہار پر منطبق کر کے بیچم کو پارہ بنوایا۔ ہاں آج سارا سے چار
 سو سال سے یہ بات معلوم ہوئی کہ نقطہ شمالی مغرب کو بتا جاتا ہے لیکن اس سے پہلے کا علم صرف
 اس عدم الجنوب کو ہی ہے کہ مشرق حقیقی آفتاب کا کونا نقطہ ہے اور اس کو اب کتابت حقیقی مغرب
 والے نقطہ پر پہنچنے میں باقی ہے۔ اگر لائن بصری کی رصدا کا یہاں اور وہاں کے بیت روئی ہم کو یہ
 نہ دکھائے کہ قلب لڑائی سوائی شمال سے مغرب کی جانب آہستہ آہستہ رواں ہے تو کبھی یہ سورہ حل
 نہ ہو تا اور ہمارے زمانہ کے مذہب سے لاپرواہہ نو جوان کسی طرح اعتبار نہ لاتے کہ یہ حدیث
 مقدس صحیح ہے اور قریہ حضرات قبلہ لاتے کہ وہ انجلی تعلیم اسلام کی ہے مگر خدا کا شکر ہے کہ
 اسے جدید تحقیقات نے جو مخالفین مذہب کا ذرا دست آگ ہے اس مسئلہ کو نہایت خوبی سے حل
 کر دیا۔

نوٹ از احقر: لیکن بعض روایات میں جو اس طلوع کی کیفیت آئی ہے اور یہ کہ بارہ ستور
 مشرق سے نکلے گئے گا یہ تو ہمہ اس پر منطبق نہیں ہوتی یہ روایات بھری کتبہ میں عقل کی گئی ہیں مگر
 تاہم اگر کوئی شخص بدن اس تو یہ کے اس کو نہ سمجھ سکے اور وہ جتنے ہی جزو کون لے کہ طلوع جس مغرب
 سے ہو گا کہ یہ جزو اعداد کثیرہ میں وارد ہے اور انکی کیفیت کی روایات کو جو کہ اس درجہ کی نہیں ہے
 بہت نہ سمجھے تو جزو اول کے اعداد سے تو قیمت ہے نہ اصل جواب یہ ہے کہ جس نے ریاضی کے یہ
 مستر قائمے مانے ہیں وہ ان کو جب چاہے ایک دن کیلئے یا بہت کیلئے بدل بھی سکتا ہے اور جن بعد اسلئے
 اظہر عدیلا سے اگر کسی کو شبہ ہو تو وہ سمجھ لے کہ اس تبدیلی کا فاعل غیر اللہ ہے کہ وہ اللہ کی سنت کو نہیں
 بدل سکتا تھا۔

ضمیمہ نمبر ۳

مقالہ از کتاب نمبر ۳۳۳ حدیث قرآنیہ المرقومہ احقر

ایہ ایک رسالہ ہے جس میں اعمال کی قبلی و ذنن پر اس شبہ کا کہ وہ عرض میں اور ذنن کے لئے جو ہریت

تو دے تعلق ہوا ہے

دار صبی الاخوان فی حوص الاعداء من عدال العارف الخلال

یعنی غلام مضمون افکار، ایں، اتھ، تو، دو، سو، تھی، تم، کا، ص، صدق، ۱۰۰۔۔۔ دار خود ایں جن کا وردہ صبر
مشکل ہے صرف تعلق اقبال، بقایا، اسے سو رہا ہے، اتھ، ہے۔۔۔

شہ کلت انوں راتن تو رہا	چند ولی کن ایں راتن تو
تو چہ لوی چہ لوی کرہ	ایک سویا چہ سو گورہ
ہو مرگ ایں حسن تو داخل ہو	گور ہوں لوی کہ یار دل شہ
درد کہیں چشمہ خاک آگہ	سست آہی گور را روشن کند
نور دل از چاہ اسے یادگار	سستہ تھی راتن اسے سست یاد
تھی زبان کیں، سست یاد برہ	یہ بات سست تا چاہی برہ
تھی زبان کیں چاہی مع ال نامہ	چاہ باقی باہت در چاہی نشانہ
شرط من پہلا کس نے کر، اسے	تھی حسن واسوئے شعرے مدوح اسے
جوہر سے لوی بلانسان یا شری	ایں غورہا کہ فکا تھ چہ لوی
ایں عرض بانمانہ و ذرا	پونگہ کا حقی نامن اٹھا
تھی تھی کہ مر اعراض را	ایک لہ جوہر درخا ہر اعلیٰ را
تا بہ دل گشت جوہر زین عرض	چہ لہ پر بیزی کہ ناکہ شد مرض
گشت پر بیز عرض جوہر عمد	شد وہاں سچ لہ پر بیز شد
لوزداعت تا کا شد سبب	دلوئے سو گورہ سو را سلسلہ
ایں نفع کن مرض بہ شد کا	جوہر لوزد حاصل تھ نامہ
نہت کردن اسپہ اشتر اعراض	جوہر کہہ ہا انہوں عرض
ہست تھی ہستی نشانوں ہم عرض	گشت جوہر بیو اہل ایک عرض
ہم عرض، ایں کی یاد دل نگار	جوہری دل کی یاد گشت یاد
صلی کردن عرض باشد تھی	زین عرض جوہر ہی ذلیہ عطا

ہیں تو کہ میں صلیب - دوام

اسی صفت لہن عرض باشد عشق

گفت شبابے تو را عقل نیست

با شادان کہ پاس نہ دہیست

گر بود مروض را عقل حشر

ایں عرضا نقل شد لہن و کر

نقل بر چہ سے بود ہم لائق

وقت محشر بر عرض را تصور تہ

ہزار اندر خواہ کہ تو ہدی عرض

ہزار اندر خاک و کاشانا

کاشاں خاند کہ باہر ہم خوش

از مندس آں عرض دانہ نشا

چسبہ حاصل دہی ہر چو

بہلہ از آئے جہاں رہے عرض

ہول فکر آہ آرزو حاصل

میوہ فکر و دل ہول و

چوں گل کردی شہر بخودی

گرچہ شاد شد کہ غلغلا است

بہں مرے کہ مگر آں خاک ہد

نقل اعراض سے اس صفت مقال

بہلہ عالم توہ عرض ہد نہ تا

ایں عرض ہلاچہ زانیہ از صور

دلیں تو اعراض را سا مرہ

سایہ در ایسے تہاں مہلی

آرہ فرمان عرض را عقل نیست

روض کہاں رفت بہ آئندہ نیست

نعل ہدی باطن باقول فشر

حشر ہر قہنی ہد کون و کر

لائی گل ہد ساہل

صورت ہر ایک عرض را تو جہت

جہش جہش ہجرت ہا عرض

در مندس وادچوں ایشانا

وہ سوزوں سفا و سلف اورش

آہت آہر دوستوں از بیلیا

بز خیال و از عرض دانہ

در مگر حاصل نہ شد جز از عرض

جہت عالم خیال دلیں اور لذل

در عمل ظاہر باخبری شہ

اندہ آکر حرف ہول خواندی

آں بہر از بہر میوہ حاصل است

اندہ آکر خواہیہ لولاک ہد

نقل اعراض سے اس صفت مقال

اندہ میں سستی بیا مدلیں اتی

ہاں صور ہم لاپہ زانیہ از فکر

اس میں ایک مگر تھوڑا عقل کل
 عالم دل چاہتا تھا
 پا کرت تھا شہادت کی کہ
 بد حالت ہوں بدست ثابت کرو
 اس میں عرض ہوا ہر آں بد است الطیر
 اس میں عرض ہوا ہر آں بد است الطیر
 یعنی یہ شاہ نے عرض امتحان اس حکام کے اس سے سوال کیا اور امتحان کا قرینہ یہ ہے کہ آخر قصہ
 سے کہ بد شاہ نے دونوں حکاموں کے افعال سے استدلال کیا ان کے اخلاق پر اور حسن السیرۃ کو
 اسکے اخلاق دوسرے کے سبب ہر دو اس کی فتح صورت کے متداول کیا اور یہ استدلال اور اسکے مختلفہ کا
 احوال یہ کام عارف ہی کا ہے پس عارف کا سوال ظاہر ہے کہ امتحان ہی کے سبب ہو گا۔ وصرح
 بكونه امتحاناً بعض المحسنين على قوله فكيف - بمباراة المشايخ چون شاہ اختیار اور کرو
 معلوم کرو کہ لو عالم السررت اربع ۱۳۔ شاهدته الخ الواقع بعد الاشارة المذكورة متصلاً
 ویدل علیہ قولہ بنفسه حق بمن بنمود و قولہ لونه شامی وہ مکہ من دائم تمام الواقع
 بعدھا غیر متصل۔ اور وہ سوال یہ ہے کہ تو اپنا تو پاکو حال بیان کر کہ تو نے اپنی روح کے حسن
 کرنے کی کیا کوشش کی ہے اور اسکی ضرورت بلور لفظ کے ایک آہ سے بلور تفسیر خاص
 بیان کی کہ حق تعالیٰ نے من جاء بالحسنة فرمایا ہے من عمل الحسنة میں فرمایا جس سے
 اقرب یہ ہے کہ یہ حث عمل نہیں بلکہ مصدر عمل یعنی روح انسانی ہے جسکو اعمال سے حسن بنا
 کر دیا، حق میں لانا چاہیے کیونکہ تو دن کا متعلق جو ہر ہو سکتا ہے نہ کہ عرض کیونکہ المعرض
 لاحق فی آئین پھر تو دن اسکے متعلق کیسے ہو گا نیز اگر عرض ہو متعلق من عمل الی عمل اور تو
 دن ایک نفس ہے لہذا اگر عرض یعنی اعمال کھل یعنی جو ہر اس روح کے ہو سکتے ہیں اور دن اسطرح
 من قول چون زہر ہیز سے الی قول صحیحی کر ان اربع حکام نے جو جواب دیا کہ تم جو بد من نقل اعراض
 سے استدلال کرتے ہو یہ استدلال ناقص ہے جو یہ مقدمہ ہی جلت نہیں پس نقل

ممکن ہے کہ عدم احتمال بھی ممکن ہے مگر ان دونوں معنوں میں نقل لوائی بالقول ہے کیونکہ عدم نقل کا قائل ہو، مصلحت عامہ کے کہ وہ جب نہیں گئے کہ حدیث سے افعال آخرت میں نہ جائیں گے کم فہمی سے باجوس ہو جائیں گے اور عقل میں سستی کریں گے جس طرح بعض احادیث ہمشرہ کو اسی سستی کی مصلحت سے ہندے ظاہر نہیں کیا گیا آگے بیان ہے امراض کے امکان عقلی کا جس کا حاصل یہ ہے کہ اس کے اقتناع کی کوئی دلیل نہیں اصلی جواب تو اسی قدر ہے باقی اسکی توضیح ہے۔

حاصل اس کا یہ ہے کہ نقل افعال میں عقلی امکان صرف یہ ہے کہ یہ نقل امراض یعنی افعال من اللہ نیابتی بالآخرہ کو سبھا لئو ضوع تو ظاہر الجواز ہے لیکن جس طرح نسوس سے جسد ہے کہ مثلاً ان کا وزن کیا جلدے کھور ظاہر ان نسوس سے یہ ہے کہ عامل کا وزن نہ ہو گا۔ پس یہ نقل سبھا لئو ضوع نہیں ہے پھر اس میں دو احتمال ہیں یا تو باعراض امراض رہیں گے یا مستغنی الی الجواہر ہو جائیں گے دونوں شق باطل ہیں اول اس لئے کہ نقل امراض بلا موضوع محال ہے دوسرا تسلطے کہ عرض کا جو ہر چنانہ محال ہے پس یہ ہے اس میں اشکال عقلی سو اس کا جواب باعتبار شق چائی ہو سکتا ہے اور ہم اسکا احتمال نہیں مانتے۔ ضد منع یہ ہے کہ ہم خود دنیا ہی میں دیکھتے ہیں کہ اختلاف موطن سے ایک ہی چیز عرض و جوہر ہو سکتی ہے مثلاً صورت علقہ جوہر کی کہ ذہن میں عرض ہے کیونکہ موجود فی موضوع ہے اور خارج میں جوہر۔ کیونکہ موجود لائی موضوع ہے اور دونوں کی حقیقت ایک ہی ہے اگرچہ بعض ہی کے نزدیک سبھی جوہر کا گل ہیں حصول اشیاء فی الذہن یا نفسیہا کے اور کو عقل نے عرض و جوہر کی تفسیر میں لا الوجودت فی التدرج کی قید لگا کر اس صورت ذہب پر عرض پر صادق آنے سے انکار کیا ہے مگر اس سے ہمارے اصل مقصود میں عقل نہیں آتا کیونکہ قول حصول اشیاء یا نفسیہا پر حقیقتاً واحد ہی کا وجود فی موضوع فی موطن اور وجود لائی موضوع فی موطن تو ثابت ہو اور یہی اصل مقصود ہے۔ تو لہذا اس کا نام کچھ ہی رکھ لیا جائے پس جو نسبت ذہن کو خارج کے ساتھ ہے اگر وہی نسبت خارج دنیا کو خارج آخرت کے ساتھ ہو اور اس وجہ سے یہاں جو اشیاء موجود فی موضوع ہیں وہ وہاں موجود لائی موضوع ہو جائیں تو اس میں کیا احتمال

ہے چنانچہ اہل کشف نے اس عالم شدت پر مقابلہ عالم غیب کے فقط ذلیل و خیرہ کا اطلاق کیا بھی ہے ایسی اشیاء کا اس عالم غیب میں وجود لائق موضوع ظاہر خصوصاً سے معلوم ہوتا ہے کہ اولاً علیہ السلام لما خلق الله الرحمن لهذا مقام العائد بك من القطعية اور یہ ہے خصوصاً سے اس عالم کے بعد بھی یہی معلوم ہوتا ہے کہ اولاً

عليه السلام ابن البقرة وال عمران ثانيان يوم القيامة كانهما شهما متان او غيبان او فوقان من طير وكفوله عليه السلام يوتى ما لدنيا يوم القيمة في صورة عحوز شمعطاع چنانچہ اسی تمثیل خاص کے اعتبار سے اس عالم کا لقب اصطلاح میں عالم مثال رکھا گیا ہے کما ذکرہ الشافعی اللہ فی الجہد البانذور فی امداد کثیرہ اور مولانا جمال الدین النجفی الدہلوی نے اپنے رسالہ نور اور اس کے حواشی میں اسکی تصریح بھی کر دی ہے عبادتاً۔

(تفسیر) کانک فيما فرغ سمعك من هذا لمقدمات اطلعت على حليقة الانطاق بين العوالم على حليقة العوالم بل الكشف عليك اسرار غامضة في حليقة المبدأ والمعاد ونسر عليك مشاهدة الواحدة الحقيقى في الكثرات من غير شوب سنازحة ولا انفصال وتسلفت به الى حقائق ما ابتداء عندلسان النوات من ظهور الاحلاق والاعمال في المواطن المعادية بصور الاحساد وكيفية وزن الاعمال ومرحشر الافراد بصور الاحلاق الغالبة عليهم واطلعت على سر قوله تعالى وان جهنم لمحيطه بالكافرين وقوله تعالى ان الذين ياكلون اموال اليتامى ظلماً اما يا كلون في بطونهم ناراً وقول الخاتم الفاتح عليه و على اله افضل الصلوة والتحية الذين يشرعون في انية اللهب والفضة اما بجر حوني بطونهم نار جهنم وقوله عليه الصلوة والسلام ان الجنة فيمان وان عزابها سبحانه الله ولحمته الى غير ذلك من

عروض الحکم والاسرار الالیہا وعلمت ان جمیع ذلك علی الحقیقة لا علی المحار والمقابل کما انتهى الیه نظر بعض الواقفین فی المبحث عن الحقائق تطریق البحث فانه تصور طاهراً کما لا یحیی (شک و تحقیق) لغت تقول کیف یکون العرض معیه هوا لخواهر وکیف یکون العین والمعنی واحد والحال ان الحقائق متخالفة بد وانها منقول قد لرحا الیک ان الحقیقة غیر الصورة فانها فی حده انها وصوفاً عاربه عن جمیع الصور التي تحلی بها لكنها تظهر فی صورة تاروق فی غیرها اخرى والصورتان معنا یراتان قطعاً لکن الحقیقة المتجلیة فی الصور تین بحسب الاختلاف الموصین شی واحد

(تشبیہ) ما اشبه ذلك بما بقوله اصل الحکمة النظرية ان الخواهر باعتبار وجودها فی الذهن اعراض قائمة به محتاجة الیه ثم هی فی الخارج قائمة بانفسها مستغنیة عن غیرها فاذا اعتقدت ان حقیقته تظهر فی موطن بصورة عرفیه محتاجة فی امر بصورة مستغنیة مستقلة فاجعل ذلك تالیماً لکسر به صولة بنو طبعک عنه فی بد والطر حتى باتیک الیقین وتنعصد الالاق المین. انتهى بقدر الصرورة

یکن اس تقریر سے جواب ہو گیا استدلال علی اقتناع نقل الامان باقتناع نقل الاعراض کا اور اسی سے مسئلہ کی دوسری دلیل عقلی یعنی عدم ہتھام اعراض اور دلیل نقلی یعنی من ہام ہائسہ الایضہ کا جواب بھی مستفاد ہو گیا کہ ہتھام نظام اس سے ہے جو تصور کے قرض نہیں کیا گیا عدم ہتھام اعراض کا جواب یہ ہوا کہ اگر یہ عدم ہتھام لیا جائے گا اس پر کوئی دلیل صحیح قوی قائم نہیں ہوتی مگر ماننے کی قدر پر ہے عدم ہتھام اور صورت عرض کے عرض ہونے کے ہے اور اگر بجز مصدر دوسرے عالم میں صورت جو ہر یہ متکفل ہو جائے تو پھر ہتھام میں کیا اقتناع ہے اور استدلال بقاء ہتھام کا جواب یہ ہے کہ اگر یہ تفسیر مان لیں گی ہاے تو ہب ہے عمل بھی جو ہر فی کیا تو وہ بھی یہ اس پر بھی

عقل روح حسن کے صادق آتا ہے۔

یہ تقریر ان اشعار تک کی ہے وقت محض ہر عرض را صورتے مست اراغ آگے جو ہر
 و معنی امکان مذکور کیلئے چند امثلہ اشیاء جو ہر یہ تصور فی الذہن کی ہیں جو ذہن میں فی موضوع
 اور خارج میں لاتی موضوع ہیں اس شعر تک۔ مگر چہ شرح ہو کہ عقل اراغ اور ہر مضمون مذکور ہر
 ایک نظیر کی تفریح ہو ہر جملہ معترضہ کے ہے گوہ اس کی مثال نہیں ہیں سرے کہ معروض آگے
 شعر نقل اراض اراغ میں یہ بیان کیا ہے کہ فرض موجود فی مرتبہ العلم جس طرح بھی خارج میں
 جو ہر ہو جاتا ہے کما ذکر اسی طرح بھی فرض بھی رہتا ہے چنانچہ یہ بحث و مثال کہ پہلے سے ذہن
 میں تھا اور عرض تھا عقل کے خارج میں بھی عرض ہی رہا اور دوسرے مصرعہ میں ہر ایک نظیر
 فرض فی مرتبہ العلم کی جو ہر ہے فی امکان کی بیان کی نقل اراض است میں شیر و عقاب۔ اور نظیر
 اس لئے کہا گیا کہ مراد اس مصرعہ میں وجود فی مرتبہ العلم الالہی ہے اور وہ فرض ہونے سے متروک
 ہے لغزہ عن الامکان اسی طرح اسکے بعد کے شعر جملہ عالم خود عرض ہو و اراغ میں اسی مرتبہ علم
 الہی میں تمام عالم کے کما عرض ہونے کو بتلایا جس یہ بھی نظیر ہے آگے شعرا میں عرضہا از چہ ذائقہ
 میں اختلاف موطن سے جو ہر کا عرض ہو نا اور عرض کا جو ہر ہو نا نکلتے ہیں اس طرح سے کہ
 اراض موجودہ فی اللہ یا عالم مثال میں صور جو ہر یہ تھے وہ معنی قول میں عرضہا از چہ ذائقہ از صور
 کما ذکرہ عقل عن الخلق ولی اللہ اور صور جو ہر یہ موجود فی اللہ یا علم الہی میں کما عرض تھے وہ معنی
 قول دین صور ہم از چہ ذائقہ از فکر اور شعرا میں جہاں تک فکر سے اسی مصرعہ تا یہ کی شرح ہے اور
 یہ احکام مذکورہ فی الاشعار تقریباً وجود عقل عالم اللہ یا کے مطلق تھے۔ آگے وجود اللہ یا کے یہی
 احکام کہ اس میں سے اعظم عرض کا جو ہر ہونا ہے مذکور ہیں اس شعر میں لول الی قولہ نہ مات اور
 اسکے اعظم ہونے کے سبب یہاں ذکر میں اس کی تخصیص کی گئی آگے تمام مقام کا خلاصہ کہ بھی
 جو ہر سے عرض اور بھی عرض سے جو ہر ظاہر ہو جاتا ہے اس شعر میں فرماتے ہیں اراض یا جو ہر اراغ

تسبیب العقاب و تقریب المرادم الی علمہ۔ الاقمام: اگر انصاف سے خود کیا جاوے تو عرض کا جوہر ہو جانا چکا کہ تقریباً نو گز میں۔ عینی کیا گیا ہے اس سے زیادہ یعنی نہیں ہے کہ جوہر عرض ہو جاوے اور حصول الجواہر فی اللذایان میں شب و روز اس کے وقوع کا مشاہدہ کیا جاتا ہے تو پھر انکرت میں اسکا وقوع کیا سمجھا ہے سو یہاں حصول فی الذہن کے وقت جوہر سے لباس مادے کی قطع ہو کر وہ موجودی موضوع ہو جاتا ہے وہاں وزن و فیروزہ کے وقت عرض پر مادہ جیوس ہو کر وہ موجوداتی موضوع ہو جاوے تو اس میں کیا ثبوت اور بھ ہے اور راز اس میں یہ کہا جاوے گا کہ جوہریت اور عرضیت ذاتیات سے نہیں ہیں بلکہ کیفیات ظهور حقیقت کے ہیں اور حکماء کا مقولہ عشرہ گواہاں عالیہ ماننا کسی دلیل سے ثابت ہے اور نہ اسباب انکی مسلم ہے خاص کر جب کہ ان کے آثار خود انکی تصریح کرتے ہیں کہ عرض عام اور جنس میں اسی طرح خاصہ اور فصل میں فرق کرنا بہت دشوار ہے۔ کمال تک شئی من ذلک لیس لکھو من الزور او نیز بعض محققین مشہور نے اس کی اس طرح تصریح کی ہے۔ تحقیق مقام آن ست کہ جوہریت و عرضیت از ذاتیات حقائق نیست۔

اور مولانا جعفر العلوم نے بھی اپنے حواشی میں انکی تائید کی ہے اور یہ سوال کہ عرض کا جوہر ہونا کسی طرح اسکو عقل قبول نہیں کرتی دوسرے سوال سے معارض ہے کہ جوہر کا عرض ہو جانا جو روز و شب کے وقوع کے آج تک عقل انکی کز کو نہیں سمجھ سکی واللہ علمہ کو تو جب اس میں ظور کرتا ہوں حیرت ہوتی ہے کہ الہی اس قیام انصور قبائلہ من واتصاف الذہن بالصورہ کی کیا حقیقت ہے اور کیا کیفیت ہے اور اس حال و عمل یعنی صورت ذہن میں کیا علاقہ ہو جاتا ہے اور اس طول سے ذہن میں کیا تاثر ہو جاتا ہے۔ اور حقیقت موجود فی الاعیان میں تجرد عن الملوک کا کیسے تغیر ہو جاتا ہے جبکہ مجھ میں نہیں آتا مگر شب و روز کے وقوع سے اس حیرت کی طرف التفات نہیں ہوتا کہ کیفیت و حقیقت نہ جاننے کا اعتراف سب کو ہے چنانچہ آج تک یہ سٹے نہ

ہو سکا کہ علم کون سے حقوے سے ہے اور اس کا مکس یعنی عرش کا جوہر ہونا چاہے لگہ لگہ انکار تو یہ میں ایسے
یعنی طور پر جس میں کسی تاویل و تفسیر کی گنجائش نہ رہے نہیں دیکھا جاتا اس لئے حیرت کی طرف
الغایت ہو جا رہی ہے حقیقت کی گنجائش میں دونوں یکساں ہیں۔

(تقلوبت) مولانا نے ایک مقام پر اس مضمون کو اس سے زیادہ صریح عنوان سے ذکر فرمایا
ہے۔ (مصفولا من حواء الاعمال)۔

چوں نکوئی بہار کوئی مرد گشت	شعور آں عالم عبود نہ بہشت
چو نگہ پر یہ تہ بہت نہ تہ حق	مرغ بہت ساقش رب اطلاق
خدا تسمیٰ نماز مرغ خدا	چو نگہ نظر مرغ ہدایت و ہوا
چوں ز دستہ صفت ایثار و زکوٰۃ	گشت آں دست اطراف نقل بہت
آپ خیرت آجئے غلہ شد	جوئے شیر غلہ مرست و دد
ذوق طاعت گشت جوئی انگلی	مستی و شوق تو جوئی فرین
آں سہما آں اثر بانامہ	کس نہاد چو نقل جائے آں نشانہ
آں سہما چوں فرمان تو داد	چار چو ہم مرتزا فرماں نمود
ہر طرف خواہی و دانشی کی	آں صفت چوں بہ چنانش مہکتنی
چوں مٹی تست کہ در فرمان تست	نسل تو در امر تو آنکہ چست
ی و در امر تو فرزند تو	کہ مضم جودت کہ کردیش کرد
آں صفت در امر تو وہ آں جہاں	ہم در امر تست آں جو پارہاں
آں در عقل مرتزا اثر بانامہ	کال در عقل از صفات بدنامہ
چوں ہر تست لفظاں صفات	کس در امر تست آجما آں جزات
چوں ز دستہ ضمیر مظلوم ہرست	آں در عقل گشت ازہاں رقوم رست

چوں زحتم آتش تو دور لہ لہ زدی	بایہ جا جنم آمدی
آتش اختلاچوں مردم سوزد	آنچه آدے زان مرد افروزد
آتش تو قصد مردم می کند	جا کز دے زان مردم زند
آن ستمبائے چو باد کثروست	باد کثوم گشت دی گیر دوست

(توجیہ آخر)۔ اگر باوجود اس قدر سادہ ایضاح کے اب بھی کسی کی عقل اس جوہریت و اراض کو قبول نہ کرے تو وہ نقل افعال کی دوسری توجیہ اس طرح سے سمجھ لے کہ یہ افعال کو ظاہر اراض میں مگر واقع میں وہ جوہر ہیں جیسے اور بھی بعض اشیاء ایسی ہیں کہ ان کو بہت عقلمانے اراض سمجھا مگر دوسرے عقلمانے ان کے جوہر ہونے کا دعویٰ کیا۔ جیسے قندہا میں کیفیت شمع میں اختلاف ہے کہ آیا وہ کیفیت مشوم سے صکیف ہو کر شامہ کی مدد کہ ہوتی ہے یا مشوم ہے یا کہ اجزاء مفصل ہو کر شامہ تک پہنچتے ہیں یا اب متاخرین میں بعض عناصر نے نور شمس وغیرہ کو جس کو اب تک عرض کیا جا تھا۔ جوہر بنا ہے۔

پس اسی طرح ممکن ہے کہ جب آدمی سے کوئی طاعت یا معصیت صادر ہوتی ہو تو اس عامل سے یا کہ اجزاء جوہر یہ غیر مہرہ للعاصہ طیبہ یا شیبہ حاملہ یعنی وہ افعال مفصل ہو کر دوسرے کسی عالم میں کسی طریق سے منتقل ہو جاتے ہیں اور وہاں حضور مناسب محفوظ رہتے ہوں اور قیامت میں وہی معروض اور سوزوں ہو جائیں اور بعض اہل کشف سے جو عقول ہے کہ انہوں نے فلسفہ میں سے پائی لگتا ہوا دیکھا اور آنکھیں بند کر لیں کسی نے پوچھا تو فرمایا کہ ان نظرات میں مجھ کو زمانہ لگتا نظر آتا ہے۔ سو جب نہیں کہ اس میں پانی میں ان ہی اجزاء میں سے بعض اجزاء موجود ہوں اور وہ صحت نامیہ ان اجزاء میں حال ہو اور اسی طرح آنکو کشوف ہو گئے ہوں اور میں نے اپنے استاد خلیہ ارحمت سے قولہ تعالیٰ تو وحد واما عملوا حاضرہ کی تفسیر میں سنا ہے کہ ہر عمل کی ہیئت بھی قیامت میں نظر تو ہے گی۔ مثلاً چو چوری کہ جاہو النظر تو ہے گا زانی زنا کہ جاہو اسو جب نہیں

کہ وہی اجزاء اس ہیئت نظر تو میں اور ان اجزاء کی شکل حال کی ہی ہو اور اس محشر کے بصر میں خاصیت گردن کی پیدا ہو چکے کہ وہ اجزاء خوب دے دے ہو کہ اس حال کے برسرہ اللہ میں نظر تو ہے واللہ اعلم اور اس توجیہ کی بنا پر مولانا کے کلام میں انکو اعراض سے تعبیر کر دیا مقابلاً زعم اہل ظاہر کے ہو گا۔

(افادہ) چونکہ یہ کیفیت عرض افعال کی یعنی ان کا تصور جو ہر یہ میں موفیق اللہ اور کتاب و السنہ ہے اس لئے اس قول کو مرنی الا قول کہا گیا جیسا رسالہ کا تیسرا اس پر دہل ہے۔ واللہ الحمد علی ما علم واہم

ضمیمہ نمبر ۴

محاسن اسلام و قرآن کے متعلق غیر قوموں کی شہادتیں

جو اس مسرہ کے مصداق ہیں الفصل ما شہدت بہ الاعداء

(الف) استقبال از اخبار وکیل ۱۸ جون ۱۹۱۳ء

اسلام کے واجبات اور قرآنکس حفظ صحت: جرمنی کے مشہور علمی رسالہ "دی ہانف" میں نامور جرمن قاضی اور مستشرق علامہ جواہریم دی یولف نے اسلام کے واجبات اور قرآنکس حفظ صحت پر ایک نہایت قابل قدر مضمون لکھا ہے جس کی نقل ذیل میں ہے وہ تحریر کرتا ہے کہ دین اسلام کے اصول و عقائد و قواعد کو اگر جملہ فاضل ملاحظہ کیا جائے تو یہ حقیقت روز روشن کی مانند ظاہر ہو جاتی ہے کہ موجودہ مسلمان اگلی پاندی سے کوسوں دور ہیں اور اگر مسلمانوں میں کوئی ایسی اہم العزم روح پرور فیصیح شہود میں آئے جو ان کو از سر نو اسلام کے اصلی اور سچی مرکز پر لے آئے تو اس میں کام نہیں کہ اگلی قوت کا طرہ و اختیار آسمان تک جا پہنچے اور سیاسی اقتدار سے نہ کسی اخلاقی اجتماعی اور علمی پہلو سے وہ دنیا کی اصلاح پر ایک نہایت اہم مہم نہ سکتے ہیں مجھے اس وقت

اسلام کی سیاسی اہمیت سے سردکار نہیں بصر میں صرف اس کے ایک خاص پہلو پر غصہ کرنا چاہتا ہوں جس پر اس وقت تک شاید کسی پرہیز نے غور نہیں کیا۔ یہ پہلو ان ادکام و قوانین سے تعلق رکھتا ہے جو قرآن کریم نے حفظانِ صحت اور تندرستی کے متعلق اپنے ماننے والوں پر فرض کئے ہیں جس نہایت وثوق کے ساتھ کہہ سکتا ہوں کہ روئے زمین کی تمام کتبِ ہدایتی پر قرآن کو اس لحاظ سے خاص امتیاز حاصل ہے اگر ہم شائد اگر سدا و اجابت و فرائضِ حفظانِ صحت پر نظر کریں جو قرآن کریم میں مذکور ہوئے ہیں اور پھر اس امر پر غور کریں کہ ان کی پاسداری کرنے والوں کو جنت الفردوس کے مستحق قرار دینے میں اس کی کیا حکمت ہے تو ہم پر روشن ہو جائے گا کہ اگر یہ صحیفہ آسمانی اور کلامِ زبانی ساکنانِ ایشیا کہ نہ ملتا تو ایشیاء کا سدا و اجابت و فرائضِ حفظانِ صحت کے حق میں اور بھی بلاخیز ہو گیا ہو گا۔ اسلام نے منقائے اور پاکیزگی اور پاکیزگی کی صاف و صریح ہدایات کو نافذ کر کے جرائمِ پاکہ کو مسلکِ صمد پہنچا دیا ہے۔ غسل اور وضو کے واجبات نہایت دور اندیشی اور مصلحت پر مبنی ہیں۔

غسل میں تمام جسم اور وضو میں من اعضاء کا پاک صاف کرنا ضروری ہے جو عام کاروبار یا چلنے پھرنے میں کھلے رہتے ہیں منہ کو صاف کرنا اور دانتوں کو مسواک کرنا ناک کے اندرونی گروہ وغیرہ کو دور کرنا یہ تمام حفظِ صحت کے لوازم ہیں اور ان واجبات کی بڑی شرط آبِ رواں کا استعمال ہے جو فی الواقع جرائمِ کبیرہ کے وجود سے پاک ہوتا ہے حضرت محمد ﷺ نے تمیز میں اور بھی ممنوع جانوروں کے اندر امر اس حیض و مانِ قائم و غیرہ کا خطرہ دریافت کر لیا تھا جنہ انہ کے خارج کرنے کا جو طریقہ شارعِ اسلام نے تلقین کیا ہے وہ بہت ضروری اور اہم ہے گری اور حدت جانوروں کے ٹون میں سونا کا سد پیدا کرتی اور ہزار ہائی صدیوں کا باعث ہوتی ہے جو غسلِ انسانی کے سمِ قائل کا حکم رکھی ہے ایسے صد جانوروں کے جرائم بھی اگر دیتا ہے اس لئے فرج کرنے کے عمل میں جانور کے خون کا کثرت سے خارج ہونا لازمی ہے غسل اور وضو سے جو منقائے اور پاکیزگی حاصل ہوتی ہے اور حفظِ صحت کی ان دو شرطوں کے بعد تیسری اہم اور قابلِ قدر شرط اور زین

جسمانی کی ہے یہ شرط عبادتِ انسانی کے ساتھ لوہے نماز سے پوری ہوتی ہے۔

نماز میں قیام اور کوع، قعود و سجود کی حرکات اعلیٰ حکمت عملی اور تدبیر پر مبنی ہیں۔ اگر اہل یورپ میں اسلامی نماز کا رواج ہوتا تو ہمیں جسمانی ورزش کے لئے نئی نئی ورزشی حرکتیں ایجاد کرنا پڑتیں ایسیاں کے گرم ملک میں انسانی جسم کے اندر چلنی زیادہ پیدا ہوتی ہے اور سجدہ میں دونوں ہاتھ لورہ گیر اعصاب ایک خاص کشش کے ساتھ پھیلائے اور سمیٹائے مناسب فریبگی کی سفر توں کو دور کر دیتا ہے اسلام میں قعود اور رواج کی عبادت قوم کی کئی نسل کی ناقابلِ حرافی نقصان سے محفوظ رکھنے کیلئے ایک بے نظیر اصول ہے جس کی ہمیں توال سے قدر کرنی چاہیے یہ ایک ایسا اصول ہے کہ اگر بوقت ضرورت اس کی پیروی کی جائے تو اس سے سلسلہ قواعد و تامل میں خلل انداز ہونے والے امراض پیدا نہیں ہونے پاتے آپ ایسیاں میں عمر رسیدہ و شیراز لائیاں بہت کم پائیں گے جو زیادہ عمر تک شادی نہ ہونے کے سبب و سربانی تکلیفِ اعصابی میں مبتلا ہوں شکایات و مسکرات کو حرام قرار دینا اسلام کا اتنا بوجہ انساں ہے کہ جس کے بدگراں سے انسان کبھی ہلکدوش نہیں ہو سکتا اور ہم مدینانِ تہذیب و تمدن یعنی اقوامِ یورپ کو اس ہلکدوش میں مسلمانوں پر حسد کرنا لازم ہے حیاتِ مستعدہ کو ایک بے حقیقت سمجھا اور جان کی مطلق پروان کرنا جس کے ساتھ ایک قادر مطلق ہستی کا پختہ اعتقاد بھی شامل ہے اور مزید اس حفظِ صحت کے قدرتی و فطرتی اصول و قوانین جن میں انسانی فکر و قدر کو کچھ بھی دخل نہ ہو۔ یہ تمام باتیں جسمِ انسانی کی طاقتوں اور قوتوں کو مدت دراز تک صحیح سالم و مضبوط و مستحکم رکھنے کے لئے نہایت موثر اور قیمتی وسائل ہیں۔

ہاں ہم اگر ایسیاں بعض خصائص ہیں ہم پر عمرِ شباب فوجیتہ رکھنے کے باوجود اکثر امور میں ہم اہل یورپ سے بہت کچھ ماخذ ہے تو اس کے خاص وجوہ ہیں نکلنا ان کے ایک امر میں مختلف قوموں کا باہمی اشتقاق بھی ہے جن میں سے اکثر کو اسلام کے ساتھ موہوم سا تعلق ہے اور ایک قصہ یہ بھی ہے کہ خالص عربی النسل مسلمانوں کی سوسائٹی میں دوسرے قوموں کی عورتوں کا عقد نکاح کے ذریعہ سے داخل ہو جانا آئی کیے۔ چنانچہ کے فساد کا موجب ہوا ہے اور یہ قانون قدرت ہے کہ

کامل چیز وہی ہے جو خاص بھی ہو۔ بر حال اسلامی تعلیمات کی یہ بڑی قضیات اور منزلت اظہر من الشمس ہے بالخصوص اختلاف اجناس و اقوام کے لحاظ سے اس کے اصول اور بھی قابل قدر اور واقعی حسین ہیں اس موقع پر یہ سوال قدر چال میں پیدا ہوا ہے کہ جب مسلمانوں میں اسلام عملی صورت میں آجکل کہیں بھی موجود نہیں ہے اور انکی بھڑی ہوئی بیعت نے اپنے جہوں کو منزل اور خلافت و جہالت کے مبینی خار میں اٹھیل دیا ہے تو آخر ان کا انجام کیا ہو گا۔ ہمارے نزدیک اس کے ساتھ ہی یہ سوال بھی ہونا چاہیے کہ اگر اسلام نہ ہو تو ان قوموں کا جواب مسلمان کھاتی ہے کیا مٹر ہو سکتا تھا اور ان ہی قوموں پر کیا منحصر ہے ہمیں خود اپنی لبت پر سوال کرنا چاہیے کہ اگر اسلامی تہذیب دنیا میں جلوہ گھن نہ ہوتی تو ہماری کیا کیفیت ہوتی آئیں احسان مندی کی رو سے ہم پر واجب ہے کہ عرفی علوم و فنون نے ہمارے علوم و فنون پر جو حیرت انگیز اثر ڈالا ہے اس کو فراموش نہ کریں اگر عربوں نے فلسفہ نہ سیکھا اپنی زبان سے ترجمہ نہ کیا ہو تا اور پھر عربوں کی معرکہ آرا ادبیات و تصانیف و طبعی زبان میں ترجمہ ہو کر ہم تک نہ آئی ہوتیں تو ہمیں اس فلسفہ کی اصل پڑھنی کھوں کے حصول سے بہت حد تک شکر ہی اسکا علم کیونکر ہو سکتا چند سو سال قبل ہی کارنامہ لکھنے اور پ کے تشکاں علوم کا چشمہ شیریں اندلس کے عرفی اسلامی دارالعلوم تھے اور سچ پوچھو تو آج بھی جب کہ اسلام رو بہ تزلزل ہے ہم اسلام کے سیاسی علوم سے بہت کچھ اخذ کر سکتے ہیں۔ نقطہ۔

(ب) مستقول از اشہد یدہ عبور ۹ مارچ کے ۱۹۱۹ء ۱۹۱۹ء ۶۔

پروفیسر اسلام سے ایک جرمنی ڈاکٹر کی عقیدت : جرمن کے مشہور ڈاکٹر کوخ نے ایک مضمون اشہار الصحت میں لکھا تھا جس کا اقتباس ہم یہاں نقل کرتے ہیں۔ تاکہ یہ ظاہر ہو کہ حدیث شریف کی جو تعلیم ہے وہ ایسی معقول ہے کہ ہر ایک سلیم الفطرت انسان خواہ وہ کسی مذہب و ملت کا ہو اسکو قبول کرے گا۔

داکتزڈ کو رکھتا ہے کہ جس وقت سے مجھ کو نوشادر کا دواہ القاب کے لئے تیرے بعد علاج ہونا دریافت ہو گیا ہے اس وقت سے میں عظیم الشان نبی (یعنی محمد ﷺ) کی خاص طور پر قدر و منزلت کرتا ہوں اس انکشاف کی رات میں مجھ کو انھیں کے مہارک قول کی شیخ نور نے روشنی دکھائی میں نے ان کی وہ حدیث پڑھی جس کا منسوم یہ ہے کہ جس دن تم میں کتابت ڈالے اس کو سات بار دھو اور پھر مرتبہ پانی سے اور ایک مرتبہ مٹی سے یہ حدیث دیکھ کر مجھے خیال آیا۔ محمد (ﷺ) جیسے عظیم الشان پیغمبر کی شان میں فضول کوئی نہیں ہو سکتی۔ ضرور اس میں کوئی مفید واقعہ ہے۔ اور میں نے مٹی کے غصروں کی کیمپائی تحلیل کر کے ہر ایک غصر کا دواہ القاب میں ایک استعمال شروع کیا۔ اخیر میں نوشادر کے تجربہ کی نوبت آئی ہی مجھ پر مشکلف ہو گیا کہ اس مرض کا یہی علاج ہے۔ آنحضرت ﷺ نے مٹی سے در تن دھونے کی روایت کیوں دلائی اس کی وجہ یہ ہے کہ نوشادر بیٹھ مٹی میں موجود رہتا ہے اور اگر آپ نے غسل نوشادر ہی سے در تن دھونے کی ہدایت فرمائی تو اس وقت اس کا مٹا غیر ممکن ہو جاتا ہے مٹی جو ہر وقت اور ہر جگہ پائی جاتی ہے در تنوں کی صفائی کیلئے بجز این اور یہ صفائی تو اور اسی طرح آنحضرت ﷺ کی حدیث النحسی میں صیح جہم فاطمہ اسرارھا بالماء پر اظہار ہوا کرتے تھے حالانکہ آپ کی مرض اس ارشاد سے یہ تھی کہ صفائی کا علاج آب سرد سے کہ چنانچہ اب تحقیقات نے واضح کر دیا ہے کہ جوار کا علاج صرف گند پانی ہی نہیں ہے بلکہ آب ہے مرض کہ آنحضرت ﷺ کی بہت سی حدیثیں فن طب کی جان اور اصل الاصول ہیں اور تحقیق یہ تحقیق انکی صداقت کاملہ کا اظہار کرتی ہے۔ میں اس خطبہ کا لوہ و احرام کرتا ہوں کہ انہوں نے آفرینش قوم سے اب تک کوئی طیبہ نہ لکھا گیا میں آپ کا ہم پلہ پیدا نہیں ہوں۔

اللہم صلی علی محمد و علی آل محمد وعلوٰک وسلم

(ج) منقول از انظار وحدت ۲۔ فروری ۱۹۲۵ء ۲۱ ج ۲۔

قرآن تمام آسمانی کتابوں میں بہترین کتاب ہے

ڈاکٹر مورلیس نے جو فرانس کے نامور اہل علم مستشرق اور ماہر علوم عربیہ ہیں اور جنہوں نے گورنمنٹ فرانس کے حکم سے قرآن کریم کا ترجمہ فرانسیسی زبان میں کیا تھا اپنے ایک مضمون میں جو "لابارول فرانس رومان" میں شائع ہوا تھا ایک اور فرانسیسی مترجم قرآن سورسہ سالانہ ریچاش کے اعتراضات کا جواب دیتے ہوئے لکھتا ہے۔ قرآن کیا ہے؟ قرآن اگر کوئی ایسی محبت ہو سکتی ہے جس پر ہمیں کروڑوں چالیس کروڑ سوائف کا انسان فخر کر رہے ہیں وہ کیا ہے کہ مقاصد کی خوف اور مطالب کی خوش اسلوبی کے اعتبار سے یہ کتاب تمام آسمانی کتابوں پر فائق ہے۔ ہم کہہ سکتے ہیں کہ قدرت کی ازلی عبادت نے انسان کے لئے جو کتابیں تیار کی ہیں ان سب میں یہ بہترین کتاب ہے۔ اس کے نئے انسان کی خیر و فلاح کے متعلق فلاسفہ یونان کے نظموں سے کہیں اچھے ہیں اس میں آسمان و زمین کے ماننے والے کی حمد و ثناء مہری ہے خدا کی عظمت سے اس کا حرف لہجہ ہے جس نے تجزیرا پیو کی ہیں اور ہر ایک چیز کی اس کی استحداد کے مطابق رہنمائی کی ہے

(پیام آمین)

(د) مقالہ از شمارہ عدد ۸۔ فروری ۱۹۴۵ء ج ۲۶۔ ۲۔

مسٹر آرٹھڈ پائٹ نے اسلاک ر پورٹ ماہ مئی ۱۹۱۳ء میں لکھا ہے۔

"وہ اسباق جو ہم عہد نامہ حقیقی اور عہد نامہ جدید سے یہودیوں کے توسط سے سیکھتے ہیں (نصف یورپ ایک یہودی یعنی جناب سیک اور جیہ نصف ایک یہودن یعنی جناب مریم کی پرستی کر رہے) ہمیں ہمیں نوع انسان کیسا تھا انسانیت سے پیش آنا اور تمام لوگوں کے خیالات کا احترام کرنا سکھاتے ہیں لیکن قرآن نے جس کو ایک سادہ بان کے لڑنے نے لکھا مسلمانوں کو نہ صرف زبردست جنگ آرائی سکھائی بلکہ پرانی عہد نامہ کی میں یہودی 'خبررات' فیاضی 'شہادت اور مسلمان نوازی کا سبق پڑھایا۔"

(و) مستقول از اخبار وحدت ۸۔ فروری ۱۹۴۵ء، ج ۶، ص ۲۔

پہلے نے لکھا ہے کہ توحیدت زور ۴ ٹیکل۔ ترے چاہ من ڈھنڈے۔ ری قرآن کتاب کل یک میں پر وار (مضمم سائگی کاں ۷ ۱۳) توحیدت زور ۴ ٹیکل اور دیو غیرہ تمام چاہ کر دیکھ نے قرآن شریف ہی قابل قبول اور اطمینان قلب کی کتاب نظر آئی مری کتاب ایمان دی پنج کتاب قرآن (اگر سچ پوچھو تو سچی اور ایمان کی کتاب جس کی ملاقات سے دل پائے پائے ہو جاتا ہے قرآن شریف ہی ہے)۔

(و) مستقول از اخبار وحدت ۸۔ فروری ۱۹۴۵ء، ج ۶، ص ۲۔

پروفیسر زور ڈی ایم اے ایم بی نے اپنی تالیفات ووائے لٹریچر ایسٹری آف پر شہاد (تاریخ تلوہیات ایران) میں ڈنڈ لو ستاور قرآن پر زور کرنا اور اسکے مضموم و معانی کے سمجھنے کی کوشش کرنا ہوں میرے دل میں اس کی قدرو حواصلت زیادہ ہوتی جاتی ہے لیکن ڈنڈ و ستا کا مطالعہ جو ایسی حالتوں کے کہ اسکو علم الاوانجان یا تحقیقی لٹرائی یا اسی قسم کے دیگر افراض کے لئے چاہا جائے طبیعت میں نکالنا یہاں کرنا اور باہر خاطر ہو جاتا ہے۔

(ز) مستقول از اخبار وحدت ۸۔ فروری ۱۹۴۵ء، ج ۶، ص ۲۔

انسانیکو پیڈیا رنائیکا کی جلد ۱۱ صفحہ ۹۹ میں لکھا ہے۔ قرآن کے مختلف حصص کے مطالب ایک دوسرے سے بالکل مختلف ہیں یہ سب ہی آیات دینی و اخلاقی خیالات پر مشتمل ہیں۔ مظاہر قدرت تاریخ انسانیت انبیاء کے ذریعہ اس میں خدا کی حکمت سر بائی اور صداقت کی یاد دلائی گئی ہے۔ بالخصوص حضرت محمد ﷺ کے واسطے سے خدا کو یاد اور قادر مطلق ظاہر کیا گیا ہے۔ سب پر سنی اور قنوقات کی ہر مسئلہ کو (جیسا کہ جناب مسیح کو خدا کا بیٹا سمجھ کر چرچا جاتا ہے) بلکہ لٹا جاتا ہے قرار دیا گیا ہے قرآن کی نسبت یہ بالکل جانا گیا ہے کہ وہ دنیا بھر کی موجودہ کتابوں میں سب سے زیادہ چرچا جاتا ہے۔

(ح) مستقول از اخبار وحدت ۸۔ فروری ۱۹۴۵ء، ج ۶، ص ۲۔

ڈاکٹر نعیم آزادک یلز نے ۷۷ء تا ۷۸ء میں علیحدہ طور پر لکھیں جیسے انگلستان ایک تقریر کی تھی جو ای زمانہ میں لندن، لندن میں شائع ہوئی تھی اس تقریر کا خلاصہ یہ ہے کہ اسلام کی حیثیت قرآن پر ہے جو تمدن کا بھٹا اڑاتا ہے جو تعلیم دیتا ہے کہ انسان جونہ جانتا ہو اس کو سمجھتے ہو جانتا ہے کہ صاف کپڑے پہننا اور صفائی سے رہنا جو حکم دیتا ہے کہ احتیاط و احتیاط سے لازمی فرض ہے۔ بے شہہ دین اسلام کے تمام اصول رافع ہیں اور انکی خصوصیات شائستگی اور تمدن سکھاتی ہے۔

(ط) موقوف از انبار وحدت ۸ فروری ۱۹۴۵ء، ج ۲۶، ص ۴۔

”برہنہ پگھڑ“ میں یہ فقرات موجود ہیں۔ اسلامی قانون کا تعلق تعریف اصول پر مشتمل ہے اور زیادہ قابل تعریف یہ امر ہے کہ اسے ان اصول کی تعلیم و انہام دہی کی زبردست حاکم میں کامیابی حاصل ہوتی ہے۔ شریعت اسلام تمام اعلیٰ درجہ کے عقلی ادکام کا مجموعہ ہے جن فضائل و اعمال کی اس میں ہدایت کی گئی ہے وہ ایسے درگزیہ و اور شائستگی ہیں کہ کسی مشہور مسیحی فلسفے کی ہدایتیں بھی انکا مقابلہ نہیں کر سکتیں۔

(ی) موقوف از انبار وحدت ۸ فروری ۱۹۴۵ء، ج ۲۶، ص ۴۔

سنہ ۱۹۴۱ء میں نے قرآن شریف کا ترجمہ شائع کیا۔ لکھتا ہے جتنا ہی ہم اس کتاب (قرآن) کو اہمیت دیتے اور دیکھیں اسی قدر پہلے مطالعہ انکی ہر خوبی سے نئے پہلوؤں سے اپنا رنگ بدلتی ہے لیکن فوراً ہمیں سزا کر لیتی۔ حیرت دہانی اور آخر میں ہم سے تعظیم کرنا کہ جھوٹی ہے اس کا طریقہ ان ہاتھوں کے مضامین و افراہن کے حلیف عالی شان اور تہذیب آمیز ہے اور جہاں اس کے مضامین کی غایت و در لغت تک پہنچ جاتے ہیں۔ فرض یہ کتاب ہر زمانہ میں اپنا پر زور اثر رکھتی رہے گی۔

تمت

رسالہ بتما مہا تمت الجلد الثالث الذی بتمامہ تم اصل الکتاب
و نحمدہ اللہ الذی عنده ام الکتاب واللہ عنده حسن الثواب
وزمان الختام۔ اول شهر اللہ محرم الحرام ۱۳۳۵ ھ سید الانام
صلی اللہ تعالیٰ علیہ وعلیٰ آلہ العظام والصحابۃ الکرام مدی
اللیالی والایام۔ ابداً ابداً لا القضاء ولا انصرام۔ فقہ۔